[illegible]

ज्योतिषसार

श्रीज्योतिष विद्या विनोद पण्डित राम दयाल
मेरठ नगर निवासीनें लाला नथमलकी
आज्ञानुसार भाषा टीका सहित और जोजो दूसरे
नहीथेसो
वर्षग्रहण सारिणिमये फल लग्न दृष्ट द्विघटिका
दियंत्र और त्रैराशपतसुथा
फल और मुहूर्त्तादिक भी इनसबोका संग्रह ग्रंथा
वलोकन कर रचा सो इस ग्रंथकू कोई मनुष्य वि
ना ग्रंथ करता की आज्ञा छापे नही
जो लोभवस छापेगा तो पूर्वोक्त कानुन के अनुसार
सरकार से सजा
पावेगा

श्रीयुत ज्वालाप्रकाश पाषाण यंत्रालय मे छपी
और ऐक २५ सन् १८ ६७ ई० के अनुसार रजिष्टरी
हुई ॥ सवंत् १९ ३७ छपी

पहली वार जिल्द २००० मूल्य पुस्तक १) रुपया

the price one Rupee
1 2000

श्रीगणेशायनमः

हेसत्यस्वरूपविज्ञानमयसदानंदअनंतसामर्थयुक्तपरमकृपालुअनंतविद्याविज्ञानप्रदपरमेश्वरआपसूर्यादिसबजगचक्षुओरचारोंमंत्रसंहिताजिनकोबेदकहतेहैं सिद्धांतसंहितायंत्रविद्याकालज्ञानकर्मकांडिप्रकाशकरनेवालेनिर्मलवेदचक्षुज्योतिषकेआदिवीजउत्पादकआधारहोतथाचसवलोगोंकेकर्मकांडमेंलगायेहुयेबेदमंत्रोंसेजहांजहांजोजोकर्मअग्निहोत्रसेअश्वमेधपर्यंततकऔरसांगवेदोंकापठनपाठनादियज्ञकालज्योतिषबिनानहीहोसक्ता इसलियेबेदबेदांगोंसेवशिष्टगर्गादिमुनिकृतज्योतिषसूर्यसिद्धांतादिशास्त्रबिनायेजिसेंकालज्ञानहोताहै अवश्यजाननाचाहियेजिस्सेलोगोंकोनानाप्रकारकासुखमिलताहैक्योंकिजवतककोईक्रियाविधपूर्वकनकीजावेतबतकउसकागुणफलमनुष्यकोनहीहोसक्ता औरइसकेबिनाशुद्धक्रियादिवत्मनुष्योंकोफलनहीहोसक्ता औरबर्षऋतुदर्शादिकज्ञानकेबीनायज्ञादिहोनहीशक्ते इसलियेइसलियेज्योतिषशास्त्रसिद्धांतसंहिताहोराइसभेदसेस्कंधत्रियात्मकवेदकानिर्मलचक्षुहै॥ श्लोक॥ सिद्धांतसंहिताहोरारूपस्कंधत्रयात्मिकं वेदस्यनिर्मलंचक्षुर्ज्योतिश्शास्त्रमकल्मषं ॥ जिसकेजाननेसेसंपूर्णश्रौतस्मार्तादिककर्मसिद्धहोतेहैं॥ श्लोक॥ विनैतदखिलंकर्मश्रौतंस्मार्तंनसिद्धति अतएवद्विजैरेतदध्येतव्यंप्रयत्नतः॥ इसलियेहेप्रभाकरजगन्नेताहमारेसकलविघ्नहितसुखलक्ष्मीभोगदिनप्रतिप्राप्तकीजे आपकीकृपाकीसहायसेंसबबिघ्नहमसेंदुरहैंकिजिस्सेंइसभासाज्योतिषसारकेकरनकाजोमेंपण्डितरामदयालमेरठवासीयथामतिप्रारंभकीयाहैसुखसेपूराहो इसअनुष्ठानमेंहमारेशरीरमेंआरोग्यवृद्धीसज्जनोंकासहायसदारहोयेज्योतिसारसूर्यमुनिप्रणीतहै औरऔरकापंडितोंनभाषाकीयाहैतबभीइसकासाराथ अद्यापिमनुष्योंकीबुद्धिमेंनहीआता

क्योंकि यथावत नहीं क्योंकि संज्ञामें मुहूर्त मुहूर्तमें संज्ञा लिखी सो सब सज्जन लोगों
को विदित हो कि मेरे शिष्यों ने अपेक्षा की के ये संस्कृत ज्योतिषसार है
इसको आर्य्यभाषामें जो काशी आगरा देहली मेरठ आदि देशोंमें इन दि
नों बोली जाती है ऐसा किया जाय जो वह होत लघुतम सारार्थ चक्रोंमें
क्रमपूर्वक आजावे और लाला नस्थमल पुस्तकों के सौदागर ने भी कहा
कि जसी आपने मुहूर्त सारणी सुगम चक्रोंमें लाकर एक समुद्र कूं चुल्लूमें
कर दिया ऐसा ही इसकू भी सुगम कर दीजै ताके मैं अपने छापेमे छप
वादूं इस वास्ते इसमें चक्र ऐसी सुगम रीतीसे रखे हैं और वसी ही आर्य्य
भाषामें जो ऐसी सरल है कि जिसकू साधारण ज्योतिष का जान्ने वाला
भी अर्थ समझले और ये भाषासार अति उत्तम बना है इससे ज्योतिसका
जो सत्यार्थ वो सब सज्जन लोगों के नेत्रोंमे यथावत् प्रकाश होगा क्यों
कि जब ज्योतिषका सत्यार्थ सब को विदित होगा तब असत्य व्यवहार
को छोड़ के सत्यार्थमे प्रवृत्ति होगे जब इस भासको यथावत विचार
गे तौ सत्य ... कहे हुये प्रमाणोंसै जो पण्डित लोग काम करेंगे उनको स
त्यकाम और नित्य सुख चारों पदार्थोंकी सिद्धी यथावत प्राप्त होगी ॥
वहोत लिखना बुद्धिमानोंके लिये अवश्य नहीं किंतु इस भाषाकूं ज
देखेंगे तब उनको ये सब बात देखनेमें आवगी सब सुजनकूं आनंददायि
वरदान दें और मेरी उन सब सज्जनोंको नमस्कार है ॥ दोहा ॥ लषसु
षसुन्दर सुघन पंक्ति सरल जो कीन लिखनेमें अति ही चतुर नन्हेमियें बैन

तत्रादौ मंगलाचरणम्

गणाधीशं नमस्कृत्य शारदां चित्स्वरूपिणीम्
अज्ञानजगड्घ्नी गर्गलल्लादिकान्मुनीन् ॥

टी॰ ग्रंथके निर्विघ्न परिसमाप्ति के लिये प्रथमत गणेशजी को नमस्कार करकै
और चैतन्य स्वरूपिणी अज्ञानको नाश करनेहारी ऐसी जो सरस्वतीजी
ताको नमस्कार करके और गर्गाचार्य्य लल्ल वसिष्ठ नारद इत्यादिक जो
ज्योतिषशास्त्रके प्रवर्त्तक आचार्य्य हैं उनको नमस्कार करके ॥ ॥

श्लो॰ नानाग्रंथात्समालोक्य दैवज्ञानां चतुष्टये
कुरुते बालबोधाय ज्योतिःसारमनुत्तमम्

टी॰ और सूर्यसिद्धांतादिक नानाप्रकार के ग्रंथ अवलोकन करकै ज्यो
तिर्वित् के संतोषके लिये और बालकों को थोडेमें मूहूर्त्तादिकका ज्ञा
न होय इसलिये अत्युत्तम ज्योतिषसारनाम ग्रन्थ को करतेभये

अथकालांगत्वेन: संवत्सरायनर्तुमासादिनाज्ञानं
तत्रादौसंवत्सरमाह

श्लो॰ शाकेंद्रकालोर्कयुतः कृत्वाशून्यरसैर्हृतः
शेषाः संवत्सराज्ञेया प्रभवाद्याबुधैःक्रमात्

टी॰ शाकेशालिवाहनमें १२ युतकरै और ६० का भाग दे जो शेष बचे सो प्रभ
वादि संवत् जानो शाकः १८०० । इसलिये १८०० म १२ युत कियेतो १८१२ हुवे
औरइनमः ६० का भाग दियातो शेष १२ बचे इसलिये इसशाके के संवत्
का नाम १२ वां बहुधान्य नाम संवत्सर हुवाये अन्यमत है ॥ ॥ ॥

शाकात्संवत्सरमाह:

श्लो॰ सप्तवपंचाग्निक्षुभिर्युक्तः स्याद्विक्रमस्यहि
रेवाया उत्तरें तीरे संवन्नाम्नाति विश्रुतः २

टी॰ शालवाहन के शाके में १३५ जोडनेसे विक्रमशाका होता है उसीको
नर्मदा कें उत्तर तीर वासी जन संवत् कहते हैं॥ ॥ ॥ ॥

श्लो॰ संवत्कालोग्रहयुतः कृत्वाशून्यरसैर्हृतः १
शेषासंवत्सराज्ञेया प्रभवाद्याबुधैःक्रमात्

टी॰ संवत्सरके अंकोमें ९ युक्त करै और ६० के भाग लेनेसे जो शेष रहै सो प्रभ
वादि संवत्सर जानो उदाहरणजैसे १९३५ मे ९ मिलायेतो १९४४ हुवे अबइस
मे ६० भागदियातो शेष २४ रहे इसलिये इससंवत्सरका नाम विक्रमनाम जानो

अथसंवत्सरनामावलिर्लिख्यते

श्लो॰ प्रभवो १ विभवः २ शुक्लः ३ प्रमोदो ऽथ ४ प्रजापतिः ५
अंगिरा ६ श्रीमुखो ७ भावो ८ युवा ९ धाता १० तथेश्वर
११ बहुधान्यः १२ प्रमाथी च १३ विक्रमो १४ वृषभस्तथा १५
चित्रभानुः १६ सुभानुश्च १७ तारण १८ पार्थिवो १९
व्यय २० ॥ ब्रह्मणोविंशतिस्तत्र: स्रष्टिरेवप्रजायते
सर्वजित् १ सर्वधारी च २ विरोधी ३ विकृतिस्तथा ४ खरो ५ नंदन

नामाच ६ विजयश्च ७ जयस्तथा ८ मन्मथो ९ दुर्मुख १० श्चान्यो हेम लंब ११ विलंबको १२ विकारी १३ सर्वरी चान्य १४ प्लवश्च १५ शुभकृत्त या १६ शोभनश्च १७ तथा क्रोधी १८ विश्वावसु १९ भवोपर २० ॥ ॥

विष्णोरेते च विंशत्या पालनात्त्रजायते

प्लवंग १ कीलक २ सौम्य ३ तथा साधारणोपर ४ विरोधकृत्समाख्या त ५ परिधावी ६ प्रमाथ्यपि ७ आनंदो ८ राक्षसश्चाथ ९ नलश्च १० पिंगलस्तथा ११ कालः १२ सिद्धार्थ १३ रौद्रौच १४ दुर्म्मति १५ दुन्दुभि स्तथा १६ अपरो रुधिरोधारी १७ रक्ताक्ष १८ क्रोधन १९ स्तथाक्षय २० कृ वत्सरश्चान्यो रुद्र स्यामी च विंशतिः वत्सराषष्टिराख्यातानाम तुल्यफलप्रदाः ॥

अथ संवत्सरफलमाह

प्रभवादि गुणं कृत्वा त्रिभिर्न्यूनं चकारयेत् ॥ सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषं ज्ञेयं शुभाशुभम् ॥ एकं चत्वारि दुर्भिक्षं पंच षाभ्यां सुभिक्षकम् । त्रिशेषे तु समं ज्ञेयं शून्ये पीडा न संशयः २

टी० प्रभवादि संवत्सर वर्त्तमान तक गिन कर जो अंक होय उस्को दुगना करो और तीन उस्मे स कम करो और ७ भाग दो जो शेष बचे उस्का शुभाशुभ फल कहो १ वा ४ बचै तो दुर्भिक्ष जानो और ५ या २ रहै तो सुभिक्ष कहना और ३ शेष रहै तो समफल कहो जो कदाचित् शून्य रहै तो महा दुर्भिक्ष जानो कपीडा कहना जैसे संवत् १९४५ विक्रम का नाम स्थल स प्रभवादि नाम संवत् २५ हुवा अब इसका दुगना किया तो ५० हुवे तब इसमे ३ कम कीये तो ४७ रहे इसमें ७ के भाग देने से ५ शेष रहे इसलिये इस संवत्सका फल समता हुवा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

युगं भवेद्वत्सर पंचकेन युगानि च द्वादश वर्षषष्ट्या भवंति तेषामधिदेवताश्च क्रमेण वक्ष्यामि मुनिप्रणीता विष्णु जीवः शक्रो दहनस्त्वष्टा अहिर्बुध्न्य पितरो विश्वेदेवा श्चंद्रज्वलनो नासत्यो च भगाः ॥ ॥ ॥

टी० ५ वर्षका १ युग होना है ६० वर्षमें १२ युग भये तब बारह १२ युगके १२ अधिप ति होते हैं उनके नाम वि० १ वृहस्पति २ इन्द्र ३ अग्नि ४ त्वष्टा ५ अहिर्बुध्न्य ६ पितर ७ विश्वेदेव ८ चन्द्र ९ अग्नि १० अश्विनी कुमार ११ भग १२ ॥ ॥ ॥ ॥

शाके वाण ५ करा २ क ९ के विरहिते नंदै ९ द्दुभिर्भाजिते

शेषेवन्हिमथोचमाघा शेषेज्येष्टंवरेचाष्टके ॥ ॥
आषाढेन्द्रपतौ नभश्च श्रपरके भाद्रेच विश्वांसके ॥ ॥
नेत्रेचाश्विनकेऽधि ॥ माससुदितेशेषेऽन्यकेस्यान्नहि

टी॰ वर्तमान शाकेके अंकमें ८२५ हीन करो और शेष अंकमें १९ का भाग दो जो शेष ३ रहै तो अधिक चैत्र जानो और ११ शेष रहै तो वैशाख और जो ०० ८ बचै तो ज्येष्ठ अधिक होगा और जो १६ शेष रहै तो आषाढ अधिक होगा और जो ५ बचै तो श्रावण अधिक जानो और जो १३ शेष रहै तो दो भाद्रपद होंगे और जो २ शेष रहै तो आश्विनकी वृद्धि होगी और अंक शेष रहनेसे कोई अधि नहीं

स्थूलमतेनाधिमासोक्तम्

असंक्रांतिमासोधिमासः स्फुटस्याद्विसंक्रांतिमासः क्षयाख्यः
कदाचित् ॥ क्षयकार्तिकादित्रयेनान्यत स्यात्तदावर्ष
मध्येधिमासद्वयेच ॥

टी॰ जो दो अमावस्याके बीचमें संक्रांति न होतो अधिकमास होगा और जो दो मावस्याके बीचमें कदाचित दो संक्रांति होयतो क्षयमास जानो और कार्तिका दि ३ मास क्षय होते हैं और जिस संवत् में क्षयमास होगा उसी संवत् में अधि क मास दो होंगे इन सब श्लोकोंका आसयदेखलो मयग्रहणके सूर्यचंद्रमा का स्पर्श मोक्ष सब निचचक्रोंमे देखो

सं॰	ना॰ संवत्स कोंके नो शेष फ॰ वर्ष जि॰ स॰	अधिपत मय विशीके	अधिक मास	सूर्यचंद्र ग्रहण स्थान	फल ॥ घभवादि
१ शे॰ ३ सम	१८३५ विकल शा॰ १ ००	विष्णु अ॰ पत त्वाष्ट्र	शेषू १ नास्ति	श्रावण १५ चंद्र॰ स्प॰ ५३ १० मो॰ २।३१	प्रवर्तिविकृतिर्यातिविकृतिप्रकृतिनया तथापिहिविनोलोका आस्मिन्विकृति वत्सरे ॥
२ शे॰ ४ दुर्भि	१८३६ खर शाके १८०१	विष्णु अधिप त्वाष्ट्र	आश्विन शेष २	आ॰ कृ॰ ३० सं॰ सू॰ पौ॰ शु॰ १५ चं॰ स्प॰ ३३।५२ मो॰ ३८।०८	खराब्देनिखलालोका अन्योन्यसमरो त्सुका मध्यमावृष्टिरल्पंगं रोगे भूपा लकं पयु
३ शे॰ पीड़ा	सं॰ १८३७ शा॰ १८०२ नंदन ६	विष्णु अधि॰ अहिर्बु॰	चैत्र॰ संभ शेष॰ ३ प्रद्यांते	जे॰ शु॰ १५ चं॰ ग्र॰ स्प॰ ३१।३६ मो॰ ३९।५८ मार्गि॰ शु॰ १५ चं॰ स्प॰ ३८ १० मो॰ १७।२१	नंदनाब्दे सर्वपृथ्वी बहुसस्या र्घवृष्टयः आनंदोप्यखलानां चतंतनां समहीभुजं

४ शा. २ मु.	सं. १९३८ शा. १८०३ विजय ७	विष्णु अहिर्बु ध्न्य.	नास्ती शेष ४	मार्ग. शु. १५ चं. स्प. ३८।८ मो. ४१ २२। कृत्स्नग्रास	विजयाब्दे तु राजानः सदा विजयकांक्षिणः सुखिनो जंतवः सर्वे बहुसस्यार्घवृष्टयः
५ शा. ५ दुर्भि.	सं. १९३९ शा. १८०४ जयनाम	वि. अहि.	श्राव शेष ५	सू. ज्येष्ठ व. ३० स्प. २५।५८ मो. २३।५७ संभव दृष्टिर्नास्ति.	जयमंगलघोषाद्यैर्धरणी भाति सर्वदा जयाब्दे धरणीनाथा संग्रामजयकांक्षिणः ॥
६ शो. ६ सम	सं. १९४० शा. १८०५ मनमथ	वि. अहि.	नास्ती शेष ६	० ० ०	मन्मथाब्दे जना सर्वे तस्करा रतिलोलुपा शालीक्षयवगोधुमैर्नयना भिनवाधरा ॥ ३
७ शो. १ दु.	सं. १९४१ शा. १८०६ दुर्मुख	वि. अहि.	ना. शे. ७	वै. शु. १५ चं. ग्र. दृष्टिना. आश्वि. कृ. १५ चं. स्प. [illegible]	दुर्मुखाब्दे मध्यवृष्टिरीतिचौराकुला धरा महावैरा महीनाथा वीरवारण वाजिभिः ॥
८ शो. ३ सम	सं. १९४२ शा. १८०७ हेमलंब	वि. अधिप. पितर	ज्येष्ठ. शेष. ८	चै. शु. १५ चं. स्प. ३४।५० मो. ४८ ५८	हेमलंबे त्वीतिभीतिमध्यसस्यार्घवृष्टयः भाति भूर्भूपतिक्षोभा गजवाजि युद्धतादिभिः ॥
९ शो. ५ दु.	सं. १९४३ शा. १८०८ विलंबी	वि. १२ पितर	शे. ०९ नास्ति	माघ शु. १५ चं. ग्रहणं शुभ. दृष्टिनास्ती	विलंबवत्सरे भूपाः परस्परविरोधिनः प्रजापीडा त्वनर्घत्वं तथापि सुखिनो जनाः ॥
१० शो. ७ पी	सं. १९४४ शा. १८०९ विकारी	वि. १३ पितर	शे. १० नास्ती	श्रा. १५ चं. स्प. ४२।६ आ. ३० ग्र. स. ६।४८ मो. १२।४४	विकार्यब्दे खिला लोका सरोगा वृष्टिपीडिता पूर्वसस्यफलं स्वल्पं बहुलं चापरं फलं ॥
११ शो. ३ पी.	सं. १९४५ शा. १८१० शार्वरी	वि. १४ पितर	वैशा. शे. ११	शा. १५ सू. स्प. ४६ मो. ५९।२२।५३ सं. १९४५ नास्ती	शार्वरीवत्सरे पूर्णा धरा सस्यार्घवृष्टिभिः जन्तवस्सुखिनः सर्वराजानः सुवैरिणः
१२ शो. ४ दु.	सं. १९४६ शा. १८११ प्लवः	वि. १५ पितर	शे. १२ नास्ती	आश्वि. १५ च. ग्र. स्प. ४६।१२ मो. ५६।४०	प्लवाब्दे निखिला धात्री वृष्टिभिः प्लवसति भारोगाकुला त्वीतिभीति संपूर्णवत्सरे फले ॥
१३ शो. ६ स.	सं. १९४७ शा. १८१२ शुभकृत	वि. १६ विश्वेदे.	भा. शे. १३	आ. ३० सू. स्प. ४२।४ मो. २६।५३ का. कृ. स्प. २६।२५ मो. ३०।५७	शुभकृद्वत्सरे पृथ्वी राजते विविधोत्सवैः आतंकचौरभयदा राजानः समरोत्सुकाः ॥
१४ शो. १ दु.	सं. १९४८ शा. १८१३ शोभन	वि. १७ विश्वेदे.	शे. १४ नास्ती	वैशा. १५ चं. स्प. ४१।१६ मो. ५० का. १५ च. स्प. [illegible]	शोभकृद्वत्सरे धात्री प्रजा नारोगशोकदा नष्टापि सुखिनो लोका बहुसस्यार्घवृष्टयः।
१५ शो. ३ सं	सं. १९४९ शा. १८१४ क्रोधी	वि. १८ विश्वेदेवा	शे. १५ नास्ती	वै. शु. १५ चं. स्प. ५२।४६ का. शु. १५ चं. स्प. ३२। मो. ४०।४४	क्रोधब्दे त्वखिला लोकाः क्रोधलाभपरायणाः इति दोषेण सततं मध्यसस्यार्घवृष्टयः
१६ शो. ५ दु.	सं. १९५० शा. १८१५ विश्वावसु	वि. १९ विश्वेदे.	आषाढ शे. १६	फा. शु. १५ चं. स्प. ३१।३३ मो. ३५। चै. कृ. ३० स. स्प. [illegible] मो. ७।२६	अब्दे विश्वावसौ शश्वद्धोरणगा धरासु च सस्यार्घवृष्टयो मध्याभूपालनानि भूयतः

संख्या	प्र. नाम	ना. वि	अधिक मास	सू. चं. ग्रहण	फलसंवत्सराणां
१७ ग्री. ७पी	सं. १९५१ प्रा. १९१६ पराभव	वि. २० विष्णेदे	प्री. १७ नास्ती	नास्ती	पराभवाब्देराजास्युत्सपरसहृशत्रुभि आमयः क्षुद्रसस्यानिम्नभुक्तान्यल्प वृष्टयः
१८ ग्री. २सु.	सं. १९५२ प्रा. १९१७ प्लवङ्ग	वि. शिवकी चन्द्रमा	ना. १८	फा. शु. १५ म्र. चं. ग्र. स्प. ४९।१४ मो. ५।५४	प्लवङ्गाब्देमध्यवृष्टिरोगचोराकुलाधरा अन्योन्यसमरेभूपाशत्रुभिर्हतभूमरः
१९ ग्री. ४दु.	सं. १९५३ प्रा. १९१८ कीलकना.	शिव अधिप चन्द्रमा	ज्येष्ठ ०	०	कीलकाब्देत्वीतिभीतिप्रजाक्षोभ्मनृपा हयौ तथापि वर्द्धतेलोकाः समधान्यार्घ वृष्टिभिः
२० ग्री. ६सै.	सं. १९५४ प्रा. १९१९ सौम्यग्रहण	शिव. ३ चन्द्रमा	० नास्ती १	पौ. शु. १५ चं. स्प. ५४।२९ मो. ५९।१ मा. कृ. २०श. सू. स्प.	सौम्याब्दे निखिलालोकायहसस्या र्घव्यष्टिभिः विवैरिणोधराधीशा विग्रामप्याध्वरतात्पुरी॥
२१ ग्री. १दु.	सं. १९५५ प्रा. १९२० साधारण ग्रहण	शिव. अधिप चन्द्रमा	आश्विन २	श्रा. २५ चं. स्प. ५० २२ मार्ग. १५ मो. चं २८ मो. ५७।१२ मो. २८ स्प. ४८	साधारणाब्देव्यष्टयुद्भयेनारणं मत. मध्यसेपदरा धीशो प्रजा स्तु: स्वस्थचेतसः
२२ ग्री. ३सं.	सं. १९५६ प्रा. १९२१ विरोधक	शिव. ५ चन्द्रमा	सम्भव चैत्र ३ अतमे	ग. चं. २ जे. १५ म्र. स्प. ३१।४८ मो. मार्ग. १५ श. स्प. २३।४ शु. १३९ मो. ४४	विरोधकृद्वत्सरेतु पूरस्यरविरो धिनः सर्वजनान्नृपोऽप्यवमध्य सस्यार्घवृष्टयः
२३ ग्री. ५शै.	सं. १९५७ प्रा. १९२२ परिधावी	कि. शि. ६ अग्नी	० ४	०	भूपाहवोमहारोगोमध्यसस्यार्घव ष्टयः दुःखिनजनवः सर्ववत्सरपरिधा विनः
२४ ग्री. ७पी.	सं. १९५८ प्रा. १९२३ प्रमाथी	शि. ७ अग्नी	० श्रावण ५	१ पह. सू. ३० चं. स्प. ७।।३२ मो. १२।३७	प्रमाथिवत्सरेतत्रमध्यसस्यार्घवृष्टयः प्रजाकथंचिज्जीवंसमात्सर्पाःक्षीतीश्वरा
२५ ग्री. शु२	सं. १९५९ प्रा. १९२४ आनंद	शि. ८ अग्नी	० ६	१ प. चं. चैत्र १५ मो. स्प. ४०।२२ मो. ४२।४८	आनंदाब्देखिलालोकाः सर्वदानन्दचेत सः राजान सुखिनः सर्वेबहुसस्यार्घव ष्टिभिः
२६ ग्री. बु४	सं. १९६० प्रा. १९२५ राक्षस	वि. शिव. अग्नी	७ नास्ती	२ प. चै. शु. १५ ग्रा. स्प. ५६।२३ मो. २।४ पूर्णे. शु. १५ स्प. ३२।२ मो.	स्वस्वकार्येरता: सर्वेसुमध्यस्यार्घवृष्ट यः राक्षसाब्देखिलालोकाः उत्साह निष्क्रयाः
२७ ग्री. सं४	सं. १९६१ प्रा. १९२६ नल.	वि. शिव. अग्नी	८ ज्येष्ठ ८	१ ग. मा. शु. १५ रा. स्प. ४०।३८ मो. ४६।५८	नलाब्देमध्यसस्यार्घवृष्टिभिः प्रवराधरा न्नृपसंक्षोभसंजाताभूरिलस्करभीतयः
२८ ग्री. बु६	सं. १९६२ प्रा. १९२७ पिंगल.	वि. शिव. अश्विनीकुमार	ना.	ग्रहणंनास्ती ३ ग. फा. १५ स्प. २७ मो. ५१।२२ मा.	पिंगलाब्देत्वीतिभीतिर्मध्यसस्यार्घवृ ष्टयः राजाभिविक्रमाक्रानाभुज्यतेपान्तु मेदिनी
२९ ग्री. सं.१	सं. १९६३ प्रा. १९२८ काल	विशी. शिव अश्विनी कुमार	१ ना०	कृ. ३० स्प. ७।१६ मो. १४।२४ मा. १५ म. स्प. २४।२४। मो. ३३।२४	वत्सरेकालयुक्तास्थ्ये सुखिनसर्वजंतवः सती नयापिसस्यालि चतुराणिलया गदा

३० प्रौ. सु.३	स.१९६४ प्रा.१८२९ सिद्धार्थ	वि.शि श्रीम्ब कुमार	११ वैशा.	ग्रहण. नास्ती	सिद्धार्थवत्सरे भूपाः त्वातु वैरास्तथा प्रजा सकलावसुधाभाति बहुसस्या घ वृष्टिभिः ॥
३१ प्रौ. प्रौ०	स.१९६५ प्रा.१८३० रौद्र	१४ शि.वी. श्रीम्बु.	१२ ना०	ग्र.मार्गशु१५ चं.स्प.४८।२६ मो.५१।३०	रौद्राब्देन्नृपसम्भूतु क्षोभक्लेशभागिनः सततं त्वखिलालोकामध्यसस्याघ वृष्टय
३२ प्रौ. शु२	स.१९६६ प्रा.१८।३१ दुर्मति	शि.वी. श्रीम्बु.	१३ भाद्र	१ग्र.ज्ये.शु.१५ चं.स्प.५८।३ मोक्ष.७।४३	दुर्मत्यब्दे खिला भूपालोका दुर्मतयः सदाः तथापि सुखिनसर्वे संग्रामा सति चेदपि
३३ प्रौ. कृ.४	स.१९६७ प्रा.१८३२ दुंदुभि	शि.वी. १६ भग	१४ ना०	१ग्र.का.शु१५ चं.स्प.५३।२७ मो.५६।३७	सर्वसस्ययुता धात्री पालीता धरणीधरैः पूर्वदेशाविनाशः स्यात दुंदुभिवत्सरे
३४ प्रौ. स६	स.१९६८ प्रा.१८३३ रुधिरोद्गारी	शि.वी. १७ भग२	१५ नास्ती	.का.कृ३०.स्प ५८।२६मो.४ ५०।	आहवे निहताः सर्वे भूपा रोगैस्तथा जनाः यथाकथंकिञ्जीवनि रुधिरोद्गारिवत्सरे
३५ प्रौ. कृ३	स.१९६९ प्रा.१८३४ रक्ताक्षी.	शि.वी १८ भग	१६ आषा.	चं.चं.१५सो.स्प मो.५६चं.३०कृ.स्प.२६ मो.३३।२१	५२।८ रक्ताक्षिवत्सरे सस्यवृष्टिः हरिगतमात्र संवसर्वदान्योन्यराजानो रक्तलोचनाः
३६ प्रौ.२ सि२६	स.१९७० प्रा.१८३५ क्रोधी	१९ ना० भग	१७ ना०	फा.१५स्प.३३।२ चं.भा.१५स्प.२४ ६।मो.३२।५६	क्रोधिनाब्दे मध्यवृष्टिः सर्वदेशे विशेषतः संपूर्णा मेनरः सर्वे भूपाः क्रोधपरायणः ॥
३७ प्रौ.३ शु२०	१९७१ प्रा.१८३६ क्षय	शि.वी. २० भग५	१८ ना०	स्प१भा.३०म.स्प. ३०।२८मो.३५। २८भा.१५म.स्प. २५।२१मो.३३।२६	कर्पासे गोधने त्वेक्षमधुसस्य विनाशनं क्षयमाणश्चापि नराजीवति क्षयवत्सरे
३८ प्रौ.५ पौ०	स.१९।७२ प्रा.१८३७ प्रभव	ब्रह्मा १ वि.१	०० ज्येष्ठ	नास्ती.	कश्यपः दैतयश्वाग्निकापञ्चव्याधय श्च विप्रभवाब्दे मदवृष्टिस्तथापि सुखिनो जनाः
३९ प्रौ.० सु२	स.१९७३ प्रा.१८३८ विभव	ब्रह्मा वि.२	१ ना०	ना०	हृष्टनीतिपराभूपा बहुसस्यार्थवृष्टय विभवाब्दे खिलालोका सुखिनः सुविवैरिणः
४० प्रौ.२ कृ४	स.१९।७४ प्रा.१८३९ शुक्ल	ब्रह्मा ३ वि.३	२ आश्वि न.	१चं.श्रावा.शु.१५ खग्रास स्प. ४९।५५मो.५६।२८	शुक्लाब्दे निखिला लोकाः सुखिनः स्वजनैः सह राजानोपश्च निरतापरस्पर जयैरिवणः
४१ प्रौ.४ स६	स.१९७५ प्रा.१८४० प्रमोद.	ब्रह्मा ४ वि.४	३ चै. सभय	ना०	प्रमोदाब्दे प्रमोदत राजानो निखिलाजनः पितरोगा वीतभयाः इति वैरिनाशक
४२ प्रौ.६ कृ१५	स.१९।७६ प्रा.१८४१ प्रजापति	ब्रह्मा ५ वि.५	४	ना०	नचलंत्यखिलालोकास्वस्वमार्गात्कथंचन अब्दे प्रजापतो नूनं बहुसस्यार्थवृष्टयः
४३ प्रौ स३	स.१९७७ प्रा.१८४२ अंगिरा	ब्रह्मा ६ वृष्ण्यन	५ श्रावण	चं.ग्र.वै.शु.१५चं स्प.५८।३ मो.६।४३ श्रा.१५सु.स्प.३३।८	अन्नार्घ भुज्यते प्राप्य जनैः रतिथिभिः सह अंगिराब्दे खिलालोका भूपाश्च कलहोत्सुकाः

सं	ना॰ संवत्	अधि॰ पी॰	अधि मास	सूर्यचंद्रग्रहण	फल
४४ शे॰ ५ ७	सं॰ १९७८ प्रा॰ १८४३ श्रीमुखो॰	बाल रहस्य २	६ ना॰	आश्वि॰ १५ र॰ स्प॰ ४९।३५ मो॰ ५७ ४९ चंद्रग्रहण	श्रीमुखाब्दे खिलाधात्री बहुसस्यार्घसंयुता। अध्वरे निरता विप्रा नीलरोगा विवैरिणः ७
४५ शे॰ १ ८	सं॰ १९७९ प्रा॰ १८४४ भावो॰	अला रहस्य ति ३	७ ना॰	आश्वि॰ ३॰ गु॰ स्प॰ स्प॰ ५।५ मो॰ १०११ ३ अग्रास	भावाब्दे प्रचुरा रोगा मध्यसस्यार्घवृष्टयः राजानो युद्धनिरतास्तथापि सुखिनो जनाः
४६ शे॰ २ ९	सं॰ १९।८० प्रा॰ १८४५ युवा	अला गुरु ४	८ ज्येष्ठ	माघ १५ बुधे खग्रा ५।४० स्प॰ ३२।५८ मो॰ ४१।४८ चंद्रग्र॰	अभूतपयसो गावः सुखिनः सर्वजंतवः सर्वकामक्रियायुक्ता युवाब्दे युवतीजनः ९ ॥
४७ शे॰ ४ १०	सं॰ १९८१ प्रा॰ १८४६ धाता	अला रहस्य ५	९ ना॰	आ॰ १५ गु॰ ५० स्प॰ ४४ ४५ मो॰ ५५ खग्रास मा॰ १५ र॰ स्प॰ ४६।१ मो ५१।३६ चंद्रग्रहण	धात्रवर्षे खिला क्ष्मेशाः सदा धर्मपरायणाः संपूर्णा धरणी भाति बहुसस्यार्घवृष्टिभिः १०
४८ शे॰ ६ ११	सं॰ १९८२ प्रा॰ १८४७ ईश्वर	बाला रुद्र १	१० ना॰	आ॰ १५ भौ दृष्टिनास्ती माघ ३० गु॰ स्प॰ १२।९७ मो॰ १५।३३ सूर्यग्रहण	ईश्वराब्दे खिला नञ्जंतून्धात्री धात्री वसवंदा पोषयत्यतुलैर्वा न्नफलमायेक्षुव्रीहिभिः ११
४९ शे॰ १ १२	सं॰ १९८३ प्रा॰ १८।४८ बहुधान्य	बाला १२ रुद्र	११ वैशा ख॰	०	अनीतिस्तुला वरिर्बहुधान्यवत्सरे विविधैर्धान्यनिचयैः सुसंपूर्णा खिलाधरा १२
५० शे॰ ३ १३	सं॰ १९८४ प्रा॰ १८४९ प्रमाथी	अ॰ इंद्र	१२ ना॰	०	नमुंचति पयोवाहः कुत्रचित्कुत्रचिज्जलमध्यवृष्टिरर्धेन्यूनमब्दे प्रमाथिनि १३
५१ शे॰ ५ सु॰	सं॰ १९८५ प्रा॰ १८५० विक्रम	अ॰ १४ इंद्र	१३ भाद्र पद	अे॰ गु॰ १५।र॰ संभव दृष्टिका॰ ३० सीमे स्प॰ ३६।३७ मो॰ २१।२१ सूर्य॰ चंद्र॰	विक्रमाब्दे धराधीशा विक्रमाक्रांतभूमयः सर्वत्र सर्वदा मेघाश्चवंति प्रचुरं जलं १४
५२ शे॰ ० बा॰ १५	सं॰ १९८६ प्रा॰ १८५१ वृषभ	अ॰ १५ इंद्र	१४ ना॰	वि॰ ३० गु॰ संभ॰ शतऽधिक ग्रहणनास्ती सू॰ चंद्र॰	वृषाब्दे निखिला क्ष्मेशा युध्यंति वृषभा इव विद्याप्रसक्ता विप्रेंद्राः फलं तेसलत मरखान्
५३ शे॰ २ १६	सं॰ १९८७ प्रा॰ १८५२ चित्रभानु	अ॰ १६ अग्नी	१५ ना॰	०	चित्राघे वृष्टिसस्याद्यैर्विचित्रानिखिलाधरा निराकुला खिलाल्लोकाश्चित्रभानो च वत्सरे
५४ शे॰ ४ १७	सं १९८८ प्रा॰ १८५३ सुभानु	अ॰ १७ अग्नी ३	१६ आषा	चै॰ १५ स्प॰ ४७।३ मो॰ ५१ आ॰ १५ स्प॰ ४०।मो॰ ७९ फा॰ १५ स्प॰ २५।मो॰ २३ खग्रास	सुभानुवत्सरे भूमौ क्षेमियाना यावि यद्भाति भार्खि स्यात्वामयेक अनीतिमा

सं.	ना.संवत्	वि. अधि.	अधि. मास	सूर्य.चंद्र ग्रहण ज्ञान.	फल
५५ शे.६ .१७ सं.	सं.१९८९ श.१८५४ तारण	ब्र. १८ अग्नी ३	१७ ना०	भा.१५बुधे.स्प० ४४ मो.५३खग्रा स.चंद्रग्रहण	कश्चिचित्रखिललोकास्तरंति प्रतिपन्नतान्नृपा हुवक्षताद्रोग मैवज्यैस्तारणाब्दके
५६ शे.१ १६	सं.१९९० श.१८५५ पार्थिव	ब्र० अग्नी.	१८ ०	भा.३०सो.स्प.७मो १४।३४फा.३०सभ व.दृशिना०स.२	पार्थिवाब्देतुराजानःसुखिनःसुप्रजान्स्पृंवहुभिफलप्रच्यास्योविविधैन्व्रपयोधरै
५७ शे.३ सं	सं.१९९१ श.१८५६ व्यय.	ब्र.२० अग्नी ५	०१ ज्येष्ठ	आषा१५स्प.२७मो ३५पौ.१५स्प२९मो. ३७खग्रास।४।१८	व्ययाब्देनिखिलालोकानुव्यय पराभ्रशंनीरमतेभुक्तागारयेभ्रंशमतिसर्वदा
५८ शे.४ बु.१	सं.१९९२ श.१८५७ सर्वजित्	विष्णु. त्वाष्ट.	१	पौ.१५बुधे.स्प.३५। ४३मो.४४सूर्यग्र.	सर्वजित्वत्सरेसर्वेजनास्त्रिदशसन्निभाःराजानाविलपंयातिभीम संग्रामभूमिषु २१
५९ शे.० पौ.२	सं.१९९३ श.१८५८ सर्वधारी	विष्णु त्वाष्ट	२ आश्विन	आ.३०स्प.८।४८ मो.१४आ.१५स्प. ४०।८मो.४३।२	सर्वधार्यब्देभूपाःप्रजापालनतत्पराःप्रशांतवैराःसर्वेनवहुसस्यार्थवृष्टयः
६० शे.२ ३सौ	सं.१९९४ श.१८५९ विरोधी	विष्णु. त्वाष्ट	३ संभव	०	विरोधिवत्सरेभूपाःपरस्परविरोधिनःमूरिभूरियिताभूमिभूरिबोरिसमाकुलाः२३

अथाऽयनप्रकरणं

शिशिरपूर्वमृतुत्रयमुत्तरंह्ययनमाहुरहश्चनदामरं।भवतिदक्षिणमन्यऋतुत्रयंनिगदितारजनीमरुतांहि सा१५

टी.शिशिरवसंतग्रीष्मइन३ऋतूमेउत्तरगती सूर्यकीहोतीहैइसलियेइसको उत्तरायणकहतेहैं औरवर्षाशरद्हेमन्तइन तीनोंमेसूर्यकीगतिदक्षिणतरफ होतीहैइसलियेइसकोदक्षिणायनकहतेहैंउत्तरायणमेदेवताओंकादिनहोताहै दक्षिणायनमेदेवतावोंकीरात्रिहोतीहै॥ अयनेशुभाशुभकर्मकहतेहैं॥

श्लो. गृहप्रवेशत्रिदशप्रतिष्ठाविवाहचौलव्रतवधदीक्षाः॥ सौम्यायनेकर्मशुभंविधेयंयद्गर्हितंतत्खलुदक्षिणेच१६

टी. गृहप्रवेशदेवप्रतिष्ठाविवाहचौलव्रतबंधमंत्रग्रहणादिदीक्षाइत्यादि शुभकर्मउदगयनमेंकरनाऔरजोनिषिद्धकर्महैंअभिचारादिकसोदक्षिणायनमेकरना

संक्रांति परत्वे ऋतु माह

मृगादिराशि द्वयभानुभोगात्षट्चर्तवः स्युः शिशिरो वसंतः॥ ग्रीष्मश्चवर्षाचशरञ्च तद्धेमंत नामा कथितश्चषष्टः

टी॰ मकरादि २ राशि सूर्यके भोगनेसे शिशिरादिक ६ ऋतु होतीहैं॥ ॥ ॥

१	मकर	माह	शिशिरऋतु	उत्तरायण	मेष	वसन्त	उत्तरायणगोल
२	कुंभ	फाल्गु			वृष॰		
३	मीन	चैत्र	बसन्तऋतु		मिथुन	ग्रीष्म	
४	मेष	वैशाख			कर्क		
५	वृष	ज्येष्ठ	ग्रीष्मऋतु		सिंह	वर्षा	
६	मिथुन	आषाढ़			कन्या		
८	कर्क	श्रावण	वर्षाऋतु	दक्षिणायन	तुल	शरद	दक्षिणायन गोल
९	सिंह	भादो			वृश्चिक		
१०	कन्या	आश्विन	शरदऋतु		धन	हेमन्त	
११	तुल	कार्तिक			मकर		
१२	वृश्चि॰	मार्गशिर	हेमन्तऋतु		कुंभ	शिशिर	
१३	धन	पौष			मीन		

मतांतरम् राशि

श्लो॰ चैत्रादि द्वि द्वि मासाभ्यां वसन्ताद्यृतवश्च षट्॥ दाक्षिणात्याः प्रगृण्हंति दैवे पित्र्ये च कर्मणि॥

टी॰ चैत्रादिक २ मासमें १ ऋतु इसतरेसे १२ मासमे ६ ऋतु होतेहैं॥ सो दक्षिणदेशमें देव पित्र कर्म प्रसिद्धहैं -

अथमासचतुर्विधिचांद्र सौर सावन कानाक्षत्रेति

श्लो॰ पूर्वराशिं परित्यज्य उत्तरायांति भास्करः सा राशिः संक्रमाख्यास्यान्मासस्त्वयनहायने

टी॰ पूर्वराशिको छोड के उत्तरराशिमें सूर्यका जाना उसका नाम संक्रांतीहै सो सन्क्रांति मेषादि १२ होतीहै उसीको सौरमास कहतेहैं २ मास

मासश्चैत्रोऽथवैशाखोज्येष्ठआषाढसंज्ञक ॥ ६ । छ
ततस्तुश्रावणोभाद्रपदोऽथाश्विनसंज्ञक ॥ छ ॥
कार्तिकोमार्गशीर्षश्चपौषोमाघोऽथफाल्गुन ॥ छ
दर्शावधिंमासमुपैतिचांद्रःसौरंतथाभास्कर राशिभोगात्
त्रिंशद्दिनंसावनसंज्ञमार्यानाक्षत्रमिंदोर्भगणभ्रमाच्च २
सौरेकार्येविवाहादिग्रहचारादिकंतथा व्रतयज्ञादिकं
चांद्रेमासेपरिणयकचित्॥चांद्रस्तुद्विविधामासोदर्शा
न्तपूर्णिमांतिगः॥दैवार्थेपौर्णिमांतिगः दैवार्थेपौर्णमास्यं
तदर्शांतःपित्र्यकर्मणि॥सावनेगर्भसूत्यादिनाक्षत्रेमेघगर्भकं
शेषकार्येत्विमे मासाविज्ञेयाकुविदस्तथा॥ ॥ ॥

टी॰ शुक्लप्रतिपदासेअमावास्यापर्यन्तजोमासउसकोचान्द्रकहतेहैंऔरसूर्य१
राशिकोभोगके२राशिमेजानसेसौरमासकहतेहैंऔर३०दिनकामासजोहै
उसकोसावनकहतेहैंऔर२७नक्षत्रकोचन्द्रकेभोगनेसेनाक्षत्रमासजनना।

मासोंकेनामदेवता॥ मधुस्तथामाधवसंज्ञकश्चशुक्रः
शुचिश्चाथनभोनभस्य॥तथैवऊर्जश्चसहासहस्य
स्तपस्तपस्यश्चयथाक्रमेण॥अरुणोमाघमासेतुसूर्यो
वैफाल्गुनेतथा॥चैत्रमासेतुवेदांगोभानुर्वैशाखएवच॥
ज्येष्ठमासेतथाचेन्द्रआषाढेतपतेरविः॥ गभस्तिःश्राव
णे मासे यमो भाद्रपदेतथा॥२३॥ सुवर्णरेताश्वयु
जिकार्तिकेचदिवाकरः॥ मार्गशीर्षेतथेमित्रःपौषे
विष्णुःसनातनः॥२४॥इत्येतेद्वादशादित्यामासनामा
न्यनुक्रमात्॥केशवंमार्गशीर्षेतुपौषेनारायणंविदुः॥माध
वंमाघमासेतुगोविंदमथफाल्गुने॥चैत्रेविष्णुंतथावै
शाखेमधुसूदनं॥२६॥त्रिविक्रमंतथाज्येष्ठेआषाढेवाम
नंविदुः॥श्रावणेश्रीधरंविद्धिहृषीकेशंतुभाद्रके॥२७॥आ
श्विनेपद्मनाभंचऊर्जेदामोदरंविदुः॥ मार्गशीर्षेविशा
लाक्षीपौषेलक्ष्मीश्चदेवता॥२८॥माघेतुरुक्मिणी पौ

काफाल्गुने धात्रिनामिका॥ चैत्रेमासिरमादेवी वैशाखे मोहिनीतथा॥२९॥ पद्माक्षीज्येष्ठमासेतु आषाढेकमलेति च॥ कांतिमतीश्रावणेच भाद्रेतु अपराजिता॥३०॥ पद्मावती आश्विनेतु राधादेवीतिकार्त्तिके॥ ३१॥ छ॥ छ॥

टी॰ द्वादशमासकेनाम और १२ मासके १२ आदित्य और १२ मासके १२ देवता और १२ मासके १२ देवीकेनाम नीचेकोष्टकमेदेखनेसे स्पष्ट होंगे ककचये॥

	मासनाम	मासनाम	सूर्य	देवता	देवी
१	चैत्र	मधू	वेदांग	विष्णु	रमा
२	वैशाख	माधव	भानु	मधुसूदन	मोहिनी
३	ज्येष्ठ	शुक्र	इंद्र	त्रिविक्रम	पद्मावती
४	आषाढ	शुची	रवि	वामन	कमला
५	श्रावण	नभ	गभस्ति	श्रीधर	कीर्तिमती
६	भाद्रपद	नभस्य	यम	हृषीकेश	अपराजिता
७	आश्विन	इष	सुवर्णरेता	पद्मनाभ	पद्मावती
८	कार्तिक	ऊर्ज	दिवाकर	दामोदर	राधा
९	मार्गशीर्ष	सह	मित्र	केशव	विशालाक्षी
१०	पौष	सहस्य	विष्णु	नारायण	लक्ष्मी
११	माघ	तप	अरुण	माधव	रुक्मिणी
१२	फाल्गुन	तपस्य	सूर्य	गोविंद	धात्री

वारपरत्वेमासफलमाह॥ पंचार्कवासरेरोगाः पंचभौममहद्भयं॥ पंचार्किवाराद्दुर्भिक्षंशेषावाराशुभप्रदाः ३२॥ छ॥ छ॥

टी॰ एकमासमें ५ रविवार होयतो जनकोरोगहोय और ५ मंगलपड़ेतो महान्भय

वक्ष्याथसुमंगलाथसवला प्रोक्ता खलाश्रीमतिकीर्तिर्मित्रपदातथावलवतिचोग्राक्रमाद्धर्मिणीनदाख्याहियशोवलीजयकरीक्रूराहिसौम्यातिथिर्नाम्नातुल्यफलाक्रमात्प्रतिपदौदर्शांत्यमासंज्ञकः॥ नंदाशिनेसौम्यसुतेचभद्राकुजेकिंचमत्ताचरिक्ता पूर्णागुरौतात्वमृताकुजार्केसितास्वजैतेचगुरौसनास्तु॥ टी॰ इनश्लोकोंकाटीका चक्रमेदेखलेना॥

प्राप्त होय और पांच प्रानि पडे तो दुर्भिक्ष होय शेष रहे जो वार सो धूप पडतो शुभ जानो

पक्ष ॥ पूर्वापरौ मासदलं हि पक्षौ पूर्वापरौ तौ सितनीलसंज्ञौ ॥ पूर्वस्तु दैवस्त्वपरश्च पैत्र्यः केचित्तु कृष्णासित पंचमीतः आदौ शुक्लः प्रवक्तव्यः केचित्कृष्णोपि मासके ॥ ३४ ॥ १

टी॰ मासमे पूर्व दल और परदल इसको पक्ष कहते हैं उसमें पूर्व दल को शुक्लपक्ष और परदल को कृष्णपक्ष कहते हैं अर्थात् शुक्ल प्रतिपदा से पौर्णिमापर्यंत शुक्लपक्ष और कृष्ण प्रतिपदा से अमावास्यापर्यंत कृष्णपक्ष होता है उसमें पूर्वपक्ष माने शुक्लपक्ष जो है सो देवताका है और परपक्ष माने कृष्णपक्ष जो है सो पितरों का है किसी आचार्य के मत से शुक्ल पंचमी से कृष्ण पंचमी तक शुक्लपक्ष और कृष्ण पंचमी से शुक्ल पंचमी तक कृष्ण पक्ष होता है उसमे प्रथम शुक्ल पक्ष नन्तर कृष्ण पक्ष उसको अमांत मास कहना किसी के मत से कृष्ण पक्ष के नन्तर शुक्ल पक्ष सो पौर्णिमांत मास जानना ॥ ५ ॥ ५ ॥

अथ तिथिप्रकरणं ॥ मासभाद्दिनभं यावद्गणयेन्नावदेव तु ॥ यावंति गणनाज्ज्ञातिता वत्यस्तिथयः क्रमात् ॥ १

टी॰ मासनक्षत्र से दिननक्षत्र तक गिनके जो संख्या होय वही संख्या तिथी की जानना परंतु पौर्णिमांत मास से गिनना मासनक्षत्र चैत्रादिक्रम से चित्रा विशाखा ज्येष्ठा पूर्वाषाढा श्रवण पूर्वाभाद्रपदा अश्विनी कृतिका मृगशिर पुष्य मघा पूर्वाफाल्गुनी ये १२ नक्षत्र हैं ॥ अथ तिथिफलानि ॥

प्रतिपत्सिद्धिदा प्रोक्ता द्वितीया कार्यसाधिनी ॥ तृतीयारोग्यदा चैव हानिदा च चतुर्थिका ॥ शुभा तु पंचमी ज्ञेया षष्ठिका त्वशुभा मता ॥ सप्तमी तु शुभा ज्ञेया अष्टमी व्याधिनाशिनी ॥ मृत्युदा चैव नवमी द्रव्यदा दशमी तथा ॥ एकादशी तु शुभदा द्वादशी सर्वसिद्धिदा ॥ त्रयोदशी सर्वसिद्धा ज्ञेया चोग्रा चतुर्दशी ॥ पुष्टिदा पौर्णिमा ज्ञेया त्वमावास्या शुभा तिथिः ॥ टी॰ प्रतिपदादि षोडश तिथी का शुभाशुभ फल अधस्थित चक्र देख स्वामी ॥ वन्हिर्विरिंचो गिरिजा गणेशः फणिर्विशाखो ॥ नेसे मालूम होगा दिनकृन्महेशः ॥ दुर्गांतको विश्व हरिः स्मरश्च शर्वः शशी चेति पुराणदृष्टाः ॥ अमायाः पितरः प्रोक्ता स्तिथीनामधिपाः क्रमात् ॥ ४३ ॥

ग्राम होय और पांच ग्रानि पड़े तो दुर्भिक्ष होय शेष रहे जो वारसो पृ पड़े तो शुभ जाना

पक्ष॥ पूर्वापरौ मासदलं हि पक्षौ पूर्वापरौ तौ सितनीलसं
ज्ञौ॥ पूर्वस्तु दैवस्त्वपरस्तु पैत्र्यः केचित्तु कृष्णोसितपंचमीतः
आदौ मुख्यः प्रवक्तव्यः केचित्कृष्णोपि मासके॥ ३४॥१

टी॰ मासमें पूर्वदल और परदल इस्को पक्ष कहते हैं उसमें पूर्वदल को शुक्ल प
क्ष और परदल को कृष्ण पक्ष कहते हैं अर्थात् शुक्ल प्रतिपदा से पौर्णिमापर्यं
त शुक्ल पक्ष और कृष्ण प्रतिपदा से अमावास्यापर्यंत कृष्ण पक्ष होता है उसमें
पूर्व पक्ष माने शुक्ल पक्ष जो है सो देवताका है और परपक्ष माने कृष्ण पक्ष जो है
सो पितरों का है किसी आचार्य के मत से शुक्ल पंचमी से कृष्ण पंचमी तक शु
क्ल पक्ष और कृष्ण पंचमी से शुक्ल पंचमी तक कृष्ण पक्ष होता है उसमें प्रथम
शुक्ल पक्ष नन्तर कृष्ण पक्ष उसको अमांत मास कहना किसी के मत से
कृष्ण पक्ष के नन्तर शुक्ल पक्ष सो पौर्णिमांत मास जानना॥ ५॥ ५॥

अथ तिथिप्रकरणं॥ मासभाद्यावदुर्भं यावद्गणयेत्ताव दे
वतु॥ यावंति गणनाद्भानि तावत्यस्तिथयः क्रमात्॥ १

टी॰ मासनक्षत्र से दिननक्षत्र तक गिनके जो संख्या होय वही संख्या तिथी १
की जानना परंतु पौर्णिमांत मास से गिनना मासनक्षत्र चैत्रादिक्रम से चि
त्रा विशाखा ज्येष्ठ पूर्वाषाढा श्रवण पूर्वाभाद्रपदा अश्विनी कृतिका मृग
शिर पुष्य मघा पूर्वाफाल्गुनी ये १२ नक्षत्र हैं-॥ अथ तिथिफलानि॥

प्रतिपत्सिद्धिदा प्रोक्ता द्वितीया कार्यसाधिनी॥ तृतीयारोग्य
दा चैव हानिदा च चतुर्थिका॥ शुभा तु पंचमी ज्ञेया षष्ठिका त्व
शुभा मता॥ सप्तमी तु शुभा ज्ञेया अष्टमी व्याधिनाशिनी॥ मृत्युदा
चैव नवमी द्रव्यदा दशमी तथा॥ एकादशी तु शुभदा द्वादशी सर्वसि
द्धिदा॥ त्रयोदशी सर्वसिद्धा ज्ञेया चोग्रा चतुर्दशी॥ पुष्टिदा पौर्णि
मा ज्ञेया त्वमावास्या शुभा तिथिः॥ टी॰ प्रतिपदादि षोडश ति
थी का शुभाशुभ फल अथ स्थिरचक्र देख स्वामी॥ वन्हिर्विरिंचो गि
रिजा गणेशः फणिर्विशाखो॥ नेसे मालूम होगा दिन कृन्म हेश्वरः॥
दुर्गान्तको विष्णु हरिः स्मरश्च शर्वः शशी चेति पुराणदृष्टाः॥
अमायाः पितरः प्रोक्ता स्तिथीनामधिपाः क्रमात्॥ ४३॥

टी॰ पूर्वोक्त षोडश तिथीके १६ देवता भी चक्रमें स्पष्ट होंगे ॥ अथ संज्ञा ॥

नंदाभद्राचजयाचरिक्ता: पूर्णेति सर्वास्तिथय: क्रमात्स्यु:
कनिष्ठमध्येष्टफलाश्च शुक्ले कृष्णेभवन्त्युत्तममध्यहीना।

टी॰ अब तिथीकी संज्ञा और शुक्लकृष्णभेद सो फलभेदभी चक्रमें देखना।

पालन॥ कूष्माण्डवृहतीफलानिलवणं वर्ज्यं तिलाम्लं
तथा तैलंचामलकंदिवप्रसवताप्यूर्ध्वे कपालंत्रकम्
निष्पावांश्च मसूरिकाफलमथो वृन्ताकसंज्ञं मधूद्युतं
स्त्रीगमनं क्रमात्प्रतिपदादिष्वेव मा षोडश ॥४५

टी॰ षोडश तिथीमें जोजो पदार्थ वर्जकरना सो भी चक्रमें स्पष्ट होगा इसीको तिथिपाल

ति॰	ना॰ तिथि	व्यवहार तिथि	स्वामी	संज्ञा	शुक्ल	कृ॰	फल	म॰ योग	सिद्धी	हुताश	तिथिपालक	शून्यतिथी	रध्रघटी	तिथि न॰
१	वृद्धि	प्रतिपदा	अग्नी	नंदा	अशु	शु॰	सिद्धी	र॰ मं॰	शुक्र	०	कोहडा	भादाक॰	०	उत्रा
२	सुमंगला	द्वितीया	ब्रह्मा	भद्रा	अ॰	शु॰	कार्यकृत	चं॰ शु	बु॰	०	वनभरा	माघ्रा॰	०	अनु॰
३	सबला	तृतीया	गौरी	जया	अ॰	शु॰	आरोग्य	बु॰	मं॰	०	मीन॰	आषा॰ कृ॰ शु फा॰ कृ॰	०	उ॰३
४	रवला	चतुर्थी	गणेश	रिक्ता	अ॰	शु॰	हानि॰	गुरु	शनि	०	तिल	पौ॰ कृ॰ शु फा॰ कृ॰	८	०
५	श्रीमति	पंचमी	सर्प	पूर्णा	अ॰	शु॰	शुभ॰	शनि	गुरु	चं॰	खट्टा	पौ॰ कृ॰ शु॰ फा॰ कृ॰		मघा
६	कीर्ति॰	षष्ठी	स्कंध	नंदा	म॰	म॰	व्याधिना	र॰ म॰	शुक्र	मं॰	तेल	आश्वा॰ कृ॰ मा॰ शु॰	९	रो॰
७	मित्रपदा	सप्तमी	सूर्य	भद्रा	म॰	म॰	मृत्युदा	च॰ शु॰	बुध	बु॰	आवला	म॰ कृ॰ शु आश्वा॰ शु॰	०	ह॰ मू॰
८	वलावती	अष्टमी	शिव	जया॰	म॰	म॰	धनदा	बु॰	मं॰	बृ॰	नारियल	श्रा॰ कृ॰ शु चै॰ वै॰ मृ॰	१४	पू॰ भा
९	उग्रा	नवमी	दुर्गा	रिक्ता	म॰	म॰	शुभा॰	गुरु	शनि	शु॰	लउवा	चै॰ व॰ शु	२५	कृ॰
१०	धर्मणी	दशमी	यम	पूर्णा	म॰	म॰	सर्वसिद्धी	शनि	गुरु॰	श॰	चिवडा	श्र॰ व॰ शु	०	०
११	नंदा	एकाद॰	विश्वे	नंदा	शु	अशु॰	सर्वसिद्धी	र॰ मं	शुक्र	सू॰	सेम	श्र॰ व॰ शु	०	रो॰
१२	यशोवला	द्वादशी	विष्णु	भद्रा	शु॰	अशु॰	उग्र	च॰ शु॰	बुध॰	०	मसूर	वै॰ व॰ शु	१०	श्ले॰
१३	जयकरा	त्रयोदशी	मदन	जया	शु	अशु॰	पुष्टिदा	बु॰	मंगा॰	०	भंटा	ज्येष्ठ॰ शु॰	०	स्वा
१४	क्रूरा	चतुर्दशी	शिव	रिक्ता	शु॰	अशु	अशुभ	गुरु॰	श॰	०	सहत	ज्येष्ठ॰ कृ॰ शु॰	५	०
१५	सौम्या	पौर्णिमा	शशी	पूर्णा	पित्र	अशु	०	शनि	गु॰	०	जुवार	०	०	०
१६	दर्श	अमावस्या	पित्र	शिनी	शु॰	सिवकर्म	०	०	०	०	मैथुन	०	०	०

तिथिकार्याणि॥ नंदासु चित्रोत्सववास्तु तंत्रक्षेत्रा

दिकुर्वीन्नतथैवनृत्यं॥ विवाहस्त्वाशकटाध्वयानेभद्रा सुकार्याण्यपिपौष्टिकानि॥ जयासुसंग्रामवलोपयोगी कार्याणिसिध्यंत्यपिनिर्मितानि॥ रिक्तासुविद्विषधघात सिद्धिर्विषादिशस्त्रादिचयांतिसिद्धिं॥ पूर्णासुमांगल्य। विवाहयात्रासपौष्टिकेशांतिककर्मकार्यं॥ सदैवदर्शे॥ पितृकर्मचोक्तंमान्यांविदध्याच्छुभमंगलानि॥४८॥॥

टी॰ नंदातिथीमें १।६।११ आनंदादिककर्म देवताओंका उत्साहकर्म गृहसंबंधीकर्म क्षेत्रसंबंधीनेमरदेनगानावजाइत्यादिकृत्यकरना और भद्रातिथीमें २।७।१२ विवाह आभूषणगाडीरथादिककरनाचढनामार्गबनावना पौष्टिककृत्यकरना और जयातिथीमें ३।८।१३ युद्धसेनाके उपयोगतलवारबंदूकवगैरेबनावनेसे कार्य सिद्धहोताहै और रिक्तातिथीमें ४।९।१४ किसीकानाशकरना अथवा अभिचारादिसिद्धि विषशस्त्रादिकर्मकरनेसे सिद्धिहोगी पूर्णतिथीमें ५।१०।१५ मंगल कार्य विवाह यात्रामानेप्रवासादिकजाना पौष्टिक शांतिककर्म करना और अमावास्यामें सदा पितृ कार्य करना मंगल कार्य करना नहीं—

अथवारमाह ॥

आदित्यश्चंद्रमाभौमोबुधश्चाथबृहस्पतिः॥ शुक्रःशनैश्चर श्चैववासराःपरिकीर्तिताः॥ शिवोदुर्गागुहोविष्णुर्ब्रह्मेन्द्रकाल संज्ञकाः॥ सूर्यादीनांक्रमादेतेस्वामिनःपरिकीर्तिताः॥ गुरुश्चंद्रो बुधःशुक्रःशुभावाराःशुभेस्मृताः॥ क्रूरास्तुक्रूरकृत्येषुग्राह्या भौमार्कसूर्यजाः॥ सूर्यश्चरस्थिरश्चंद्रोभौमश्चोग्राबुधस्सम॥ लघुर्जीवोमृदुशुक्रःशनिस्तीक्ष्णस्समीरिताः॥

दिशाकेस्वामीकहतेहैं

रविःशुक्रोमहीसूनुःस्वर्भानुर्भानुजोविधुः
बुधोबृहस्पतिश्चेतिदिशामीशास्तथाग्रहाः

टी॰ पूर्वदिशाकास्वामीरविकहिये सूर्यहै आग्नेयीदिशाकाशुक्र दक्षिणकामंगल नैऋत्यका राहु पश्चिमदिशाकाशनी वायव्यदिशाकाचंद्र उत्तरदिशाकाबुध ईशान्यदिशाकास्वामीबृहस्पतीयेआठोंदिशोंके स्वामीहैं॥

ग्रहोंकीजातीकहतेहैं॥ब्राह्मणौजीवशुक्रौचक्षत्रियौभौमभास्करौ॥सोमसौम्यौविप्रौ शोद्रौ राहुमंदौनंत्यजौ॥५०

टी॰ नवग्रहोंमें वृहस्पतिशुक्र येब्राह्मण हैं और मंगल सूर्य क्षत्रिय हैं और चंद्र बुध विप्र हैं और राहु शनि ये अंत्यज हैं राहु केतु तुल्य केतु भी अंत्यज जानना

नवग्रहोंके रक्तपीतादि वर्ण कहते हैं॥रक्तावंगारकादित्यौश्वेतौशुक्रनिशाकरौ॥गुरुसौम्यौपीतवर्णौशनिराहू सितौ शुभौ॥५१॥

टी॰ मंगल सूर्य येलाल वर्ण हैं शुक्र चंद्र श्वेत वर्ण हैं वृहस्पती बुध पीत वर्ण हैं शनि राहू असित भाने श्याम वर्ण हैं केतु का श्याम ही वर्ण जानना-

वारमें जोजो काम करने कोसो कहते हैं

राज्याभिषेकोत्सवयानसेवा गोवन्हिमंत्रौषधशस्त्रकर्म॥ सुवर्णताम्रौर्णिकचर्मकाष्ठसंग्राम पण्यादिरवौविदध्यात्॥

टी॰ राज्याभिषेक नाना प्रकारके महोत्सव असवारीपरबैठना अथवा यात्रा करना राजसेवा गौ बैल इत्यादि कौ कालेना देना वन्हि कर्न हवनादि मंत्र शास्त्र का अध्ययन प्रयोगादिक औषध देना शास्त्र कर्म कहिये तलवार कटार इत्यादिकोंका धारणकरना सोने का अलंकार बनावना धारणकरना तांबेकी वस्तु का लेना औ देना ऊनकी वस्तू चर्मकी वस्तू काष्ठादि वस्तू सिंहासन पादुका वगैरे का धारणकरना युद्ध प्रसंग रोजगार इत्यादि ये सब कर्म रविवार को करनेसे सिद्ध होते हैं॥

सोमवार॥शंखाब्जमुक्तारजतेक्षुभोज्यस्त्रीवृक्षकृष्यंबु विभूषणाद्यः॥गीतंक्रतुक्षीरविकारशृंगीपुष्पावरारंभणमिंदुवारे

टी॰ शंख कमल मोती चांदी ऊख भोज्यपदार्थ स्त्रीभोग वृक्ष तृण जल अलंकारादि गाना बजाव नायज्ञ दधि घृतादि गोमहिष्यादि पुष्प वस्त्र इत्यादिकर्म सोमवारमें करना— ॥ ॥ मंगलवार फलं॥

भेदानृतस्तेयविषाग्निशस्त्रवध्याभिघातादवशाठ्यदंभान्॥सेनानिवेशाकरधातुहेमप्रवालरत्नानिकुजेविदध्यात्

टी॰ बिगाड़करना असत्यसंबंधी कर्म चोरी विषादिकर्म अग्नि कर्म शस्त्र कर्म वधन शत्रु छ कपट दंभ सेना रखना खान खोदना धातु सुवर्ण मूंगा इत्यादिक कृत्य करना

बुधवार॥नैपुण्यपुण्याध्ययनंकलाश्चशिल्यादिसेवालिपिलेखनानि॥धातुक्रियाकांचनयुक्तिसंधिव्यायामवादाश्चबुधेविधेया

टी॰ चातुर्य पुण्य अध्ययन ६४ कला शिल्पशास्त्र सेवा लिखना तसवीर खींचना धातुसंबं धी क्रिया सुवर्ण संबंधी कर्म मित्रता कर्म मल्लविद्या वादये कर्म बुधवारको करना

गुरुवार ॥ धर्मक्रियापौष्टिकयज्ञविद्यामांगल्यहेमांबरवेश्मयात्रा रथाश्वभैषज्यविभूषणादिकार्यं विदध्यात्सुरमंत्रिवारे ॥

टी॰ ॥ धर्म करना पौष्टिक यज्ञ यागादि विद्याभ्यास मंगल कार्य सुवर्ण वस्त्र गृह संबंधी कर्म यात्रा रथ अश्व औषध अलंकारादि ये कर्म बृहस्पति वार को करना श्रेष्ठ ॥

शुक्रवार ॥ स्त्रीगीतशय्यामणिरत्नगंधवस्त्रोत्सवालंकरणादि कर्म । भूपण्यगोकोशकृषि क्रियाश्च सिध्यंति शुक्रस्य दिने समस्ता ॥

टी॰ ॥ स्त्री गायन शय्या हीरा मणी गंध वस्त्र उत्सव अलंकारादि पृथ्वी संबंधि कर्म गौ बैल खजाना खेती इत्यादि कर्म जो है सो शुक्र वार कों करना ॥ —

शनिवार ॥ लोहाश्मसीसत्रपुशस्त्रदासपापानृतस्तेयविषास्त्र विद्यं ॥ गृहप्रवेशद्विपबंधदीक्षास्थिरंच कर्मार्कसुतेह्नि कुर्यात् ॥

टी॰ ॥ लोहा पत्थर सीसा रांग शस्त्र भाला इत्यादि दास पाप असत्य चोरी विष अस्त्र निकालना गृहप्रवेश हस्तिबंधन उपदेश स्थिर कर्म इत्यादि कर्म शनिवारकों करना

वारके देवता अधिदेवता ॥ सूर्यादितः शिवशिवा गुह विष्णु कैंद्रकालाः क्रमेण पतयः कथिता ग्रहाणां ॥ वह्नी वभूमि हरि शक्र शची विरिंचिस्तेषां पुनर्मुनिवरैरधिदेवताश्च ॥

टी॰ शिवपार्वती षडानन विष्णु ब्रह्मा इंद्र काल ये ७ क्रमसे सूर्यादिवारोंकी देवता जानना और अग्नि जल भूमि हरि इंद्र इंद्राणी ब्रह्मा ये ७ सूर्यादिवारके क्रमसे अधिदेवता ७ जानना

वारदोषाः ॥ नवारदोषाः प्रभवंति रात्रौ देवेज्य दैत्येज्य दिवाकराणां ॥ दिवा शशांकार्किजभूसुतानां सर्वत्र निंद्यो बुधवार दोषः

टी॰ गुरुवार शुक्रवार रविवार इन ३ नो वारोंका रात्रिमें दोष नहीं है और सोम शनि मंगल इन तीनोंका दिनको दोष नहीं मानना और बुधवारको सर्वत्र निंद्य जानना ॥ —

सामान्यवारफलं ॥ सोमसौम्यगुरुशुक्रवासराः सर्वकर्मसु भवंति सिद्धिदाः ॥ भानुभौमशनिवासरेषु च प्रोक्तमेव खलु कर्म सिध्यति

टी॰ ॥ सोम बुध गुरु शुक्र इन वारोंमें सर्व कर्म सिद्धि जानना रवि मंगल शनि इन वारोंमे उक्त कार्य मात्र की सिद्धि जानना ॥ ॥ तैलाभ्यंग

रविस्तापं कांतिमिंदुर्धरानिशा श्री भूमितनयो मृतिं लक्ष्मीं

सौम्यः सुरपतिगुरुर्वित्तहरणं॥ विपत्तिं दैत्यानां गुरुरखिलभोगा नगमनं नृणां॥ तैलाभ्यंगात्सपदि कुरुते सूर्यतनयः॥ ६१॥

टी॰ रविवारको तैलाभ्यंग सन्ताप प्रद है सोमको कांतिप्रद मंगल को मृत्युप्रद बुधको लक्ष्मीप्रद गुरुवारको वित्तनाशक शुक्रको तेल लगानेसे विपति आती है शनिवारको तेल लगाना संपत्तिका करना है—॥

वस्त्रपरिधानं॥ जीर्णं रवौ सततमंबुभिरार्द्रमिन्दौ भौमे शुचे बुधदिने च भवेद्धनाय॥ ज्ञानाय मंत्रिणि भृगौ प्रियसंगमाय मंदे मलाय च नवांबरधारणं स्यात्॥ ७०॥

टी॥ रविवारको नूतनवस्त्र परिधान करनेसे जल्दी जीर्ण होगा सोमवारको नूतनवस्त्र परिधान करनेसे अशौच निमित्त स्नानके जलसे सदा आर्द्र रहेगा मंगलके रोज परिधान करनेसे शोक प्रद होगा बुधवारको धन प्राप्ति गुरुवारको ज्ञान प्राप्ति शुक्रवारको मित्र प्राप्ति शनिवारको परिधान करनेसे मलिन रहेगा

श्मश्रुकर्म॥ भानुर्मासं क्षपयति तथा सप्तमार्त्तण्ड सूनुर्भौमिश्चाष्टौ वितरति शुभं बोधनः पंचमासान्॥ सप्तैवेंदुर्दशसुरगुरुः शुक्र एकादशेति ध्नन्त्यर्गगप्रभृति मुनयः क्षौरकार्ये मनूनं

टी॥ रविवारको क्षौर करनेसे १ महिना आयुष्य नाश जानना सोमवारको क्षौर करनेसे ७ महिना आयुष्य वृद्धि जानना मंगलको आठ महिना आयुष्य नाश बुधवारको ५ महिना आयुष्य वृद्धि गुरुवारको १० महिना आयुष्य वृद्धि शुक्रवारको ११ महिना आयुष्य वृद्धि शनिवारको ७ मास आयुष्य नाश जानना यह गर्ग लल्ल नारद प्रभृति मुनियोंने क्षौरकार्यमे लिखा है—॥ ॥ विद्यारंभ॥

विद्यारंभः सुरगुरुसितज्ञेष्वभीष्टार्थदायी कर्त्तुश्चायुश्चिरमपि करोत्यंशुभान्मध्यमोत्र॥ नीहारांशौ भवति जडता पंचता भूमिपुत्रे छायासूनावपि च मुनयः कीर्त्तयंत्येवमाद्या

टी॰॥ गुरु शुक्र बुध इन ३ वारोंमें विद्यारंभ करनेसे उत्तम विद्या प्राप्त होती है और चिरंजीवी होता है रविवार मध्यम है सोमवारको करनेसे बुद्धि जड होती है मंगल शनीको मरण होता है यह नारद गर्गादि मुनियोंने कहा है—॥

वारोंकोनाम	सू	चं	मं	बु	वृ	शु	श	रा
दशा	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	अग्निकोण	पश्चिम	नैऋत
जाति	क्षत्री	वैश्य	क्षत्री	वैश्य	ब्राह्मण	ब्राह्मण	अंत्यज	भीलवां
वर्ण	रक्त	श्वेत	रक्त	पीत	पीत	श्वेत	कृष्ण	कांजी
पति	शिव	पार्वती	स्कंद	विष्णु	इंद्र	ब्रह्मा	यम	काल
देवता	अग्नि	जल	पृथ्वी	हरि	इंद्र	इंद्राणी	ब्रह्मा	मृत्यु
विचारयोग्यसमय	८ प्रहर	२ रात्रि ४ प्रहर	८ प्रहर	८ प्रहर	८ प्रहर	[illegible]	प्रहर	०
दोषादोष	रात्रिदोष	दिनदोष	दिन दोष	रात्रिदिन दोष	रात्रिदोष	रात्रिदोष	दिन दोष	
क्षौर	उक्तकर्म सिद्धि	सर्वसिद्धि	उक्तकर्मसिद्धि	कर्मसिद्धि	कर्मसिद्धि	कर्मसिद्धि	उक्त कर्म	०
तैलाभ्यंग	ज्वरप्रद	कांतिप्रद	मृत्युप्रद	लक्ष्मीप्रद	वित्तनाश	वित्तप्रद	संपतिप्रद	०
वस्त्रपरिधान	जीर्णहोइ	सदाभिजार	शोकप्राप्ति	धनप्राप्ति	ज्ञानप्राप्ति	इष्टसन्मान	मलिन रहे	०
प्रसूतकर्म	महीनाक स्नान	७ महीना स्ना॰ श्रेष्ठ	८ मास स्ना॰ ना	४ महीना स्ना॰ श्रे॰	१० महीना स्ना॰ श्रे॰	११ महीना स्ना॰ श्रे॰	७ महीना स्ना॰	० ना
विद्यारंभ	मध्यम	जडत्व	मृत्यु	इन तीन वारों में आयु की वृद्धि और अर्थ सिद्धि जानिये ॥			मृत्यु	०

नक्षत्रपरिज्ञानमाह

तिथिघ्नमासस्तिथियुक्तविधूनो भशेषितः स्यादुडुप्रोयसंख्या।
मासस्तु शुक्लादित एव बोध्यः कृष्णे द्विहीनं सुनयो वदंति॥

टी॰। चैत्रादिगतमासदूनाकरकै उसमें शुक्लादिमान से तिथि मिलावना फेर १ कम करके उसमें २७ का भाग लेना जो शेष बचे वह नक्षत्र जानना परंतु कृष्णपक्ष में २ कम करके २७ का भाग लेके शेष बचे वह नक्षत्र जानना यह विशेष वसिष्ठादि मुनियों ने कहा है।

अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी मृगः॥ आर्द्रा पुनर्वसुः
पुष्यस्ततः श्लेषा मघा ततः॥१॥ पूर्वाफाल्गुणिका तस्मा

उत्तराफाल्गुणीततः॥ हस्तचित्रातथास्वातीविशाखातद
नंतरम्॥ अनुराधाततोज्येष्ठाततोमूलंनिगद्यते॥ पूर्वाषाढो
त्तराषाढस्त्वभिजित्श्रवणस्ततः धनिष्ठाशततारारव्यंपूर्वे
भाद्रपदाततः॥ उत्तरभाद्रपदश्चैवरेवत्येतानिभानिच

नक्षत्रपरिज्ञान शुभाशुभनक्षत्रमाह

अश्विनीतुशुभाप्रोक्ताभरणीनाशकारिणी॥ कार्य
घ्नीकृत्तिकाचोक्तारोहिणीसिद्धिदाबुधै॥ ५॥
मृगःशुभःशुभ आर्द्रामध्यमस्तुपुनर्वसुः॥ पुष्यःशुभः
सार्पमघापूर्वाश्लेषस्तुनाशयमृत्युद॥ उत्तराहस्तचित्रा
स्तुविद्यालक्ष्मीशुभप्रदाः॥ स्वातीविशाखोत्वशुभेमैत्रंस
र्वार्थसिद्धिदं॥ ज्येष्ठामूलंक्रमात्तोयंक्षयनाशार्थहानिदं॥ विश्व
ब्रह्मदैश्रावणस्तुश्रियोवित्तसुखप्रदा॥ वासवंवारुणंशौवंशुभंभद्रंभति
प्रदं॥ उत्तराभाद्रपदंरेवतीकाश्यपी नक्षत्रोंकेस्वामी
भेशाद्दस्त्रयमाग्निकंद्रगिरिशाःप्रोक्ताअदित्यंगिराःसर्पाः
कव्यभुजोभगोर्यमसवित्वष्टाह्वयामारुतः॥ इंद्राग्नित्वय
मित्रइंद्रनिर्ऋतिनीरंवविश्वेविधिर्वैकुंठोवसुपाशपजैक
चरणाहिर्बुध्न्यपूषाभिधाः॥ ॥ अधोमुखनक्षत्र
मूलाग्नेयमघाहिदैवभरणीसर्पाणिपूर्वात्रयं॥ ज्योतिर्वि
द्भिरधोमुखंहिनवकभानामिदंकीर्तितम्॥ तिर्यङ्मुख॥
ज्येष्ठादित्यकराश्विनीमृगशिरःपौषानुराधानिल॥ त्वष्टा
ख्यानिवदंतिभानिमुनयस्तिर्यङ्मुखान्येतव॥ ऊर्ध्व मुख॥
पुष्यार्द्रेश्रवणोत्तरात्रतभिषक्वारुणधिष्ठाह्वयान्यू
र्ध्वास्यानिनवोदितानिमुनिभिर्धिष्ण्यान्यथैतेषुत॥ ध्रुव
नक्षत्रस्थिर॥ रोहिणीसदितमुत्तरात्रयंकीर्तयंतिमुनयोध्रु
वाह्वयम्॥ मृदु॥ त्वाष्ट्रमित्रशशिपूषदेवतान्यामनंतिमु
नयोमृदूव्यया॥ लघुन॰॥ आश्विनीगुरुभमर्कदैवतंसाभि
जिल्लघुचतुष्टयंमतम्॥ तीक्ष्णन॰॥ मूलशक्रशिवसार्प
दैवतान्युग्रपंस्यथचतीक्ष्णसंज्ञया॥ चरन॰॥ वैसाव

अथयुत:पुनर्वसुर्मारुतंचचरंपंचकंत्विदम्॥उग्रन०॥
पूर्विकात्रितयभंतिकमघेत्युग्रपंचकमिदंजगुर्बुधा:॥
मिश्रन०॥हव्यवाहभयुतंद्विदैवतंमिश्रसंज्ञमथमिश्रक:
मस्तु॥ चरदिन॥चरंचलंक्रूरमुग्रमितिचोग्रंध्रुवंस्थिरंदारुण
भवतीक्ष्णं॥क्षिप्रंलघुत्वंमृदमैत्रसंज्ञंसाधारणंमिश्रमिति
ब्रुवंति॥ रात्रि अंधादिकनक्षत्रसंज्ञा ॥
अथकंतदनुमंदलोचनमध्यलोचनमत:सुलोचनं॥
रोहिणीप्रभृतिभंचतुष्टयंसाभिजिच्चगणयेत्पुन:पुन:

नक्षत्रोंकीआकृति

तुरगमुखसदृक्षंयोनिरूपंक्षुरभंशकटसमंमथे
णस्योत्तमांगेन तुल्यम्॥मणिगृहशरचक्रभाति
शालोपमंभंशायनसदृशमन्यच्चात्रपर्यंकरूपम्॥
हस्ताकारमतश्चमौक्तिकसमंचान्यत्प्रवालोपमं
धिष्ण्यं तोरणवत्स्थितंवलिनिभंसत्कुंडलाभंपरम्॥
क्रुध्यत्केसरिविक्रमेणसदृशंशय्यासमानंपरंचान्यद्द
तिविलासवत्स्थितमत:शृंगाटिकाभंव्यक्तिवत्॥त्रिविक्र
माभंचमृदंगरूपंवृत्तंततोन्ययमलद्वयाभं॥पर्यंकरूपं
मुरजानुकारीइत्येवमश्वादिवचक्ररूपम्॥ ७॥

नक्षत्रोंकेतारोंकीसंख्या

वह्नित्रिऋत्विषुगुणेंदुकृताग्निभूतवाणाश्विनेत्र
शरभूकुयुगाब्धिरामा:॥रुद्राब्धिरामगुणवेदशतद्वि
युग्मदंताबुधैर्निगदिता:क्रमशोभतारा:॥ ७॥

नक्षत्रस्त्रीनपुंसकम्

आर्द्रादिदशकंस्त्रीणांविशाखाचिनपुंसकं॥
मूलाच्चतुर्दशांपुंसांनक्षत्राणिक्रमाद्बुधै॥

संख्या	नक्षत्रों के नाम	शुभा शुभसं	स्वामियें के नाम	मुख संज्ञा	रूपसंज्ञा		लोचन संज्ञा	स्वरूप की आकृति	तारा	स्त्री पुरुष
					नाम	नाम				
१	अश्विनी	शुभ	अश्वि·कुं	तिर्यङ्मु·	लघु	क्षिप्र	मंदलो	अश्वमुख	३	पुरुष
२	भरणी	नाशक	यम	अधोमु·	उग्र	क्रूर	मध्यलो	योनिरुप	३	पुरुष
३	कृत्तिका	कार्यना·	अग्नि	अधोमु	मिश्र	साधार	सुलोच	क्षुरसम	६	पुरुष
४	रोहिणी	सिद्धि	ब्रह्मा	उर्ध्वमु	ध्रुव	स्थिर	अंधलो	सकटसम	५	पुरुष
५	मृगशिर	शुभ	चन्द	तिर्यङ्मु·	मृदु	मैत्र	मंदलो	मृगसम	३	पुरुष
६	आर्द्रा	शुभ	शिव	उर्ध्वमु·	तीक्ष्ण	दारुण	मध्यलो	मणिसम	१	स्त्री
७	पुनर्वसु	मध्यम	अदिति	तिर्यङ्मु·	चर	चल	सुलोच·	गृहसम	४	स्त्री
८	पुष्य	शुभ	गुरु·	उर्ध्वमु	लघु	क्षिप्र	अंधलो	शरसम	३	स्त्री
९	श्लेषा	शोक	सर्प	अधोमु	तीक्ष्ण	दारुण	मंदलो	चक्रसम	५	स्त्री
१०	मघा	नाशक	पितर	अधोमु	उग्र	क्रूर	मध्यलो	शालासम	५	स्त्री
११	पूर्वाफा·	मृत्युप्रद	भग	अधोमु	उग्र	क्रूर	सुलोच	शय्यासम	२	स्त्री
१२	उत्तराफा·	विद्या	अर्यमा	उर्ध्वमु	ध्रुव	स्थिर	अंधलो	पर्यंकसम	२	स्त्री
१३	हस्त	लक्ष्मी	रवि	तिर्यङ्मु·	लघु	क्षिप्र	मंदलो	हस्ताकस·	५	स्त्री
१४	चित्रा	शुभदा	त्वष्टा	तिर्यङ्मु·	मृदु	मैत्र	मध्यलो	मौक्तिक	१	स्त्री
२५	स्वाति	अशुभं	वायु	तिर्यङ्मु	चर	चल	सुलोच	प्रवालस·	१	स्त्री
१६	विशाखा	अशुभ	इन्द्राग्नि	अधोमु·	मिश्र	साधार	अंधलो	तोरणवार	४	नपुं०
१७	अनुराधा	सर्वसि·	मित्र	तिर्यङ्मु	मृदु	मैत्र	मंदलोच	वलिसम	४	नपुंस
१८	ज्येष्ठा	क्षयनास	इन्द्र	तिर्यङ्मु	तीक्ष्ण	दारुण	मध्यलो	कुंडलसम	३	नपुंस
१९	मूल	अर्थना·	राक्षस	अधोमु·	तीक्ष्ण	दारुण	सुलोच·	सिंहसम	११	पुरुष
२०	पूर्वाषा·	दानिप्रद	उदक	अधोमु·	उग्र	क्रूर	अंधलो	शय्यासम	४	पुरुष
२१	उत्तराषा	वृद्धिदा	विश्वेदेवा	उर्ध्वमु	ध्रुव	स्थिर	मंदलो	हस्तीसम	३	पुरुष
२२	अभिजित	सिद्धिदा	ब्रह्मा	०	लघु	क्षिप्र	मध्यलो	त्रिकोणसं	०	पुरुष
२३	श्रवण	सुखदा·	विष्णु	उर्ध्वमु	चर	चल	सुलोच	व्यक्ताकार	३	पुरुष
२४	धनिष्ठा	शुभदा	वसु	उर्ध्वमु·	चर	चल	अंधलो	वामनसम	४	पुरुष
२५	शतभिषा	कल्या·	वरुण	उर्ध्वमु·	चर	चल	मंदलो	मृदंगसम	१००	पुरुष
२६	पूर्वाभा·	मृत्युदा	अजैक	अधोमु·	उग्र	क्रूर	मध्यलो	पर्यंकाका	२	पुरुष
२७	उत्तराभा	लक्ष्मी	अहिर्बु·	उर्ध्वमु	ध्रुव	स्थिर	सुलोच	यमलाका	२	पुरुष
२८	रेवती	कामदा	पूषा	तिर्यङ्मु·	मृदु	मैत्र	अंधलोच	मृदंगसम	३२	पुरुष

अथोमुखम् कृत्यं

वापीकूपतडागगर्त्तपरिखाखातौनिधेरुद्धृतिक्षेपौ
द्यूतविलप्रवेशगणितारंभाप्रसिध्यंतिच ॥ १ ॥
तिर्यङ्मुख ॥ अश्वेभोष्ट्रलुलायरासभवृषारभ्यादिदांत्यश्व
नौ ॥ गंत्रीयंत्रहलप्रवाहगमनारंभाः प्रसिध्यंतिच ॥ २ ॥
ऊर्ध्वमुख ॥ प्रासादध्वजधर्मवासगृहप्राकारसत्तोरणे
छायारामविधिर्दिनोनरपतेः पट्टाभिषेकादिच ॥

कृत्य ध्रुवनक्षत्र

बीजहर्म्यनगराभिषेचनारामशांतिशुहितंस्थिरेसुच

कृत्य मृदुनक्षत्र

मित्रकार्यरतिभूषणांवरोर्ध ॥ तेमंगलविधानमेषतु

कृत्य लघुनक्षत्र

पण्यभूषणकलारतौषधज्ञानशिल्पगमनेषुसिद्धिदम्

कृत्य तीक्ष्णनक्षत्र

भूतयक्षनिधिमंत्रसाधनंभेदबंधवधकर्मचात्रतु ॥

कृत्य चरनक्षत्र

दंतिवाजिकरभद्यवाहनारामयानविधिषुप्रशस्यते

कृत्य उग्रनक्षत्र

शाठ्यनाशविषघातबंधनोत्साहशस्त्रदहनादिषुस्मृतम्

कृत्य मिश्रनक्षत्र

स्वाभिधानसमकर्मसाधनेकीर्तितानिसकलानिसूरिभिः

संज्ञा	कार्याकार्यविचारादिचक्रम्	
अधोमुख	मूल । कृत्तिका । मघा । विशाखा भरणी । श्लेषा । पूर्वा ३ तीनो	इननक्षत्रोंमेंवापी कूपताल गर्त्त खाई दूल्ह काटनारस्न । जुवा खेलना विलों प्रवेश गणितारंभ येकरनेयोग्यहै
तिर्यङ्मुख	ज्येष्ठा । पुनर्वसु । हस्त । अश्विनी मृग । रेवती । अनुराधा । स्वा । चित्र ।	इननक्षत्रोंमें घोड़ा हाथी ऊंट भैंस गधा बैल मेंढा शस्त्र स्वान लेना नावमें पानी डाले गंत्रीयंत्र हल धारण गमनादिक करे ॥
ऊर्ध्वमुख	पुष्य । आर्द्रा । श्रवण । उत्फा । उ.षा । उत्तराभाद्रपद । शत । रोहि । धनिष्ठ ।	इननक्षत्रोंमें देवस्थान ध्वजा मंडप घर कोट भित्ति तोरण बाग राज्याभिषेक आदिकर्मकरने योग्यहै ॥

ध्रुवनक्षत्र	रोहिणी·उत्तराफा·उत्तराषा·उभा· दुपद येध्रुवसंज्ञकहैं	इननक्षत्रोंमें वीज वोना हर्म्य तथा नगर मेंप्रवेशराज्याभिषेकवाग शांतिये करने
मृदुनक्षत्र	मृगशिरा चित्राअनुराधारेवती	इननक्षत्रोंमेंमित्रकार्यस्त्रीसंगभूषणऔरवस्त्र धारणगंदनंगानानानाप्रकारकेमंगलकर्मकरने
लघुसंज्ञक	अश्विनी पुष्य हस्त अभिजित् इनकालघुकहतेहैं ।।	इनमेंवे पण्यसंबधीकर्मभूषण कला कशलता क्रीडाकरनाऔषधीग्रहण ज्ञानविद्या शिल्पवि·गम नकरनायेशुभहैं
तीक्ष्णसंज्ञक	आर्द्राश्लेषा ज्येष्ठा मूल	इननक्षत्रोंमेंभूतऔरयक्षादिकोंकी पीडाका निवारणकरना दुष्टकाढनामन्त्रसाधनबंधनयेअच्छे
चरसंज्ञ	पुनर्वसुस्वातिश्रवणधनिष्ठा·शत	इननमेंहाथीघोडानानाप्रकारकेवाहन वागमेंजाना पालकीरथआदिमेंबैठनायेअच्छे
उग्रसंज्ञक	भरणीमघा पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाषाढ पूर्वाभाद्रपद	इनमें शठता करना नाश विष घातबंधन उत्सा ह शस्त्रजलाना आदिकर्म करनाउक्तहै ।।
मिश्रसंज्ञक	कृत्तिका विशाखा	इननक्षत्रोंमेध्रुवनक्षत्रोंकेसमानकर्मकरनेयोग्य

अथमिश्रप्रकरणम्

सूर्येश्विभात्तुहिमकरोचिचित्रे चंद्रुधिष्ण्यात्सार्पाच्चभूमितनये थवुधेचहस्तात् ।मैत्रात्गुरौभृगुसुतेखलुवैश्वदेवाच्छायासु तेवरुणभाच्च मघास्तुरवेः।। आनंदःकालदंडश्चधूम्राख्यो थप्रजापतिः।।सौम्योध्वांक्षोध्वजोनामा श्रीवत्सोवज्रमुद्र ।।छत्रंमैत्रोमानसश्च पद्माख्यो लुंबकस्तथा।।उत्पातोमृत्यु काणाख्यःसिद्धिश्चैवशुभोमृतः।।मुसलोयगदाख्यश्चमा तंगोराक्षसश्चरः।।स्थिरःप्रवर्द्धमानश्चयोगोःष्टाविंशतिःक्र मात्।।फल।।आनंदेलभतेसिद्धिकालदंडेमृतिंतथा।।धू म्राख्येनसुखंप्रोक्तंसौभाग्यं चप्रजापतौ।।सौम्येचैवमहत् सौख्यंध्वांक्षेचैवधनक्षयं।ध्वजनाम्निचसौभाग्यंश्रीव त्से सौख्यसंपदः।।वज्रेक्षयात्तुश्रुरेच श्रीनाशस्तुतथैवच।। छत्रेचराजसन्मानोमैत्रेपुष्टिर्नसंशयः।।मानसेचैवसौभा

गये पद्माख्येच धनागमः॥ लुंबके धनहानिश्च उत्पातेप्राणना शनं॥ मृत्युयोगेभवेन्मृत्युः काणेच क्लेशमादिशेत्॥ सिद्धियो गेभवेत्सिद्धिः शुभेकाल्याणमेवच॥ अमृतेराजसन्मानोमु सलेचधनक्षयः॥ गदाख्येचाक्षयाविद्यामातंगेकुलवर्धनं॥ राक्षसेतुमहत्कष्टंचरेकार्यंचसिध्यति॥ स्थिरयोगेगृहारंभेप्रवर्द्धे पाणिपीडनं॥ टी॰ आनंदादि अठाईस योग इस्में एकेकयोग ७ वार और २७ नक्षत्र

सं॰	योगनाम	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनी	फल	घटि॰ न्या॰
१	आनंद	अश्वि	मृग	अश्ले	ह॰	अनु	उ॰षाढ	शत॰	सिद्धि	०
२	कालदंड	भ॰	आर्द्रा	मघा॰	चि॰	ज्येष्ठा	अभि॰	पू॰भा	मृत्यु	सर्व
३	धूम्र	कृ॰	पुन॰	पू॰फा	स्वा॰	मूल	श्रवण	उ॰भा॰	असुख	आदि२
४	प्रजापती	रो॰	पुष्य	उ॰फा	वि॰	पू॰षा	धनि॰	रेवती	सौभाग्य	०
५	सौम्य	मृग	आश्ले	हस्त	अनु	उ॰षा	शत॰	अश्वि	बहुतसुख	०
६	ध्वांक्ष	आर्द्रा	म॰	चित्रा	ज्ये॰	अभि॰	पू॰भा॰	भ॰	धनक्षय	आदि५
७	ध्वज	पुन॰	पू॰फा॰	स्वा	मूल	श्रव॰	उ॰भा	कृ॰	सौभाग्य	०
८	श्रीवत्स	पुष्य	उ॰फा	विशा	पू॰षा॰	धनि॰	रेवती	रो॰	सौख्यसंपत्ती	०
९	वज्र	आश्ले	हस्त	अनु॰	उ॰षा	शत॰	अश्वि	मृ॰	क्षय॰	ऽऽदि५
१०	मुद्गर	म॰	चित्रा	ज्ये॰	अभि	पू॰भा॰	भ॰	आर्द्रा॰	लक्ष्मीनाश	ऽऽदि५
११	छत्र	पू॰फा॰	स्वा॰	मू॰	श्र॰	उ॰भा	कृ॰	पुन॰	राजसन्मान	०
१२	मैत्र	उ॰फा॰	विशा॰	पू॰षा	धनि॰	रेव॰	रोहि	पुष्य	पुष्टी	०
१३	मानस	ह॰	अनु॰	उ॰षा॰	शत॰	अश्वि	मृ॰	आश्ले	सौभाग्य	०
१४	पद्माख्य	चित्र	ज्येष्ठा	अभि॰	पू॰भा॰	भ॰	आर्द्रा	म॰	धनप्राप्ती	ऽऽदि४
१५	लुंबक	स्वा॰	मूल॰	श्र॰	उ॰भा॰	कृति	पुन॰	पू॰फा	धनक्षय	ऽऽदि५
१६	उत्पात	वि॰	पू॰षा	ध॰	रे॰	रो॰	पुष्य	उ॰फा॰	प्राणनाश	सर्व
१७	मृत्यु॰	अनु॰	उ॰षा॰	शत॰	अश्वि	मृ॰	आश्ले	ह॰	मृत्यु॰	सर्व
१८	काणाख्य	ज्येष्ठा	अभि॰	पू॰भा॰	भर॰	आर्द्रा	मघा॰	चि॰	क्लेश	ऽऽदि२
१९	सिद्धि	मूल॰	श्रव॰	उ॰भा॰	कृति	पुन॰	पू॰फा॰	स्वा॰	कार्यसिद्धी	०
२०	शुभ॰	पू॰षा॰	धनि॰	रे॰	रोहि	पुष्य	उ॰फा	वि॰	कल्याण	०
२१	अमृत	उ॰षा॰	शत॰	अश्वि	मृग॰	अश्ले	ह॰	अनु	राजसन्मान	०
२२	मुसल	अभि॰	पू॰भा॰	भरणी	आर्द्रा	म॰	चित्रा	ज्येष्ठा	धनक्षय	ऽऽदि२
२३	गदाख्य	श्रव॰	उ॰भा	कृति॰	पुन	पू॰फा	स्वा॰	मू॰	अक्षयअविद्या	आदि२
२४	मातंग	ध॰	रेवती	रोहि॰	पुष्य	उ॰फा॰	वि॰	पू॰षा॰	कुलवृद्धि	०
२५	राक्षस	शत॰	अश्वि	मृ॰	अश्ले	ह॰	अनु	उ॰षा	महाकष्ट	सर्व
२६	चर॰	पू॰भा॰	भ॰	आर्द्रा	म॰	चि॰	ज्ये॰	अभि॰	कार्यसिद्धी	ऽऽदि२
२७	स्थिर	उ॰भा॰	कृति॰	पुन॰	पू॰फा॰	स्वा॰	मू॰	श्रव॰	गृहारंभ॰	०
२८	प्रवर्धमान	रे॰	रो॰	पुष्य	उ॰फा॰	वि॰	पू॰षा॰	धनि॰	विवाह	०

चरयोग

रवौ पूर्वा गुरौ पुष्यः शनौ मूलं भृगौ मघा ॥ सौम्ये चार्द्रा च विशाभौमे चंद्रे द्वा चरयोगकः ॥ क्रकचयोग ॥ रवौ तु द्वादशी प्रोक्ता भौमे च दशमी तथा ॥ चंद्रे चैकादशी प्रोक्ता नवमी बुधवासरे ॥ १३ ॥ शुक्रे च सप्तमी ज्ञेया शनौ चैव तु षष्ठिका ॥ गुरौ चाष्टमिका ज्ञेया योगस्तु क्रकचो बुधैः ॥ दग्धयोग ॥ बुधे तृतीया कुज पंचमी च षष्ठ्यां गुरौ अष्टमि शुक्रवारे ॥ एकादशी सोम शनिर्नवम्यां द्वादश्य मर्को मिति दग्धयोगः ॥ मृत्युदायोग ॥ रवौ भौमे भवेन्नंदा भद्रा जीव शशांकयोः ॥ जया शुक्रे बुधे रिक्ता शनौ पूर्णं व मृत्युदा ॥ १६ ॥ सिद्धियोग ॥ शुक्रे नंदा बुधे भद्रा जया भौमे प्रकीर्तिता ॥ शनौ रिक्ता गुरौ पूर्णा सिद्धियोगा उदाहृताः ॥ उत्पातादियोग ॥ विशाखादि चतुष्कं तु भास्करादि क्रमेण तु ॥ उत्पात मृत्यु काल्य सिद्धियोगाः प्रकीर्तिताः ॥ यमदंष्ट्रयोग ॥ मघा धनिष्ठा सूर्ये तु चंद्रे मूल विशाखके ॥ कृत्तिका भरणी भौमे सौम्ये पूर्वा पुनर्वसुः ॥ १८ ॥ गुरौ पूर्वाश्विनी शुक्रे रोहिणी चानुराधका ॥ शनौ विष्णुः शतभिषक यमदंष्ट्रः प्रकीर्तिताः ॥ यमघंटयोगः ॥ रवौ मघा बुधे मूलं गुरौ चैव च कृत्तिका ॥ भौमे चार्द्रा शनौ हस्तः शुक्रे चैव तु रोहिणी ॥ २१ ॥ चंद्रे विशाखायोगोयं यमघंटः प्रकीर्तितः ॥ मुसलवज्रयोग चंद्रे चित्रा भृगौ ज्येष्ठा ॥ शनौ चैव तु रेवती ॥ चांद्रे जे तु धनिष्ठा ॥ रवौ तु भरणी तथा ॥ उषाश्चैव तु भौमे च गुरौ चैवोत्तरा तथा ॥ अयं मुसलवज्राख्य योगो वर्ज्यः शुभो बुधैः ॥ २३ ॥ अमृतसिद्धियोग ॥ आदित्य हस्ते गुरु पुष्ययोगे बुधानुराधा शनि रोहिणी च ॥ सोमे च विष्णुर्भृगु रेवती च ॥ भौमाश्विनी चामृतसिद्धियोगः ॥ २५ ॥ ७ ॥ ७ ॥

टी ॥ चरयोग १३ और ७ वारयदचक्रमें देखना और वार नक्षत्र तिथी जो आवे तो रवादि १३ योग जानना ॥ ॥ योगचक्रम् ॥

संख्या	योगनाम	भानुवार	इंदुवार	भौमवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
१	चरयोग	पूर्वाषा	आर्द्रा	विशा·	रोहिणी	पुष्य	मघा	मूल
२	ककचयो	१२ ति·	११ति·	१०ति·	९ ति०	८ ति०	७ति०	६ ति०
३	दग्धयोग	१२ ति०	११ति०	५ ति०	३ ति०	६ ति०	८ति०	९ ति०
४	मृत्युयोग	१।६।११ति·	५।७।१२ति	१।६।११ति	४।८।१४ति·	२।७।१२ति	३।८।१३ति	५।१०।१५ति
५	सिद्धियो·	० ति०	० ति·	३।८।१३ति	२।७।१२ति	५।१०।१५ति	१।६।११ति	४।९।१४ति·
६	उत्पातयो	विशाखा	पूर्वा	धनिष्टा	रेवती·	रोहिणी	पुष्य	उत्तरा
७	मृत्युयो·	अनुराधा	उत्तरा	शततार·	अश्वि·	मृग·	आश्ले·	हस्त
८	कालयो	ज्येष्टा	अ·	पूर्वा	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
९	सिद्धियो	मूल·	श्रवण	उत्तरा	कृत्तिका	पुनर्व·	पूर्वा	स्वाती
१०	यमदंष्ट्रयो	मघा·ध·	मू· वि·	कृ·भ·	पूषा·पुन·	पूषा·अश्वि	रो·अनु	ह·शतता·
११	यमघंटयो	मघा·	विशा·	आर्द्रा·	मूल	कृत्तिका	रोहिणी·	हस्त
१२	मुसलवज्रयोग·	भरणी	चित्रा·	उ·षा	धनिष्टा	उत्तरा·	ज्येष्टा	रेवती
१३	अमृतसिद्धियोग	हस्त	श्रवण	अश्विनी	अनुरा·	पुष्य	रेवती	रोहिणी

अंधादिनक्षत्राण्याह॥ अंधकंतदनु मंदलोचनं मध्यलोचन
मतः सुलोचनं। रोहिणीप्रभृतिभं चतुष्टयं साभिजिच्च गणयेत्पुनः पुनः
नष्टवस्तुपरिज्ञानमाह॥ अंधके लभते शीघ्रं मंदके च दिनत्रयात्
॥ मध्यके च चतुःषष्ट्यान प्राप्नोति सुलोचने॥ १९॥
अथ दिक्ज्ञानमाह॥ अंधके पूर्वतो वस्तु मंदके दक्षिणे
तथा॥ पश्चिमे मध्यनेत्रे च उत्तरे च सुलोचने॥ २०॥ ७॥
प्रकारांतरेणगतवस्तुलाभालाभज्ञानमाह
अंधे सद्यः प्राप्यते वस्तु नष्टं कष्टात् प्राप्यं मंदनेत्रे च तद्वत्
दूरात् श्राव्यं मध्यनेत्रे न लभ्यं नष्टो लभ्यं नैव लभ्यं सुनेत्रे।
नक्षत्रसे गतवस्तु परिज्ञान॥ मघादि अर्यमांतं च समीपे व
स्तु दृश्यते॥ हस्तादि वसुपर्यंतमन्यहस्ते च दृश्यते॥ शततारा
धर्मांतं तु स्वगृहे वस्तु दृश्यते॥ अन्यादिसार्पपर्यंतमदृष्टं दूरगं तथा
टी· मघा पूर्वाफाल्गुनी उत्तराफाल्गुनी ये नक्षत्रों में जो वस्तु नष्ट होय अथवा अन्य कालमे

येनक्षत्रहोयतोसमीपमिलेगीऐसाकहना हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा ज्येष्ठा मूल पूर्वाषाढ़ उत्तराषाढ़ · श्रवण · धनिष्ठा · येनक्षत्रोंमें वस्तू नष्ट होय अथवा प्रश्नकालमेंयेन क्षत्रहोयतोकहियेदूसरेकिसीकेहाथमेंवस्तूहैकष्टसेमिलेगीशततारका पूर्वाभाद्रपद उत्तराभाद्रपद रेवती · अश्विनी भरणीयेनक्षत्रोंमेंगतहोय अथवा प्रश्नकालमेंयेनक्ष होयतोकहियेकिअपनेघरमेंही मिलेगी कृत्तिकारोहिणी · मृग · आर्द्रा पुनर्वसू · आश्लेषा येनक्षत्रोंमेंगतहोयअथवाप्रश्नकालमेंयेनक्षत्रहोयतोकभीमिलेगीनहीं॥

अथनक्षत्रान्नष्टवस्तुपरिज्ञानमाह

संज्ञा	नक्षत्राण्याह							अवधि	दिशा	प्रकारांतर
अंधलोच	रोहि·	पुष्य	उफा	वि·	पूमा	ध·	रे	शीघ्रलाभ	पूर्व	सद्यप्राप्ति·
मंदलोच·	मृग·	श्ले	ह·	अनु·	उ·	श·	अ	३दिन·	दक्षिण	कष्टान्प्राप्ति
मध्यलो	आर्द्रा	म·	चि·	ज्ये·	ऽभि·	पू·	भ·	६४दिन	पश्चिम	श्रवणमात्र
सुलोच·	पुन·	पूर्वा	स्वा·	मू·	श्र·	उ·	कृ·	प्राप्तनहीं	उत्तर	अप्राप्ति

अथगतवस्तुस्थानज्ञानमाह

तिथिवारंचनक्षत्रंप्रहरेणसमन्वितं॥दिक्संख्ययाहतंचैव सप्तभिर्विभजेत्पुनः॥एकेनभूतलेद्रव्यंकथंचेन्नाडसंस्थितं॥ तृतीयेजलमध्यस्थमंतरिक्षेचतुर्थके॥तुषस्थंपंचमेतुस्या त्॥षष्ठेगोमयमध्यगं॥सप्तमेभस्ममध्यस्थमित्येस्वप्नलक्षणं

टी० प्रश्नकालकेतिथिवारनक्षत्रप्रहरइनकीसबकीसंख्याएकत्रकरके १० अंकसेगुणे के ७ अंकसेभागलेकेजोशेषबचे उसकाफलकहनाजो १ बचेतोभूमिमेंकहनाजोदोबचे तोकिसीबरतनमेंकहनाजो ३ बचेतोजलकेबीचमेंकहना जो ४ बचेतोअंतरिक्षक हियेसिकहरवैगेरेमें कहनाजो ५ बचेतोभूसाकेभीतरकहनाजो ६ बचेतोगोबरमेंक हनाजो ७ बचेतोभस्ममेंकहना इसरीतसेस्थाननिश्चयकहना—

दिवारात्रिमुहूर्त्तान्याह

शिवोहिर्मित्रपितरौवस्वभो विश्ववेधसः॥विधिरिंद्रो यशक्राग्नीरक्षोब्धीशोर्यमाभग मुहूर्त्ताह्नि प्रोक्ता दिवापंचदशाःक्रमात्॥मुहूर्त्तारजनौ शंभुरजैक वर णत्रयः॥१०॥हस्त्रात्यंचादितिर्जीवो विष्णुर्केतक्षभारुते

दिनमानस्यतिथ्यंशो रात्रेरपिसुहूर्त्तकाः॥८१॥ नक्षत्रना
मतुल्येस्मिन्स्थिन्क्रा यात्रभेदितं। दिनमध्येऽभिजित्सं
ज्ञेदोषसंघे घ्नसत्यपि। सर्वकुर्य्याच्छुभंकर्म्मयाम्य
दिग्गमनविना॥ अथरव्यादिवारेत्याज्यमुहूर्त्ता॥
अर्यमा भानुमद्वारे चंद्रे द्विविधिराक्षसौ पित्राग्नी कुज
वारेतु चंद्रपुत्रेतथा भिजित॥८३॥ पित्र्यब्राह्मौ भृगोर्वारे
राक्षसाम्बू गुरोर्दिने। रौद्रसार्पौ शनेरह्नि सूमेत्याज्यामुहू
र्त्तकाः॥८४॥

दिवारात्रिमुहूर्त्ता

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	संख्या
शिव	सर्प	मित्र	पितर	वसु	अंबु	विश्वे	विधि	ब्रह्मा	इंद्र	इंद्राग्नि	राक्षस	वरुण	अर्यमा	भग	दिवा मुहूर्त्ता
आर्द्रा	आश्ले	ऽनु	मघा·	धनि·	पूर्वा	उत्तरा·	ऽभिजि·	रोहि·	ज्येष्ठा	विशाखा	मूल	शत·	उत्तरा फ	पूर्वा फ	नक्षत्राणि
ईश	अजपाद	अहिर्बुध्न्य	पूषा	दस्र	यम	अग्नि	धाता	चंद्र	अदिति	जीव	विष्णु	अर्क	त्वष्टा	वायु	रात्रिमुहूर्त्ता
आर्द्रा	पूर्वाभा	उत्तराभा	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृग	पुनर्वसु	पुष्य	श्रवण	हस्त	चित्रा	स्वाती	नक्षत्राणि

रव्यादिवारेत्याज्यमुहूर्त्तो

सू	चं	मं	बु	बृ	भृ	श	वार
अर्यम	ब्रह्म राक्षस	पितृ अग्नि	ऽभि जित	राक्षस अंबु	पितृ ब्रह्म	शिव सर्प	मुहूर्तानि
उत्तरा फाल्गुनी	रोहिणी मूल	मघा कृत्ति·	ऽभि जित्	मूल पूर्वाषा·	मघा रोहि·	आर्द्रा श्लेषा·	नक्षत्राणि
दिन १४	दि·६। १२रा·८	दि·४। रा·७।	दि·८ रा·	दि·१२ ६।रा·	दि·४।८ रा·९	दि·११२ रा·२	दिन रात्रि

इतिनक्षत्रप्रकरणम्

योगप्रकरणम्॥ वाक्यतेर्कनक्षत्रं श्रवणाच्चां॥
द्रमेवच॥ गणयेत्सद्युतिंकुर्य्याद्योगःस्याद्दक्षशेषतः

टी॰ पुष्यनक्षत्रसे सूर्यनक्षत्रतकगिनवै और श्रवणसे दिन नक्षत्रतकगिनवै
दोनोंकी संख्या एकत्रकरके २७ सेभागलेना शेष बचसो योगकहना॥

योगनामानि॥ विष्कंभः प्रीतिरायुष्मान्सौभाग्यः शोभनस्त
था॥ अतिगंडः सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च॥ २॥ गंडो वृद्धि
र्ध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा॥ वज्रः सिद्धिर्व्यतीपातोव
रीयान्परिघः शिवः॥ ३॥ सिद्धः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्मैन्द्रो
वैधृतिः क्रमात्॥ सप्तविंशतियोगास्तु कुर्युर्नामसमं फलं॥
योगवर्ज्यघटिका॥ विरुद्धसंज्ञा इह ये च योगास्तेषामनि
ष्टः खलु पाद आद्यः॥ सवैधृतिस्तु व्यतिपातनामा सर्वोप्य
निष्टः परिघस्य चार्द्धं॥ ५॥ तिस्रस्तु योगे प्रथमे च वज्रे व्याघा
तसंज्ञे नव पंच शूले॥ गंडेतिगंडे च षडेव नाड्यः शुभेषु
कार्येषु विवर्जनीयाः॥ ६॥ ७॥ ७॥ ७॥

संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
योग	विष्कंभ.	प्रीति	आयुष्मा	सौ.	शो.	अतिगं.	सुक.	धृति	शूल	गंड	वृद्धि	ध्रुव	व्या.	हर्षण	०
घटीवर्जनी	आद्य ३					आद्य ६			आद्य १५	आद्य ६			आद्य ९		०
संख्या	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७		०
स्वामी	यम	वि.	चंद्रमा	ब्रह्मा	बृहस्पति.	चंद्रमा	इंद्र	जल	सर्प	अग्नि	सू.	पृथ्वी	हर	सूर्य	०
योग	वज्र	सि.	व्य.	वरि.	परि.	शिव	सि.	साध्य	शुभ	शु.	ब्रह्म	ऐंद्र	वैधृ.	०	०
घटीवर्जनी.	आद्य ३१		सकलत्य		आद्य ३०								सकलत्यज	०	०
स्वामी	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	०

करणनयनं॥ गततिथयो द्विनिघ्नाः शुक्लप्रतिपदादितः॥
एकोनाः सप्तहृच्छेषं करणं स्याद्बवादिकं॥ १॥
टी०॥ जिसदिन करण ल्यावना होय तो शुक्ल प्रतिपदा से वर्त्तमान तिथी तक
गिनके उसको द्विगुणित करके उसमें एक कम करके ७ से भाग लेके जो
शेष बचै सो तिथी का करण जानना— ॥ ७॥ ७॥ ७॥

करणनामानि

ववाह्वयं वालव कौल वाख्यं ततो भवेत्तै तिलनामधेयं गराभिधानं वणिजं च विष्टिरित्याहुरार्याः करणानि सप्त॥ अंते कृष्णचतुर्दश्यां शकुनिर्दर्शभागयोः॥ ज्ञेयं चतुष्पदं नागं किंस्तुघ्नं प्रतिपद्दले॥३॥ करणस्वामिनः॥ इंद्रो ब्रह्मा मित्र नामार्यमाभूः श्रीः कीनाशश्चेति निश्चयार्धनाथाः॥ कल्युक्षाख्यौ सर्पवायुस्तथैव ये चत्वारस्ते स्थिराणां चतुर्णां॥४॥ करण कृत्यानि॥ पौष्टिकं स्थिर शुभानि ववाख्ये वालवे द्विजहितान्यपि कुर्यात्॥ कौलवे प्रमदमित्र विधाने तैतिले शुभगताश्रय कर्म॥५॥ गरे च बीजाश्रय कर्षणानि वाणिज्यके स्थैर्य वणिक् क्रियाश्च॥ न सिद्धिमायाति कृतं च विष्ट्यां विषारिघातादिषु तत्र सिद्धि॥६॥ मंत्रौषधानि शकुनौ तु सपौष्टिकानि गोविप्रराज्यपितृ कर्म्म चतुष्पदे पि॥ सौभाग्यदारुण ध्रुति ध्रुव कर्म्म नागे॥ किंस्तुघ्न नाम्नि खिल शुभ कर्म्म कार्य्यम्॥७॥

अथ करण चक्रम्

शुक्लतिथि ६०				कृष्णतिथि ६०				नाम	स्वामी	कृत्य
पूर्वदल		उत्तरदल		पूर्वदल		उत्तरदल				
१	स्थिर		०	०	०	०	०	किंस्तु	वायु	समस्त शुभ कार्य करै
५	८	१	१५	४	११	७	०	बव	इन्द्र	ज्ञान उत्साह देवालय आदि शुभ कर्म करै
२	१२ ९	५	१२	१	८	४	११	बालव	ब्रह्म	ब्राह्मणोंसे हित करै
६	१२	२	९	५	१२	१	८	कौलव	मित्र	उन्माद और मित्रता करै
३	१०	६	१३	२	८	५	१२	तैतिल	सूर्य	विवाहादिक मंगल कार्य करै
७	१४	३	१०	६	१३	२	८	गरज	भूमि	बीज बोना हल चलाना
४	११	७	१४	३	१०	६	१३	वणिज	लक्ष्मी	स्थिरगति घर दुकान और व्यापार करावै
८	१५	४	११	७	१४	३	१०	विष्टि	यम	सकल कर्म वर्जित परंतु विष और घात क्रूर कर्म करै
स्थिर	०	०	०	०	०	०	१४	शकु०	काल	मित्रोपदेश औषधि ग्रह पूजा करावै
स्थिर	०	०	६	३०	०	०	०	चतुष्प	वृषभ	गो ब्राह्मण राज्य पितृ इनसंबंधी कृत्य करावै
स्थिर	०	०	०	०	०	०	३०	नाग	सर्प	सौभाग्य कर्म युक्त मैं जाना धीरज और विद्याभ्यास करना ये कर्म करावै
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

शुक्लेपूर्वार्द्धेष्टमीपंचदश्योर्भद्रैकादश्यांचतुर्थ्यांपरार्द्धे
कृष्णेंत्यार्धेस्यात्तृतीयादशम्योःपूर्वेभागेसप्तमीशंभुतिथ्योः

टी० सुक्लपक्षमें अष्टमी ८ और पौर्णिमा १५ इसके पूर्व दलमें भद्रा होती है और उसी पक्षमें चतुर्थी ४ और एकादशी ११ के परदलमें भद्रा होती है और कृष्ण पक्षमें तृतीया ३ और दशमी १० के परदलमें भद्रा और सप्तमी ७ और चतुर्दशी १४ के पूर्वदलमें जानो

अन्यदपि॥ दिवासर्पमुखीभद्रा रात्रौ भद्रा तु वृश्चिकी
सर्पस्यच मुखं त्याज्यं रात्रौ पुच्छं परित्यजेत्॥१०॥

टी० दिनकी भद्रा सर्पमुखी होती है और रात्रिमें भद्रा वृश्चिकी होती है इस लिये दिनको सर्पका मुख त्याग करना और रात्रिको पुच्छ परित्याग करना चाहिये।

भद्रायाःमुखपुच्छविचारः॥ पंचद्व्यद्रिकृताष्टरामरसभू
यामादिघट्यःशराविष्टेरास्यमसत्कृजेंदुरसरामाद्यश्विवाणाब्धिषु॥ यामेष्वंत्यघटीत्रयंशुभकृत्पुच्छंतथावासरे॥ विष्टिस्तिथ्यपरार्धजाशुभकरीरात्रौचपूर्वार्धजा॥

टी० शुक्लपक्षीय चतुर्थीके पांचवें प्रहरकी पहिली पांच घटी भद्राका मुख होना है सो शुभकर्ममें निंद्य है एवं शुक्लपक्षीय अष्टमीके द्वितीय प्रहरकी आद ५ घटी मुख॥ एवं एकादशीके सप्तम प्रहरकी ५ घटी मुख एवं पूर्णिमाकी ४ प्रहरकी ५ घड़ी मुख एवं कृष्णपक्षीय तृतीयाकी अष्टम प्रहरकी आदि ५ घडी मुख एवं सप्तमीके तृतीय प्रहरकी आदि ५ घड़ी मुख एवं दशमीमें षष्टम प्रहरकी आदि ५ घड़ी भद्रामुख एवं चतुर्दशीके प्रथम प्रहरकी ५ घड़ी भद्रा मुख होती हैं सो सर्वत्र शुभ कर्ममें निंद्य हैं इसी तरेसे शुक्लपक्षमें चतुर्थीको अष्टम प्रहरकी अंत्य ३ घड़ी भद्रा पुच्छ होती हैं सो शुभ हैं एवं अष्टमीको प्रथम प्रहरकी अन्त्य ३ घड़ी पुच्छ एकादशीको ६ प्रहर[illegible] अंत्य ३ घड़ी पुच्छ पूर्णिमाको २ प्रहरकी अंत्य ३ घड़ी पुच्छ इसी रीतिसे कृष्ण पक्षके तृतीयाको ७ प्रहरकी अन्त्य ३ घड़ी पुच्छ सप्तमीको २ प्रहरकी अंत्य ३ घड़ी पुच्छ दशमीको ५ प्रहरकी अंत्य ३ घड़ी पुच्छ चतुर्दशीको ४ प्रहरकी अंत्य ३ घड़ी पुच्छ सो जानना सो शुभकारक हैं और जो परदलकी भद्रा पूर्वदलमें हो और पूर्वदलकी परदलमें हो तो वह भद्रा सम्पूर्ण कर्ममें शुभकारक जानना

भद्रायाःशरीरविभागमाह

मुखे पंच गले त्वेका वक्षस्ये[illegible] दशास्मृता॥
नाभौचतस्रःषट्कट्यांतिस्रःपुच्छेतुनाडिकाः॥

टी॰ मुखमें ५ कंठमें १ हृदयमें ११ नाभिमें ४ कटिमें ६ पुच्छमें ३ घडी इस तरेसे ३० घडीमें भद्राका अंग विभाग होताहै –

फलमाह ॥ कार्यहानिर्मुखे मृत्युर्गलेवक्षसिनिःस्वता ॥ कट्यामुन्मत्तता नाभौ च्युतिः पुच्छे ध्रुवेजयः

टी॰ मुखमेकार्य हानिकंठमें मृत्यु हृदयमें दारिद्रताकटीमें उन्मन नाना भिमें कार्य्यनाश पुच्छमेजयलाभ होय ॥

चंद्रतः स्वर्ग मृत्यु पाताल वास ज्ञान माह ॥

कर्ककुंभद्वयेभूस्थाकोर्प्येजत्रितयेद्युगा ॥ कन्या चापद्वये चंद्रेभद्रा पाताल वासिनी ॥ १४ ॥

टी॰ कर्क सिंह कुंभमीनये ४ राशिकेचन्द्रमें भद्राकावास पृथ्वीमें जानना वृश्चिकमेषवृषभ मिथुनये ४ राशिके चंद्रमें भद्राका वासस्वर्गमेंजानना कन्यातुलाधनमकरये ४ राशिके चंद्रमें भद्राकावास पातालमेंजानना

फलम् ॥ स्वर्गेभद्राभवेत्सौख्यं पातालेचधनागमः मृत्युलोके यदाभद्राकार्यसिद्धिस्तदानहि ॥

टी॰ भद्रास्वर्गमेंरहनेसे सौख्य फलपातालमे धनागमफलमृत्युलोकमेंभद्राकार्यहानि करताहै ॥ –

वारपरत्वेनामज्ञानं

सोमेशुक्रेच कल्याणीशनौचैवतु वृश्चिकी ॥ गुरौ पुण्यवतीज्ञेया चान्यवारेषुभद्रिका ॥ १५ ॥

टी॰ सो ॥ व शुक्रकोभद्रा होयतो कल्याणीजानना शनिवारको वृश्चिकीगुरुवारको पुण्यवती और रविमंगल बुधवारको होयतो भद्रिकानामजानना भा नरु पद्रीफलजानना ॥

वधबंधविषाग्न्यस्त्रछेदनोच्चाटनादिका तुरंग... सो प्रादि कर्म्मविष्ट्यांतु सिध्यति

... अग्नेचक्रम्

अथभद्राचक्रम्

पक्ष पू.उ.	ति.	प्रहर	घटी	प्रहर	घटी	दिशा	स्थान	फल	चद्रतःस्वर्गा दिवासः॥	फल
कृष्ण उत्तरा	३	प्रहर ८	घटी२४॥	प्रहर ७	घटी ४८॥	ईशान	पुच्छ ३	विजय	मी.मे. वृश्चि स्वर्गवास	सौख्यं
कृष्ण उत्तरा	१०	प्रहर ६	घटी ४०॥	प्रहर ५	घटी ३४॥	वायव्य	कटि ६	बुद्धि नाश	कि.कं.तु.ध. पातालवास	धन प्राप्ती
शुक्ल उत्तरा	४	प्रहर ५	घटी ३०	प्रहर ८	घटी ४७	पश्चि.	नाभि ४	कलह	मि.कुं.सिंव्र म.मृत्युलोक	ऽशुभम्
शुक्ल उत्तरा	११	प्रहर ७	घटी ४७॥	प्रहर ६	घटी ४२	उत्तरा	कपाल ११	धन नाश	मि.कुं.सि. वृ.म.मृत्युलो	स्नवारी मे.
कृष्ण पूर्वार्द्ध	७	प्रहर ३	घटी १५	प्रहर २	घटी १२	दक्षिण	गला १	मृत्यु	चं.शु.प्रा.	कल्याणी
कृष्ण पूर्वार्द्ध	१	प्रहर	घटी ११.५	प्रहर ४	घटी २७	पूर्व	मुख ५	विध्वंस	गुरु	वृश्चिकी
शुक्ल पूर्वार्द्ध	८	प्रहर २	घटी ७॥	प्रहर १	घटी ५॥	आग्नि	०	०	सूर्य्य	पुण्यावली
शुक्ल पूर्वार्द्ध	१५	प्रहर ४	घटी २५	प्रहर ३	घटी १८॥	नैऋत	०	०	बुध.मंगल	भद्रा

अथसंक्रांतिप्रकरणं

घोराध्वांक्षिमृतघ्नौचसंक्रांतिवारेच्चमहोदरीस्यात्
मंदाकिनीश्वेचगुरौचनंदा मिश्राभृगौराक्षसिचार्कपुत्रे
अन्यदपि॥उग्रक्षिप्रचरैर्मैत्रध्रुव.मिश्राख्य दारुणैः॥ १
चरवैःसंक्रांतिरर्कस्य घोराद्याःक्रमशो भवेत्॥ ।म

कालफल

पूर्वाण्ह काले नृपति द्विजेंद्रान्मध्यंदिने चाथ विशोऽपराण्हे शूद्रान् खावस्तमिते प्रदोषे पिशाचकान् रात्रि चरान्निशीथे नटादिकांश्चापररात्रकाले प्रत्यूषकाले पशुपालकांश्च संक्रांतिरर्कस्य समस्त लिंगं प्रभात संध्याच भयेन हंति

अथसंक्रांतिमुखं

अर्केऽशुक्रे मुखं पूर्वे सौम्ये भौमे च दक्षिणे। शनौ चंद्रे मुखं पश्चाद् गुरौ चैवोत्तरा मुखी॥ ६ ॥ ७ ॥

करणपरत्वे संक्रांतिमुखं

बवे पूर्वमुखं प्रोक्तं वालवे यम दिक् मुखं॥ कौलवे पश्चिम मुखं तैतिले चोत्तरे मुखं॥ ७॥ गरे वायव्य दिग्वक्त्रं वणिज्याग्नेय दिङ्मुखं॥ भद्रायामीशदिग्वक्त्रं शकुने निरृतौ मुख ८ चतुष्पदी च षातालेगे चोर्ध्वे मुखी भवेत्॥ किंस्तुघ्ने सर्व दिग्वक्त्रं संक्रांति मुखलक्षणं। ९॥ अथ दृष्टि ॥

चंद्रे गुरौ दृष्टि विदिक्कृशानो सूर्ये सिते नैरृति कोण दृष्टिः धात्रीसुते दृक् पवने निरुक्ता वुधे शनौ रुद्रदिशी क्षणं भवेत्॥ अथगमनं॥ मंदे चंद्रे गमः सौम्ये वुधे भौमवारुणे॥ रवौ शुक्रे गमो याम्ये गुरौ प्राग्गमनं स्मृतम्॥ ११॥ ॥स्थिति॥ चतुष्पदे तैतिल नागयोश्च सुप्तो रविः संक्रमणं करोति॥ विघ्ना खवाख्ये चगराह्वये च सवालवाख्ये स्थित एव विष्टौ॥ १२॥ फल॥ किंस्तुघ्न नाम्नि शकुने वणि कौलवाख्ये चोर्ध्वस्थितस्य खलु संक्रमणं रवेर्स्यात् धान्यार्घवृष्टिषु भवेत् क्रमशस्त्व दृष्टो मध्योत्तमे ति मुनयप्रवदति पूर्वे॥ १३॥ वाहन॥ सिंहो व्याघ्रो वराहश्च गर्दभः कुंजरस्तथा॥ महिषी घोटकश्चाच श्वा गौ वृषभ कुक्कुटो १४ गजो वाजि र्वृषो मेषः खरोष्ट्रो केसरी क्रमात् शार्दूल मह्रिषी व्याघ्र वानराश्च ववादितः॥ १५॥ फल॥ गजे लक्ष्मी ... घोटके वाहने तथा॥ सिंहे भ्या

भयं प्रोक्तं सुभिक्षं गर्दभे शुनी ॥१६॥ वराहे महती पीडा जा
यते मेषवाहने ॥ महिष्यां च भवेत् क्लेशः कुक्कुटे मृत्युरेव च
वस्त्र ॥ श्वेतपीतहरितच पांडुरक्तो श्याममसितं बहुवर्णं ॥
कंबलं विवसनं घनवर्णान्यं शुकानि च ववादितः क्रमात् ॥
आयुध ॥ भुशुंडी च गदा खड्गं दंडको दृढ तोमरान् ॥ कुंत
पाशांकुशास्त्रं च बाणश्चैवायुधं ववात् ॥१९॥ भोजन
पात्र ॥ सौवर्णं राजतं ताम्रं कांस्यं लोहं च खर्परं ॥ पत्र
वस्त्रं करौ भूमिः काष्ठपात्रं ववादितः ॥२०॥ भक्ष्यप
दार्थ ॥ अन्नं च पायसं भक्ष्यं पक्वान्नं च पयो दधि ॥ चि
त्रान्नं गुडमध्वाज्यं शर्करांत ववादितः ॥२१॥ लेपन ।
कस्तूरी कुंकुमं चैव चंदनं स्वत्तिकातया ॥ गोरोचनमसेवा
कृष्ण हरिद्रा च तथांजनं २२ सिंदूरमगरुश्चैव कर्पूरश्च नना
ववादितः ॥ जाति ॥ देवभूतादि विहगपशवो मृगएव च ॥ च
॥ ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रमिश्रजाती ववादितः ॥२३॥ पुष्पमूर्ती
पुन्नागजाती वकुलश्च केतकी बिल्वस्तथा २४ बृहद्योय ४५ मूर्ती जा
च दूवा ॥ मल्लीनया पाटलिका जया च ववचवित्रिसंख्या
च योजयेत्तु ॥ भूषण ॥ नूपुरं कंकणं मुकु२ ॥ ७ ॥
टमणिं ॥ गुंजा वराटक नीलं गरुत्मं रूपी तीन नक्षत्रको अंतर
कंचुकी ॥ विचित्रपत्रां शुक भूर्जपर होयतो दुर्भिक्ष जानना
पाटल नीलवर्णं ॥ कृष्णा जिनं भ्रता च सन्नाहुताप वक
दिनश्चैव तु कंचुकी स्यात २६ सौम्यं शून्यं महर्घं मुनयो वदंति
तालकाद्य वाद्योदाग्रगल्भाच देना ३ से भाग लेना १ शेष रहे तो उत्तम
च सुनार्थिनी च गुणराजकादि न ० शेष रहे नो महर्घता जानना ॥
यो नु रूप स्यात्तस्य तस्य मह नक्षत्राणि ये जन्मभावधि
रतिहास्य दुर्मुखी ज्वरान्विता भुगरु पुन पुन ॥ पंचाभो
न स्थिता कर्केशावक रूपीणी ववाद्यनम् ॥ ७ ॥
सब वस्तु का नीचे लिखे चक्र पर से स्थान दो के गिनने की रीति प्रथम
ऐसे जानना -
गौसंक्र

वारोपरिसंक्रांतिमाह

रवि	चंद्र	मंग	बुध	वृ०	शुक्र	शनि	वार
घोरा	ध्वांक्षी	महो	मंदा	नंदा	मिश्रा	राक्षसी	नाम
पूर्वे	पश्चि०	दक्षि०	उत्तर	पूर्वे	पश्चि	पश्चि०	सुख
नैऋत	अग्नि	वायु	ईशा	अग्नि	नैऋत	ईशान	दृष्टि
दक्षिण	उत्तर	पश्चि	पश्चि०	पूर्वे	दक्षि०	उत्तर	दिशा
शूद्रान्सुखं.	वैश्यान्सुखं.	चौरान्सुखं.	राजान्सुखं.	ब्राह्मणान्सुखं.	पशून्सुखं,	चांडालान् सुखं	फलम्
[illegible]	ह.अ्र.उ. अ्रमि.	स्वा.पु.भ. उ.प्रा.	प्र.रे.वि. [illegible]	उ३रो.	वि.कृ.	येनास्त नक्षत्रांमि [illegible]	

सूर्यास्तकाले	शूद्रान्हंति
रात्रौप्रथमप्रहरे	पिशाचान्हंति
रात्रौद्वितीयप्रहरे	चौरान्हंति
रात्रौतृतीयप्रहरे	नटकान्हंति
रा०चतुर्थप्रहरे	पशुपालान्हंति
सूर्योदये	सन्यासान्हंति
दिनप्रथमत्र्यंशे	नृपान्हंति
दि० मध्यत्र्यंशे	द्विजान्हंति
दिनतृतीयत्र्यंशे	वैश्यान्हंति

कोष्टक

[illegible]	बव	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वणिज	विष्टि	शकुनी	चतुष्पद	नाग	किंस्तुघ्न
…नी	वैठी	वैठी	खडी	सूती	वैठी	खड़ी	सूती	खड़ी	सूती	सूती	खड़ी
	…ध्य	मध्य	महगा	सस्ता	मध्य	महंगा	मध्य	महंगा	सस्ता	सस्ता	महंगा
		…घ्र	सुवर	गधा	हाथी	भैंसा	घोडा	कुत्ता	भेडा	वैल	सुरगा
			वैल	भेडा.	गंधा	उंट	सिंह	वाघ	भैंस	वाघ	वानर
			…ा	सुख	लक्ष्मी	क्षेम	सुख	स्थिर	पीडा	स्थिर	मृत्यु
				…ला	लाल	नीला	कृष्ण	छींट	ऊन	सफेद	धूम्र
				[illegible]	धनुष	गनका	भाला	फांस	अंकुश	तलवार	बाण
				[illegible]	…हा	ढीकरा	पत्ता	कपडा	हाथ	भूसी	काष्ठ
				[illegible]	[illegible]	दही	खींचे	गुड	सक्तु	घीव	चीनी
				[illegible]	[illegible]	[illegible]	…रही	काजल	सेंदूर	अगर	कपूर
					…मुव	ब्राह्म	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	वर्णाशी	चांडाल
					…व	मंदार	कमल	दूब	बेला	गुलमेंहदी	गोड्हर
					मकर	मणी	घुडची	कौडी	लील	पाच	सुवर्ण
				…र्जप	सफेद	गुला०	नील	कृष्ण	चर्म	वल्क	धूम्र
बृ.			…ध	युवा	मध्य	अत्य	वृद्ध	बंध्या	कु.व.	पु.व.	व…
गज…			रति	हास्य	दृष्ट	ज्वरद	भुक्ति	कंपि	स्रता	व्यान्य	व…
		द.मु.	प.मु.	उ.मु.	वा.मु.	आग्नि.मु.	ईशा.मु.	नै.मु.	प.मु.	ऊर्ध्व.मु.	स…

फल॥ आयुर्धंवाहना हारो यज्ञा नीयं धनं च यत् ॥
स्वोपविष्टास्त्रिष्टं नस्ले लोकात्तय मागुय ॥२९॥

टी॰ जो वाहनादिक वस्तू पर संक्रांति का भोग होय तो उस वस्तू का नाश जानना

मूर्तयः॥ संक्रांतौ मूर्तिभेदा हरपवनयमे वारुणे सार्पऐंद्रे ऐषापचेंदु संज्ञा गुरु करा पित्र्यभे चाग्नि दस्रे च सौम्ये॥ त्वाष्ट्रे मैत्रे च मूले श्रुति वसु वपुषा त्रीणि पूर्वोत्तरा मैत्रे ब्राह्मे दित्यौ विद्वैवे भवति शर कृता दुत्तरा त्रीणि रुद्रं ३० वाणवेदैः समर्घं स्यान्मध्यस्थं व्योमरामयो। मूर्ते पंचदशो याते दुर्भिक्षं च जायते ॥३१॥ ७ ७ ७ ७ ७

टी॰ संक्रांति का मूर्तिभेद कहते है आर्द्रा स्वाती भरणी शत तारका आश्लेषा ज्येष्ठा इस नक्षत्र में होय तो दुर्भिक्ष होय प्रजा को दुख होय १५ मूर्ती जानना पुष्य हस्त मघा कृतिका अश्विनी मृग॰ चित्रा अनुराधा मूल श्रवण धनिष्ठा रेवती तीनो पूर्वा इन नक्षत्र में होय तो मध्यम फल जानना ३० मूर्ती रोहिणी पुनर्वसु विशाखा तीनों उत्तरा इन नक्षत्र में होय तो उनको सुख होय ४५ मूर्ती जानो

पूर्वसंक्रांति नक्षत्रात्परसंक्रांति ऋक्षकं॥ द्वित्रिसंख्या समर्घं स्याद्वेदः पंच महर्घता॥ ३२ ॥ ७ ॥

टी॰ गतासंक्रांति से प्राप्तसंक्रांति तक गिनना २ अथवा तीन नक्षत्र का अंतर होय तो समर्घ जानना ४ अथवा ५ नक्षत्र का अंतर होय तो दुर्भिक्ष जानना

अन्यदपि॥ संक्रांतिनाडी नवभिर्मिश्रिता च सप्ताहता पावक भाजिता च। एके समर्घं द्वितये च सौम्यं शून्यं महर्घं मुनयो वदंति

टी॰ संक्रांति कि घडी में ९ मिलावना ७ से गुण देना ३ से भाग लेना १ शेष रहे तो उत्तम फल जानना २ शेष रहे तो मध्यम जानना ० शेष रहे तो महर्घता जानना ॥

संक्रांतिनक्षत्रफलं॥ संक्रांत्यधस्नक्षत्रात् गणयेज्जन्मभावधि त्रिकं षट्कं त्रिकं षट्कं त्रिकं षट्कं पुनः पुनः ॥ पंथा भोगो व्यथा वस्त्रं हानिश्च विपुलं धनम्॥ ७ ॥

टी॰ संक्रांति जिस नक्षत्र में लगे उस नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गिनने की रीति प्रथम ३ नक्षत्र पंथा ६ भोग ३ व्यथा ६ वस्त्र ३ हानि ६ धन मानो दूसरी रीति से जानना –

सौरव्य मासतिथी नक्षत्रफल॥ यस्य जन्मर्क्षमासाद्यतिथौ संक्र

81

मणंभवेत्।। तन्मासाभ्यंतरे तस्य वैरं क्लेशंधनक्षयः

टी० जन्मनक्षत्रमें संक्रांति लगेतो बैरजानना जन्ममासमें होयतो क्लेश जानना जन्मतिथीमें होयतो धनकानाशजानना — ।।

वारोपरिसंक्रांतिमाह

नाम	राशि	नाम	नक्षत्र	मुहूर्त	फल
बृहत्सू	सिं· वृ· कुं·	विष्णुपदी	उ· वि· रो· उ· ३	४५	सुभिक्ष
जघन्य	११।६।३।९	षडसित्या·	भ· आ· श्ले· स्वा· ज्ये· शा·	१५	दुर्भिक्ष
समता	१।७।४।१०	विषुवत	अ· कृ· मृ· पु· म· ३ पू· ह· चि· अनु· मू· श्र· ध· रे·	३०	समता

संक्रांतिके हाथमें फल।। मेषालिकर्केचतथैवरक्तं चापेच मीनेचतुलेचपीतं।। श्वेतं वृषेस्त्री मिथुनेचचंद्रे कृष्णंचनक्रेथघटेचसिंहे।। रक्तेफलंभवेद्दुःखश्वेतंचैवसुखंशुभं पीतेश्रीस्तुतथाप्रोक्ता श्यामे मृत्युर्नसंशयः।। ।।

टी० मेषवृश्चिककर्क इनतीन राशिके चंद्रमामें संक्रांति प्रवेश होयतो हाथमें रक्तफलजानना और प्रजाको दुख प्राप्तीजानना धन मीन तुला इनतीन राशिके चंद्रमामें संक्रांती प्रवेश होयतो पीत फलजानना लक्ष्मी प्राप्ती होय वृष कन्या मिथुन इन तीन राशीके चंद्रमामें संक्रांती प्रवेश होयतो सपेद फलजानना सुख प्राप्ती होय मकर कुंभ सिंह इन तीन राशीके चंद्रमामें संक्रांती प्रवेश होयतो कृष्ण फलजानना मृत्यु प्राप्ती जानना —

संक्रांतिपुण्यकाल।। संक्रांतिकालादुभयत्रनाडिकाः पुण्यामताःषोडशषोडशोष्णगोः।। निशीथतोर्वाग परत्रसंक्रमे पूर्वापराहंतिमपूर्वभागयोः।। ४०।।

टी० संक्रांतीके पूर्व और परे १६ घडी पुण्य काल होनाहै परंतु आधी रात्रके पहिले होयतो दिनके तृतीय भागमें पुण्य कालजानना आधी रात्रके बाद होयतो परदिन के पूर्व भागमें पुण्य कालजानना ।। इतिसंक्रांति [illegible]

वो

अथ लग्नप्रकरणम्

मेषो वृषोऽथ मिथुनं कर्कः सिंहोऽथ कन्यका ॥ तुलाथ वृश्चिको धन्वी
मकरः कुंभमीनकौ ॥१॥ राशयस्तु क्रमादेते पुंस्त्रियौ क्रूरसंज्ञकौ ॥
ज्ञेयः चरस्थिरश्चैव द्विस्वभावः क्रमात्पुनः ॥२॥ पृष्ठोदया धनुर्मेषो
मकरो वृष कर्कटौ ॥ उभयोदयवान्मीनस्ततोऽन्ये मस्तकोदयाः ॥३॥
मेषो वृषो धनुर्युग्मं कर्कनक्रौ निशाबलाः ॥ दिवाबलास्तु तेभ्योऽन्ये
स्वस्वकाले बलाधिकाः ॥४॥ अथ राशिस्वामिन ॥ मेष वृश्चिकयोर्भौम
बुधो मिथुन कन्ययोः ॥ तुला वृषभयोः शुक्रः कर्कटस्य तु चंद्रमा ५
सिंहस्याधिपतिः सूर्यः शनिर्मकरकुंभयोः ॥ स्वान्मीनधनयोर्जी
व श्चैते राशीश्वरा मताः ॥६॥ अथ ग्रहोच्चानि ॥ मेषो वृषस्तथा नक्रः
कन्या कर्को झषस्तुला ॥ सूर्यादीनां क्रमादेते कथिता उच्चराशयः
७ ॥ परमोच्चांशकः सूर्यो द्विशो रामगजाश्विनः ॥ बाणचंद्रशरश्चै
लदस्राः स्याश्विमिताः क्रमात् ८ अथ नीचम् ॥ सूर्यादीनां जगुर्नी
चं सोच्चभाघच सप्तमम् ॥ राहोस्तु कन्यका गेहं मिथुनं स्वोच्चभं स्मृत
म् ॥९॥ अथ मूलत्रिकोणम् ॥ सिंहो वृषभ मेषाख्यं कन्या धन्वि तु
ला घटाः ॥ रव्यादीनां क्रमान्मूलत्रिकोण राशयः स्मृताः १० अथ मेषा
दि लग्न कृत्यानि ॥ आकराधातु कर्माणि भूमिपालाभिषेचनम् ॥
निरोधः साहसं चैते मेषलग्ने प्रसिध्यति ११ क्षेत्र कूपादिकं दानं
कुमारीवरणं ध्रुवम् ॥ गृहप्रवेश उद्वाह सिद्धे देत वृषोदये ॥१२॥
कला शिल्प भूषा विज्ञानं यत्कार्यं वृषभोदितम् ॥ तत्सर्वं मिथुने प्रो
क्तं होराशास्त्रविचक्षणैः ॥१३॥ वारि बंधन मोक्षं च पौष्टिकं चरक
र्म्म च ॥ वापी कूप तडागादीन् कर्कटे कथितं बुधैः ॥१४॥ राजसेवा
कृषिः पण्यं परयोगो वणिकक्रयः ॥ सिंहे सिध्यति तत्सर्वं मेषलग्नो
दितं च यत् ॥१५॥ भूषणं शिल्प विज्ञानं औषधं पौष्टिकं तथा ॥
चरस्थिरं च यत्कृत्यं कन्यालग्ने प्रसिध्यति ॥१६॥ वाणिज्यं क
र्षणं सेवा यात्राभांड तुलाश्रयम् ॥ तुलालग्ने समाख्याता मुनि
भिस्तत्ववेदिभिः ॥ राजसेवाभिषेकौ च साहसं दारुणं तथा ॥
चौर्यं स्थिरं कर्म्म कर्त्तव्यं तत्सरीसृपे ॥१७॥ उद्वाहः पौष्टि

कयात्रावाहनाग्निपरिग्रहौ धनुर्लग्ने चरं कर्म्म कथितं पूर्वसूरिभिः ॥
१९ दासीचतुःपदोष्ट्रादिक्रयंसो बंधमोक्षणम् ॥ तथा सेवाश्रयं या
त्रा पयसो मकरोदये २० बीजोप्तिसंग्रहौ नौकाचर्य्या वारिगमादि
कम् ॥ पण्यकर्म्मा ख्रकार्य्यं च कुंभलग्ने प्रकीर्त्तितम् ॥ २१ ॥ उद्वाह
स्वाभिषेकश्च विद्यालंकरणादिकम् ॥ द्विरागमं कृषिश्चान्नप्रा
शनं मीनमाश्रितम् ॥ २२ । मेषादिके शुभस्थेषु यथोक्तं कर्म्म सिध्यति
पापे त्रितयते ष्वेषु क्रूरं सिध्येन्न चेतरम् ॥ ॥ ॥

अथलग्नप्रकरणचक्रं

मे	पुरु	क्रूर	चर	पृष्ठो दय	रात्रि बं	मं	सू अंश	श	मं
वृ	स्त्री	सौ	स्थिर	पृ०	रा०	शु	चं अंश ३	०	चं
मि	पुरुष	क्रूर	द्विस्व	शिर्षो द०	रा०	बु	०	०	०
क	स्थिर	सौ	च	पृ०	रा०	चं	वृ ऽ अंश ५	मं	०
सिं	पु०	क्रूर	स्थिर	शि	दिनं	सू	०	०	सू
कं	रा	सौ	द्विस्व	शि	दिनं	बु	बु ऽ अं १५	शु	बु
तु	पु	क्रूर	च	शि	दि	शु	श ऽ अंश २०	सू	शु
वृ	चं स्त्री ३	सौ	स्थि	शि	दि	मं	अंश ६ ०	चं	०
ध	पु०	क्रूर	द्विस्व	पृ०	रा	वृ	०	०	वृ
म	स्त्री	सौ	च	पृ	रा	श	मं ऽ अंश २८	वृ	०
कुं	पु	क्रूर	स्थिर	शि	दि	श	०	०	श
मी	स्त्री	सौ	द्विस्व	उभयो दय	दि	वृ	शु २७	बु	०
संज्ञा	पु स्त्री	क्रूर	चरादि	उदय	बलं	स्वामी	उच्च	नीच	मूलत्रि

धातुकर्मराजाऽभिषेकयात्रादि सिद्धि ०
ग्रहकूपादि दानादिक विवाहमंगलकार्यगृहप्रवेश सिद्धि ०
कलविभूषणश्चानचतुष्पदकर्म्मभिषिनकर्म सिद्धि ०
सलबंधनवा छोडनापौष्टिककर्मचरकर्मवापिकूपतडागादिसि
राजसेवाकृषिदुकानमित्रताकरनीवाणिज्यराजाऽभिषेकासि
भूषणशिल्पस्नानऔषधपौष्टिकं चरस्थिरादि कृत्यसि०
वाणिज्यकर्षणसेवाभृत्यादिकयात्राभांडादितुलादिदान
व्रतनियादि
राजसेवाऽभिषेकसाहसकर्मदारुणकर्मशस्त्रकर्मचौरादिसि
विवाहपौष्टिकयात्रादिवारुनऽग्निपरिग्रहचरकर्मादिसि०
दासिचातुरिकर्मस्पर्धादिकर्मनौकासेतबंधयात्रादिचरादिसि
बीज्योप्तीसंग्रहकर्म्मनौकाकार्यमन्त्रूकर्मनरादिकार्यसि
उद्वाहराजतिलकविद्याऽलंकारादिद्विरागमनादिकृषिप्रा
शनादि सिद्धि

अथत्याज्यप्रकरणम्

तिथि नक्षत्र वाराणां दुष्टयोगान्यशेषतः॥ व्यती पातादि दुर्योगान्
विष्टी दर्शार्कसंक्रमान् १ जन्मर्क्षातिथि मासांश्च तिथ्यर्द्ध भवस
न्दिनम्॥ गंडांतं त्रिविधं दुष्टं क्षीणेन्दु पापकर्त्तरी २ पापहोरा खले
वारे यामार्द्ध कुलिकादिकान्॥ जन्मराशि विलग्नाभ्यामष्टमेलग्न
मेवच ३ दिनमेकं तु मासांते ऋक्षांते घटिकाद्वयम्॥ घटिकैकं
च तिथ्यंते लग्नांते घटिकार्द्धकम् ४ विषाख्य नाडिका भानां पात
मेकार्गलं तथा॥ दग्धाहं क्रांतिसाम्यं च लग्नेशं रिपुमृत्युगम् ।५
दिनार्द्धं च रजन्यर्द्धं संध्योस्तु पलविंशतिः॥ रोगोत्पत्याद्यरिष्टानि सू
तकं मातृ रार्तवम्॥६॥ जन्मेशास्तं मनोभंगं शुभखेटानि संत्यजेत्
॥रामः॥ सर्वस्मिन्विधुपापयुक्ततनुलवा वर्द्ध निशान्हो घटी त्र्यंशं वै
कुनवांशकं ग्रहणतः पूर्वं दिनानां त्रयम्॥ उत्पात ग्रहतोऽष्टहां
श्च शुभदोत्पाते श्च दुष्टं दिनं षण्मासं ग्रहभिन्नभं त्यज शुभे योगं
तथोत्पातभम् ७॥ अस्यार्थः॥ सर्वस्मिन् इति सर्वस्मिन् कार्ये एतानि
वै निश्चयेन त्यज परिहरेत्यर्थः॥ विधुना पापेन वा पापैः क्षीणे चंद्रे मही
सुतार्कि तनयै वा युक्तौ युक्तौ तनुलवौ लग्नलग्न पतवांशौ त्याज्यौ॥ पूर्णो
क्षीणोऽपि वा चंद्रो लग्ने सर्वत्र गर्हितः॥ इति कश्यपोक्तेः॥ पापेन्दुलग्नगो पे
वांशगतो वर्ज्यौ शुभे सदैनि च॥ निशान्होरर्द्धे रात्र्यर्द्धे दिनार्द्धे च घटी
त्र्यंशं विंशति पलानि दश पूर्वं दश पश्चाच्च परिहर॥ उक्तं च॥ मूर्त
कालो निवसति महानिशायां च दिनदले यस्मात् दशपूर्वं परस्त
स्मात् वर्ज्यानि च पलानि॥ कुनवांशकं पापग्रहनवांशकं परिहर॥
अथ ग्रहणतः पूर्वं दिनानां त्रयं परिहर॥ उत्पात ग्रहतः उत्पाताः दिव्य
भौमांतरिक्षाः॥ यस्मिन् दिने भवन्ति ततोऽष्टहांश्च सप्त दिनानि वर्ज्यानि।
यद्दोग्रहणं तस्मादपि सप्त दिनानि वर्ज्यानि॥ उक्तं च॥ चंद्रसूर्योपरागे
स्य त्र्यहं पूर्वं शुभे त्यजेत्॥ सप्ताहमशुभं पश्चात् स्यात्तं ग्रहणास्त
तकम्॥ त्रिविधोत्पात तश्चोर्द्ध सिंहिका सूनु दर्शने॥ सप्तरात्रं न
कुर्वंति यात्रा व्याहादि मंगलमिति॥ अंगिरादपि॥ सर्वग्रासे तु स
प्ताहमर्द्धग्रासे दिनत्रयम्॥ त्रिद्व्येकांगुलतो ग्रासे दिनमेकं विवर्जयेत्

सर्वे ग्रासे दिनान्यष्टौ सर्वे कार्य्ये विवर्जयेत् ॥ षट् दिनानि त्रिभागो
न अर्द्ध ग्रासे चतुर्दिनम् ॥ चतुर्थांशे त्रिरात्रं स्यात् ग्रहणे चंद्रसू
र्ययोः ॥ अत्र कार्य्यस्यावश्यकत्वे परिहारो ज्योतिर्निबंधे ॥ पंचदि
नानि वशिष्ठ स्त्रिदिनं गर्गश्च कौशिकस्त्वेकम् ॥ यवनाचार्य्यस्य
च मतं पंच मुहूर्त्तानि दूषयति राहुः ॥ अयं च निषेधो नित्यनैमित्ति
कादिकृत्यातिरिक्त विषयः ॥ गुरुः ॥ नित्ये नैमित्तिके काम्ये जप
होमक्रियासु च ॥ उपाकर्म्मणि चोत्सर्गे ग्रहवेधो न विद्यते ॥
इति शुभदोत्पातैश्च दुष्टं दिनमिति ॥ शुभदोत्पाता वाराहसंहितायाम् ॥
चंडाशनि महीकंप संध्या निर्घात निस्वनाः ॥ परिवेष रजोधूमर
क्तार्क रस्तमनोदयाः ॥ द्रुमेभ्योन्नरसस्नेह मधुपुष्प फलोद्गमाः ॥
गोपक्षिमदवृद्धिश्च शुभाय मधुमाधवे ॥ इत्यादयः ऋतु परत्वे
नोक्ताः यद्दिने एते भवंति तद्दिनमेव त्यज ॥ अथ ग्रहभिन्नभं ग्रहै
र्भौमादिभिर्भिन्नं भेदितं तथा यौद्धं ग्रहयोर्युद्धं यस्मिन्दिने न
क्षत्रे युद्धं यातम् ॥ तथोत्पातभम् ॥ यस्मिन्नृक्षे दिव्यांतरिक्षभौमा
स्त्रिविधोत्पाताः संभूताः ॥ एतानि ग्रह भिन्न यौद्ध उत्पात नक्षत्रा
णि षण्मासं त्यज ॥ भेदस्तारा खेटयोर्यत्रैवास्यादिति विवाह वृंदा
वने ॥ नारदः ॥ ग्रहणोत्पात भं त्याज्यं मंगलेषु ऋतुत्रयम् ॥ इति ॥
ननु नक्षत्रसंधौ जायमाने ग्रहणे किं नक्षत्रं दूषयेदित्यत आह ॥
शार्ङ्गधरः ॥ यस्मिन्विधुराहुरिनं च धिष्ण्ये गृह्णाति तत्त्याज्यमृतु
त्रयं स्यात् ॥ पाणिग्रहे पुंमरणे विधत्ते द्वयोर्भयो श्चेद्वयमेव जह्या
त् ॥ अन्यच्च ॥ पक्षांतरेण ग्रहणं द्वयं स्याद्यदा नदा तत्क्रमणे यमं
भम् ॥ पद्मादि शुद्धं भवति द्वितीयं पाणिग्रहे शुद्धमितिर्भार्गवः स्या
दिति ॥ अनेषं ग्रहर्क्षे सकलार्द्धपादग्रासे क्रमात् के गुणेंदुमासान्
॥ पूर्वे परस्मादुभयो स्त्रिघस्रा ग्रस्तेऽस्तगेवाभ्युदितेऽर्द्धखंडे ॥ २ ॥
अस्यार्थः ॥ नेष्टमिति ग्रहर्क्षं ग्रहणनक्षत्रं क्रमात्संपूर्णार्द्धचतुर्थांशग्रा
से सति षट्त्र्येक मासान्त्रिष्टम् ॥ गुरुः ॥ सर्वग्रासे तु षण्मासान्त्रीन्मासां
स्तु दलेऽपि च ॥ आपादग्रहणे धिष्ण्ये मासमेकं विवर्जयेत् ॥ अथ क्रमात्
ग्रस्ते ऽस्तगे ग्रहणार्द्धग्रासे उभयोः प्राक्पश्चाच्च त्रि त्रि घस्रानि ष्टाः
न्यौ ॥ अर्द्धखंडे ग्रस्तास्तग्रस्तोदयपोरभावेऽपि ॥ अर्द्धग्रासे उभयोः प्राक्पश्चाच्च त्रि त्रि घस्रान् ॥

गुरुः॥अस्तास्ते त्रिदिनं पूर्वं पश्चादस्तोदयेतथा॥खंडग्रासे त्रित्रि
दिनं निःशेषे सप्तसप्त च॥कश्यपः॥अस्तोदये परोदोषोऽस्तास्ते
ऽर्वाक्शशीनयोः॥सुनिशार्द्धेतु भयं तत्खंडीखंडव्यवस्थयो रिति
८ जन्मर्क्षमासतिथयो व्यतिपातभद्रावैधृत्यमापितृदिनानितिथि
क्षयवृद्धी॥न्यूनाधिमासकुलिकप्रहरार्द्धपातविष्कुंभवज्रघटिका
त्रयमेववर्ज्यम्॥९॥जन्मर्क्षेति॥जन्मनक्षत्रजन्ममासजन्मतिथय
शुभकर्म्मसुवर्ज्याः॥अयंनिषेधआद्यगर्भस्यैव॥नारदः॥नजन्म
मासेजन्मर्क्षेनजन्मदिवसेऽपिवा॥आद्यगर्भसुतस्याथदुहितुर्वा
करग्रहः॥जन्ममासःसविज्ञेयो वर्जितःसर्वकर्म्मसु॥वस्तुतस्तु॥
यत्रशुक्लादिचांद्रमासे चैत्रादौ जन्माभूत्॥सचांद्रोमासोजन्म
मासःत्याज्यः॥ इंद्राग्नीयत्रहूयेते मासादिःसप्रकीर्तितः॥अग्नी
षोमौ स्मृतौमध्येसमासःपितृसोमकः॥ हारीतोक्तेमासलक्षणम्
व्यतीपातादयश्चवर्ज्याः॥पितृदिनमातापित्रोर्म्मरणदिनम्॥
श्राद्धदिनमित्यर्थः॥तिथिक्षयवृद्धी तिथिवृद्धिक्षयलक्षणम्॥
माहवशिष्ठः॥स्पृशेत्तिस्रस्तिथयोवारएकस्मिन्नवमातिथिः॥ति
थिवारत्रये चैका त्रिस्पृक्स्यादहेऽपिनेदिने॥न्यूनमासः॥अधिक
मासश्चवर्ज्यः संक्रमद्वयसहितःक्षयमासः॥असंक्रांतोऽधिक
मासः॥कुलिकार्द्धप्रहरौ॥पातोमहापातः विष्कुम्भयोगवज्रयोग
यो एषं घटिकात्रयंवर्ज्यं॥एवंप्रकारेणकैश्चिद्वज्रयोगेनवघ
टिकावर्ज्या इत्युक्तम्॥यथा॥विष्कुंभाद्यघटित्रयं चनवकं
व्याघातवज्रोद्भवे॥इतिरत्नमाले तथा व्याघातेवज्रकेंका इति
गणेशज्योतिर्विदुक्तिरपिनिरस्ता॥विष्कुंभवज्रयोस्तिस्रः षड्
गंडातिगंडयोः व्याघातेनवशूलेतु पंचनाड्यो विगर्हिता॥इतिकश्य
पोक्तेः॥परिघस्यार्द्धं वर्ज्यम् शूलस्याद्याःपंच गंडातिगंडयोराद्याःषट्
षट्घटिकाःव्याघाते चादिमाःनवघटिकाः वर्ज्याः॥९॥ वेदांगाष्ट
वार्केन्दुपक्षरंध्रतिथौत्यजेत्॥यस्यकस्यतुतत्वाशाशारानाडीपरा
ःशुभाः१० वाप्यारामतडागकूपभवनारंभप्रतिष्ठाव्रतारंभोत्सर्ग
वधूप्रवेशनमहादानानिसोमाष्टके॥गोदानाग्रयणप्रपाप्रथम

कोपा कर्म्मवेद व्रतं नीलोद्वाहमथाति पन्न शिशु संस्कारान्सुर
स्थापनम्॥११॥ वाप्यारामेति॥ वापीदीर्घिका आराम उपवनम्॥त
डागः पुष्करिणी॥ कूपः प्रसिद्धः एतेषामारंभ प्रतिष्ठा॥ आरंभनिर्म्माणं
प्रतिष्ठा उत्सर्गः॥ तत्र प्रदेष्ट प्रतिष्ठा गृह प्रवेशो ज्ञेयः व्रतानामनेन व्रतादी
नामारंभः ग्रहणम्॥ उत्सर्गउत्थापनम्महादानानि तुला पुरुषादीनि
सोमः सोमयागः अष्टकाश्राद्धम्। गोदानं केशांत संज्ञं कर्म्म। आग्रयणं
नवान्नेष्टि। प्रपाजलशाला। प्रथमकोपा कर्म्म प्रथमारभ्यमाणं श्रावणी
कर्म्मवेद व्रतंमहानाम्न्यादित्रयम्। महानाम्नीउपनिषद्व्रतम्॥ वेदव्र
तंच नीलोद्वाहः काम्यवृषोत्सर्गः॥ अतिपन्न शिशु संस्काराः अतिप
न्नाः अतिक्रान्ताः जातकर्म्मादयः शिशूनां संस्कारादेव स्थापनम् ११
दीक्षा मौंजि विवाह मुंडनमपूर्वन्देवतीर्थेक्षणं सन्यासाग्नि परिग्र
हौ न्रुपतिसंदर्शाभिषेकौ गमनम्॥ चातुर्म्मास्यसमावर्ती श्रवण
योर्वेधं परीक्षां त्यजेद्वृद्धत्वास्त शिशुत्व इज्य सितयोर्न्यूनाधि
मासे तथा १२ अत्र मूलवचनानि शालातपः॥ अस्तंगते गुरौ शुक्रे वा
ले वृद्धे मलिम्लुचे॥ उद्यापनमुपारंभ व्रतानां नैव कारयेत्॥
वसिष्ठः॥ वापी कूप तडाग याग गमनं क्षौरं प्रतिष्ठा व्रतं विद्या
मंदिर कर्णवेधनमहादानंसेवनंम्॥ तीर्थस्नान विवाह देव भ
वन मंत्रादिदेवेक्षणं दूरे रोगविजिजीविषु परिहरेदस्तं गते भार्गवे
१४ उपनयनं गोदानं पाणिग्रहणं प्रवेश गमनानि॥ अस्तमिते
सु न कुर्यात्सुर गुरु भृगुपुत्रचंद्रेषु॥ १५ अस्तभयादि फलमाह
बादरायणः॥ गुरोरस्ते पतिं हन्यात् शुक्रास्ते चैव कन्यकाम्। चंद्रे
नष्टे उभौ हन्यात्तस्मादस्तं विवर्जयेत् १६ बालभावे स्त्रियं हन्यात्
वृद्धभावे नरं तथा॥ तस्माद्बाल्ये च वार्द्धे च विवाहं नैव कारयेत्॥
१७ अधिमासे वर्ज्यानि गृह्यपरिशिष्टे॥ सोमयागादि कर्म्माणि
नित्यान्यपि मलिम्लुचे॥ तथैवाग्रयणाधानचातुर्म्मास्यादिकान्य
पि १८ महालयाष्टका श्राद्धोपाकर्म्माद्यपि कर्म्म यत्॥ स्पष्टमा
सविशेषाख्य विहितं वर्जयेन्मले १९ गर्भेच हस्यती॥ आग्न्याधा
नं प्रतिष्ठा च यज्ञदानव्रतानि च॥ वेदव्रत वृषोत्सर्ग चूडाकरण

सेवच ॥ मांगल्यमभिषेकंच मलमासे विवर्जयेत् ॥ मरीचि ॥ २०
गृहप्रवेशगोदानस्थानाश्रयमहोत्सवम् ॥ नकुर्यान्मलमासे
तु संसर्प्पाहस्यतौ तथा २१ वशिष्ट ॥ वापीकूपतडागादि प्रति
ष्ठा यज्ञकर्मच ॥ नकुर्यान्मलमासेतु संसर्पा हस्यतौ तथा २२ यदा
क्षयमासो भवती तदा क्षयमासस्य पूर्वोत्तरावधि मासौ भवतः तत्र
पूर्वः संसर्पः द्वितीयो हस्यतिः ॥ गार्ग्य ॥ बालेवा यदिवावृद्धे शुक्रे वा
स्तंगते गुरौ ॥ मलमास इवैतानि वर्जयेद्देवदर्शनम् २३ अपूर्व
देवता दृष्टा अचः स्युर्नदसमार्गवे ॥ मलमासेत्वनावृत्त तीर्थ यात्रा
विवर्जयेत् २४ अनावृत्ता अपूर्व तीर्थयात्रा ॥ अत्र नियत कालानि
सीमंत नाम करणादीनि ॥ पूर्वोक्ता दिसत्वेऽपि स्व स्व काल एव
कार्य्याणि २५ गुरु ॥ मासप्रयुक्त कार्येषु मूढत्वे गुरुशुक्रयोः ॥
नदोषकृन्मलेमासे गुर्वादित्यादिकं तथा २६ अन्यत्रापि ॥ सीमं
तयातकादीनि प्राशनां तानियानिवै ॥ नदोषो मलमासस्य मौ
ढ्यस्य गुरुशुक्रयोः २७ वशिष्टः ॥ अनीत कालान्यखिलानिता
निकार्य्याणि सौम्यायनेगे दिनेशे ॥ सिते गुरौ वाप्यति दृश्यमाने
तदुक्त पंचांग दिनेप्यखंडे ॥ देवीपुराणे ॥ सिंहसंस्थे गुरौ यत्ना
त्सर्वारंभान्विवर्जयेत् ॥ पुत्रमातृकलत्राणि हन्या स्त्री घ्नंनसं
शयः २९ कारको व्रजनेनाशं संतानं म्रियतेऽचिरात् ॥ देवारामत
डागानि प्रपोद्यानगृहाणिच ॥ ३० ॥ विवाहयज्ञोपनय चूडादि
चन सिध्यति ॥ यथा सिंहस्थितो जीवस्तथैव मकरस्थित ३१ अ
यमपि निषेधो नियत कालानां न संग्रह ॥ वशिष्ट ॥ नीचरा
शिगतो जीवः अशस्तः सर्वकर्मसु ॥ नीचे नीचांशकस्य ज्यैष्ठ
स्मादंशेषु नीचता ३२ विशेषो माण्डव्येनोक्त ॥ मघास्थोपि यदा
जीवो वर्जयेत्यंचसांशकम् ॥ प्रोषेष्व पिचभागेषु विवाहश्शु
भनो मतः ३३ तोडरानंदः ॥ अतिचारे सप्त दिनं वक्रे द्वादशमेव
च ॥ नीचस्थितेऽपि वागीशे मासमेकं विवर्जयेत् ॥ ३४ ज्योतिनि
बंधे ॥ हरिनीचारिभागेपि व्रतो द्वाहादि संगलम् ॥ शनिषिद्धं
यदि स्वाक्षेस्वमे वासं स्थितो गुरु ३५ मघांत्यक्त्वा यदागच्छेत्फा

ल्गुंनीच वृहस्पतिः।।पुत्रिणी धनिनी कन्या सौभाग्यं सुखमश्नुते ३६
कचिदपूर्वतीर्थयात्रायां मौढ्यादिदोषो नास्ति।। गोदावर्यांगयायां
च श्रीशैले ग्रहणद्वये।।सुरासुराणां गुर्वोश्च मौढ्यदोषो न विद्यते।।
२७ वायुपुराणे त्रिस्थलीसेतौ।। गयायां सर्वकालेषु पिंडं दद्याद्विधानत
अधिमासे जन्मदिने अस्ते गुरुशुक्रयोः ३८ नत्यक्तव्यं गया श्राद्धं
सिंहस्थेच वृहस्पतौ।। अधिमासे सिंहगुरावस्ते च गुरुशुक्रयोः।।
३९ तीर्थयात्रा न कर्त्तव्या गयां गोदावरीं विना।। वास्त्यवक्रातिचारे
णेगुरु षपिगुर्वादित्यवद्वर्ज्यम्।।यात्रोद्वाह प्रतिष्ठांच गृहं चूडाव्रता
दिकम्।। वर्जयेदित्य तच्चैव जीवे वक्रातिचारगे ४० अस्यापवादो
राजमार्तण्डे।।वक्रातिचारगे जीवे वर्ज्ययेत्तदनंतरम्।। व्रतोद्वाहा
दिचूडाया मष्टविंशतिवासरान्।। अथ दीपिकायाम्।। त्रिकोणजा
याधनलाभराशौ वक्रातिचारेण गुरुः प्रयातः। यदा तदा प्राहशु
भं विलग्नं विवाहपाणिग्रहणं वशिष्ठः ४१ गुर्वादित्येऽपि सर्वशुभक
र्मवर्ज्यम्।। शौनकः।।एकराशिगतौ सूर्य्यजीवौ स्यातां यदा पुनः।।
व्रतबंधविवाहादि शुभकर्माखिलं त्यजेत्।। ४३।। विश्वघस्रप
क्षेऽपि यस्मिन्पक्षेतिथिक्षयनाशः त्रयोदश दिनः पक्षः सोऽतिनिंद्यः।।उक्तं
च।। पक्षस्य मध्ये द्वितीथा वपेतां तदा भवेद्रौरवकालयोगः।।
पक्षे विनष्टे सकलं विनष्टमित्याहुराचार्य्यवरास्समस्ता ४४ तथा
।।त्रयोदशदिने पक्षे तदा संहरते जगत्।। अपि वर्षसहस्रेण काल
योगः प्रकीर्त्तितः ४५ तस्मिन्पक्षे शुभकर्म्म वर्ज्येच्चंडेश्वरः।। त्रयोदशदि
ने पक्षे विवाहादि न कारयेत्।।गर्गादिमुनयः प्राहुः कृते मृत्युस्त
दा भवेत्।। उपनयनं परिणयनं वेस्मारंभादि पुण्यकर्म्माणि।। या
त्रादिक्षयपक्षे कुर्य्यान्न जिजीविषुः पुरुष ४७ अस्मिन्नूषादिकम
पि न्याज्यम्।।राजमार्तंड।। यात्रां चूडां विवाहं क्रतिविवरविधिं
प्राग्वसत्यप्रवेशः प्राशा दोषानहर्म्यं सुरनरभवनारंभविद्यावि
धाने।। मौंजी बंधप्रतिष्ठा मणिकनकरदाधारणं कुर्वते ये मृत्युः
सिंहस्थितेन्ये गुरुदिनकरयो रेकराशिस्थयोश्च ४९ सिंहस्थे
गुरौ मन्यापि सिंहांशे सर्व्वं यात्र पादशांशे।। १३।२० भ्योऽनं

तरसञ्च्यंशामंध्रात्रयम्॥ पंचमो नवांश सिंहांशः तत्र गुरौ सति विवाहो नेष्टः॥ सिंहांशोतु सिंहांशे यदाभवति वाक्पतिः॥ सर्वदेशेष्ववर्त्यान्यो दंपत्योर्निधनप्रदः॥ इतिराजमार्तंडः॥ सिंहेपि भगदैवत्ये गुरौ पुत्रवतीभवेत्॥ अत्यंत सुभगा स्त्री धनधान्यसमृद्धिदा ४९ अथदेशभेदात् लल्लः॥ गोदावर्य्युत्तरे तीरे यावद्भागीरथीतटम्॥ नष्टस्तत्र विवाहादिः सिंहस्थेज्ये सदा बुधैः ५० वशिष्टः॥ भागीरथ्युत्तरे कूले गोत्तमादक्षिणे तथा॥ विवाहो व्रतवधोवा सिंहस्थेज्ये न दुष्यति ५१ अत्र विवाहव्रतवंधान्यत मशुभकर्म्माणि निषिद्धान्येवज्योतिर्निबंधे॥ मंगलानीह कुर्वीत सिंहस्थोवाक्पतिर्यदा॥ भानौमेषगते सम्यगित्याह शौनकादयः ५२ कुत्रापि मकरस्थोऽपि नवर्ज्यः लल्लः॥ नर्म्मदा पूर्वभागे तु शोणस्योत्तरदक्षिणे॥ गंडक्याः पश्चिमे भागे मकरस्थो न दोषभाक् ५३ अत्यदपि॥ मागधे गौडदेशे च सिंधुदेशे च कोंकणे॥ व्रतं चूडां विवाहं च वर्जयेन्मकरे गुरौ ५४ लुप्तवत्सरोऽपि शुभकर्म्से निंद्यः॥ अतिचारगतो जीवस्तं राशिं नैति चेत्पुनः॥ लुप्तः संवत्सरो ज्ञेयो गर्हितस्सर्वकर्म्मसु ५५ गुरुः॥ मेषे वृषे मृगे कुंभे ष्वतीचारेगुरुः॥ न तत्र काललोपस्स्यादित्याह भगवान्यमः ५६ दशमासोत्तरं दोषः च्यवनः॥ मासान्दशैकादशवा प्रयुज्य राशौ यदाराशिमुपैति जीवः॥ भुक्तेन पूर्वं च पुनस्तथापि न लुप्तसंवत्सरमाहुरार्य्याः ५७ देशभेदेन परिहारः॥ लुप्तसंवत्सरो रेवानर्म्मदासुरनिम्नगा॥ भागीरथीतयोर्नद्यो रंतरेऽतिनिषिद्धदः॥ ५८॥ उक्तं च॥ लुप्ताब्ददोषोऽत्रिमतेनमध्ये सामोद्भवायास्सुरनिम्नगायाः॥ इतिनारदः॥ समदृष्टिर्गुरोश्शुक्रेतन्मासेतुप्रयत्नतः॥ विवाहादि न कुर्वीत नर्म्मदातीर उत्तरे॥ ५९॥ ॥ ॥

वर्षसंधिपक्षमात्रंमयनस्यतर्षकं दिनत्रय
मृतौ संधिवर्जनीयोहिमंगले

टी० वर्षके अंतके १५ दिन अयनके अंतके ७ दिन ऋतुके ३ दिन मंगलकार्यमें वर्जित हैं

अथऋतुप्रकरण

तिथिरेकगुणा प्रोक्ता नक्षत्रंच चतुर्गुणं ॥ वारः षष्ठगुणो ज्ञेयो मासश्चाष्टगुणः स्मृतः १ वस्त्रं शतगुणं विद्याद्दृष्टीनंच ततोधिकं ॥ संक्रान्त्यां ग्रहणे चैव वैरिणी चगतालका

टी॰ स्त्रीको प्रथम ऋतुप्राप्त होताहै उस्का फलाफल यथाविधि सब कहतेहैं तिथीका एकगुण १ नक्षत्रका चार ४ वारका ६ गुण महिनेका ८ गुण वस्त्रका १०० गुण और जो देखेतो उस्को बहुत दोषहै संक्रांतीके दिन ऋतुप्राप्त होयतो वंध्या होय और ग्रहणके दिन होयतो विधवा होय ॥ —

मासफल ॥ प्रथमार्तौ मधौ नारी विधवा भवति ध्रुवं ॥ वैशाखे धन पुत्राढ्या ज्येष्ठे रोगान्विता भवेत् ३ आषाढे च मृतापत्या श्रावणे च धनान्विता ॥ भाद्रे च दुर्भगा ज्ञेया श्विने च तपस्विनी ४ ऊर्जेल्पायुष्मती नारी मार्गशीर्षे बहुप्रजा ॥ पौषे तु पुंश्चली नारी माघे पुत्रसुखान्विता ५ फाल्गुने श्रीमती साध्वी क्रमान्मासफलं स्मृतम् ॥

टी॰ स्त्रीको प्रथम ऋतु चैत्रमें प्राप्त होयतो विधवा जानना वैशाखमें होयतो धनपुत्रकरको युक्त ज्येष्ठमें होयतो रोगयुक्त होतीहै आषाढमें होयतो मृतप्रजा श्रावणमे होयतो धनयुक्त भाद्रपदमे होयतो दुर्भगा होतीहै आश्विनमें होयतो तपस्विनी कार्तिकमें होयतो थोडी आयुष मार्गशीर्षमें होयतो बहुल प्रजा पौषमें होयतो जारिणी माघमें होयतो पुत्रसुखयुक्त फाल्गुनमे होयतो पतिव्रता जानना —

तिथिफल ॥ शुचिर्नारी प्रतिपदी द्वितीयायां तु दुःखिनी । तृतीयायां पुत्रवती चतुर्थ्यां विधवा भवेत् ६ पंचम्यां चैव सौभाग्यं षष्ठ्यां कार्यविनाशिनी । सप्तम्यां सुप्रजा नारी चाष्टम्यां राक्षसी तथा ७ नवम्यां विधवा नारी दशम्यां सौख्यभोगिनी । एकादश्यां शुचिर्नारी द्वादश्यां मरणं ध्रुवं त्रयोदश्यां शुभा प्रोक्ता चतुर्दश्यां परान्विता ॥ पौर्णिमास्याममावास्यां शुभंचाशुभमेवच ॥ ८ ॥ ९ ॥

टी॰ स्त्रीको प्रथम ऋतु प्रतिपदाको प्राप्त होयतो पवित्र जानना द्वि

याकोदुःखी तृतीयाको पुत्रवती चतुर्थीको विधवाजानना पंचमीको होयतोसौ भाग्यवती षष्ठीको होयतो कार्यनाश सप्तमीकी होयतो सुपुत्रजा अष्टमीको होयतो राक्षसी नवमीको होयतो विधवा दशमीको होयतो सुखकाभोगकरे एकादशीको होयतो शुचि द्वादशीको होयतो मरणपामी त्रयोदशीको होयतो शुभज चतुर्दशीको होयतो पररतहोय पौर्णिमाको होयतौ शुभजानाना मावस ३० होतेशुभ

वारफल ॥ आदित्ये विधवा नारी सोमे चैव स्तत्रजा ॥ भौमेपुत्रे आत्मघाती बुधे कन्याप्रसूस्तता १० गुरुवारे सुतः प्राप्तिः कन्याप्रसुताभृगौ ॥ मंदे च पुंश्चली नारी त्येयं वारफलं बुधैः ॥ ११ ॥

टी॰ स्त्रीको रविवारको ऋतुस्नान होयतो विधवा होतीहै सोमवारको होयतो स्वप्रजा होय मंगलको होतो आत्मघाती बुधको होतो कन्या बहुत होय बृहस्पतीको होतो पुत्रप्राप्ती शुक्रको होतो कन्या पुत्रयुक्त होय शनिवारको होतो जारणीहो

अथ नक्षत्रफलं ॥ अश्विन्यां सुभगा नारी भरण्यां विधवा भवेत् । कृत्तिकायां च वंध्या स्याद्रोहिण्यां चारुभाषिणी १२ मृगे दारिद्र्ययुक्ता प्रोक्ता चार्द्रायां क्रोधकारिणी ॥ पुनर्वसौ पुत्रवती पुष्ये पुत्रधनान्विता १३ आश्लेषायां भवेद्वंध्या मघायां चार्थसंयुता ॥ पूर्वायां चार्थयुक्ता हि चोत्तरायां सती तथा १४ हस्ते पुत्रधनैर्युक्ता चित्रायां मनचारिणी ॥ स्वात्यां न्यगर्भा च वधू विशाखायां तु निष्ठुरा १५ मैत्रे च दुर्भगा नारी ज्येष्ठायां विधवा भवेत् ॥ मूले पतिव्रता साध्वी पूर्वा सौभाग्यभोगिनी १६ उत्तरार्थवती प्रोक्ता श्रवे सौभाग्यसंपदा ॥ धनिष्ठायां शुभा नारी शतभे द्रव्यान्विता बुधैः १७ पूर्वभे चोक्ता कामिनी तु उभे लक्ष्मीयुता शुभा । रेवत्यां पतिरिक्ता तु च्चेयं मानां फलं बुधैः १८ ॥ टी॰

टी॰ इननक्षत्रोंका फल शुभाशुभ कोष्टकसे देखलेना ॥ ॥ ॥

अ	सुभगा	पु	पुत्रधनयुक्त	स्वा	पररता	श्र	सौभाग्य
भ	विधवा	श्ले	वंध्या	वि॰	निष्ठुर	ध॰	शुभा
कृ	वंध्या	म॰	द्रव्ययुक्ता	अ	दुर्भगा	श॰	कल्याण
रो	चारुभाषिणी	पू	द्रव्ययुक्ता	ज्ये॰	विधवा	पू	लक्ष्मीयुक्ता
मृ॰	दारिद्र्य	उ	पतिव्रता	मू॰	पतिव्रता	उ	शुभा
आ	क्रोधी	ह	पुत्रधनयुक्ता	पू॰	सौभाग्यवती	रे॰	पतित्यागी
पु	पुत्रवती	चि॰	पतिमनोयोग्य	उ	धनयुक्ता	०	

योगफलं ॥ आद्यतौ विधवा नारी विष्कंभे च रजस्वला ॥
स्नेहः प्रीत्यां तु दंपत्यो रायुष्मांस्तु धनप्रदः १९ सौभाग्ये पुत्र
युक्ता तु शोभने मंगलान्विता ॥ अतिगंडे तु विधवा सुकर्मणि
तु शोभना २० धृतौ संपत्तियुक्ता च शूले रोगयुता भवेत् ॥ गं
डे दुःखान्विता नारी वृद्धौ पुत्रान्विता भवेत् । २१ ध्रुवे तु शोभ
ना नारी व्याघाते भर्तृघातिनी ॥ हर्षणे हर्षयुक्ता तु वज्रे
चैवानपत्यता २२ सिद्धौ पुत्रान्विता नारी व्यतीपाते विभर्तृका
मृतवत्सा च वर्याणे परिघे चाल्पजीवनी २३ शिवे पुत्रवती
नारी सिद्धे शीघ्रफलान्विता ॥ साध्ये धर्मपरा नारी शुभे शुभ
गुणान्विता २४ शुक्ले शुभकरा नारी ब्रह्मणि स्वपतौ रता ॥
ऐंद्रे तु देवररता वैधव्यं वैधृतौ स्मृतं २५ ॥

टी० योगफल शुभाशुभ कोष्टक परसे जान लेना ॥ कोष्टकम्

वि	विधवा	धृ	संपत्तियुता	व	अपुत्रा	सा०	धर्मयुक्ता
प्री	पतिस्नेह	शू०	रोगयुता	सि	पुत्रयुक्ता	शु०	उत्तमलक्षण
आ	धनयुक्त	गं०	दुःखयुक्ता	व्य०	नष्टपति	शु०	शुभकारिणी
सौ	पुत्रयुक्त	वृ०	पुत्रयुक्ता	व	मृतवत्सा	ब्र	पररता
शो०	मंगलहोय	ध्रु	शोभना	प०	अल्पजीवी	ऐंद्र	देवरता
अ	विधवा	व्या	पतिघातिनी	शि०	पुत्रयुक्ता	वै०	वैधव्य
सु०	शोभना	ह	हर्षयुक्ता	सि०	फलप्राप्ती	०	

करणफल । ववेप्रोक्ता तु वंध्या स्त्री बालवे पुत्रसंपदः ॥
कौलवे पुंश्चली नारी तैतिले चारुभाषिणी २६ गरे च गु ।
णसंपन्ना वणिजे पुत्रिणी स्मृता । विष्ट्यां च मृतवत्सा च
शकुने कामपीडिता २७ चतुष्पदे शुभा नारी नागे पुत्रव ।
ती भवेत् ॥ किंस्तुघ्ने व्यभिचारी त करणानां शुभं फलं २८
टी० ववकरणमें स्त्री प्राप्त होय तो वंध्या जानना बालवमें पुत्रवती कौलवमें
जारिणी तैतिलमे चारुभाषिणी गरमे होय तो गुणयुक्त वणिजमे होतो पुत्रिणी
भद्रामें होतो मृतवत्सा शकुनीमे होय तो पुत्रवती अति कामी जानना चतुष्प
मे होतो शुभा जानना नागमें होय तो पुत्रवती जानना किंस्तुघ्नमें वेश्या होय

राशिफल॥ व्यभिचारिणीतु मेषे स्यात् वृषभे सुखभोगिनी मिथुने धनयुक्तोक्ता कर्कटे दुःखिता बुधैः २९ सिंहे पुत्रवतीनारी कन्यायां मानिनी शुभा। तुले विचक्षणा नारी वृश्चिके व्यभिचारिणी ३० धने पतिव्रता ज्ञेया मकरे हीनाचनर्तकैः। कुंभे धनवती ज्ञेया मीने च चपला बुधैः ॥ ३१ ॥ ७ ॥

टी॰ मेषराशी में ऋतुप्राप्त होय तो जारिणी जानना वृषभ में सुखभोगिनी जानना मिथुन में धनयुक्त जानना कर्क में दुःखिता जानना सिंह में पुत्रवती जानना कन्या में अभिमानी जानना तुला में विचारवान् जानना वृश्चिक में वेश्या जानना धन में पतिव्रता मकर में कृशांगी जानना कुंभ में धनयुक्त जानना मीन में चंचल।

होराफल॥ सूर्ये च व्याधिसंयुक्ता चंद्रहोरे पतिव्रता। कुजे होरे तु दौर्भाग्यं बुधे होरे तु पुत्रिणी ३२ जीवे सर्वसमृद्धिः स्यात् भृगौ सौभाग्यमेव च॥ शनौ सर्वविनाशाय होरकस्य फलं बुधैः॥ ३३ ॥

टी॰ होरा का शुभाशुभ फल कोष्टक में देखने से मालूम होगा—

होरा	फल	होरा	फल
सूर्यकी होरा	व्याधी	गुरुकी होरा	सर्वसमृद्धी
चंद्रकी होरा	पतिव्रता	शुक्रकी होरा	सौभाग्य
मंगलकी होरा	दुर्भगा	शनिकी होरा	सर्वविनाशिनी
बुधकी होरा	पुत्रिका		

लग्नफल॥ मेषलग्ने दरिद्रा च वृषभे धनसंयुता॥ कामिनी मिथुने लग्ने कर्कटे पतिनाशिका ३४ सिंहे पुत्रप्रसूता च पतियुक्ता स्त्रिलग्नके। तुले चैवाधता दीयी वृश्चिके दद्रुदुःखिनी ३५ धनलग्ने धनैश्वर्ये मकरे कर्कशा भवेत्॥ कुंभे वंशादयघ्नी च मीने सर्वगुणान्विता ३६ ॥

टी॰ प्रथम जो राशि में सूर्य होय सो लग्न सूर्योदय में होता है उदयलग्न से अस्ततक ६ लग्न भोगने हैं अस्तसे उदयतक ६ लग्न भोग करने हैं मेषलग्न में ऋतुप्राप्त होय तो दरिद्री हो वृष में धनयुक्ता हो मिथुन में कामयुक्त हो कर्क में पतिनाशनी हो सिंह में पुत्रवती हो कन्या में पतियुक्ता तुल में अघता वृश्चिक में दद्रु दुखिनी हो धन में धनयुक्ता मकर में कर्कशा कुंभ में दोनों वंश घालनी मीन में गुणयुक्त हो

ग्रहोंका फल॥ लग्ने राहुश्च सौरिश्च रविचंद्रौ तथैव तु।
तदा सा विधवा नारी सर्वसौभाग्य वर्जिता॥ ३७ ॥

टी॰ जिसलग्नमें स्त्रीको प्रथम ऋतु प्राप्त होय उसलग्नमें राहू होय अथवा शनी हो य अथवा रवि होय अथवा चंद्रमा हो यतो विधवा जानना सौभाग्यसे वर्जित होय।

रक्तफल॥ प्रथमार्त्तौ फलं स्त्रीणामुच्यते रजसा धुना॥ सुभगा पुत्रसंयुक्ता शुक्लवर्णे तथार्तवे ३८ शशशोणितसंकाशे यदावेलक्तसन्निभे। सुक्ष्कन्याप्रसूती स्यान्नीले तु स्यान्मृतप्रजा ३९ कर्बुरे म्रियते सा च पिंगटे च मृतप्रजा। कृष्णे च विधवा नारी रजस्येवं विनिर्द्दिशेत् ४० वरामध्य स्रवास्यात् दुर्भगा बहुशोणिता॥ शोणिते विंदुमात्रे तु स्वैरिणी चाल्पशोणिता ४१ रक्ते रक्ते भवेत्पुत्रः कृष्णेन्च मृतपुत्रका॥ पिछिला च भवेद्वंध्या काकवंध्या च पांडुरा पीते दुश्चारणी प्रोक्ता सुभगा गुंजवर्णके॥ सिंदूराभे भवेत्कन्या रजःशोणितलक्षणं॥ ४३ ॥ ७ ॥ ॥

टी॰ स्त्रीको प्रथम ऋतु प्राप्त होय तो उसका फल कहते हैं शुक्ल वर्ण रुधिर होय तो पुत्रवती जानना शशा कहिये खरगोस के ऐसा रुधिर होय तो भी पुत्रवती जानना माहुरके ऐसा वर्ण होय तो कन्यावती जानना नील वर्ण होय तो मृतप्रजा कर्बुर कहिये चित्रविचित्र वर्ण होय तो स्त्री मरे पिंगट कहिये कुछ श्वेत कुछ पीत वर्ण होय तो मृतप्रजा जानना कृष्ण वर्ण होय तो विधवा जानना मध्य रक्त होय तो श्रेष्ठ जानना बहुत रक्त होय तो दुर्भगा जानना थोड़ा रक्त व विंदुमात्र हो यतो अप्रजा जानना लाल रक्त होय य तो पुत्रवती जानना कृष्ण होय तो मृत प्रजा पिछिल कहिये परवके वर्ण ऐसा होय तो वंध्या जानना गुलाबी होय तो काकवंध्या जानना पीत वर्ण होय तो वेश्या घुंगची के ऐसा वर्ण होतो शुभ हो सिंदूर ऐसा होतो कन्या श्रेनी हो इसतेरे रक्त मालूम करके शुभाशुभ फल कहना

कालफल॥ पूर्वाण्हे सुभगा प्रोक्ता मध्यान्हे चैव निर्धना। अपराण्हे शुभा चैव सायान्हे सर्वभोगिनी ४४ संध्ययोरुभयोर्वेश्या निशीथे विधवा भवेत्।पूर्वरात्रे तथा वंध्या दुर्भगा सर्वसंधिषु ४५॥ ॥ ॥ ॥

टी० दिनके पूर्वभागमे ऋतु प्राप्त होय तो सुभगा जानना मध्यान्हमे होय तो धनहीनजानना अपरान्हमें होयतो सर्वसुखयुक्त जानना दूनो संध्यामे होयतो वेश्या जानना अर्द्ध रात्रीमे होयतो विधवा हो। पूर्वरात्रीमे होयतो वंध्या जानना संधीमे होयतो अशुभ जानना॥ ॥ वस्त्रफल॥

सुभगा श्वेतवस्त्राच रोगिणी रक्तवस्त्रका॥ नीलांवर धरा नारी विधवा पुष्पवंतिका ४६ भोगिनी पीतवस्त्रा च मिश्रवस्त्रा वरप्रिया। सूक्ष्मास्यात्सूक्ष्मवस्त्रा च दृढवस्त्रा पतिव्रता ४७ दुर्भगी जार्णवस्त्रा च सुभगा मध्यवाससा॥ धूतवस्त्रा सुभा नारी मलिनी मलिना भवेत्

टी० स्त्रीको प्रथम ऋतु सफेद वस्त्र पर होयतो सुभगा जानना लाल वस्त्र होयतो रोगयुक्त नीलवस्त्र होयतो विधवा पीत वस्त्र होयतो सुख युक्त चित्रविचित्र हो पतिप्रिय महीन वस्त्र होयतो कृशांगी मजबूत वस्त्र होयतो पतिव्रता पुराना वस्त्र होतो अशुभ मध्य वस्त्र होतो सुभगा धोया वस्त्र होतो शुभा मैला होतो मलिनता-

रजस्वलाधर्म। आर्तवाभिप्लुता नारी नैकवेश्मनि संश्रयेत् नचान्यजाति संस्पर्शं कुर्यात्स्पर्शं न च क्वचित् ४८ त्रिरात्रं स्वमुखं नैव दर्शयेद्यस्य कस्यचित्। स्ववाक्यं श्रावयेन्नैव न कुर्याद्दंतधावनं ५० न कुर्याद्दार्त्तवे नारी ग्रहाणमीक्षणं तथा। अंजनाभ्यंजनं स्नानं प्रवासं वर्जयेत्तथा ५१ नखादिकृंतनं रज्जु तालपत्रादि वंधनं॥ नवेश्यपवे भुंजीत तोयं चांजलिना पिवेत्॥ ५२ ॥

टी० ऋतुमती स्त्रीनि एक घरसे रहना अन्यजातीसे स्पर्श न करना अपनी जातीमेंभी स्पर्श न करना तीन रात्र अपना मुख न किसीको दिखावना न अपनी वाणी किसीको सुनावना दंतुवन न दी करना नक्षत्रोंका अवलोकन न करना न स्नान हीं निकालना डोरीका स्पर्श न करना तालपत्रका वंधन न करना नवीन मृत्तिका पात्रमे भोजन न करना जल अंजलीसे पीना

रजस्वलास्नान॥ हस्तानिलाश्विमृगमैत्रवसुध्रुवाख्यैः शाक्रान्वितैः शुभतिथौ शुभवासरे च॥ स्नायाद्यार्तववती मृगपौष्णवाजिहस्ता श्विधात्रभिरलं लभते च गर्भं

टी० ऋतुस्त्रीका स्नान उक्त नक्षत्रमें करावना को एकमें सह एहे और मृग रे० स्वा० ह० अश्विनी

इननक्षत्रोंमें स्नान करावनेसे बहुत जलदी गर्भ रहता है—

हस्त	स्वाती	अश्विनी	मृग	अनुराधा	धनिष्ठ	नक्षत्र
उ.फा	उ.षा	उ.भा.	००	ज्येष्ठा	००	
१ ८	२ १०	३ ११	५ १२	६ १३	७ १५	तिथय
चं	बु	गु.	शु.	००	००	वार:

चतुर्थे ह्नि सा स्पृश्या रजोदर्शनतः स्त्रियः॥ पंचमे ह्नि शुभा सा दैवे कर्मणि पैतृके॥ ५४ ॥ ॥

टी० स्त्री ऋतु प्राप्ती के बाद ४ दिन तक अस्पर्श है पुरुषने स्पर्श करना नहीं ॥—॥

अन्यच्च॥ प्रथमे ह्नि चांडाली द्वितीये ब्रह्मघातिनी। तृतीये रजकी प्रोक्ता चतुर्थे ह्नि शुध्यति ॥ ५५ ॥

टी० स्त्री ऋतु प्राप्तीसे प्रथम दिन चांडाली रहती है २ दूसरे दिन ब्रह्मघातनी ३ तीसरे दिन धोबी जानना ४ चौथे दिन शुद्ध जानना॥—

अन्यमत

भर्तुः स्पृश्या चतुर्थे ह्नि स्नानेन स्त्री रजस्वला॥ पंचमे ह्नि योग्या सा दैवे पित्र्ये च कर्मणि। ५६।

टी० स्त्री चतुर्थ दिनमें पति संग करनेसे योग्य है परंतु दैव और पितृ इनके काम के नहीं

अन्यमत॥ वर्षे द्वादशकादूर्ध्वं यदि पुष्पं बहिर्न हि अन्तः पुष्पं भवत्येव पनसोदुंबरादिवत्॥ ५७ ॥

टी० बारवर्षके नंतर स्त्री को ऋतु प्राप्ती नहीं तथापि पुरुषने संग करना वंशाकेवास्ते गुल्लर और कटहर के ऐसा जानना॥ इति ऋतु प्रकरणम् ॥

अथ गर्भाधानप्रकरणम्

ऋतौ तु प्रथमे कार्यं प्रनक्षत्रे शुभे दिने॥ मघा मूलां त्यपत्नांतत्यक्त्वा चंद्रबले सति॥ १ ॥

टी० प्रथम ऋतु में स्त्रीका गर्भाधान पुरुष नक्षत्रमें करना शुभ दिनमें मघा मू॰ रेवती पक्षका अंत इस्का त्याग करना चंद्रबलमें करना॥

गर्भाधाने त्याज्यमाह॥ गंडांतं त्रिविधं त्यजेन्निधन जन्मर्क्षे च मूलांतकं दास्त्रं पौष्णमथोपरागदिवसं पातं तथा वैधृतिं॥ पित्रोः श्राद्धदिनं दिवा च परिघाद्यर्धं स्वपत्नीगमे भान्युत्पातहतानि मृत्युभवनं जन्मर्क्षतः पापभं

भद्राषष्ठीपर्वरिक्ताचसंध्याभौमार्कार्किनाद्यरात्र्युतस्त्र:

टी· गर्भाधानमेजोवर्ज्यहैसोआगेचक्रमेंस्पष्टलिखाहै· गर्भाधानेत्याज्यच·

गंडांत	वधतारा	जन्मतारा	मूल	भरणी		अश्विनी
रेवती	ग्रहणदिन	व्यतीपात	वैधृत	श्राद्ध	दिन	दिवस
परिघार्द्ध	उत्पातनक्षत्र	पापयुक्तल·	भद्रा	जन्म	लग्नाष्टम	षष्ठी
चतुर्दशी	अष्टमी	अमावास्या	पौर्णिमा	संक्रां	ति	रिक्ता
संध्या·	भौम	रवि	शनि	ग्रय	मदिन	द्वितीयदिन
तृतीयदिन	चतुर्थीदिन	००	००	००		००

अन्यदपि॥ ऋतुस्नातांतुयोभार्यांसन्निधौनोपगच्छ(
ति॥ घोरायांभ्रूणहत्यायांयुज्यतेनात्रसंशयः ॥३॥(

टी॰ ऋतुस्नानकेनंतरस्त्रीकेपासशयननकरनेसेभ्रूणहत्याकाभागीहोताहै॥

अन्यमत॥ व्याधितोबंधनस्थोवाप्रवासेष्वपिपर्व
सु॥ ऋतुकालेपिनारीणांभ्रूणहत्याप्रमुच्यते॥४

टी॰ रोगीहोयअथवाकैदमेहोययाप्रवासमेहोययापर्वहोयतोभीस्त्रीसंगनकरनेसे
भ्रूणहत्याकहाहै॥ ॥ऋतुप्राप्तीसेसोलरात्रीमेशुभाशुभ॥

ऋतुःस्वाभाविकःस्त्रीणांरात्रयःषोडशःस्मृताः।तासा
माद्याश्चतस्रस्तुनिंदितैकादशीचया।त्रयोदशीचशे
षास्युःप्रशस्तादशवासराः।तस्मात्रिरात्रंचांडालीप
थ्यितांपरिवर्जयेत्॥ टी॰ ऋतुप्राप्तभयातबसेस्त्रीकोसोलदिन
ऋतुरहताहैतिसमेप्रथम४रात्रीऔरएकादश११औरत्रयोदशयेदिनहैंइस
वास्तेइसदिनकात्यागकरनाऔर१० रात्रीशुभजानना–गर्भाधानकोशुभा
शुभदिन॥ ॥रात्रौचतुर्थ्यांपुत्रःस्यादल्पायुर्धनवर्जितः।पंच
म्यांपुत्रिणीनारीषष्ठ्यांपुत्रस्तुमध्यमः७सप्तम्यामप्रजा
योषिदष्टम्यामीश्वरःपुमान्।नवम्यांसुभगानारीदशम्यां
प्रवरःसुतः८एकादश्यामधर्म्यास्त्रीद्वादश्यांपुरुषो
त्तमः।त्रयोदश्यांसुतापापावर्णसंकरकारिणी६धर्म
ज्ञश्चकृतज्ञश्चआत्मवेदीदृढव्रतः।प्रजायतेचतुर्द
श्यांपंचदश्यांपतिव्रता॥ आश्रयःसर्वभूतानांषोडश्यांप्रजायते
पुमान्॥ टी॰ ऋतुप्राप्तीसेसोलादिनमेगर्भाधानकोशुभाशुभदिनचक्रलिखतेहैं

१	वर्ज्य	५	कन्या	९	सौभाग्यवृद्धि	१३	पापकर्मीकन्या
२	वर्ज्य	६	पुत्रमध्यम	१०	गुणवान्पुत्र	१४	धर्मज्ञपुत्र
३	वर्ज्य	७	पुत्रहीना	११	अधर्मीपुत्र	१५	पतिव्रता
४	पुत्रअल्पायु निर्धन	८	पुत्रईश्वरभक्तिः	१२	उत्तमपुत्र	१६	उत्तमपुत्र

गर्भाधाने तिथिवारमाह ॥ षष्ठ्यष्टमीपंचदशीचतुर्थी चतुर्दशीमप्युभयत्रहित्वा ॥ शेषाःशुभाःस्युस्तिथयोनिषेके वाराःशशांकार्यसितेंदुजाश्च ॥ १२ ॥ छ ॥

टी० षष्टी अष्टमी पोर्णिमा चतुर्थी चतुर्दशी अमावास्या ये तिथी वर्ज्य करके शेष तिथी शुभ जानना सोम वृहस्पती शुक्र बुध ये गर्भाधान मे शुभ जानना ॥

गर्भाधाने नक्षत्राण्याह ॥ हरिहस्तानुराधाश्चस्वाती वारुणवासवं ॥ उत्तरात्रितयंसौम्यंरोहिण्यश्चशुभाःस्मृता

टी० श्रवण हस्त अनुराधा स्वा शत ज्ये· उत्तफा· उ·षा· उ·भा· मृ· रो· ये नक्षत्र मे गर्भाधान शुभ है ॥ गर्भाधाने लग्नशुद्धी ॥ केंद्रत्रिकोणेषु शुभैश्च पापैस्त्र्यायारिगैःपुंग्रहदृष्टलग्ने ॥ ओजांशकेऽब्जोपि च युग्मरात्रौ चित्रादितीज्याश्विषु मध्यमं स्यात् ॥ १४ ॥

टी० प्रथम चतुर्थ सप्तम दशम ये केंद्र इसमें शुभग्रह होय त्रिकोण नवम पंचम इसमें शुभग्रह होय ३।११।१०।६। इसमें पापग्रह होय लग्न को पुरुषग्रह देखने से विषमनवांशमे चंद्रमा होय इसमे गर्भाधान शुभ है और समरात्री पुन· श्रव· अश्वि· ये मध्यम

गर्भिण्यांपुंसवनसंस्कारमाह ॥ मूलादितित्रितयेकरश्रवणेकेभाद्रद्वयाद्रीत्रये रेवत्यांमृगपंचके दिनकरे भौमे न रिक्तातिथौ । नेत्रेमास्यथवाग्निमासिधनुषो स्त्रीमीनयोश्चस्थिरे लग्नेपुंसवनंतथैवशुभदंसीमानकर्माष्टमे

टी० मू· पू· उ·षा· ह· श्र· पू·भा· उ·भा· आर्द्रा· पुन· पु· रे· म·स· कृति· रो· मृ· और रवि मंगल वार इसमे पुंसवन करना शुभ रिक्ता त्याग करना और २।३ महिने में धनधन्या मीन ये स्थिर लग्न और आठवे महिने में इसी सहूर्तमे करना श्रेष्ठ है ॥

वारफल ॥ मृत्युश्चसौरे स्तनुहानिरिंदोःप्रजामृतिःपुंसवनेबुधस्य ॥ काकी च वंध्या भवतीह शुक्रे स्त्रीपुत्रलाभो रविभौमजीवे ॥ ॥ टी० शनिको पुंसवन करे तो मृत्यु जानना सोमको करे तो

शरीरनाश। बुधको पुत्रनाश शुक्रको काकवंध्या रवि मंगल बृहस्पतिको प्रसवनकरेतो पुत्रकन्याघाती-॥ सीमंतोन्नयनमाह ॥ पुरुषग्रहवाराः स्युः शुभाः सीमंतकर्मणि ॥ मध्यौ स्त्रीग्रहवारौवर्जयेत्तुनपुंसकौ ॥ वा

टी॰ पुरुषग्रहके वारमें सीमंत कर्म करना शुभहै स्त्रीग्रहकेवारमें मध्यम जानना नपुंग्रहकेवारमें अति निकृष्ट जानना ॥

अन्यमते ॥

चतुर्थषष्ठाष्टममासभाजि सौरेणगर्भेप्रथमेविधेयं सीमंतकर्मद्विजभामिनीनांमासेष्टमेविष्णुवलिंचकुर्यात्

टी॰ प्रथमगर्भधारणसे चतुर्थ षष्ट अष्टममासमें सौर माससे गिनके सीमंत कर्म करना ब्राह्मणकी स्त्रीको अष्टममासमें विष्णुवली करना शुभ होताहै ॥

अन्यमते ॥ रोहिण्यैंद्रवमादित्यंपुष्यहस्तोत्तरात्रयं ॥ पौष्णं वैष्णवभंचैवसीमंतेसौम्यवासरे ॥ ९६ ॥

टी॰ रो॰ मृ॰ पुन॰ पुष्य॰ ह॰ ३उ॰ रे॰ श्र॰ इननक्षत्रोंमें सीमंतशुभ और शुभग्रहकेवारमें

अन्यदपि ॥ पक्षछिद्रांचरिक्तांचविनापंचदशीशुभाः चतुर्दशीचतुर्थीचकदाचित्तुशुभप्रदा ॥ शुभसंस्थेनिशानाथेचतुर्थीच चतुर्दशी । पौर्णमासीप्रशंसंतिकेचित्सीमंतकर्मणि

टी॰ सीमंत कर्ममें पक्षमें जो छिद्रातिथी उसका त्याग करना रिक्ता तिथी त्याग करना कोई आचार्य कहतेहैं कि शुभराशीके चंद्रमामें और १४ । १५ ये तिथी सीमंतमें प्रसंसा करतेहैं

पक्षछिद्रातिथी ॥ चतुर्दशीचतुर्थीचअष्टमीनवमीतथा ॥ षष्ठीचद्वादशीचैवपक्षछिद्राह्वयाःस्मृता । क्रमादेतासु तिथिषुवर्जनीयाश्चनाडिकाः । भूताष्टमनुतत्वांकदशाशेषाःसुशोभनाः ॥ टी॰ चतुर्दशी चतुर्थी अष्टमी नवमी षष्ठी द्वादशी इसको पक्षछिद्रा तिथी कहतेहैं क्रमसे इनकी घरी त्याग करना चतुर्दशी १४ चतुर्थी ८ अष्टमी १४ नवमी २४ षष्टी ९ द्वादशीकी १० घडी पहिली त्यागकरना शुभ-॥

मासेश्वरज्ञानमाह ॥ मासेश्वराःसितकुजेज्यरवींदुसौरचंद्रात्मजास्तनुपचंद्रदिवाकराः स्युः २४

मासेश्वरज्ञानचक्रं ॥

स्वामी शुक्र	स्वामी मंगल	स्वामी गुरु	स्वामी रवि	स्वामी चंद्र
६	७	८	९	१०
स्वामी शनि	स्वामी बुध	स्वामी गर्भाधानलग्नेश	स्वामी चंद्र	स्वामी सूर्य

अन्यमते ।मासेष्टमेहिगर्भस्यकुर्योद्विष्णुर्वलिक्रि
यां॥श्रवणेचैवरोहिण्यांपुष्येचैवप्रशस्यते॥द्विती
यासप्तमीचैवद्वादशीचशुभातिथिः।शुभग्रहोद
याःशस्तास्तेषांचदिवसाअपि॥२६॥ ७॥ ६॥

टी० स्त्रीको अष्टममासमेंगर्भसंस्कार विष्णुवलीकरना श्रवणरोहिणीपुष्य।
द्वितीयासप्तमीद्वादशीयेशुभहैंश्रोरशुभग्रहकेलग्नमेंशुभग्रहकेवारमेकरनाशुभहै

गर्भिण्यांनिषेधमाह ॥भूम्यांचवोच्चनीचायामारोहमवरो
हणे।नदीप्रतरणंचैवशकटारोहणंतथा।उग्रौषधंतथा
क्षारंमैथुनंभारवाहनं॥ह्मलेपंसवनंचैवगर्भिणीपरिवर्जयेत्

गर्भिणीकोपुत्रवाकन्याहोनेकाप्रश्न

तिथिवारभयुग्योगस्त्रि३घ्नोद्विन्हतशेषके॥सूर्या
रेज्येसुतःपंढ्राःकेकन्याशनौस्रवः॥२८॥ ७

टी० तिथीवारनक्षत्रयोगकर३गुणदेना।३सेभागलेनाविसंवचैतौपुत्रसंवचैतौकन्याशून्यवचैतोगर्भलानी

प्रसूतिस्थानेगमनमाह॥रोहिण्यैंदवपौष्णेषुस्वातीवा
रुणयोरपि॥पुनर्वसौपुष्यहस्तधनिष्ठाश्चत्तरासुच॥
मैत्रत्वाष्ट्रेतथाश्विन्यांसूतिकागृहवेशनं॥१
प्रसूतिसंभवेकालेसद्यएवप्रवेशयेत्॥३१॥

टी० रो॰मृ॰रे॰स्वा॰शत॰पु॰पुष्य॰ह॰ध॰३उ॰अनु॰चि॰अ॰इननक्षत्रोंमे
प्रसूतिस्थानमेंप्रवेशकरनाउक्तहैपरंतुप्रसूतकालप्राप्तमेउसीवखतमेप्रवेश
करनानक्षत्रकाविचारकरनानहीं॥

गर्भकेलक्षण

कललं१चघनं२शाखा३स्थि४त्व५ग्लोमोद्गमः
६स्मृतिः।भुक्तिरुद्वेग८संसूतिर्मासेष्वाधानतक्रमात्३

टी० गर्भाधानसे१०मासतकगर्भकारूपकहतेहैं प्रथम१मासमे कललकहि
ये शुक्ररुधिरइसकेसंयोगसेपंडितहोताहै २मासमेघनकहियेवहपिंड
मजवूतहोताहै ३मासमें वहपिंडमें शाखाकहिये हस्त श्रोरपादउत्पन्नहो
तेहै ४मासमे उसमे अस्थीमाने हाडहोतेहैं ५मासमें उसपरत्वचाकहिचमडा
६मासमें रोमकहियेकेशहोतेहैं ७मासमेंस्मृतीयानेज्ञानहोताहै ८मा॰क्षुधाक
न ९मा॰उद्वेगयानेगर्भसेनिकलनेकीइच्छाकरताहै १०मा॰प्रसवजानना

दंतफलम्॥ दंतैर्युतश्चेत्प्रथमे१ऽर्भकः स्यात्स्वयं विनश्येदनुजं द्वितीये॥ न्यात्तृतीये भगिनीं चतुर्थे स्वमातरं वाणमिते१ऽग्रजातं॥
टी० बालक दंतसहित उत्पन्न होय तो बालक का नाश जानना २ मासमें छोटेभाई को अशुभ ३ मासमें वहिनको अशुभ ४ मासमें माता को दुख होय ५ मासमें बड़े भाईको क्लेश जानना· आगे षष्ठमास से शुभ जानना॥ उपस्तृतिकामाह

अज१ झष१२ द्वि२ मितावृषकुंभयोः श्रुतिमिता हयकर्कटकेशराः॥ मकरयुग्मतुलाधरकन्यकास्वलिहरौत्रिमितात्युपस्तृतिका: ॥५॥ ॥
टी० मेष मीन इस लग्नमें प्रसूति होय तो पास २ स्त्री कहना वृषकुंभ होय तो ४ स्त्री कहना धनकर्क होयतो ५ स्त्री कहना मकर मिथुन तुला कन्या वृश्चिक सिंह होयतो ३ स्त्री कहना इस प्रकारसे लग्नपरीक्षा करना-॥ अन्यमते

मेषत्रिपंचाननचापलग्ने विस्मृत्य सर्वं बहुरोदतिस्म अल्पं घटेस्त्री वणिजे परे पुरुदंतिनो ज्ञानबलस्य सत्वात्
टी० मेष वृष मिथुन सिंह धन इन लग्नोंमें प्रसूति होय तो बालक रोदन बहुत करता है कुंभ कन्या तुला इसमें थोड़ा रोदन करता है कर्क वृश्चिक मकर मीन इसमें ज्ञानबल से रोदन नहीं करता ऐसा लग्नसे जानना-॥ अन्यदपि

यथा राहुस्तथा शय्या भौमे खट्वांगभंगता॥ रविस्थाने भवेद्दीपः शनिस्थाने तु नालकं ॥७॥
टी० जन्मकुंडली लिखना उसमें जिस दिशामें राहु होय उस दिशामें शय्या कहना जिस स्थानमें मंगल होय उस तरफ खटिया का भंग कहना सूर्य जिस दिशा में होय उस दिशामें दीप कहना जिसस्थाने शनि होय उस दिशामें बालकका नाल कहना

जन्मकालफल॥ अश्विनीमघमूलानां पूर्वार्धे बाध्यते पिता॥ पूषादिशक्रपश्चार्धे जननी बाध्यते शिशोः॥ ८॥
टी० अश्विनी मघा मूल इन नक्षत्रोंके पूर्वार्धमें जन्म होय तो पिता को अशुभ जानना रेवती ज्येष्ठा इन नक्षत्रोंके उत्तरार्धमे होयतो माताको अशुभ जानना-

गंडांतफल॥ सर्वेषां गंडजातानां परित्यागो विधीयते॥ वर्जयेद्दर्शनं वापि तच्च षाण्मासिकं भवेत्॥ ९॥
टी० गंडांतमें जो जन्म होयतो बालक का परित्याग करना अथवा ६ महीना मुख देखना नहीं

तिथिगंडांतमाह॥ पूर्णानंदाख्ययोस्तिथ्योः संधिर्नाडी द्वयं तथा। गंडांतं मृत्युदं जन्मयात्रोद्वाहव्रतादिषु॥ १०॥

टी० पौर्णिमाकी अंत्य घटी और प्रतिपदाकी आद घडी ऐसें २ घडी संधी ऐसे पंचमी षष्टी दशमी एकादशी ऐसे २ घडी संधी जानना इसमे जन्म यात्रा विवाह मौंजीबंधइत्यादि मृत्युप्रद होनेहैं॥ लग्नगंडांत॥ कुलीरसिंहयोः कीटचापयोर्मीनमेषयोः॥ गंडांतमंतरालस्याद्घटिकार्धं मृतिप्रदं॥ ११

टी० कर्ककी अंत्यकी आधी घडी और सिंहकी आदकी आदकी घडी संधी इसीक्रमसे वृश्चिक और धनमीन मे। ब ऐसी एक घडी मृत्युप्रद जानना सुभकर्ममे वर्जित हैं

नक्षत्रगंडांत

पौष्णाश्विन्योः सार्पपित्र्यर्क्षयोश्चयच्चज्येष्ठामूलयो रंतरालें॥ तद्गंडांतं स्याच्चतुर्नाडिके हि यात्राजन्मोद्वाहकालेष्वनिष्टं॥ टी० रेवतीकी अंतकी २ घडी और अश्विनीकी आदकी २ घडी संधी होती है इसक्रमसे आश्लेषामघा ज्येष्ठामूल येनक्षत्र गंडांत होने है इसमे यात्राजन्म विवाह ये कर्म अशुभ जानना॥

कृष्णचतुर्दशीफल

कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां प्रसूतेः षड्विधं फलं। चतुर्दशीं च षड्भागां कुर्यादादौ शुभं स्मृतम्। द्वितीये पितरं हंति तृतीये मातरं तथा॥ चतुर्थे मातुलं हंति पंचमे वंशनाशनं॥ षष्ठे च धनहानिस्यादात्मनो वंशनाशनम्॥ ॥

टी० कृष्णपक्षकी चतुर्दशीको जन्म होय तो चतुर्दशीका ६ भाग करके शुभाशुभ देखना प्रथम भागमें शुभ द्वितीय भागमें पिताको दुःख जानना तृतीय भागमें माताको दुःख जानना चतुर्थभागमे मामाको अशुभ पंचमभागमें वंशनाश जानना षष्टमभागमें धननाश जानना और वंशकाभी नाश जानना॥

अमावास्याफल

सीनीवाल्यां प्रसूतास्युर्दासी भार्या पशुस्तथा। गजाश्व महिषी चैव शत्रुस्यापि श्रियं हरेत्। कुहूप्रसूतिरित्यर्थं सर्वदोषकरी स्मृता। यस्य प्रसूतिरेतेषां तस्यायुर्धननाशनं॥ सर्वगंडसमस्तत्र दोषस्तु प्रबलो भवेत्॥ १७ ॥

टी० चतुर्दशीयुक्त अमावास्यासे दासी अथवा भार्या गो हाथी घोडी भैंस ये जो प्रसूत होय तो मालिकको निर्धन करते हैं अमावास्यामें जन्म होय तो बहुन दोष

जानना धन आयुष्य इसका नाश और गंडांत फल के ऐसा फल जानना ।।

दिनक्षयफल ।। दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ मूलेगंडेतिगंडे च परिघे यमघंटके । कालदंडे मृत्युयोगे दग्धयोगे सुदारुणे ।। तस्मिन् गंड दिने प्राप्ते प्रसूतिर्यदि जायते ।। अतिदोषकरी प्रोक्ता तत्र पापयुता सति ।। २० ।। ।।

टी० क्षय दिन व्यतीपा० व्याघात भद्रा वैधृति मूल गंड अति गंड परिघ योग का अर्द्ध यम घंटक काल दंड मृत्यु योग दग्ध योग और भी दारुण योग ऐसे योग में जन्म होय तो बहुत अशुभ जानना ।।

।। ज्येष्ठानक्षत्र फल ।।

ज्येष्ठादौ जननी माता द्वितीये जननी पिता ।। तृतीये जननी भ्राता स्वयं माता चतुर्थके ।। आत्मानं पंचमे हंति षष्ठे गोत्रक्षयो भवेत् ।। सप्तमे चोभयकुलं ज्येष्ठभ्रातरमष्टमे नवमे श्वशुरं हंति सर्वं हंति दशांशकः ।। ७ ।।

टी० ज्येष्ठा नक्षत्र में प्रसूति होय तो ६ घड़ी का एक भाग ऐसे १० भाग करना उसका फल प्रथम भाग में होय तो माता के माता को अशुभ २ में होय तो माता के पिता को अशुभ ३ में होय तो मामा को अशुभ ४ में होय तो माता को अशुभ ५ में होय तो बालक को अशुभ ६ में होय तो गोत्र को अशुभ ७ में होय तो दूनो कुल को अशुभ ८ में होतो ज्येष्ठ भ्राता को अशुभ ९ में होतो श्वशुर को अशुभ १० में सर्वनाश जानना ।।

शिखा	११	अल्प
फल	६	राज्यलाभ
पुष्प	५	राजाकी
पत्र	८	परिवार
शाखा	९	माता:
त्वचा	१०	भ्राता:
स्तम्भ	७	हानि
मूल	४	नाश

मूलफल ।। मूलं स्तंभं त्वक् शाखा पत्रं पुष्पं फलं शिखा वेदाश्च मुनयश्चैव दिशः श्च वसवस्तथा ।। नंदा बाण रसा रुद्रा मूलभेदाः प्रकीर्तिताः ।। मूले मूल विनाशाय स्तंभे हानिर्धनक्षयः ।। त्वचि भ्रातृ विनाशाय शाखा मातृ विनाशकृत् ।। पत्रे सपरिवारः स्यात् पुष्पे मंत्रप वल्लभः ।। फले तु लभते राज्यं शिखायामल्पजीवितम् ।। टी० इन श्लोकों का टीका चक्र में देखलेना ।

मूलवास ।। वृषादि सिंहे च घटे च मूलं दिवस्थितं युग्मतुलांगनांत्ये ।। पाताल गं मेषधनुःकुलीरनक्रे सुमर्त्येष्वति संस्मरंति ।। २५ ।। ७ ।। ।।

सू. च बु. शु.	३ १०	९ ५	४ ८	७	स्थान
गुरू	४ ८	७	३ १०	९ ५	स्थान
मंगल	७	३ १०	९ ५	४ ८	स्थान
शनि	९ ५	४ ८	७	३ १०	स्थान
विम्वे	५	१०	१५	२०	विम्वे

ग्रहौंकी दृष्टी

पादैकदृष्टिर्दशमे त्रतीये द्विपाददृष्टिर्नवपंचमेवा॥ त्रिपाद दृष्टिश्चतुरष्टके वा संपूर्णदृष्टिः सप्तकेच॥ शनेस्त्वेकादशे पूर्णदृष्टिर्जीवस्य कोणके॥ बुधैर्ज्ञेया पूर्णदृष्टिर्भौमस्य चतुरष्टके

द्वादशभावसंज्ञा॥ ॥ मूर्त्तिर्धनाख्यः सहजः सुखश्चसुतारिपत्नीमृतिधर्मकर्मा॥ सायव्यया वैतनुतो विचिंत्याभावा अमी द्वादशहोरिकाद्यैः॥ ४१॥ छ॥

टी॰ लग्नसे द्वादश स्थानकी संज्ञा मूर्ती १ धन २ सहज ३ सुख ४ सुत ५ अरी ६ पत्नी ७ मृति ८ धर्म ९ कर्म १० आय ११ व्यय १२ यह बारस्थानजानना-

केंद्रादि द्वादशस्थान की संज्ञा॥ अथ चकेंद्रचतुष्टयघटकं तनु सुखावरसप्तमभंस्मृतं॥ पणफरं धनलाभसुताष्टमं सहजशत्रुनवांत्यमपोक्लिमं ४२ दुश्चिक्यलाभांवरषष्ठगेहं प्रोक्तं तथैवोपचयत्रिकंतु॥ षडंत्यरंध्रं चलिंजनवांशे वर्गोत्तमाख्यं विबुधावदंति॥४३॥ नवमपंचमस्थानं त्रिकोणं परिकीर्त्तितम्॥४४॥ छ॥

टी॰ स्थानसंज्ञा जाननेंका उपाय १।४।७।१० ये चरो स्थानके नामकें द्रचतुष्टयकंटक जानना। २।५।८।११ इस स्थानका नाम पणफर जानना। ३।६।९।१२ यह स्थानका आपोक्लिम नाम जानना। उपचयसंज्ञा का स्थान ३।११।१०।६ इस स्थान की उपचय संज्ञा जानना। ६।१२।८ यह स्थान की त्रिकसंज्ञा जानना। जो ग्रह अपने नवमांशमे होय उस्को वर्गोत्तम जानना। ५।९ इस स्थान की त्रिकोणसंज्ञा जानना॥ ॥ ॥

सामान्य द्वादशराशिफल॥ ॥ मेषे दैन्यमुपैति गर्वितवृषो नानामतिर्मन्मथे क्रूरः कर्कटके धृतीचनवपेकन्याचमायान्विता॥ सत्यंचैवतुलेत्वलौमलिनता पापान्वितं वै धनूर्मूर्खोयं मकरे घटेचतुरता मीने त्वधीरामति॥४५

टी॰ जन्मकालमें मेषलग्न होयतो दीनकहना वृषमे गर्वी मिथुनमे नानाप्रकारकी बुद्धी कर्कमें वडा क्रूर सिंहमें स्थिर बुद्धि कन्यामें मायावान् तुलामे सत्य

वादी वृश्चिकमें मलिन धनमें पाप बुद्धि मकरमें मूर्ख कुंभमें चतुर मीनमें थोड़ा धैर्य ऐसा द्वादशलग्नफलजानना- ॥ ॥ जन्मभूमिज्ञानमाह: ॥

लग्नेंदुभ्यां ह्यदृष्टे सूर्यपुत्रे गुप्त्यांस्तृतिर्वीक्षिते पापखे
टे:॥ लग्ने कर्के वृश्चिके मंदयुक्ते गर्त्तायां स्याच्चंद्रयुक्ते प्रसू
तिः ४६ लग्ने सौम्ये वेश्मगे सौम्यखेटे शालेयांशे स्वर्क्षगे पूर्ण
दृष्टे॥ आप्ये लग्ने द्यूनगे वा मृगांके गर्भो नूनं सूयते नात्र संस्थः
लग्ने नीरे मंदयुते दृष्टे चंद्रार्कचंद्रजैः॥ उखरे देवनागारे क्री
डागेहे क्रमात्सवः॥ पुंलग्नस्थे भानुसुते श्मशाने शैल्पि
के गृहे॥ भूपालये च गोष्टे च देवागारे मखालये ॥४८॥
वीक्षिते भौमसौम्येंदुशुक्रार्कगुरुभिः क्रमात्॥ प्रसवोयं
समाख्यातः सत्यलब्ध्वादि सूरिभिः॥४९॥ यदैकराशिगौ लग्न
चंद्रौ दृष्टिविवर्जितौ॥ विजने प्रसवः प्रोक्तो मणित्थाद्यैश्च सूरिभिः

टी॰ जन्मकालमें जन्मलग्नसें चंद्रमासे १२ स्थानमें शनि होय पापग्रहकी दृष्टी होय तो प्रसव गुप्तस्थानमें कहना कर्कलग्न होय उसीका चंद्रमा होय वृश्चिकमें शनी होय तो गड हामें प्रसूती कहना लग्न शुभग्रह राशी होय ४ स्थानमें शुभग्रह होय चंद्रमा अपने राशीमें पूर्ण होय जलराशीका लग्न होय चंद्रमा सप्तम स्थानमें होय तो नावमें प्रसूती कहना जलराशीका लग्न होय तो उखर भूमीमें जन्म कहना जलराशीका लग्न होय उसीमें शनी होय तो देवताके स्थानमें प्रसव कहना जलराशीका लग्न होय चंद्र सूर्य बुध यह देखते होय तो क्रीडागेहमें प्रसूती कहना पुरुषराशीका लग्न होय उसीमें शनी होय तो क्रमसे मंगल बुध चंद्र शुक्र सूर्य बृहस्पती यह ग्रहोंकी दृष्टि होय तो स्मशानमें प्रसूती कहना चित्रकारके मकानमें प्रसूती कहना राजाके गृहमें प्रसूती कहना गोशालामें प्रसूती कहना देवतास्थानमें प्र॰ यज्ञभूमीमें प्र॰ जन्मकालमें लग्न और चंद्रमाकी एकराशी होय कोई ग्रहकी दृष्टि नहोय तो जनरहित स्थानमें प्रसूती कहना-

प्रसवज्ञानमाह:॥ ॥ शुभग्रहे स्ववंधुगेः सुखेन
संयुतः सवः॥ सुतांक सप्तमस्थिते रसग्रहैस्तु कष्टनः ५२

टी॰ प्रसूती कालमें जन्मलग्नसें २। ४ स्थानमें शुभग्रह होय तो सुखसे प्रसूती कहना ५। ९। ७ स्थानमें पापग्रह होय तो कष्टसे प्रसूती कहना- ॥ ॥ ॥

जन्मकालमें मृत्युकारक॥ चंद्राष्टमे च धरणी सुतसप्तमे

चराहुर्नवशनिजन्मगुरुस्तृतीये॥ अर्कस्तुपंचभृगुषष्ट
बुधश्चतुर्थेजातोनजीवतिनरः प्रवदंतिसंत ॥ ५३॥

टी० जन्मकालमेंचंद्र अष्टमस्थानमेंहोयमंगल७स्थानयेराहु९स्थान शनिलग्न१ में गुरु३रे सूर्य ५वें सुक्र ६स्थानमेंबुध४मेंएसेग्रहयोगमेंवालकहोयतोवचैनही

अन्यमत॥ ॥चतुर्थेचयदाराहुः षष्टेचंद्रोष्टमेंपिवा॥
सद्य एवभवेन्मृत्युः शंकरोयदिरक्षति॥ ५४॥

टी० जन्मकालमें चतुर्थस्थानमे राहुहोय चंद्रमा ६ अथवा ८वें होयतो- वालक तत्काल मृत्यु पावे ऐसाजाननाशंकरसंरक्षणकरतोभीनवचे-

अन्यमत॥ ॥क्षीणचंद्रोव्ययस्थाने पापलग्नेस्मरे
ष्टमे॥ शुभैश्चरहिते केंद्रेशीघ्रं नश्यति वालकः ५५

टी० जन्मकालमें क्षीणचंद्रमा १२ अथवा पापग्रहके स्थानमें होय अथवा ७ या ८ होय केंद्र सुभग्रहसे रहित होयतो तत्काल मृत्यु जानना-

अन्यमत॥ ॥दशमस्थो दिवानाथः पापैर्वहुनि
रीक्षितः॥ मेषवृश्चिककर्कस्थोसद्योमृत्युप्रदोभवेत्

टी० जन्मकालमें सूर्य दशमस्थानमें मेष वृश्चिक कर्क चूसी राशी मे होय पापग्रहकी दृष्टी होयतोभी तत्काल वालक मृत्युपावे- ॥ ॥ ॥

अन्यमत॥ ॥सप्तमेभवनेभौमश्चाष्टमेभार्गवो
यदि॥ नवमेभवनेसूर्यः स्वल्पायुष्यः प्रजायते ५७

टी० लग्नसें सप्तम७स्थानमें मंगल८स्थानमेंसुक्रहो९स्थानसूर्यहोयतेथोडीआयुजा[नो]

अन्यमत॥ ॥क्षीणचंद्रोयदा लग्ने पापाश्चाष्टम
केंद्रगाः॥ स्मरेलग्नपतिःपापैर्युक्तोनश्येत्तदाशिशुः

टी० क्षीणचंद्रमा लग्नमें होयकेंद्रमें पापग्रह होय लग्नपती ७ में पापग्रह सेयुक्त होयतोभी वालक तत्कालमृत्युपावे-

अन्यमत॥ ॥लग्नेक्रूरश्चभवने क्रूरः पातालगो
यदा॥ दशमेभवनेक्रूरः कष्टेजीवतिवालकः॥ ५९॥

टी० क्रूरग्रह का लग्न होय और ४ स्थानमें क्रूरग्रह होय १० स्थानमें क्रूरग्रह होयतो वालक का जीवन वहुत कष्टसेजानना-

माताको अशुभ॥ ॥षष्टेच द्वादशेराशौयदापापग्रहो

भवन्॥ तदामातृभयंविद्याच्चतुर्थे दशमे पितुः॥ ६०॥

टी॰ पापग्रह षष्ठ ६ स्थानमें १२ स्थानमें होयतो माता को क्लेश जानना ४ स्थान में १० स्थानमें पापग्रह होयतो पिताको क्लेश जानना—

अन्यमत॥ ॥अर्कोमंदः कुजो चंद्रः त्रस्तुतात्यंच मेयदि॥ आत्मानः पितरभ्रातृमाता चैवतथाक्रमात्

टी॰ जन्मलग्नसे ५ सूर्य शनी मंगल चंद्र ये होतो क्रमसे माता पिता भ्राता इनकी अशुभहो

अन्यमत॥ ॥सप्तमेभवनेभानोः मध्यस्थोभूमिनंद नः॥ राहुर्व्ययेतथैवापिपिताकष्टेनजीवति॥ ६२॥

टी॰ सप्तमस्थानमंगल शत्रुक्षेत्री होयतोपिताको अरिष्टजानना—

अन्यमत॥ ॥अष्टमस्थोयदाराहुः केंद्रेचनीचचंद्र माः॥ ससद्यश्चभवेन्मृत्युर्बालकस्य नसंशयः॥ ६३॥

टी॰ अष्टमस्थानमें राहु केंद्रमें नीचचंद्रमा होयतो बालक का नाश जानना—

अन्यमत॥ ॥द्वादशस्थोयदाचंद्रःपापाश्चाष्टमगे हगाः॥ मासेनैकेनमृत्युःस्यात्तस्यबालस्यनिश्चितं

टी॰ जन्म कालसे १२ स्थानमें चंद्र ८ स्थानमें पापग्रह होयतो १ मासमें मृत्यु जानना—

अन्यमत॥ ॥षष्ठाष्टमेयदाचंद्रोबुधयुक्तश्चतिष्ठति विषदोषेन बालस्य तदामृत्युश्चजायते॥ ६५॥

टी॰ जन्मकालसे६। ८ चंद्रमा बुधयुक्तहोयतो बालक को विष दोषसे मृत्यु कहना

अन्यमत॥ ॥अष्टमेचनिशानाथः केंद्रेक्रूरोयदाभवे त्॥ चतुर्थेचयदा राहुर्वर्षमेकंसजीवति॥ ६६॥ ॥

टी॰ जन्म लग्नसे अष्टमस्थानमें चंद्रमा होय केंद्र १। ४। ७। १० स्थानमें क्रूरग्रह होय ४ स्थानमें राहु होय तो वर्षपर्यंत अरिष्ट जानना चाहिये—

अन्यमत॥ ॥जन्मस्थानेयदाभौमः शत्रुक्षेत्रेयदाभ वेत्॥ म्रियते तस्य बालस्य पिता शीघ्रं नसंशयः॥ ६७॥

टी॰ जन्मलग्नसे १०। मंगल का शत्रु क्षेत्र होय उसी स्थानमें मंगल होयतो पिताको अरिष्टजानो

अन्यमत॥ ॥लग्नेष्टमेयदाराहुश्चंद्रोपियदिदृश्यते॥ दशाहेजायते तस्य बालस्य मरणंध्रुवं॥ ६८॥ ॥

टी॰ अष्टमे ८ राहु होय और चंद्र उसको देखता होयतो बालक की मृत्यु १० दिनमें जानो

अन्यमत॥ ॥वक्रीशनीभौमगृहे केंद्रेषष्टाष्टमेपि
वा॥ कुजेनबलिना दृष्टोहंतिवर्षद्वये शिशु:॥६९॥
टी० वक्रीका शनि मंगल के क्षेत्रमें होय केंद्रमे होय१।४।७।१०लग्न से षष्टम अथवा
८ स्थानमे होय बलवान् मंगलदेखेतो २ वर्षतक बालक को अरिष्टकहना-

अन्यमत॥ ॥शनिराहुकुजैर्युक्त: सप्तमेनवमेश
शी॥ सप्तमे दिवसे हंति मासे वासप्तमे शिशु:॥७०
टी० शनी राहु मंगल येतीनों ग्रह सेयुक्त चंद्रमा ७ स्थानमें अथवा ९ स्था
नमे होयतो ७ दिनमे अथवा ७ मासमें बालकको अरिष्टजानना-

अन्यमत॥ ॥दशमेभवने राहु: पितृमातृप्रपीड
नं॥ द्वादशेवत्सरेमृत्युर्बालकस्यनसंशय: ७१
टी०लग्नसे१०स्थानमे राहु होयतोमाता पिताको दु:ख और १२वर्षमे मृत्युतुल्यअरिष्ट

अन्यमत॥ ॥शनिक्षेत्रेयदाभानुर्भानक्षेत्रेयदाश
नि:॥ द्वादशेवत्सरेमृत्युस्तस्यजातस्यजायते॥७२
टी०जन्मकालमें शनिकेक्षेत्रमें ——— सूर्य होय सूर्य के क्षेत्रमें ५ शनी होय
तो द्वादश वर्षमें मृत्यु कहना-

अन्यमत॥ ॥जन्मलग्नेयदाभौमश्चाष्टमेचबृह
स्पति:॥ वर्षेच द्वादशे मृत्युर्यदि रक्षति
टी०जन्मलग्नमें मंगल होय और ८ स्थानमें बृहस्पती होयतो बारहे वर्षे
मृत्यु जानना शिव संरक्षण करेतो भी मृत्यु जानना-

अन्यमत॥ ॥भौमक्षेत्रेयदाजीवोजीवक्षेत्रेचभू
सुत:॥ द्वादशेवत्सरे मृत्युर्बालकस्यनसंशय:७४
टी०जन्मकालमे मंगलके — क्षेत्रमें बृहस्पती होया बृहस्पतीके ९।१२
क्षेत्रमें मंगल होय तो द्वादशवर्षमे अरिष्ट जानाना-

अन्यमत॥ ॥षष्टाष्टमस्तथामूर्तौ शत्रुक्षेत्रेयदा
बुध:॥चतुर्थे वर्षे मृत्युश्च बालकस्य नसंशय:७५
टी० जन्मकालमे६।८।१ मे शत्रु क्षेत्रका बुधहोयतोचतुर्थवर्षमेंबालककोअरिष्टकहना

अन्यमत॥ ॥भौमक्षेत्रेयदाजीव:षष्टाष्टासुचचंद्र
मा:॥वर्षेष्टमे पिमृत्युर्वै ईश्वरो रक्षिता यदि।७६।

टी॰ जन्मकालमें मंगल के क्षेत्रमें १।८ मे वृहसती होय ६।८ स्थानमें चंद्रमा होयतो बालको अष्टम वर्ष मे अरिष्ट करना ईश्वर संरक्षण करेतो भी न वचे -

अन्यदपि ॥ दशमोपियदा राहुर्जन्मलग्नेयदा भवेत्॥ वर्षेतु षोडशेज्ञेयो वुधैर्मृत्युर्नरस्यच॥ ७७

टी॰ जन्मकालमें १० राहु होय अथवा लग्नमे होयतो सोलह १६ वर्षमें अरिष्ट जानना

अन्यमत॥ ॥ सप्तमेभुवने राहुः शत्रुक्षेत्रे यदाभवेत्॥ बाले च षोडशे वर्षे तस्य मृत्युर्न संशयः॥ ७८॥

टी॰ जन्म कालमें ७ राहू शत्रुक्षेत्री होयतो सोलहवें वर्ष अरिष्ट जानना -

अन्यमत॥ ॥ उच्चेवायदिवा नीचे सप्तमस्थो दिवाकरः तदाजातो निहंत्याशु मातरंनात्र संशयः॥ ७९॥

टी॰ जन्मकालमें १ मेष अथवा ७ तुलको ७ स्थानमें सूर्य होयतो माताको कष्ट जानना -

अन्यमत॥ ॥ धनस्थानेयदाभौमः शनैश्चरसमन्वितः॥ सहजेचभवेद्राहुर्भ्राता तस्य न जीवति॥ ८०॥

टी॰ जन्मलग्नसे द्वितीय २ स्थानमें मंगल शनीचरके सहित होय और तृतीय स्थानमे राहू होयतो भाईको कष्ट करना -

अन्यमत॥ ॥ पंचमे शशिशनाथे त्रिकोणे यदिवाक्पतिः॥ दशमे च महीसूनुः परमायुः स जीवति॥ ८१॥

टी॰ लग्नसे पंचमस्थानका अधिपती चंद्रमा होय त्रिकोण ९।५ मे वृहस्पति हो और १० स्थानमेमंगल होयतो १२० वर्ष आयुष्य जानना

अन्यमत॥ ॥ मूर्त्तौशुक्रवुधौयस्य केंद्रेचैव वृहस्पतिः॥ दशमेंगारकश्चैव संज्ञेयः कुलदीपकः॥ ८२॥

टी॰ जिस्के जन्मलग्नमें शुक्र वुध होय केंद्र १।४।७।१० मे वृहस्पती १० स्थानमें मंगल होयतो कुलमें मान्य होताहै - ॥

अन्यमतः॥ ॥ नैव शुक्रो वुधोलग्ने नास्ति केंद्रे वृहस्पतिः॥ दशमें गारको नैव जातकः किंकरिष्यति॥

टी॰ लग्नमें वुध शुक्र न हों केंद्र १।४।७।१० वृहस्पति न हो १० मंगल न होतो पुरुष जड होता है।

जारजातज्ञानमाह॥ लग्नं शशांकं सुरराजमंत्री नवीक्षितो नैक गृहस्थितोवा॥ नजीववर्गेण युतं तदानीं जातं वदेदन्य समागमेन॥ ८४॥ ॥

टी॰ जन्मसमयमें लग्नको और चंद्रमाको व्हस्पती नदेखता होय एक गृहमेंभी नहोय व्हस्पती के वर्गमे भीनहोयतो दूसरेपुरुषसे अन्यजन्म जानना—

अन्यमत॥ ॥स्वाती द्वितीया रविवारयुक्ता ससप्तमी सोमजरेवतीच॥ स द्वादशीभानु स्तन क्ष विष्ठाचैते सुजातः परतो वदंति ५॥ ७॥ ७॥ ७॥

टी॰ जन्मसमयमें द्वितीया रविवार स्वाती नक्षत्र होयतो अन्यसेजन्म कहना दूसरा योग सप्तमी बुधवार रेवती नक्षत्र होतो दूसरे पुरुष से जन्म कहना तीसरा योग द्वादशी शनिवार धनिष्ठा नक्षत्र होयतो अन्यजात कहना—॥ वर्णसंकरज्ञानमाह

धनस्थाने यदासौरिःसैंहिकेयोधरात्मजः॥शुक्रोगुरुःसप्तमेचत्वष्टमे रविचंद्रमाः॥ ब्रह्मपुत्रेपदेवापि वेश्यासुचसदारतिः॥प्राप्ते विंशतिमें वर्षे म्लेछोभवति नान्यथा॥८७॥

टी॰ जन्मकालमे द्वितीयस्थानमें शनीराहुमंगल होय ७ स्थानमें शुक्र वृहस्पति होय ८ रवि चंद्र ये होंतो ब्राह्मणका पुत्र होयतोभी वहपुरुष वेश्यागमनकरे और २० वर्षके अवस्थामें म्लेछ होय वर्णसंकर जानना॥ ॥ भावस्यफलं ॥

लग्नास्थितो दिनकरः कुरुतेंग पीडां पृथ्वीसुतो वितनुते रुधिरप्रकोपं॥छायासुतः प्रकुरुते वहुदुःखभाजं जीवेंदुभार्गववुधाः सुखकांतिदास्युः १८ धनस्थान॥ दुःखावहाधन विनाशकराः प्रदिष्टा वित्तेस्थिता रविशनैश्चरभूमि पुत्राः॥चंद्रोवुधः सुरगुरुर्भृगुनंदनोवानानाविधंधनचयंकुरुते धनस्थाः॥८९॥ सहजस्थान॥ भानुः करोति विरुजं रजनी करोपि कीर्त्यायुतं क्षितिसुतः प्रचुरप्रकोपं॥ त्र्यर्किं वुधः सुधिषणं सुविनीतवेषं स्त्रीणां प्रियं गुरुकवी रविजस्तृतीये॥९०॥ सुहृत्स्थान॥ आदित्य भौमशनयः सुखवर्जितांगं कुर्वंति जन्मनि नरं सुचिरंचतुर्थे॥ सोमो वुधः सुरगुरुर्भृगुनंदनोवा सौख्यान्वितं च नृप कर्मरतं प्रधानम् ९१ सुतस्थान॥ पुत्रेरविः प्रचुरकोपयुतं वुधश्च स्वल्पात्मजं शनिधरातनजावपुत्रं॥ शुक्रेंदुदेवगुरवः सुतधाम संस्थाः कुर्वंति पुत्रवहु

लमुखिनंसुरूपं। ९२। रिपुस्थान॥ मार्त्तंडभूमितनुजौहत शत्रुपक्षंपंगुनंररिपुगृहेष्वतिपूजनीयम्॥ काव्येंदुजौमतिविहीनमनल्परोगेजीवः करोति विकलंमरणंशशांक ९३ जायास्थान॥ तिग्मांशुभौमरविजाकिलसप्तमस्थाजायांकुकर्मनिरतांतनुसंततिंच॥ जीवेंदुभार्गवबुधा वहुपुत्रयुक्तांरूपान्वितांजनमनोहररूपशीलं ९४ सर्वेग्रहादिनकरप्रमुखानितांतंमृत्युस्थितावितवते किलदुष्टवुद्धिम्॥ शस्त्राभिघातपरिपीडितगात्रयष्टिंसौख्यैर्विहीनमतिरागगणैरुपेतम्॥ ९५॥ धर्मस्थान॥ धर्मस्थितारविशनैश्चरभूमिपुत्राः कुर्वंतिधर्मरहितंविमतिंकुशीलं॥ चंद्रोवुधोभृगुसुतःसुरराजमंत्री धर्मक्रियासुनिरतंकुरुतेमनुष्यं॥ कर्मस्थान॥ आदित्यभौमशनयःकिलकर्मसंस्थाःकुर्युर्नरंवहुकुकर्मरतंकुपुत्रम्॥ चंद्रःसुकीर्तिमुशनावहुवित्तयुक्तंरूपान्वितंवुधगुरूशुभकर्मभाजम्॥ ९७॥ लाभस्थान॥ लाभस्थितोदिनकरोन्नृपलाभयुक्तंतारापतिर्वहुधनंक्षितिजःक्षितीशम्॥ सौम्योविवेकसुभगंचधनायवीज्यःशुक्रःकरोतिसगुणंरविजः सुकीर्त्तिं॥ ९८॥ व्ययस्थान॥ सूर्यःकरोतिपुरुषंव्ययगोविशीलंकाणंशशीक्षितिसुतोवहुपापभाजं॥ चंद्रात्मजोगतधनंधिषणःकृशांगंशुक्रोवहुव्ययकांरविजःसुतीव्रतम् ९९ राहुकेतुफलंसर्वमंदवत्कथितंवुधैः

टी॰ लग्नसेंळे द्वादशस्थानकाफलजोजोग्रहजोजोस्थानमेंहोयतिनकाफलकोष्टपरसेंसमुदेखनापरंतुराहूकेतुइनकाफलशनीकेंसाजानना-॥ नराकारचक्र

शीर्षाख्यंवदनंचवाहुयुगलंहृच्चोदरंकट्यघोवस्तिर्गुह्यसुरूचजानुजघनेपादद्वयंवैक्रमात्॥ मेषाद्याःकिलराशयःसमुदिताःपूर्वैःसुवोधाययेत्वेकेलग्नभतश्चकाघवयवास्त्येयासुनिःसंशयं॥ १०१॥

टी॰ पुरुषका आकारचक्रलिखनाउसपरमेषादिकराशीका यथाक्रमसेन्यासकरना मस्तक १ मख २ हस्त ३ हृदय ४ उद॰ ५ कटी ६ वस्ती ७ गुह्य ८ ऊरू ९ जानु १०

जघन११ पाद१२ ऐसा पहिले ग्रहफल जानना कोई आचार्य कहते हैं कि जन्मलग्न सेभी न्यास करना शरीर के व्रण तिल मशाक के वास्ते―॥

॥ अन्यमत ॥

यत्रयः सौम्ययुताग्रहाः स्युस्तत्रव्रणस्तत्समराशिदेशे॥ तद्वद्रिपुस्थो व्रणकृत्खलो वासदृष्टियुक्तस्तिललक्ष्मकृत्स्यात्॥

टी· नरचक्र से जन्मलग्न से जिस राशी से ३ तीन ग्रह होय उसके समान शरीर में व्रणादिक चिन्ह कहना उसी तरह से जन्मकुंडली में षष्ठ ६ स्थान मे पापग्रह होय तो शरीर मे घाव इत्यादिक कहना अथवा शुभग्रह होय तो तिल मस्सादिक कहना―॥

संख्या·	स्थान·	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि· राहु· केतु
१	तनु	शरीरपीड़ा	कांति·शांति सुख	रक्त कोप	कांतिसुख	कांति सुख	कांतिसुख	वहुतदुःखप्रद
२	धन	अतिदुख धननाश	वहुसंपत्ति	दुःखप्राप्तध ननाश	नानाप्रकार कीधनप्राप्ती	वहुतधन प्राप्ती	वहुधन	वहुतदुःखधननाश
३	सहज	निरोगी	कीर्त्तिवान्	दुष्टबुधि	धनवान्	उत्तमबुधि	वहुरूपी	स्त्रीकोवहुत प्रिय
४	सुहृत	शरीरकोव हुतदुःख	सुखभोगी	शरीरकोवहु तदुःख	सुखभोगी	सुखयुक्त	सुखवहुत	शरीरकोदुःखवहु त होगा
५	सुत	वहुतक्रोधी	वहुतपुत्र	संततीहीन	संतती थोडी	वहुतपुत्रप्राप्ती	संततिवहुत	संतती होगी नही
६	रिपु	शत्रुनाश	अल्पजीवी	शत्रुनाश	बुद्धिहीन रोगी	शरीरसे पीडित	बुधिहीन रोगी	शत्रुसे मान्य पूज्य
७	जाया	स्त्रीदुष्टकर्मी संततीथोडी	स्त्रीरूपवान् पुत्रयुक्त	स्त्रीदुष्टकर्मी संतती अधि·	स्त्रीरूपवान् ऐसीप्राप्त	पुत्रवती स्वभावसे उत्तम होगी		स्त्रीदुष्टकर्मी संतती थोडी
८	मृत्यु	अष्टमस्थानमें सवग्रहोंका फल एकही दुष्टबुधि शस्त्रघातसे शरीरमे पीडा सौख्यसे हीन और रोगी ऐसा जानना·						
९	धर्म	अधर्मीदुष्ट मती	धर्मबुधि	अधर्मीदुष्ट मती	सदा धर्मात्मा	धर्मीक सर्व काल		अधर्मी बुधिहीन दुष्ट बुधि
१०	कर्म	अत्यंतदुष्टक र्मीकुपुत्रवान्	अत्यंतकीर्ति वान्	दुष्टकर्मीकु पुत्र	उत्तमकांती	शुभकर्मी	संपत्तीवान्	वहुतदुष्टबुधि कुपुत्र
११	आय	राजमैत्री	धनवान्	राजसेलाभ	विचारवान् रूपवान्	धर्मबुधि· आयुष्यवृ·	गुणवान्	उत्तम कीर्त्तिकरनेवाला
१२	व्यय	दुष्टस्वभाव	कामी होगा	पापकर्मी	दरिद्री	शरीरकृश	रोगी	तीख्वास्वभाव

स्त्रीजातकमाह॥ ॥लग्नेचसप्तमे पापे सप्तमेवत्स रेपतिः॥म्रियतेचाष्टमेवर्षेचंद्रः षष्टाष्टमेयदि॥१॥

टी॰ स्त्रीकेजन्मकालमेलग्नसे पापग्रह होय और सप्तममे पापग्रह होयतो ७ वर्षमे पतिनाश जानना चंद्र षष्ट ६। ८ स्थानमे होयतो अष्टम वर्ष पतिनाश जानना–

अन्यमत॥ द्वादशेचाष्टमेभौमेक्रूरेतत्रैवसंस्थिते॥लग्नेचसिंहिकापुत्रेरंडाभवतिकन्यका॥२॥ ६॥

टी॰ जन्मसमये १२। ८ स्थानमे मंगल होय और क्रूरग्रहकी १२। ८ स्थानमे होय और लग्नमे राहु होय तो स्त्री विधवा होय ऐसा जानना–

अन्यमत॥ ॥लग्नात्सप्तमगःपाप श्चंद्रात्सप्तम गोपिवा॥सद्योनिहंति दंपत्योरेको नास्त्यत्र संशयः॥

टी॰ लग्नसे ७ स्थानमे पापग्रह होय चंद्रमासे सप्तस्थानमे पापग्रह होयतो विवाहसे अल्प कालसे विधवा जानना–

अन्यमत ॥रविसुतोयदिकर्कमुपागतोहिमकरेमकरोपगतोभवेत्॥किलजलोदरसंजनितातदानिधनता वनितासुतकीर्त्तिता॥४

टी॰ शनि कर्कराशीमे होयचंद्रमामकरराशीमेहोयतोजलोदररोगसेस्त्रीकानाशजानना–

अन्यमत॥निशाकरःपापखगांतरस्थःशस्त्राग्निमृत्युंकुजभे करोति॥पापास्मरस्थेन्यखगेचधर्मेकिलांगनाप्रव्रजतित्वमेति

टी॰ चंद्रमा पापग्रहकेमध्यमे होयतो शस्त्रसेमृत्यु कहना चंद्रमा मंगलके राशीमे होतो अग्नीसे नास कहना पापग्रह सप्तम ७ स्थानमे होय ९ स्थानमे अन्यशुभग्रह होयतो स्त्रीका भायबस्त्रधारीवे दांती होनीहै–॥ अन्यमत॥

सप्तमे दिनपतौ पतिमुक्ता होणिजेचविधवाखलुबाल्ये पापखेचरविलोकनयातेमंदगेचभवतिर्जरतीस्यात् ६

टी॰ स्त्रीकेजन्म लग्नसेसप्तम ७ सूर्य होतो पतित्यागी करना मंगल ७ होतो बाली अवस्थामै वैधव्य प्राप्ती ७ पापग्रह देखते होयतो यौवन अवस्थामे विधवा हो ७ स्थान शनी होयतो वृद्ध अवस्थामे वैधव्य प्राप्ती ग्रहकेवलसे कहना–॥ अन्यमत॥

लग्नेसितेंदूकुजमंदभस्थौ क्रूरेक्षितौसान्यरताचवाला॥ स्मरेकुजांशेर्कसुतेनदृष्टेविनष्टयोनिश्चशुभाशुभांशे॥७॥

टी॰ लग्नमें शुक्र चंद्रमा होय मंगल शनी यह दशमस्थानमें होय उस्को पापग्रह देखते होयतो वह स्त्री परपुरुषसे संग करे ऐसा जानना सप्तम स्थानमें ७ मंगलका अंश होय और शनी वह सप्तम स्थानको देखता होयतो नष्टयोनी जानना वह सप्तमस्थानमें शुभ ग्रहका अंश होयतो शुभ कहना—॥ अन्यमत ॥

सूर्यारौखजलाश्रितौ हि भवतः शैलाग्रपातान्मृति भौमेन्दू र्कसुताः स्वसप्तजलगाः स्यात्कूपवाप्यादितः ॥ सूर्याचंद्रमसौ खलैः क्षितियुतौ कन्यायुतौ बंधना तौ चेद्द्व्यंगविलग्नसंस्थितकरौ तोये निमग्नत्वतः॥९॥

टी॰ सूर्य मंगल यह १० अथवा ४ चतुर्थस्थानमें होयतो पाषाण संबंधसे मृत्यु कहना मंगल चंद्र शनी यह अपने स्थानसे सप्तम ७ अथवा चतुर्थ ४ स्थानमें होयतो कुंवा वावली तलाव इत्यादिकसे मृत्यु कहना सूर्य और चंद्रमा को पापग्रह देखते होय तो अथवा युक्त होयतो यह स्त्री बंधुयुक्त वा रहना सूर्य चंद्र ये द्विस्वभाव होतो जलसे मृत्यु कहना

समे विलग्ने यदि संस्थिताः स्युर्बलान्विताः शुक्रबुधेंदुजीवाः॥ स्यात्कामिनी ब्रह्मविचारचर्चापरागमज्ञानविराजमाना

टी॰ समराशीका लग्न होय उसीमें शुक्र बुध चंद्र गुरु यह बलयुक्त होयतो वह स्त्री ब्रह्मविचार करे और उत्तम प्रकार की ज्ञानी होय ऐसा कहना—

अन्यमत॥ ॥सप्तमे भार्गवे जाता कुलदोषकरा भवेत् कर्कराशिस्थिते भौमे स्वैरा भ्रमति वेश्मसु॥ १० ॥

टी॰ जिस स्त्रीके लग्नसे ७ स्थानमें शुक्र होयतो कुलको दोषित करे और कर्क राशीमें मंगल होय तो बंध्या और दूसरेके ग्रहमें वास जानना

अन्यमत॥ पापयोरंतरे लग्ने चंद्रे वा यदि कन्यका॥ जायते च तदा हंति पितृश्वश्रूभयोः कुलं ॥ ११ ॥

टी॰ लग्नको पापग्रहकी कर्त्तरी होय अथवा चंद्रमाको पापग्रहकी कर्त्तरी होयतो वह स्त्री दोनो वंशाकी घात करे ऐसा जानना—

तनुस्थान॥ ॥मूर्त्तौ करोति विधवां दिनकृत्कुजश्च राहुर्विनष्टतनयां रविजो दरिद्रां॥ शुक्रः शशांकतनय श्च गुरुश्च साध्वीमायुःक्षयं च कुरुते त्र च शार्वरीशः॥ १२॥ धनस्थान॥ कुर्वंति भास्करशनैश्चरराहुभौमादारिद्र

दुःखमतुलंनियतंद्वितीये॥ वित्तेप्यरीमविधवांगुरु
शुक्रसौम्या नारीं प्रसूता तनयां कुरुतेशशांकः॥१३॥ स
हजस्थान॥ सूर्येंदुभौमगुरुशुक्रबुधास्तृतीयेकुर्युस्त्रि
यंवहुसुतांधनभागिनींच॥सत्यंदिवाकरसुतःकुरुतेध
नाढ्यांलक्ष्मीं ददाति नियतंकिलसैंहिकेयः॥१४॥सुहृ
त्स्थान॥स्वल्पंपयोभवतिसूर्यसुतेचतुर्थे दौर्भाग्यमुग्र
किरणंकुरुतेशशीच॥राहुर्विनष्टतनयांक्षितिजोल्पवी
जांसौख्यान्वितांभृगुसुरेज्यबुधाश्चकुर्युः॥१५॥ सुतस्था
न॥नष्टात्मजांरविकुजौ खलुपंचमस्थौ चंद्रात्मजा वहु
सुतांगुरुभार्गवौच॥राहुर्ददातिमरणंरविजस्तुरोगक
न्याप्रसुतिनितरांकुरुतेशशांकः॥१६॥ रिपुस्थान॥षष्ठ
स्थिताशनिदिवाकरराहुभौमाजीवस्तथा वहुसुतांध
नभागिनींच॥चंद्रःकरोति विधवामुशना दरिद्रां वेश्यांश
शांकतनयःकलहप्रियांच॥१७॥जायास्थान॥ सौरार
जीवबुधराहुरवींदुशुक्रादद्युःप्रसत्यमरणंखलुसप्तम
स्था॥वैधव्यवधनभयंक्षयवित्तनाशंव्याधिप्रवासमरणं
नियतंक्रमेणः१८ मृत्युस्थान॥स्थानेष्टमेगुरुबुधौनि
यतंवियोगंमृत्युंशशीभृगुसुतश्च तथैवराहुः॥सूर्यःक
रोति विधवाधनिनींकुजश्च सूर्यात्मजो वहुसुतांपतिव
ल्लभाच॥१९॥धर्मस्थान॥धर्मस्थितास्तुगुदिवाकरभूमि
पुत्रजीवाःसुधर्मनिरतांशशिजःसुभोगां॥ राहुश्चसूर्यतन
यश्चकरोतिवंध्यां नारीं प्रसूततनयांकुरुतेशशांकः२०
कर्मस्थान॥राहुर्नभस्थलगतो विधवांकरोति पापेपरांदि
नकरश्चशनैश्चरश्च॥मृत्युंकुजोर्थरहितांकुटिलांचचं
द्रःशेषाग्रहाधनवतींवहुवल्लभाच॥२१॥ आयस्थान॥आ
येरविर्वहुसुतांधनिनींशशांकः पुत्रान्वितांक्षितिसुतोरवि
जोधनाढ्यां॥आयुष्मतींसुरगुरुर्भृगुजःसुपुत्रींराहुःक
रोतिसुभगांसुखिनींबुधश्च॥२२॥ व्ययस्थान॥अंत्ये

धनव्ययवतीं दिनकृद्दरिद्रां वंध्या कुजः परस्तां कुटिलां च राहुः ॥ साध्वीं सिते ज्यशशिजा वहुपुत्रपौत्रयुक्तां विधुः प्रकरुते व्ययगो दिनाधाम् ॥ २३ ॥

टी॰ द्वादशस्थान का फल जो जो ग्रह जो जो स्थान मे होय तिन का फल कोष्टक परसे स्पष्ट मालूम होवेगा – ॥ स्त्रीजातककोष्टक ॥

स्थान	नाम	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रा॰ के
१	तनु	विधवा	अल्पायु	विधवा	पतिव्रता	पतिव्रता	पतिव्रता	दरिद्री	धननाश
२	धन॰	दरिद्रदुःख	वहुपुत्र	दरिद्री	सौभ्याग्य	सौभाग्ययुक्त	सौभाग्ययुक्त	दुःखयुक्त	दरिद्रदुःख
३	सहज	पुत्रयुक्त धनयुक्त	धनपुत्रयुक्त	धनपुत्रयुक्त	धनपुत्रयुक्त	धनपुत्रयुक्त	धनपुत्रयुक्त	धनपुत्रयुक्त	धनपुत्रयुक्त
४	सुहृत	दरिद्री	दुष्टभाग्य	अल्पसंतती	वहुसौख्य	वहुसौख्य	वहुसौख्य	अल्पदुग्ध	पुत्रनाश
५	सुत	पुत्रनाश	कन्यावहु	पुत्रनाश	उत्तमफल	शुभफल	वहुसुख	रोगी	मृत्यु
६	रिपु	धनयुक्त	विधवा	धनयुक्त	कलहकारिणि	धनयुक्त	दरिद्रीवंध्य	धनयुक्त	धनयुक्त
७	जाया	रोगी	प्रवासी	विधवा	नाश	भयवंधन	मृत्यु	वैधव्यमरण	धननाश
८	मृत्यु	विधवा	वियोगमरण	धनयुक्त	स्वजनवियोग	स्वजनवियोग	मरणंतवियोग	वहुपुत्र	मरणंतवियोग
९	धर्म	धर्मवुद्धि	पुत्रयुक्त	धर्मकर्मी	उत्तमभोगी	धर्मवुद्धि	धर्मवुद्धि	वंध्या	वंध्या
१०	कर्म	दुष्टवुद्धि	पापकर्मी	मृत्यु	धनयुक्त पतिव्रता	धनयुक्त पतिप्रिय	धनयुक्त पतिप्रिय	पापकर्मी	वैधव्य
११	आय	वहुपुत्र	धनयुक्त	वहुपुत्र	सुखी	आयुष्य वहुत	पुत्रयुक्त	धनयुक्त	सौभ्याग्य
१२	व्यय	दरिद्र	दिनांध	दुष्टकर्मी	सुतपुत्र	सुशील	पतिव्रता	दरिद्री	पापकर्मी

अथाष्टोनरीदशा ॥ ॥ आर्द्रा पुनर्वसुः पुष्य आश्लेषा नुरवेर्दशा ॥ मघा पूर्वोत्तराचैव चंद्रस्यच दशा तथा ॥ हस्तो विशाखा चित्राच स्वाती भौमदशा स्मृता ॥ ज्येष्ठानुराधा मूलेच सौम्यस्यच दशा वुधैः ॥ २ ॥ अभिजित्छ्रवणः पूषाउषा चैव शनेर्दशा ॥ धनिष्टा शततारा च पूर्वाभाद्रपदा गुरोः ॥ ३ ॥ उभापूषाश्विनी काल राहोश्चैव दशा स्मृता ॥ कृत्तिकारोहिणी चोक्ता मृग शुक्र दशा वुधैः ४ एषां भानां क्रमेणैव ज्ञेयाः सूर्यादिका दशाः ॥ कृत्सा अष्टभात्रोक्ता शुभा

स्यात् सौम्यखेटजाः५ सूर्यस्य रसवर्षाणि इंदोः पंचदशैवच
भौमस्य वसुवर्षाणि ऋषिचंद्रबुधस्यच॥ मंदस्यदशवर्षाणि
गुरोस्त्वेकोनविंशतिः॥ राहोर्वादश वर्षाणि भार्गवस्यैकविंशतिः७

टी· आर्द्रा नक्षत्रसे आरंभकरकै मृगतक २९ नक्षत्रमें सूर्यसे शुक्रतक ९ ग्रहोंकी पृथक २ कोष्टमदशा कीवर्षसंख्या जानना पापग्रहमें ४ नक्षत्र और शुभग्रहमें ३ नक्षत्रजानना और जिसविभागमें जन्म होय उससे भोग्या भोग्यजानना जोदशा जन्म कालमें होय व ग्रहकी दशा प्रथमजानना चक्रम स्पष्ट है॥

ग्रहोंकी अंतर्दशा ॥

महादशास्वस्वदशाब्दनिघ्ना हृतावसु व्योमधराभिरत्ता॥
अंतर्दशास्युर्गगनेचराणां तदेकभावोहिमहादशास्यात्

टी· कोईग्रहकी अंतर्दशानिकालनी होयतो जन्मदशाके वर्षसंख्यासे उसकी वर्षसंख्या गुणदेना नंतर १०८ सेभागलेना जो अंक आवे सो वर्षमालूम करना नंतर शेष रहे तिसको बारसे गुणदेना पुनः १०८ सेभागलेना जो अंक आवे सोभाग जानना नंतर शेषरहा जोउसको ३० से गुणदेनापुनः १०८ सेभाग लेना जो अंक आवे सो दिनजानना नंतर शेषरहा जोउसको ६० सेगुणदेना पुनः १०८ सेभागलेना जो अंक आवे घडीजाने इसप्रकार ग्रहोंकी अंतर्दशाजाने

सूर्यकी महादशा वर्ष ६ — आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य अश्लेषा — अंतरदशा

ग्रह	व·	मा·	दि·	घ·	फल·
रवि·	०	४	०	०	अशुभ
चंद्र	०	१०	०	०	शुभ
मगल	०	५	१०	०	अशुभ
बुध	०	११	१०	०	शुभ
शनि	०	६	२०	०	अशुभ
गुरु	१	०	२०	०	शुभ
राहु	०	८	०	०	अशुभ
शुक्र	१	२	०	०	शुभ
संख्या	६	०	०	०	०

चंद्रकी महादशा वर्ष १५ — मघा पूर्वा उत्तरा — अंतर्दशा

ग्रह	व·	मा·	दि·	घ·	फल
चंद्र	२	१	०	०	शुभ
भौम	१	१	१०	०	अशुभ
बुध	२	४	१०	०	शुभ
शनि	१	४	२०	०	अशुभ
गुरु	२	७	२०	०	शुभ
राहु	१	८	०	०	अशुभ
शुक्र	२	११	०	०	शुभ
रवि	०	१०	०	०	
संख्या	१५	०	०	०	०

भौमकी महादशा वर्ष ८ — हस्त चित्रा स्वा· विशाखा — अंतर्दशा

ग्रह	व·	मा·	दि·	घ	फल·
भौम	१	७	३	२०	अशुभ
बुध	१	३	३	२०	शुभ
शनि	०	८	२६	४०	अशुभ
गुरु	१	४	२६	४०	शुभ
राहु	०	१०	२०	०	अशुभ
शुक्र	१	६	२०	०	शुभ
रवि	०	५	१०	०	अशुभ
चंद्र	१	१	१०		शुभ
संख्या	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

बुधकी महादशा वर्ष १७ — अनुराधा ज्येष्ठा मूल — अंतर्दशा

ग्रह·	व·	मा·	दि·	घ·	फल·
बुध	२		८	२०	अशुभ
शनि	१		६	४०	अशुभ
गुरु	२		११	४०	शुभ
राहु	१		१०	०	अशुभ
शुक्र	३		३	०	शुभ
रवि	०		११	०	अशुभ
चंद्र	२		४	०	शुभ
भौम	१		३	२०	अशुभ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०

शनीकीमहादशावर्ष१० पूर्वाषाढा उत्तराषाढा अभि· श्रवण					
अंतर्दशा					
ग्रह	व·	मा·	दि·	घ·	फल
शनि	०	११	३	२०	अशुभ
गुरु	१	९	३	२०	शुभ
राहु	१	१	१०	०	अशुभ
शुक्र	१	११	१०	०	शुभ
रवि	०	६	२०	०	अशुभ
चंद्र	१	४	२०	०	शुभ
मंग·	०	८	२६	४०	अशुभ
बुध	१	६	२६	४	शुभ
संख्या	१०	०	०	०	०

गुरुकीमहादशावर्ष१९ धनिष्ठा शततारका पूर्वाभाद्रपद					
अंतर्दशा					
ग्रह·	व·	मा·	दि·	घ·	फल
गुरु	३	४	३	२०	शुभ
राहु	२	१	१०	०	अशुभ
शुक्र	३	८	१०	०	शुभ
रवि	१	०	२०	०	अशुभ
चंद्र	२	७	२०	०	शुभ
मंग·	१	४	२६	४०	अशुभ
बुध	२	११	२६	४०	शुभ
शनि	१	९	३	२०	अशुभ
संख्या	१९	०	०	०	०

राहुकीदशावर्ष१२ उत्तराभाद्रपद रेवती अश्विनी भरणी					
अंतर्दशा					
ग्रह	व·	मा·	दि·	घ·	फल
राहु	१	४	०	०	अशुभ
शुक्र	२	४	०	०	शुभ
रवि	०	८	०	०	अशुभ
चंद्र	१	८	०	०	शुभ
मंग·	०	१०	२०	०	अशुभ
बुध	१	१०	२०	०	शुभ
शनि	१	१	१०	०	अशुभ
गुरु	०	१	१०	०	शुभ
संख्या	१२	०	०	०	०

शुक्रकीदशावर्ष२१ कृत्तिका रोहिणी मृग·					
अंतर्दशा					
ग्रह	व·	मा·	दि·	घ·	फल
शुक्र	४	१	०	०	शुभ
रवि	१	२	०	०	अशुभ
चंद्र	२	११	०	०	शुभ
मंग·	१	६	२०	०	अशुभ
बुध	३	३	२०	०	शुभ
शनि	१	११	१०	०	अशुभ
गुरु	३	८	१०	०	शुभ
राहु	२	४	०	०	अशुभ
संख्या	२१	०	०	०	०

विंशोत्तरीमहादशा

पत्नोनजनुर्भमंक हृत् कमशोर्केंदुकुजागुरुरयः॥
शनिचंद्रजकेतुभार्गवा परिशेषात्तु दशाधिपास्ततः९

टी· विंशोत्तरीदशा प्रकारजन्मनक्षत्रमें२ कमकरना ९ सेभागलेना शेष १ बचेतो सूर्यदशा २ बचेतो चंद्रमादशा ३ बचेतो भौमदशा ४ बचेतो राहु दशा ५ बचेतो गुरुदशा ६ बचेतो शनिदशा ७ बचेतो बुधदशा ८ बचेतो केतु दशा ० बचेतो शुक्रदशा और अधिपतिजानना—

दशाकी वर्षसंख्याभोग्याभोग्य

ऋतुदिग्गिरयोधृतिर्नृपातिधृतीमेघहयोनखाःसमाःक्रमतोहिभताअयादिमाजनिभस्थाघटिकाःसमाहृता॥१॥भभोगेनभक्ताःफलंभक्तपाकस्तदूना दशासाभवेद्भोग्यसंज्ञा॥

टी॰ विंशोत्तरीदशाकी वर्षसंख्या ऋतु कहिये ६ दिक्क १० गिरी क॰ ७ धृतिक॰ १८ नृपक॰ १६ अतिधृतिक॰ १९ मेघक॰ १७ हयक॰ ७ नखक॰ २० यहक्रम से वर्षसंख्या सूर्यादि शुक्रांत तक कोष्टकमे स्पष्ट देखना आगे जन्मजिसनक्षत्रकी पूर्वनक्षत्रकी जो घड़ी होय उसको ६० मेन्यून करना उसे इष्टकालजोड़ देना तोभयात होता है यदाजानक्षत्रकीघटीइष्टघटीसकमहोयतोइष्टघडीमनक्षत्रघडी घटादेतौभयात होगा नंतरजन्म नक्षत्रकी जो घड़ी होय उसको पूर्व ६० मेन्यून कियाजो घड़ी उसेजोड़ देना तो भभोग होताहैभयातजो होय उसको दशा पती के वर्षसे गुण देना भभोगस भोग्य — — — भागलेना जो अंक आवे सोवर्ष जानना शेषजो रहै तिसको १२ से गुणदेना भोग्य से भाग लेना जो अंक आवे सो मास॰ शेषजो तिसको ३० से गुण देना भोग्यसे भाग्यलेना जो अंक आवे सोदिन॰ शेषजो तिषको ६० से गुण देना भोग्य घडी से भाग लेना जो अंक आवेसो घड़ी दि ज़ानना इसप्रकारसे दशा ल्यावना-

विंशोत्तरीक्रमः॥ ॥कृत्तिकादिक्रमेणैववक्तेयाविंशोत्तरीदशाः। अंतर्दशायुता वर्षमासवासरवर्त्तिताः॥ ११॥

टी॰ कृत्तिकासे भरणी तक नक्षत्र और दशा अंतर्दशा के स्वामी के नाम और वर्षसंख्या कोष्टकपरसे मालूम करना-

अन्यमते॥ ॥स्वदशायामगुणिता तद्दशागुणिता पुनः ॥खगुणेनहरेल्लब्धं वर्षमासदिनंभवेत्॥ १२ ॥ छ

टी॰ अपनी प्राप्तदशाको तीन३ सेगुण देना जिस्की अंतर्दशालावनी होयउस्को वर्षसेगुणदेना नंतर ३० सेभागलेना तो अंतर्दशावर्षमास दिन प्राप्त होताहै

सूर्यकीमहादशावर्ष ६ — कृत्तिका उत्तराफा· उत्तराषा·			
अंतर्दशा			
ग्रह	वर्ष	मा·	दि·
रवि·	०	३	१८
चंद्र	०	६	०
मंग·	०	४	६
राहु	०	१०	२४
गुरु	०	९	१८
शनि·	०	११	१२
बुध·	०	१०	६
केतु	०	४	६
शुक्र	१	०	०

चंद्रकीमहादशावर्ष १० — रोहिणी हस्त· श्रवण			
अंतर्दशा			
ग्रह	व·	मा·	दि·
चंद्र	०	१०	०
भौम·	०	७	०
राहु	१	६	०
गुरु	१	४	०
शनि	१	७	०
बुध·	१	५	०
केतु	०	७	०
शुक्र	१	८	०
रवि	०	६	०

भौमकीमहादशावर्ष ७ — मृग चित्रा धनिष्ठा			
अंतर्दशा			
ग्रह	व·	मा·	दि·
भौम	०	४	२७
राहु	१	०	१८
गुरु	०	११	६
शनि	१	१	९
बुध	०	११	२७
केतु	०	४	२७
शुक्र	१	२	०
रवि	०	४	६
चंद्र	०	७	०

राहुकीमहादशावर्ष १८ — आर्द्रा स्वाती शततारका			
अंतर्दशा			
ग्रह	व·	मास	दि·
राहु	२	८	१२
गुरु	२	४	२४
शनि·	२	१०	६
बुध	२	६	१८
केतु	१	०	१८
शुक्र	३	०	०
रवि·	०	१०	२४
चंद्र	१	६	०
मंग·	१	०	१८

गुरुकीमहादशावर्ष १६ — पुनर्वसु विशाखा पूर्वाभा·			
अंतर्दशा			
ग्रह	व	मा·	दि·
गुरु·	२	१	१८
शनि	२	६	१२
बुध	२	३	६
केतु	०	११	६
शुक्र	२	८	०
रवि·	०	९	१८
चंद्र	१	४	०
मंग·	०	११	६
राहु·	२	४	२४

शनीकीमहादशा वर्ष १९ — पुष्य अनुराधा उत्तराभाद्रपद			
अंतर्दशा			
ग्रह	व·	मा·	दि·घ·
शनि·	३	०	३ ०
बुध·	२	८	९ ०
केतु	१	१	९ ०
शुक्र	३	२	० ०
रवि·	०	११	१२ ०
चंद्र	१	७	० ०
मंग·	१	१	९ ०
राहु	२	१०	६ ०
गुरु	२	६	१२ ०

बुधकीमहादशावर्ष १७ — आश्लेषा ज्येष्ठा रेवती			
अंतर्दशा			
ग्रह	व·	मा·	दि·घ
बुध	२	४	२७।०
केतु·	०	११	२७।०
शुक्र	२	१०	०।०
रवि·	०	१०	६।०
चंद्र	१	५	०।०
मंग	०	११	२७।०
राहु	२	६	१८।०
गुरु	२	३	६।०
शनि	२	८	९।●

केतुकीमहादशा वर्ष ७ — मघा मूल अश्विनी			
अंतर्दशा			
ग्रह	व·	मा·	दि·
केतु·	०	४	२७
शुक्र	१	२	०
रवि·	०	४	६
चंद्र	०	७	०
मंग·	०	४	२७
राहु	१	०	१८
गुरु	०	११	६
शनि	१	१	९
बुध	०	११	२७

शुक्रकीमहादशा वर्ष २० — पूर्वाफा· पूर्वाषा· भरणी			
अंतर्दशा			
ग्रह	व·	मा·	दि·
शुक्र	३	४	०
रवि·	१	०	०
चन्द्र	१	८	०
मंग·	१	२	०
राहु	३	०	०
गुरु	२	८	०
शनि	३	२	०
बुध	२	१०	०
केतु·	१	२	०

महादशाअंतर्दशाकालफल

सूर्यकीदशा॥ देशांतरंचनिजबंधयोग दुःखमुद्वेग रोगभयचोरभवाचपीडा॥ पूर्वस्थितस्यनिखिल

स्वधनस्यनाशो भानोर्दशाजननकालदशाभवंति ११

टी॰ प्रवासमेंगमन भाईलोगसे वियोग दुःख मनको चिंता रोग भय चोरसे पीडा और पूर्व केद्रव्य का नाशयह सूर्य दशामें फल प्राप्तीजानना—

चंद्रकीदशा॥ ॥हेमादिभूतिवरवाहनयानलाभः श त्रुप्रनाशबलवृद्धिपरंपराच॥ मिष्टान्नपानशयनास नभोजनानि नूनंसदाशशिदशागमनेभवंति॥१२॥

टी॰ सवऐश्वर्यसुवर्ण घोड़ा हाथीयहसववस्तुकालाभ शत्रूकानाश वलकीवृद्धि मिष्टभोजन आसन उत्तमवस्तु कालाभ चंद्रके दशामें प्राप्तीजानना—

भौमकीदशा॥ ॥भूपालचोरभयवह्निकृताचपीडासर्वां गरोगभयदुःखसुदुःखिताच॥ चिंताज्वरश्चबहु कष्टदरि द्रयुक्तःस्यात्सदाकुजदशाजननेभवति॥ १३॥ ७

टी॰ राजासेभय चोरसेभय अग्नीसे पीडा सवशरिरमें रोग भय बहुत दुःखी चिंता युक्त ज्वरयुक्त बहुत कष्टदरिद्रयुक्त यहमंगलकी दशामे फलप्राप्तीजानना—

राहुकीदशा॥ ॥दीनोनरोभवति बुद्धिविहीनचिंतास र्वांगरोगभयदुःखसुदुःखिनाच॥ पापानिबंधबहुकष्ट दरिद्रयुक्तं राहोर्दशाजननकालदशाभवति॥ १४॥

टी॰ मनुष्य दीन होय बुद्धिहीन चिंतायुक्त सर्वांगरोगी भय बहुत दुःखीपापकर्म से बंधन बहुतकष्ट दरिद्रयुक्त यहराहुकी दशासे फल प्राप्तीजानना—॥

गुरुदशा॥ ॥राज्याधिकारपरिवर्धितचित्तवृत्तिंध र्माधिकारपरिपालनसिद्धिबुद्धिं॥ सद्विप्रहोपिधनधा न्यसमृद्धिताचस्याद्देवतागुरुदशागमनेभवंति॥१५

टी॰ राजाका अधिकारचित्तस्वस्थ धर्ममेंउत्तम प्रकारकीबुद्धि शरीर आरोग्य सत् विचारवान् धनधान्यकी सम्रद्धी यहफल गुरुकी दशामें जानना—

शनीकीदशा॥ ॥मिथ्यापवादवधबंधनसर्वहानि र्मित्रेचबंधुवचनेषुच युद्धबुद्धिः॥ सिद्धंचकार्यमपिय त्रसदाविनष्टंस्यात्सदाशनिदशागमनेभवंति॥१६

टी॰ मिथ्या अपवाद दूसरेका वधबंधनप्राप्तीद्रव्यनाश मित्र और बंधूमे कलह सिद्ध कार्यका नाश यह शनि दशामें फल प्राप्तिजानना—

बुधकीदशा॥ ॥दिव्यांगनामदनसंगमकेलिसौख्यं नानाविलासमभिरागमनोभिरामैः॥ हेमादिरत्नविभवागमकोशध्यानंस्यात्सर्वदाबुधदशागमनेभवंति
टी॰ उत्तम स्त्री प्राप्ती रति सौख्य और नाना प्रकार का सौख्य विलास सुवर्ण रत्न इत्यादि विभव युक्त ईश्वर ध्यान यह बुधकी दशामें प्राप्तीजानना-

केतूकीदशा॥ ॥भार्यावियोगजनितंच शरीरदुःखं द्रव्यस्य हानि रतिकष्टपरंपरांच॥ रोगाश्चबंधुकलहश्च विदेशताचकेतोर्दशाजननकाल दशाभवंति॥ १८॥
टी॰ स्त्रीवियोग संबंधी शरीरको दुःख द्रव्यनाश बहुत कष्ट रोगी बंधूसे वैर देशांतरवास यह केतूकी दशा का फलजानना-

शुक्रकीदशा॥ ॥आरामवृद्धिपरिगर्वशरीरवृद्धिंपुष्टेनानपत्रधनधान्यसमाकुलंच॥ आयुःशरीरसुतपौत्रसुखंनराणांद्रव्यंचभार्गवदशागमनेभवंति॥ १९॥
टी॰ सुखस्थान बंगेचा इत्यादिक की वृद्धि शरीर पुष्ट छत्र प्राप्ती धनधान्य युक्त आयुष्य बहुत पुत्रादिकका सौख्य द्रव्य प्राप्ती यह फल शुक्रकी दशामें जानना-

अथयोगिनीदशा॥ मंगलापिंगलाधान्याभ्रामरीभद्रिकापिच॥ उल्कासिद्धासंकटाचयोगिन्यष्टौदशास्स्मृताः
टी॰ मंगला १ पिंगला २ धान्या ३ भ्रामरी ४ भद्रिका ५ उल्का ६ सिद्धा ७ संकटा ८ यह आठ योगिनीकी दशा प्रकार आगे स्पष्टहै ऐसेजानना-

योगिनीस्वामी॥ ॥अथासामधीशाःक्रमान्मंगलायाः शशीतीक्ष्णभानुर्गुरुर्भूमिसूनुः॥ बुधःसूर्यसूनुर्भृगुः सिंहिकायाःसुतःसंकटायांतथाचकेतुः॥ २१॥
टी॰ मंगलादिक दशाके स्वामी चंद्र सूर्य गुरु मंगल बुध शनी शुक्र राहु केतु संकटा दशाकी स्वामी यह मंगलादिक दशाके क्रमसे स्वामीजानना-

योगिनीदशाक्रम॥ ॥स्वर्क्षःपिनाकिनयनैःसंयोज्यवसुभिर्भजेत्॥ योगिन्यष्टौसमाख्याताशून्यपातेनसंकटा
टी॰ दशाकिलावनेका प्रकार जन्मनक्षत्रसे ३ युक्त करके ८ सेभागलेना जैसा जन्मनक्षत्र पुष्य ८ इसमें तीन जोड दिया तो ११ भया आठसे भागलेना तो शेष ३ बचे नेसे

धान्यादशा आती है यहइनकारसेदशाकाक्रमजानना-

वर्षसंख्या ॥ एकद्वित्रीणिवेदाश्चपंचषट्सप्तमानिच ॥ अष्टवर्षाणिहिभवेनुमंगलादावनुक्रमात् ॥ २३॥

टी॰ आठो योगिनी की वर्षसंख्या मंगला वर्ष १ पिंगला व॰ २ धान्या व॰ ३ भ्रामरी व॰ ४ भद्रिका व॰ ५ उल्का व॰ ६ सिद्धा व॰ ७ संकटा व॰ ८ इसप्रकारसे वर्षसंख्या जानना ॥

अंतर्दशा ॥ अथांतर्दशायाः प्रकारं प्रवच्मि दशा वार्षिकं स्वस्व वर्षेणगुण्यं ॥ ततः षट्त्रिंशिर्लब्धवर्षादिका सा सदा खेटविद्भिर्विधेया ॥

टी॰ प्राप्त दशासे जिस दशाका अंतर करना होय उसके वर्षसंख्यासे प्राप्त दशाको गुण देना उसमे ३६ का भाग लेनेसे अंतर्दशा होती है आगे चक्रमें स्पष्ट मालूम होगा-

मंगला द॰ व॰ १ चं दिन ३६०		पिंगला व॰ २ सू॰ दि॰ ७२०		धान्या व॰ ३ गुरु दिन १०८०		भ्रामरी व॰ ४ मं॰ दि॰ १४४०		भद्रिका व॰ ५ बुध दिन १८००		उल्का व॰ ६ श॰ दिन॰ २१६०		सिद्धा व॰ ७ शु॰ दिन॰ २५२०		संकटा व॰ ८ रा॰ दिन॰ २८८०	
मंग॰	१	पिं॰	४	धा॰	६०	भ्रा	१६०	भ॰	२५०	उ	३६०	सि॰	४८०	सं॰	६४०
पिंग	२०	धा॰	६०	भ्रा॰	१२०	भ॰	२००	उ	३००	सि॰	४२०	सं॰	५६०	मं॰	८०
धान्या	३०	भ्रा॰	८०	भ॰	१५०	उ॰	२४०	सि॰	३५०	सं॰	४८०	मं॰	७०	पिं॰	१६०
भ्रामरी	४०	भ॰	१००	उ॰	१८०	सि॰	२८०	सं॰	४००	मं॰	६०	पिं॰	१४०	धा॰	२७०
भद्रि॰	५०	उ	१२०	सि॰	२१०	सं॰	३२०	मं॰	५०	पिं	१२०	धा॰	२१०	भ्रा॰	३२०
उल्का	६०	सि॰	१४०	सं॰	२४०	मं॰	४०	पिं॰	१००	धा॰	१८०	भ्रा॰	२८०	भ॰	४००
सिद्धा	७०	सं॰	१६०	मं॰	३०	पिं॰	८०	धा॰	१५०	भ्रा॰	२४०	भ॰	३५०	उ	४८०
संक॰	८०	मं॰	२०	पिं॰	६०	धा॰	१२०	भ्रा॰	२००	भ॰	३००	उ॰	४२०	सि॰	५६०
मेरीज	३६०	०	७२०	०	१०८०	०	१४४०	०	१८००	०	२१६०	०	२५२०	०	२८८०

दशापरत्वेफलमाह

वैरिणं तु विपदाविनाशकावाहनादिवसुरत्नलाभदा ॥ कामिसुतगृहादिलाभदा मंगला सकलमंगलोदया ॥ २५ ॥

टी॰ शत्रुके उपद्रवका नाश घोड़ा हाथी सुवर्ण रत्न इत्यादिकोंका लाभ स्त्री पुत्र गृहादिकका लाभ और मंगल कार्यका उदय यह मंगला दशामें फल जानना-

पिंगलादशाकाफल

दुःखशोककुलरोगवर्धिताव्यग्रताचकलहःस्वजनैश्च ॥ अशुभागकथिनाफलदासौपिंगलाचविदुषांसुखदारे ॥

टी॰ दुःखशोक कलह रोग [illegible] पिंगला दशा [illegible] देती है

तिसके नंतर लिखा फलजानना-।। धान्यादशाफल ॥

धनंधान्यवृद्धिंधरानाथमान्यंसदायुद्धभूमौजयंधैर्यवंतं ।।क
लत्रांगजानांसुखंचित्रवस्त्रैर्युतंधान्यकाधान्यवृद्धिंकरोति

टी॰ धनवृद्धिं धान्यवृद्धिं राज पूज्य सर्व काल युद्ध भूमीमेजय धैर्ययुक्त स्त्रीपुत्रकासु
ख चित्र वस्त्र युक्त धान्या दशामे धान्य वृद्धिजानना- भ्रामरीदशाफल ॥

विदेशेभ्रमंहानियुद्धेगताश्चकलत्रांगपीडासुखैर्वर्जितत्वं।।
रिणंव्याधिवृद्धिर्जनानांप्रकोपंदशाभ्रामरीभ्रामयेत्सर्वदेशं

टी॰ विदेशेभ्रमण युद्धमेहानि स्त्रीकोपीडा सुख हीन रिणयुक्त रोग वृद्धि जनका
प्रकोप सर्व देशमे भ्रमण यह भ्रामरी दशामें फलजानना- भद्रिकादशाफल

धनानंदवृद्धिगुणानांप्रकाशंसमीचीनवस्त्रागमंराजमान्यं
अलंकारदिव्यांगनाभोगसौख्यंसदाभद्रिकाभद्रकार्यंकरोति

टी॰ धनकी वृद्धि आनदवृद्धि गुणका प्रकाश उत्तमवस्त्र प्राप्ती राज मान्य भूषणकी
प्राप्ती स्त्रीभोगादिकका सौख्य कल्याण यह भद्रिका दशामें फलजानना-॥

उल्कादशाफल॥ भ्रमंव्याधिकष्टंज्वराणांप्रकोपंधनादेश
दारादिकानांवियोगः॥स्वगोत्रैर्विवादंसुहृद्बंधुवैरंदशा
चोल्किकानर्थकारीसदैव ॥३० ॥

टी॰ भ्रमणरोग दुःख ज्वरका कोप धनवियोगदेश वियोग स्त्री वियोग गोत्रमे
कलह मित्र बंधु इनसे वैर औरनाना प्रकारके अनर्थय ह उल्का दशामे फलजानना

सिद्धादशाफल॥ ॥राज्याभिमानंस्वजनादिसौख्यंधा
न्यादिलाभंगुणकीर्त्तिसिद्धिं ॥राज्यादिलाभंसुतवृद्धि
सौख्यंसिद्धंचसिद्धाप्रकरोतिपुंसां॥ ३१ ॥ ७ ॥

टी॰ राज्यप्राप्ती अभिमान अपने गोत्रमे सुखदेख धान्यलाभ गुण सिद्धि कीर्त्तिसिद्धि
राज्य चिन्हकालाभ पुत्र वृद्धि सुख और सर्व कार्यकी सिद्धि यह सिद्धा दशामें फलजानना

संकटादशाफल॥ जनानांविवादंज्वराणांप्रकोपंकल
त्रादिकष्टंपशूनांविनाशं॥गृहेस्वल्पवासंप्रवासाभिला
षंदशासंकटासंकटंराजपक्षात्॥

टी॰ जनसे कलह ज्वरका कोप स्त्रियादिकका कष्ट पशुनाश घरमे थोड़ा वास
प्रवासमें रुचि और राजपक्षसे संकट यह संकटा दशाका फलजानना-

सूर्यादीनां दिनदशा ॥ रविदिन नरवसंख्या चंद्रमाव्योम वाणैः क्षिति तनयगजाश्वी चंद्रजः षट्शराग्न्यः ॥ शनिर सगुणसंख्या वाग्पतिर्नाग वाणै र्नयनयुग करा हुः सप्तनिः शुक्रसंख्या ॥ जन्मना विंशतिः सूर्ये तृतीये दशा चंद्रमाः चतुर्थे भौमचाष्टौ च षष्ठे बुधचतुर्थके ॥ ३५ ॥ सप्तमे दशसौरिः स्यान्नवमे चाष्टमे गुरोः ॥ दशमे राहु विंशत्यात द्ध्र्वंतु भृगोर्दशा ॥ फल ॥ पंथाभोगोनुतापश्च सौख्य पीडा धनंक्रमात् ॥ नाशः शोकश्च सौख्यं च जन्मसूर्य दशाफलं

टी॰ एकवर्षमे सूर्यादिनवग्रहोका दशा प्रकार सूर्य जन्मस्थान से द्वादशराशी भोग करता है उस्मे सब ग्रहुकी दशा भोग होती है तिस्का प्रकार २० दिन की सूर्य दशा जन्मस्थान से जानना - फल रस्ता चलावे ५० दिन चंद्रकी दशा त्रतीयस्थानके १० दिन सूर्यभोगकरता है फल नाना प्रकारके उत्तमभोग -
२८ दिन मंगल की दशा चतुर्थस्थानके ८ दिन सूर्यभोगकरता है फल रोग और संताप
५६ दिन बुधकी दशा षष्टमस्थानके ४ दिन सूर्यभोगकरता है फल सौख्यकारक -
३६ दिन शनीकी दशा सप्तमस्थानके १० दिन सूर्य भोग करता है फल पीडाकारक -
५८ दिन गुरुकी दशा नवमस्थानके ८ दिन सूर्यभोगकरता है फल धन प्राप्ती - ४२
४२ दिन राहूकी दशा दशमस्थानके २० दिन सूर्यभोग करता है फल नाना प्रकारका शोक -
७० दिन शुक्रकी दशा द्वादशस्थानपूर्ण सूर्यभोग करता है फल सर्वसौख्य प्राप्ती जानना

नित्यदशाक्रम ॥ तिथिवारं च नक्षत्रं नामाक्षरसमान्वितं नवभिश्च हरेद्भागं शेषं दिनदशोच्यते ॥ ३७ ॥ रवि चंद्रौ भौम राहू गुरु मंदज्ञकेसितो ॥ क्रमेणैता दशाज्ञेयाः फलं पूर्वोक्तमेव हि

टी॰ तिथीसंख्या वारकी संख्या नक्षत्र की संख्या ऐसे सब की अंक संख्या एकत्र करना उस्मे अपने नामके अक्षरकी संख्या मिलावना ९ से भाग लेना शेष १ रहे तो सूर्य दशा शेष २ रहे तो चंद्रदशा शेष ३ रहे तो मंगलकी दशा शेष ४ रहे तो राहूकी दशा शेष ५ रहे तो गुरुकी दशा शेष ६ रहे तो शनीकी दशा शेष ७ रहे तो बुधकी दशा शेष ८ रहे तो केतूकी दशा शेष ० रहे तो सुक्र की दशा ऐसा नित्यदशाका क्रम पूर्व दर्शके प्रजाने

अन्यमत ॥ जन्मतारा चतुर्गुण्यं तिथिवारसमान्वितं ॥ नवभिस्तु हरेद्भागं शेषं दिन दशोच्यते ३८ रविएणशोक

संतापोशशांकेद्रेमलाभको॥भूमिपुत्रेतुमृत्यु:स्याद्बुधे
वृद्धाविवर्द्धनं ४९ गुरौवित्तंभृगौसौख्यशनौपीडानसंशय:
॥राहुणघातपातौचकेतौमृत्युर्दशाफलं॥ ४९ ॥ छ

टी-जन्म नक्षत्रको चतुगुण करना उसमे तिथी संख्या वारसंख्या जो होयसोसव एकत्र करना ८से भागलेना शेष १रहेतो सूर्यकी दशाफल शोकसंतापकारक शेष २ रहेतोचंद्रकी दशा फल कृपाल लाभ शेष ३ रहेतोमंगलकी दशा फलमृत्यु कारक शेष४ रहेतो बुधकी दशा फलबुद्धिकी दशा वृद्धि शेष ५ रहेतो गुरुकी दशा फलधन घाती शेष ६ रहेतो शुक्र की दशाफल सुखकारक शेष७ रहेतो शनीकीदशा फलपीडाकारक शेष ८रहेतोराहूकी दशाफल घात और पात शेष पूर्ण रहेतो केतूकी दशा फल मृत्युकारक इसप्रकारसेनित्य दशाफलजानना॥- इति दशाप्रकरणम् - ॥

अथजातकर्म

जातेपुत्रेपिताकुर्यान्नांदीश्राद्धं विधानत:॥ जात
कर्मततः कुर्याद्न्यैरालंभनात्पुरा॥ १ ॥ छ ॥

टी-पुत्र उत्पन्न होतेही पिताने जातकर्मकरना दूसरेने वालक को स्पर्श करने के पहिले नांदी श्राद्ध पूर्वकयथा विधीसे कर्म करना-

अवकहडचक्रमिदं॥चूचेचोलाश्विनी प्रोक्ता लीलू
लेलोभरण्यथ॥ आईऊएकृतिकास्या ओवावीवूरो
हिणी २ वेवोकाकीमृगशिर: कूघङछतथार्द्रका
॥केकोहाहीपुनर्भेस्यात् हूहेहोडाचपुष्यभं॥३॥ डीडू
डेडोतुश्लेषामामीमूमेमघास्मृता॥मोटाटीटूपूर्व
फल्गुटेटोपाप्यूत्तरंतथा॥४॥ प्रोक्त: पूषाणठो हस्त:पे
पोरारीतुचित्रिका॥ रूरेरोतातथास्वाती तीतूतेतो विशा
खिका॥५॥ नानीनूने नराधर्त्तनोयायीयुतुइदुभं॥
येयोभाभीमूलभेस्यात् पूर्वाषाढावुधाफढा॥६॥भे
भोजाज्युत्तराषाढा जूजेजोखाभिजिन्नवेत्॥ खीखूखे
खोश्रवणभंगागी गूगेधनिष्ठिका॥गोसासीसूशतभिव
क् सेसोदादीतपूर्वाभ।८॥ उभाद्रूथा फझत्रेपोदेदोचाचीतुरेवती

टी॰ नामाक्षरके वास्ते नक्षत्र के चार चरणमें चार अक्षर चक्रमें देखना-

चू चे चो ला	अश्विनी	हू हे हो डा	पुष्य	रू रे रो ता	स्वाती	जू जे जो खा	अभिजित
ली लू ले लो	भरणी	डी डू डे डो	आश्लेषा	ती तू ते तो	विशाखा	खी खू खे खो	श्रवण
अ इ उ ए	कृत्तिका	मा मी मू मे	मघा	ना नी नू ने	अनुराधा	गा गी गू गे	धनिष्ठा
ओ वा वी वू	रोहिणी	मो टा टी टू	पूर्वा	नो या यी यू	ज्येष्ठा	गो सा सी सू	शततारका
वे वो का की	मृगशिर	टे टो पा पी	उत्तरा	ये यो भा भी	मूल	से सो दा दी	पूर्वाभाद्रप॰
कू घ ङ छ	आर्द्रा	पू ष ण ठ	हस्त	भू धा फा ढा	पूर्वाषाढा	दू थ झ ञ	उत्तराभाद्र॰
के को हा ही	पुनर्वसु	पे पो रा री	चित्रा	भे भो जा जी	उत्तराषाढा	दे दो चा ची	रेवती

जातकर्म॥ ॥यस्मिन्जन्ममुहूर्त्तेपिस्तकांतेथवाशिशोः जातकर्मच कर्त्तव्यंपितृपूजन पूर्वकं॥१॥ क्षिप्रैश्चरैर्ध्रुवैर्मिश्रैर्द्वादशेप्रथमेन्हिवा॥केंद्रेगुरौभृगौकार्यंजातकर्मसनातनम्

टी॰ बालकका जन्ममुहूर्त प्राप्त होयतो अथवा घातीर रहते भी जातकर्म नांदीश्राद्ध पूर्वक करना प्रथम दिनमें करना प्रथम दिनन होयतो १२ दिनमे करना क्षिप्रसंज्ञक नक्षत्रमे चरसंज्ञक नक्षत्रमे ध्रुवसंज्ञक नक्षत्रमे मिश्रसंज्ञक नक्षत्रमे यह नक्षत्रमे और केंद्रमे गुरु शुक्र होयतो जात कर्मकरना शुभ है-

स्नानफल॥ ॥श्रुत्वा जातं पिता पुत्रं सचैलं स्नानमाचरेत्॥ उत्तराभिमुखो भूत्वा नद्यां वा देवखातके ॥३॥

टी॰ पिताने बालक का जन्म सुनते ही वस्त्र सहित उत्तर मुख होय को नदी मे अथवा गुफा मे स्नान करना-

अन्यमत॥ पुत्रजन्मनि यज्ञे च तथा संक्रमणे रवेः॥ राहोश्च दर्शने कार्यं प्रशस्तं नान्यथा निशि॥ ४ ॥

टी॰ रात्री मे स्नान करने का कोई आचार्य निषेध मानते है तो पुत्र जन्म मे यज्ञमे सूर्य संक्रांतिमे ग्रहणमे इतने स्थानमे रात्री मे स्नान करना उत्तम अन्यथा रात्री स्नानमे निषेध है ऐसा आचार्य कहते हैं-

अन्यमत॥ ॥दिवा यदाहृतं तोयं कृत्वा स्वर्णयुतं तत्॥ रात्रौ स्नाने तु संप्राप्ते स्नायादनलसन्निधौ॥५

टी॰ दिनमे कूपसे जल उठाया होय और रात्री मे स्नान करने का काम पडे तो जल सुवर्ण युक्त करके अग्नी के समीप स्नान करना-

अथ नामकर्म

द्वादशे दिवसे वापि जन्मतो दिवसे शुभे॥ षोडशे विंशतौ चैव द्वात्रिंशे वर्णतः क्रमात्॥ ६ ॥ ७ ॥

टी॰ आगे नामकर्म को काल कहते हैं जन्मसे १२ दिनमे करना अथवा शुभ दिनमे करना ब्राह्मणने १२ दिनमें करना क्षत्रियने १६ दिनमे करना वैश्यकू २० दिनमे करना शूद्रकू ३२ दिनमे करना शुभ है॥-

अन्यमत॥ नामधेयं दशम्यां तु केचिदिच्छंति सूरयः॥ अष्टादशे हनि तथा वदंत्यन्ये मनीषिणः॥ २ ॥

टी॰ कोई आचार्य कहते है नामकर्म दशमा दिनमे करना और अन्य १८ दिनमे नामकरण शुभ

नामकर्मणि नक्षत्रमाह॥ चरस्थिरमृदुक्षिप्रनक्षत्रे शुभवासरे॥ चंद्रताराबलोपेते दिवसे च शिशोः पितुः॥३॥

टी॰ चर नक्षत्रमे स्थिर नक्षत्रमे मृदु नक्षत्रमे क्षिप्र नक्षत्रमे शुभग्रह के वारसे चंद्रबलसे ताराबलसे ताराशुद्धीमे पिताने पुत्रका नामकर्म करना शुभ है-

अन्यमत॥ ॥पूर्वाह्णः श्रेष्ठ इत्युक्तो मध्याह्नो मध्यमः स्मृतः॥ अपराह्णं च रात्रिं च वर्जयेन्नामकर्मणि॥ ४

टी॰ नामकर्म प्रथम प्रहरमें शुभ द्वितीय प्रहरसे मध्यम तृतीय प्रहरसे और रात्री इसमे नाम कर्म करना नही-॥ नाम कर्मसु दुष्टयोगाः

सायान्हे दुष्टयोगेषु शनिभूमिज वारयोः॥ रिक्तापर्वा ष्टमी विष्टिः किंस्तुघ्नंतु विघ्नायनः॥ एतैर्दोषैर्युतेकाले रात्रावपि न कारयेत्॥६॥

टी॰ नामकर्म के दिन सायंकाल दुष्टयोग शनिवार मंगलवार रिक्ता तिथी पर्व अष्टमी भद्रा किंस्तुघ्न करण दिनमे इतने दोषयुक्त काल होय तथापि रात्रीमे नामकर्म करना नहीं॰

अन्यमत॥ ॥शुभवारेच षड्वर्गे शुभानां नाम संपदे॥ राशायश्च स्थिराः श्रेष्ठा द्विस्वभावाशुभैर्युताः॥७॥ लग्नाद्व्यायाष्टमे सर्वे न शुभानामकर्मणि ८॥ ७॥

टी॰ शुभग्रह के वारमे शुभग्रहके षड्वर्गमे और स्थिर राशीमे श्रेष्ट द्वि: स्वभाव राशीमे शुभ ग्रह होयतो शुभ और लग्नसे द्वितीय एकादश अष्टम इसमे कोई ग्रह न होय तो नाम कर्ममे शुभ होता है-

अन्यमत॥ ॥एकादशे न्हि विप्राणं क्षत्रियाणां त्रयोदशे॥ वैश्यानां षोडशा दिने मासांते शूद्रजन्मनः॥ ६॥

टी॰ ब्राह्मणको ११ दिन क्षत्रियको १३ दिन वैश्यको १६ दिन शूद्रको ३० दिन के नंतर यथाक्रमसे नाम कर्म चारो वर्णोंको उक्त है-

अन्यमत॥ पुष्यार्कत्रयमैत्रभेतु मृगमे ज्येष्ठाधनिष्ठोत्तरा दित्याख्येषु च नाम कर्म शुभदं योगे प्रशस्ते तिथौ॥ अन्हि द्वादशके तथान्यदिवसे शस्ते तथैकादशेगो सिंहालिघटेषु सर्कबुधयोजीवे शशांकेपिच

टी॰ हस्त पुष्य चित्रा स्वाती अनुराधा मृग ज्येष्ठा धनिष्ठा उत्तरा ३ पुनर्वसु इन नक्षत्रोंमे नाम कर्म शुभ होता है शुभयोगमे शुभ तिथीमें १२ दिन अथवा ११ दिन वृष सिंह वृश्चिक कुंभ इन लग्नमें शुभ रविबुध गुरु चंद्र इनके वारमे शुभ अथवा अन्य दिनमे करना होय तो पठित नक्षत्रमे करनातो शुभ होता है-

मंचकारोहण॥ ॥शशितुरगधनिष्ठारेवती पुष्य चित्रा श्रवणभिषगनुराधाव्युत्तरा स्वातिहस्ताः॥ बुधगुरुभृगुवारे सौम्यलग्ने भकिस्य निगदित मिह पूर्वैर्मंचकारोहणंतु

टी॰ मृग॰ अश्विनी धनिष्ठा रेवती पुष्य चित्रा शततारका अनुराधा तीनो उत्तरा ३ स्वाती हस्त बुध गुरु शुक्र सुभग्रह के लग्नमे बालक को पलंगपर शयन करावना शुभ

दोलारोहण॥ ॥दोलारोहेऽर्कभात्यंचशरपंचेषु सप्तभैः॥नैरुज्यंमरणंकार्श्यंव्याधिःसौख्यंक्रमाच्छिशोः

टी॰ बालककोपालनेमेदेनेका काल सूर्यनक्षत्रसें प्रथम ५ नक्षत्रमे निरोगतानंतर ५ नक्षत्रमे मरणनंतर ७ नक्षत्रमे कृशतानंतर ५ नक्षत्रमेरोगनंतर ७ नक्षत्रमे सौख्य ऐसा दोलाचक्रमेजानना

दोलाचक्र ५ ७ ५ ५ ५

अन्यमत॥ ॥आंदोलशयनंपुंसां द्वादशेदिवसेशुभं॥त्रयोदशेतुकन्यायानक्षत्रविचारणं॥२॥

टी॰ बालकको पालनेमे १२ दिनेमें शुभ १३ दिन कन्या को पालनेमे शायन करावना नक्षत्रादिकका विचार करनानही–

अन्यमत॥ ॥अभीष्टदिवसे पुण्ये चंद्रे ताराबलान्विते॥योगशायिंहरिंध्यायन्प्राक्शीर्षं विन्यसे च्छिशुं॥३॥

टी॰ शुभदिनमे चंद्रबल ताराबल सहित होय ऐसे दिनमे विष्णुका ध्यानकरके पूर्वके तरफ मस्तक करके पालनेमे शायन करावना शुभ होता है–

जलपूजन॥ ॥कवीज्यास्तचैत्राधिमासेनपौषेजलंपूजयेत्सूतिकामासपूर्णे॥बुधेंद्वीज्यवारे विरिक्तेतिथौहरिश्रुतीज्यादितींद्वर्कनैर्ऋत्यमैत्रेः॥१॥ ७॥

टी॰ प्रसूतीकेनंतर १ माससेस्त्रीकोजल पूजा करावना बुध चंद्र गुरु इनके वारमे श्रवण पुष्य पुन॰ मृग॰ श्विर हस्त मूल॰ अनु॰ ऐसे शुभदिन करना परंतु शुक्र औरगुरुका अस्त चैत्र अधिकमास पौष और रिक्तातिथी इनका त्यागकरना शुभ॰

दुग्धपानमुहूर्त॥ ॥एकत्रिंशद्दिने चैवपयःशंखेनपाययेत्॥अन्नप्राशननक्षत्रदिवसोदयराशिषु॥१॥

टी॰ बालक को ३१ दिनमें अन्नप्राशनके नक्षत्रमे जिसलग्नमें सूर्योदय होय उस लग्नमे शंखसे दूधपिलावना शुभ है– त्र

तांबूलभक्षण॥सार्धमासद्वयेदद्यात्तांबूलंप्रथमंशिशोः॥कर्पूरादिकसंमिश्रंविलासायहितायच॥१॥

मृदे...[illegible]...शिरे

दितिवासरेषु॥ अर्केंदुजीवभृगुबोधनवासरेषु तांबूल भक्षणविधिर्मुनिभिःप्रदिष्टः॥२॥ ७॥ ७॥

टी· बालककोप्रथमतांबूल२॥ महिनेमे कर्पूरादियुक्त करके सुख सौख्य हित केवास्ते देना परं मूल चित्रा हस्त पुष्य श्रवण ज्येष्ठा रेवती मृग पुन· रवि चंद्र गुरु शुक्र बुध ये शुभयोगमे बालककोतांबूलभक्षणकरावना ऐसा आचार्यकहतेहैं-

सूर्यावलोकन॥ ॥हस्तःपुष्य पुनर्वसू हरियुगंमैत्रत्रयं रोहिणीरेवत्युत्तरफाल्गुनीमृगयुताषादोत्तरास्वातिभे॥ मासेतुर्यतृतीयकोशनिकुजौत्यक्काचरिक्तातिथिं सिंहादित्रयकुंभराशिसहितं निष्कासनंसंस्थिते १

टी· हस्त·पुष्य· पु·श्र·ध· अनु·ज्ये·मू· रो· रे·उत्त·फा·मृ·उत्त·षा·स्वा·चतुर्थ तृतीय महिना· सिं·कं· तु· कुं· यहराशीकेचंद्रमामे बालककोसूर्यावलोकनकरना परंतु शनि·मंगलरिक्तातिथी ४।९।१४ कात्यागकरना-

भूम्युपवेशन॥ ॥पंचमेचतथामासिभूमौतमुपवेशयेत्॥ तत्रसर्वेग्रहाःशस्ताभौमोप्यत्र विशेषतः॥१॥ उत्तरात्रितयं सौम्यं पुष्यर्क्षं शक्रदैवतं॥ प्राजापत्यंच हस्तंचशस्तमाश्विनसौख्यदम्॥२॥ ७॥ ॥

टी· पंचममासमे बालककोभूमीपरबैठावना वहकालमेसबग्रहशुभहोय परंतु मंगल विशेषकरकेबलवान् होयतीनोउत्तरा मृगपुष्यज्येष्ठारोहिणी हस्त यहनक्षत्रशुभऔरआश्विनमेकरनासुखदायकहोताहै-

भूमिशोधन॥ ॥भूभागमुपलिप्याथकृत्वातत्रतु मंडलं॥ शंखपुण्याहशब्देन भूमौतमुपवेशयेत्॥३॥ वराहंपूजयेद्देवं पार्थिवींचतथाद्विज॥ पूजनंपूर्ववच्चात्रगुरुदेवद्विजन्मनां

टी· भूमीशुद्ध लीपना उसपरमंडलादिकशोभाकरना शंखबजावना औरभी नानाप्रकारकेवाद्यबजावना वाराहका पूजाकरना भूमीका पूजाकरना ब्राह्मणका पूजाकरना गुरुदेव यहसबकीपूजाकरकेअनंतरबालककोभूमीपरबैठावना शुभ

प्रार्थनामंत्र॥ ॥मंत्रास्त्वत्रभवंतीमेतन्मे निगदतःशृणु॥ रक्षैनवसुधेदेविसदासर्वगतंशुभे॥५॥

टी· भूमीपरबैठावनेकेसमयमेभूमीकीप्रार्थना स्वकुलाचारोक्त करनाहै

भूमियरुबालककोसंरक्षण करो और सुख को करो असप्रार्थना करना-

तस्मिन्काले स्थापयेत्तुत्युरस्ताद्वस्त्रं शस्त्रं पुस्तकं लेखनीं च॥
स्वर्णं रूप्यं यच्च गृण्हाति बालस्तैराजीवैस्तस्य वृत्तिः प्रदिष्टा

टी॰ उसकालमे बालकके आगे वस्त्र शस्त्र पुस्तक लेखनी सुवर्ण रूपा स्थापनकरना
जो पदार्थ बालकग्रहण करे वह वृत्तिसे जीवन होय यह जानना-

कर्णवेध॥ रोहिण्युत्तरमूलमैत्रमृगभे विष्णुत्रयेर्कत्रयेरेव
त्यां च पुनर्वसु द्वयभगे कर्णस्य वेधः शुभः॥ मीने स्त्री धनुमन्मथे च
चथटे वर्षे विषुमे तिथौ सौम्ये चंदुगुरौ रवौ च शयनं त्यक्त्वा च विष्णोर्बुधैः

टी॰ रो॰ उ॰ मू॰ अ॰ मृ॰ श्र॰ ध॰ श॰ ह॰ चि॰ स्वा॰ रे॰ पुष्य॰ पु॰ पू॰ इननक्षत्रोंमे मी॰ कं॰ ध॰ मि
कुं॰ इनलग्नोमें विषम वर्षमे विषम तिथीमें बुध॰ चंद्र गुरु रवि ये वारहोंतो बालकका
कान छेदना शुभहै परंतु विष्णु शयन कहिये चातुर्मास्यका त्यागकरना-

अन्यमत॥ ॥शुक्लपक्षे शुभेवारे चैत्रे पौषे च फाल्गुने॥
एकादश्यष्टमी पर्व रिक्ता वर्ज्या शुभा बुधाः॥ २॥

टी॰ शुक्लपक्षमे शुभवारमे चैत्र पौष फाल्गुन इसमे कर्णवेध करना शुभहै
एकादशी अष्टमी पर्व रिक्ता तिथी इनको कर्णवेधमे त्यागकरना-

अन्यमत॥ शिशोरजातदंतस्य मातुरुत्संगसर्पिणः॥
सौविको वेधयेत्कर्णौ सूच्या द्विगुणसूत्रया॥ ३॥

टी॰ दन्तरहित बालकका कर्णवेध माताने गोदमे लेके सोनारने सुईसे दूना सूत्रलेके कर्णछेदनकरना

अन्यमत॥ मंदार्कारांशा वाराः स्युर्वर्ज्याः कर्णस्य वेधने॥
गुरुशुक्रेंदुजे वारे पूज्या वा एंशको दयात्॥ ४॥

टी॰ शनि रवि मंगल यह वार होंय वा इनके अंश होयतो कर्णवेधमे वर्ज्यजान
ना गुरु शुक्र बुध इनके वार होयबो इनके अंश होयतो कर्णवेध करना शुभहै

अन्यमत॥ ॥शातकुंभमयी सूची वेधने तु शुभप्रदा॥
राजती वायसी वापि यथा विभवतः शुभाः॥ ५॥

टी॰ सुवर्णके सुईसे कान छेदना शुभ अथवा चांदीकी वालोहेकी वा जैसी होय करना शुभ

अन्यमत॥ सुभूमौ शोभने रम्ये शुचौ देशे वरे रवौ॥ सं
स्थिते वेधयेत्कर्णौ स्त्रीपुंसो र्वाम दक्षिणे॥ ६॥

टी॰ उत्तमभूमीमे वारमणीयस्थानमे पवित्रतासे लगन शुद्धिमे १० स्थानमे सूर्य होय

ऐसेकालमें पुरुषकादक्षिण कर्ण स्त्रीकावाम कर्ण छेदनाशुभहै-

अन्यमत॥ ॥शुक्लसूत्रसमायुक्तं ताम्रसूच्याथवे धयेत्।वेधात्तृतीयनक्षत्रेक्षालयेदुष्णवारिणा॥७॥

टी॰ सफेद सूतमें तांवेकी सुई से कर्ण वेधकरना परंतुजिसनक्षत्रमें वेधकिया होय उस्से तीसरेनक्षत्रमे गरमजलसे धोना शुभहै॥

कटिसूत्रवंधन॥ अब्देनसौरेणशिशोः समांतेवाल्नुसं स्नाप्यचजन्मधिष्ण्ये॥कृत्वायुषोवृद्धिकरंचकर्मतंधारयेत्कां तिसुवर्णसूत्रं॥

टी॰ वालककोसंक्रांतिमानसे एकवर्षमे उत्तमस्नान करावना और आयुष्यकीवृद्धीहोयऐसेशांतिकर्मकरकेजन्मनक्षत्रमे सुवर्णयुक्त कटिसूत्रकंवरमे वांधनाशुभ॰

अथान्नप्राशन॥ पूर्वार्द्राभरणीभुजंगवरुणंत्यक्त्वाकुजार्कीतथानंदापर्वचसप्तमीमपितथारिक्तामपिद्वाद शीं॥षष्ठेमास्यथवान्नभक्षणविधिस्त्रीणांमयुक्पं चमेगोकन्याजषमन्मथेबुधवलेपक्षेचयोगेशुभे १

टी॰ पूर्वा ३ आर्द्रा भरणी आश्लेषा शततारका मंगल शनि नंदा तिथि पर्व सप्तमी रिक्तातिथी द्वादशी इतनेकात्यागकरना और पुत्रको षष्ट मासमे अथवा अष्टम मासमे कन्याको पंचम महिनेमे अथवाविषम मासमे वृष कन्या मीन मिथुन इन लग्नोमेशुक्लपक्षमें शुभयोगमे वालककोअन्न प्राशन करावना-

अन्यमत॥जन्मर्क्षेश्रीक्षयंविद्यात्कर्मर्क्षेचातिसौख्य कृत्॥आधानर्क्षेच वालानांजायतेरोगनाशनं॥२॥

टी॰ जन्मलग्नमें अन्नप्राशन करावेतो सोलक्ष्मीक्षय जानना कदाचित् दशम लग्नमे अन्नप्राशन होयतो सुखकारक होय कदाचित् गर्भाधान लग्नमेहोय तो रोगादिकका नाश होताहै

चौल॥ ॥रेवत्याघकरत्रयादितिमृगज्येष्ठासु विष्णुत्रयेपुष्येचोत्तरगे रवौ गुरुकवींदुक्षेसुपक्षे सितो॥ मोस्त्रीमन्मथचापकुंभमकरंहित्वा चरिक्ता तिंथिं षष्ठीपर्वतथाष्टमीमपिसिनीवालींच चूडा शुभा १

टी॰ रेवती अश्विनी हस्त। हस्त चित्रा स्वाती पुनर्वसु मृग ज्येष्टा श्रवण धनिष्टा

शततारका पुष्य इन नक्षत्रोंमे उत्तरायण सूर्यमे गुरु शुक्र चंद्र बुध इनके वार मे शुक्लपक्षमे इनकरना शुभ और वृष कन्या मिथुन धन कुंभ मकर इन लग्नोका त्याग करना रिक्ता तिथी षष्टी पर्व अष्टमी अमावस्या यह चूडाकर्ममें त्याग करना—

अन्यमत॥ ॥जन्मतस्तु तृतीयेब्दे श्रेष्ठमिच्छंति पंडि
ताः॥ पंचमे सप्तमे वापि जन्मतो मध्यमं भवेत्॥ २॥

टी॰ कोई आचार्य्य कहतेहैं कि तृतीय वर्षमे चौल श्रेष्ट पंचम और सप्तम वर्षमे मध्यम होताहै ऐसे जानना

चौलवारफलं॥ पापग्रहाणां वारादौ विप्राणां शुभदं रवेः
॥क्षत्रियाणां धरासूनो र्विट् शूद्राणां शनौ शुभं॥ ३॥

टी॰ पापग्रहों के वार रविवार यह ब्राह्मणको शुभ क्षत्रियको मंगल शुभ वैश्य और शूद्र इनको शनिवारको चौल कर्म शुभ जानना—

अन्यमत॥ ॥सूनोर्मातरि गर्भिण्यां चूडाकर्म न कारये
त्॥ पंचाब्दात्प्रागथोर्ध्वं तु गर्भिण्यामपि कारयेत्॥ ४॥

टी॰ पुत्रकी माता गर्भिणी होयतो चौल करना नहीं परंतु पंचम वर्षके अनंतर गर्भिणी होयतोभी करना शुभ है—

अथ गोचरप्रकरणम्

मासं शुक्रबुधादित्याः सार्द्धमासं तु मंगलः॥ त्रयोदश गु
रुश्चैव सपाद द्विदिने शशी॥ १॥ राहुरष्टादशान्मासान्
त्रिंशन्मासान् शनैश्चरः॥ राहुवत्केतुरुक्तो स्त राशिभोगाः
प्रकीर्तिताः॥ फल ॥सूर्यः पंच दिने शशी त्रिघटिका भौ
मोष्टवै वासरं सप्ताहं त्वुशना बुधस्त्रय दिनं मास द्वयं वै गु
रोः॥ षण्मासं रविजस्तथैव सततं स्वर्भानुमास द्वये केतौ
श्चैव तथा फलं परिमितं ज्ञेयं ग्रहाणां फलम्॥ ४॥ राशि
प्रवेशे सूर्यारौ मध्ये शुक्र बृहस्पतिः॥ राहुश्चंद्रः शनि
श्चांते सौम्यश्चैव सदा शुभम्॥ ५॥ ॥ ॥

टी॰ सूर्यादिक नवग्रह बाराराशी गोचरमे भोग करतेहैं तिस्का फल आदि मध्य अंतमे होताहै सो अनुक्रमसे दिनसंख्या सहित कहतेहै आगाडी चक्रमे देखलो

सूर्य १ एकराशी १ माहिनेमेभोग करताहेसो आदि ५ दिन फलदेताहै-
चंद्र १ राशी २। दिनमेभोगकरताहेसो अंतकी तीन घडी फलदेता है-
मंगल १ राशी १।। महिनेभोगकरताहेसो आदि ८ दिन फलदेताहै-
बुध १ राशी १ महिनेभोग करताहेसो - अंतमें ३ दिन फल देताहै-
गुरु १ राशी १३ महिने भोग करताहेसो मध्यभागमे २महिने फलदेताहै-
शुक्र १ राशी १ महिनेभोग करताहेसोमध्यभागमे ७ दिन फलदेताहै-
शनि १ राशी ३० महिनेभोगकरताहै अंतमे ६ महिने फलदेताहै-
राहु १ राशी १८ महिनेभोगकरताहेसो अंतके दोमहिनेमे फलदेताहै
केतु काफल राहु केसाजानना - स्थानपरत्वे फल।।

सूर्यस्थान विनाशंभयं श्रियंमानहानिमर्थदैन्यं।। विजयं मार्गपीडांसुक्तहंतिसिद्धिमायमथहानि ६ चंद्रोन्नं चधनंसौख्यंरोगंकार्यक्षितिंश्रियं।। श्रियंस्त्युंन्टपभयं सुखमायव्ययंक्रमात्।। ७।। भौमोरिभीतिंधननाशमर्थंभ यंतथार्थक्षतिमर्थलाभं।। धनात्ययंशत्रुभयंचपीडांशो कंधनंहानिमनुक्रमेण ८ बुधस्तुवंधंधनमन्यभीतिंध नंरुजंस्थानमथोचपीडां।। अर्थरुजंसौख्यमथात्मसौ ख्यंअर्थक्षतिंजन्मगृहात्करोति।। ९।। गुरुर्भयंधनंक्लेशं धननाशंसुखंशुचिः।। मानंरोगंसुखंदैन्यंलाभंपीडांचजन्मभात्।। १०।। कविःशत्रुनाशधनंसौख्यमर्थंसुतान्निरि पोःसाध्यसंशोकमर्थं।। वरूद्रस्त्रलाभंविपत्तिंधनाप्तिं धनाप्तिंतनोत्यात्मनोजन्मराशेः।। ११।। शनिःसर्वनाशंत थावित्तनाशंधनंशत्रुवृद्धिंसुतादेःप्रवृद्धिं।। श्रियंदोष संधिंरिपुद्रव्यनाशंतथादौर्मनस्यंधनंवक्तनर्थं।। १२।। रा हुर्हानिंतथानैस्वधनंवैरंशुचिंश्रियं।। कलिंवसंचदुरितं वैरंसौख्यंशुचिंक्रमात्।। १३।। केतुःक्रमाद्रुजंवैरंसुखभी तिंशुचंधनं।। गतिंगदंदुष्कृतिंचशोककीर्त्तिंचशत्रुनाम्।।

टी. इसका अर्थ कोष्टकमें स्पष्टदेखलेना आगाडि गोचरचक्रम्।। ।। ।।

राशि	रवि	चंद्र	मंग·	बुध	गुरु·	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	नाश	अन्नना·	शत्रुभ·	बंधन	भय	शत्रुना	सर्वना·	हानि	रोग
धन·	भय	धनना·	धनना·	धनना·	धनना	धनला	धनला·	धनला	वैर
सहज	लक्ष्मी	सुख	धनना	प्रीति	क्लेश	सौख्य	धनलाभ	धनना·	सुख
सुहृत	मानहा	रोग	भय·	धनना·	धनना·	धनना	शत्रुव	वैर	भय
सुत	दीनता	कार्यना·	अर्थला·	रोग	सुख	पुत्रना	पुत्रना·	बुद्धि	शुचि
रिपु	विजय	लक्ष्मी	लाभ	स्थानला	शुचि	शत्रुभ·	धनना·	लक्ष्मी	धनना
जाया	मार्ग	लक्ष्मी	खर्च	पीडा	मान·	भय	दोष	कलह	मार्गक·
मृत्यु	पीडा	मृत्यु	शत्रुभ·	अन्नना·	रोग	शोक	शत्रु	धनला·	रोग·
धर्म·	पुण्य	राजभय	पीडा	रोग	सुख	धनना·	धनला·	पापक·	दुष्टक
कर्म·	सिद्धि	सुख·	शोक	सौख्य	दिन	महाव·	सुखहा·	वैर	शोक
आय	लाभ·	लाभ·	धनना·	सौख्य	लाभ·	विपत्ती	धनना·	सौख्य	कीर्त्ति
व्यय	हानि·	खर्च·	हानि	नाश·	पीडा	धनना	धनना·	व्याधि·	शत्रुना

वेधचक्रमाह॥ ॥सूर्योरसांत्येखयुगेग्निनंदेशिवाद्य
योर्भौमशनीतमश्च॥रसांकयोर्लाभशरेगुणांत्येचंद्रोव
पर्वैगुणनंदयोश्च॥१५॥लाभाष्टमेचाद्यशरेरसांत्येनग
द्वयेज्ञोविशराब्धिरामे॥रसांकयोर्नागविधौखनागेला
भव्ययेदेवगुरुःशराब्धौ॥१६॥द्यंत्येनवाशेद्रिगुणोशि
वाद्रौशुक्रःकुनागेद्विनगेग्निरूपे॥विदांबरेपंचनिधौग
जेशेनदेशायोर्भानुरसोष्टिवाग्नौ॥१७॥क्रमाच्छुभोविद्ध
इतिग्रहस्यात्पितुःसुतस्यात्रनवेधमाहुः॥दुष्टोपिखे
टोविपरीतवेधाच्छुभोद्विकोणेशुभदःसितेज्ञः॥१८॥
स्वःजन्मराशेर्हिवेधमाहुरन्येग्रहाधिष्ठितराशितःस्युः॥
हिमाद्रिविंध्यांतरएववेधोनसर्वदेशेष्विनिकाश्यपोक्तिः

टी॰ जन्मराशीसे और ग्रहके भनीसे गोचरका शुभाशुभफल लिखे अंकसे मा
लूम करना जैसा सूर्य जन्मस्थानसे षष्ठस्थानमें शुभ जो द्वादशस्थानमे शुभ
ग्रह होय तो शुभ अशुभ होय तो अशुभ ऐसा सब ग्रह का वेध जानना परंतु
पितापुत्र सूर्य शनि चंद्र बुध इनका परस्पर वेध नहीं होता जन्मस्थानसे
द्वादशस्थानमें सूर्य होय और शनि षष्टमस्थानमे न होय अन्य ग्रह हो
यतो विपरीत वेध शुभ जानना हिमाद्रि और विंध्य इसके अंतरमेंयह
वेध अन्य देशमे नहीं ऐसा जानना कश्यप कहते है—

।।वेधचक्रम्।।

रवे				मं॰	श॰	रा॰	चंद्रस्य					बुधस्य			
६	१०	३	११	६	११	३	१०	३	११	१	६	७	२	४	६
१२	४	९	५	९	५	१२	४	९	८	५	१२	२	५	३	९

			गुरोः					शुक्रस्य								
८	१०	११	५	२	९	७	११	१	२	३	४	५	८	९	१२	११
१	८	१२	४	१२	१०	३	८	८	७	१	१०	९	११	११	६	३

ताराम्माह।। ।।जन्माख्यसंपद्विपद्क्षेमप्रत्यरिसाध
काः।।वधमैत्रातिमैत्राः स्युस्तारानामसदृक्फला २०
टी॰ जन्मतारा १ संपत् २ विपद ३ क्षेम ४ प्रत्यरि ५ साधक ६ वध ७ मै
त्र ८ अतिमैत्र ९ यह तारा नव हुनके। नाम के समान शुभाशुभ फल जानना-
अन्यमत।। ।।जन्मर्क्षगणयेदादौ दिनधिष्ण्यावधिक्र
त।। नवभिस्तु हरेद्भागं शेषं तारा विनिर्दिशेत्।।२१।।
टी॰ जन्मनक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गिनना ९ से भाग लेना शेष बचे सो तारा जान॰
अन्यमत।। ।।जन्मतारा द्वितीया चतुर्थी षष्ठ ष्टमी
तथा।।नवमी षट् शुभा ताराः शेषास्तिस्रो ऽशुभावहाः
टी॰ जन्मतारा १ संपत् २ क्षेम ४ साधक ६ मैत्र ८ अतिमैत्र ९ यह ६ तारा शुभ जान
ना और विपद ३ प्रत्यरि ५ वध ७ यह ३ तारा अशुभ जा॰ इसमे कोई शुभ कर्म करना नहीं
अन्यमत।। ।।जन्मत्रिपंचसप्ताख्या तारा निष्टफलाः
स्मृताः।।शाकं गुडं च लवणं सतिलं कांचनं क्रमात् २३
टी॰ प्रथमतारा १ तृतीय ३ पंचम ५ सप्तम ७ यह ४ तारा अशुभ फल करती है
इसवास्ते चारों तारों के दान प्रथम तारा में शाक कहिये तरकारी दान करना तृतीय
तारा में गुड़ दान करना पंचम तारा में लवण कहिये नोन दान करना सप्तम तारा
में तिल और सुवर्ण दान करना अशुभ में दान करने से शुभ होता है-
अन्यमत।। ।।ऋक्षदग्धतिथी रिक्ता चंद्रश्चाष्टमग
स्तथा।। तत्सर्वं नाशयेत्तारा षट्चतुर्नवमी तथा २४
टी॰ दग्धनक्षत्र रिक्ता तिथी अष्टम चंद्रमा दुष्टयोग नाश षष्टम चतुर्थ ९ नाश करती है
चन्द्रबल।। ।।द्विपंच नवमे शुक्ले श्रेष्ठचन्द्रो हि उच्य
ते।। अष्टमे द्वादशे कृष्णे चतुर्थे श्रेष्ठ उच्यते।। ।।

टी॰ शुक्लपक्षमें द्वितीय २ पंचम ५ नवम ९ चंद्रमा श्रेष्ठ होताहै कृष्णपक्षमें अष्टम ८ द्वादश १२ चतुर्थ ४ श्रेष्ठहोताहै—

अन्यमत॥ ॥शुक्लपक्षेवलीचंद्रो कृष्णे तारावली यसी॥ यदिस्यात्सवलश्चंद्रो तथापिक्लेशदायिनी २६

टी॰ शुक्लपक्षमेंचंद्रमा वली होताहै कृष्णपक्षमें तारावलीहोताहै परंतु चंद्र वली होताहै तथापि तारा क्लेशदायक होताहै—

अन्यमत॥ येखेचरागोचरतोष्टवर्गा दशाक्रमाद्वाप्यशुभा भवंति॥ दानादिनातेसुतरांप्रसन्नास्तेनाधुनादानविधिंप्रवक्ष्ये

टी॰ जोग्रहगोचरसे अथवा अष्टवर्गमें अथवा दशामेंजो अशुभ होयतोउस ग्रहके दानद्रव्यसे दानविधी कहतेहैं—

वारोंके दान॥ ॥भानुस्तांबूलदानादपहरतिन्दणांवै कृतंघासरोत्थंसोमःश्रीखंडदानादवनिवरसुतोभोज नात्पुण्यदानात्॥सौम्यःशास्त्रस्यमंत्राद्गुरुहरिभजना द्भार्गवःशुभ्रवस्त्रात्तैलस्नानात्प्रभाते दिनकरतनयोब्रह्म नत्यापरेश्च॥

टी॰ सूर्यादिकवारके दुष्टफलनाश होनेकेवास्ते दान सूर्यका तांबूल दान चंद्रमाका श्रीखंडचंदनदान मंगलका ब्राह्मणभोजनपुण्यदान बुधका शास्त्रकेमंत्रका दान गुरुका हरिभक्ति शुक्रका सफेदवस्त्र शनैश्चरका तैलस्नान और राहुकेतुके वास्तेब्राह्मणकोनमस्कार दान यहनवग्रहवारमें यथाक्रमसे पीडानाशहोनेके वास्ते करना—

ग्रहोंका दान॥ सूर्य॥ माणिक्यगोधूमसवत्सधेनुकौसुंभ वासोगुडहेमताम्रं॥आरक्तकंचंदनमंबुजंचवदंतिदानंहि विरोचनाय॥३०॥चंद्र॥ घृतकलशंसितवस्त्रंदधिशंखं मौक्तिकंसुवर्णंच॥रजतंदद्याच्चदारिष्टमतस्थानयेस्व रिते॥३१॥मंगल॥ प्रवालगोधूममसूरिकाश्च वृषःसुतश्च करवीरपुष्पं॥ आरक्तवस्त्रंगुडहेमताम्रं दुष्टायभौमायचरक्तचंदनं॥३२॥बुध॥ नीलंवस्त्रंसुफहेमंब्रुधा यरत्नंपार्चीदासिकाहेमसर्पिः॥ कांस्यंदतंकुंजरस्याय मेधेरौप्यंसस्यंपुष्पजात्यादिकंच॥३३॥गुरु॥ अश्वसु

वर्णंमधुपीतवस्त्रंसपीतधान्यंलवणंसपुष्पं॥ सशर्करं नद्रजनीप्रयुक्तंदुष्टायशांत्यैगुरवेप्रणीतं॥३४॥ शुक्र॥ चित्रवस्त्रमपिदानवार्चितेदुष्टगेमुनिवरैःप्रणोदितं॥नंद संयुतसुवर्णरौप्यकंवस्त्रकंपरिमलंधवलागो॥३५॥श नि॥माषाश्चतैलंविमलेंद्रनीलंतिलाःकुलित्थामहिषी चलोहं॥ कृष्णाचधेनुःप्रवदंतिनूनंदुष्टायदानंरविनं दनाय॥३६॥राहु॥ गोमेदरत्नंचतुरंगमश्चसुनीलतैला मलकंबलंच॥तिलाश्चतैलंखलुलोहमिश्रंस्वर्भा नवेदानमिदंवदंति॥३७॥ केतु॥ वैडूर्यरत्नंसतिलंचतै लंसुकंबलंचापिमदोमृगस्य॥ शस्त्रंचकेतोःपरितोष हेतोश्छागस्यदानंकथितंमुनींद्रैः॥ ३८ ॥ ७ ॥ ग्रहोंकीजपसंख्या॥ ॥रवेःसप्तसहस्राणिचंद्रस्यै कादशैवतु॥भौमेदशसहस्राणिबुधेचाष्टसहस्रकं॥ एकोनविंशतिर्जीवेशुक्रेचैकादशैवतु॥त्रयोविंशति मंदेचराहोरष्टादशैवतु॥केतोःसप्तसहस्राणिजपसंख्याप्र

नाम	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
दानानि	माणिक	घृतक·	मूंगा	नीलाव·	घोडा	चित्रव·	उडदी	गोमेद	वैडूर्य
०	गोहू	सुफेद	गोहू	मूंग	सोना	चावल	तेल	रत्न	रत्न
०	धेनुसव·	दहि	मसुरी	सोना	सहुत	घृत	नीलम	घोडा	तिल
०	लालव·	शंख	बैललाल	रत्नस·	पीलाव	सोना	तिल	नीलम	तेल
०	गुड	मोती	कनैल	पन्ना	पीलाध	चांदी	कुलथी	तेल	कंबल
०	सोना	सोना	लालव	दासी	नोन	हिरा	भैंस	भांवरा	कस्तूरी
०	तांबा	चांदी	गुड	घृत	फूल	सुगंध	लोहा	कंबल	शस्त्र
०	रक्तचंदन	०	हेम	कांसी	चीनी	शुभ्रधेनु	कृष्णधे·	तिल	ककरा
०	कमल	०	तांबा	हाथीदा	हरिद्रा	०	०	तेलसीसि मितलोह	०
जप·	७०००	११०००	१००००	८०००	१९०००	११०००	२३०००	१८०००	७०००

ग्रहपीडानिवारणार्थ॥ ॥देवब्राह्मणवंदनाद्गुरुवचःसं पादनात्प्रत्यहंसाधूनामपिभाषणाच्छुतिरवैःश्रेयःकथा कारणात्॥ होमादध्वरदर्शनात्शुचिमनोभावाज्जपादानतो

नोकुर्वंति कदाचिदेव पुरुषस्यैवंग्रहाःपीडनम्॥४२

टी॰ देवताकी और ब्राह्मणकी बंदना गुरुकी आज्ञा संपादन करना साधुवों के मुखसे श्रुति स्मृति और उत्तम कथा श्रवणकरना होम करनेसे यज्ञके दर्शनसे शुद्धमनसे जपसे दानसे यह प्रकारसे करना तो ग्रहपीडाकारक नहीं होते

इतिगोचरप्रकरणम् ॥

अथमुहूर्त्तप्रकरणम्

अथनूतनवस्त्रालंकारादिधारणम्

हस्तादिपंचके पुष्ये धनिष्ठा रेवती द्वये॥ अश्विन्यांचपुनर्वस्वोःरोहिण्यांचशुभेतिथौ॥१॥ बुधेशुक्रेज्यवारेषुनूतनांबरधारणम्॥सौवर्णरत्नदंतादिप्रवालानांधृतिश्शुभा॥२॥प्रागुक्तधिष्ण्यवारेचस्वर्णाद्याभरणादिकम्॥रक्तंवासोबुधैर्द्धार्य्यंभौमभास्करयोरपि॥३॥सुभगायाःविशेष॥ ॥रोहिणीगुरुपुनर्वसूत्तरेयाविभर्त्तिनववस्त्रभूषणम्॥ सानयोषिदखलंवते पतिंस्नानमाचरतिवारुणेपिया॥

टी॰ह॰चि॰स्वा॰वि॰अनु॰पुन॰पुष्य॰ध॰रे॰अश्वि॰उ३ शुभतिथी वार बुध॰ गुरु॰शुक्र इनकेविषनविनवस्त्र धारणसुवर्ण रत्नयुतअलंकारादि दंतचूडा मूगोंकीमालाये शुभहैं और कहेहुवे नक्षत्र वारादिकोंमलालवस्त्र धारणसौभाग्यवतिको मंगल रविरोहि॰पुनपुष्य॰उ३ ये विभर्त्ती कू श्रेष्ट हैं स्नानादिवी श्रेष्टहै घातभिषान॰

अथात्रवस्त्रवारफलम्॥जीर्णमर्को विधुश्चार्द्रभौमश्शोकंबुधोधनम्॥ गुरुर्ज्ञानंप्रियावाप्तिर्भार्गवेमलिनंशनौ॥४॥ कुर्वन्तेवासरास्त्वेते नूतनांबरधारणम्

टी॰ सूर्यवारमें धारणकरै तो जिर्ण हो कर उत्तर चंद्रवारम आर्द्र हो भौम॰ शोक बुधमधन॰ गुरुमज्ञान भार्गवम प्रीय वस्त्र प्राप्ति शनिम कुचिलरहै–

अथर्क्षफलम्॥ ॥वस्त्रस्याश्विन्यांभरणेपहानिःशनम्॥कृत्तिकाग्निभयंकुर्य्याद्रोहिण्यांसर्वसंपद मृगेमूषकभीतिस्स्यादार्द्रायांनिधनंभवेत्॥पुनर्वसौतथापुष्येनधर्म्मम होत्सवाः॥७॥आश्लेषायांभवेच्छोकोमघायांमरणंध्रुवम्॥रात्नोभयंतुपूर्वायामुत्तरायां

धनागमः॥८॥कर्म्मसिद्धिस्तु हस्तर्क्षे चित्रायामिष्टसंपदः
॥मिष्टभोजनदा स्वाती विशाखानंददायिनी॥९॥मित्रा
प्तिरनुराधायां ज्येष्ठायां वाससो हृतिः॥जलप्लुतिश्च मूल
र्क्षे पूर्वाषाढा निरोगदा॥१०॥मिष्टान्नदोत्तराषाढा श्रवणे
नयनांतकृत॥धान्यागमो धनिष्ठायां विषभीतिश्शता
भिषे॥११॥पूर्वाभाद्रे जलाद्भीतिरुत्तरायां धनागमः॥
रत्नवाप्तिस्तु रेवत्यां भवेद्वस्त्रस्य धारणात्॥१२॥

अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध	श	पू	उ	रे
वस्त्रप्राप्ति	विनाशनम्	अग्निभय	संपदादायकं	मूसाभय	निधन	धनप्राप्ति	महोत्सव	शोक	मरणं	रोग्यभय	धनागम	कर्मसिद्धि	मिष्टानभोजन	मिष्टान	आनंददायकं	मित्रप्राप्ति	वासुहृत	जलप्लुति	रोगदायकं	मिष्टान्नदायकं	आनंददायकं	धान्यदायकं	विषभीतिदं	जलभीतिदं	धनागम	रत्नप्राप्ति

अथ वस्त्राभरणादिधारणे स्त्रीणां विशेषः
अश्विन्यां च धनिष्ठायां रेवत्यां करपंचके॥ सुब
र्णरत्नदंतादिवस्त्राणां धारणं स्त्रियः॥ १३ ॥८

टी॰ अश्विनी॰धनिष्ठा रेवती हस्त चित्रा स्वात विशा॰ऽनु॰इनके विषसुवर्णरत्न
दंतादि वस्त्र धारण करने सौभाग्य वति को शुभ है॥

अथ चूडीचक्रम्॥ ॥यावद्भास्करभुक्तिभानि दि
वसे धिष्ण्यानि संख्यातया॥ बन्हि३ र्भूत५ गुणा३ ब्धि
४ सप्त७ नयनं२ पृथ्वी१ करे२ न्दुः१ क्रमात्॥ सूर्य्यारोक
विसौम्य राहु रविजाः जीवः शशी केतवः॥ क्रूरे ऽसच्च
शुभे शुभञ्च कथितं चक्रे करे भूषणे॥ १४ ॥

टी॰ सूर्यके नक्षत्रतें वर्तमान दिनके नक्षत्र तक शुभाशुभ अर्थात् क्रूर ऽशुभ शुभ सुभ

३	५	३	४	७	२	१	२	१	०
सू	मं	शु	बु	रा	श	बृ	चं	के	०

कज्जलदर्प्पणधारणम्
ग २

चित्राचतुष्टयेऽश्विन्यां धनिष्ठा रेवतीमृगे॥ शुक्रेऽर्के
न्दिशनौ स्त्रीणां दर्प्पणं जनयोद्धृति॥ १५॥ ७॥

टी॰ चि॰स्वा॰वि॰ऽनु॰ऽश्वि॰ध॰रे॰मृ॰ शुक्रवार रवि शनि इनमे शुभ है

नविन वस्त्र विक्रन फलम्

टी॰ अश्वि॰ रे॰ ध॰ ह॰ चि॰ स्वा॰ वि॰ अनु॰ इन नक्षत्रोंमें और रवि मंगल॰ गुरु॰ सुक्र॰ चन्द्र इनवारोंमें मोती सुवर्ण मणि मूंगा हाथी दांत शंख रक्त वस्त्र इत्यादिक धारण करने शुभ हैं

अथ सूचीकर्म्म॥ ॥ मृगाश्विचित्रानुराधाश्विपुष्या। तरेवतीकरः॥ ज्येष्ठासहितासराऽस्त्रा कौः सूची कर्म्मणि सस्मृता

टी॰ मृ॰ चि॰ अनु॰ अश्वि॰ पुन॰ रे॰ ह॰ ज्ये॰ सुभ वारोंमें सुचि कर्म्मादि मैं श्रेष्ठ हैं —

अथ शय्यारंभः॥ रोहिणी चोत्तराश्लेया हस्तपुष्य पुनर्वसू॥ अनुराधाश्विनी शस्ता खट्वा निर्म्माण कर्म्मणि॥ ४२॥ शुभे योगे शुभे वारे विदध्यात्खट्वकां नरः॥ मृत्सूतके तथा हेया रक्तामा विष्टि वैधृतौ॥ ४३॥ पितृपक्षे विशेषेण यत्नात्तां परिवर्जयेत्॥ श्रावणे चैव पौषे च भाद्रमास्य शुभे हनि॥ ४४॥ वर्जयेद्धीमन्मदेच खट्वा निर्म्माण कर्म्मणि॥ सूर्य्यर्क्षात्तु चतुष्कं च देयं धिष्ण्यं तु मस्तके कोणयो रष्टन क्षत्रं शाखायामष्ट सख्यकम्॥ खट्वा मध्ये त्रिकं चैव वेद संख्या च पादयो॥ ४६॥ इत्थं खट्वा फलं चक्रे वाराहेण च भाषितम्॥ मस्तके च शुभं ज्ञेयं कोणयोरशुभ मृत्युदम्॥ ४७॥ शाखाष्टके शुभं प्रोक्तं त्रिकं मध्ये सुखप्रदम्॥ पादेषु वेद नक्षत्र हानि मृत्यु भयप्रदम्॥ ४८॥ सूर्य्यभाद्दिनभं गण्यं खट्वा चक्रे विशेषतः॥ ॥

टी॰ रो॰ उ३ ह॰ पु॰ पु॰ अनु॰ अश्वि॰ ये श्रेष्ठ हैं सय्या निर्म्माणमें और सुभयोग॰ सुभवार परंतु मृतसूतकादि खट्वा कुयोग रिक्ता तिथ भद्रा वैधृत पितृपक्ष इनको त्याग यत्न करकै और श्रावण पौष भाद्रपद मास॰ सुभ दिन मंगल शनि इनमतौ खट्वा निर्म्माण कदाचित् न करै-॥ सूर्य्यके नक्षत्रतें दिनके वर्तमान नक्षत्र देखे इस का शुभाशुभ चक्रमें देखलेना॥ —

अथ भूषाघट्टनम्

त्रिपुष्कराभिधे योगे अश्विनी रेवती द्वये॥ श्रुतित्रये मृगे पुष्ये पुनर्वसु अनुराधयोः हस्तत्रये पौरोहिण्यां भूषा कार्य्या शुभे हनि॥ ५०॥

वाससो नवधाभागे चतुःकोणेषु देवता ॥ मध्य
त्र्यंशे स्थित रक्षो नराः पार्श्व दशांशयो ॥ १६ ॥
दग्धे जीर्णे नवस्त्रे लिप्ते वा कर्दमादिभिः ॥ सर्वं
प्रतिष्वसन् चैव शाय नाशन पादुके ॥ १७ ॥

टी॰ वस्त्रके नव विभाग कर चारो कोणोंपर देवता और मध्यके त्रिंशांसम राक्षस पार्श्व मे मनुष्य स्थापित करे जलना या फटजानी इस्का शुभाशुभफल कहना

विप्राज्ञया नयो द्वाहे राज्ञा प्रीत्यार्पितं च यत् ॥ निंद्ये
ऽपि धिष्ण्य वारादौ वस्त्रं धार्य्यं जगु र्बुधाः ॥ २३ ॥

टी॰ ब्राह्मण कि आज्ञासे या विवाहमे राजा प्रसन्न होकर देवे अर्थात् खिलत देतो धारण करना निंद्य वारादिक बी होय तोभी श्रेष्ट है–

अथ कृष्णनीलवस्त्रधारणम् ॥ पुनर्वसू धनिष्टाख्ये
ऽश्विभे हस्ताद्यनुष्टये ॥ पूर्वोत्तरे शनौ सूर्ये कृष्णनीलांबरं शुभम्

टी॰ पुन॰ध॰ऽश्वि॰ह॰चि॰स्वा॰वि॰पू३ उ३ शनि॰रवि॰वार कृष्ण निलांबर धारणं शुभम्–

कुसुंभादिवस्त्रधारणम् ॥ अश्विनी रेवती हस्ते रोहिण्यां श्र
वणे चये ॥ पूर्वोत्तरे पुनर्वस्वोः स्वातौ पुष्ये मघाभिधे ॥ २८ ॥
रवौ चंद्रे गुरौ धार्य्यं कौशेय वसनं जनैः ॥ ७ ॥

टी॰ ऽश्वि॰ रेवती॰हस्त॰रो॰श्रवण॰धनिष्ठा शतभीषा पू३ उ३ पु॰स्वा॰पुष्य॰म॰रवि॰चंद्र॰गुरु इन वारादिकोंमे कसुंभादि वस्त्र धारण करना शुभ है–

अथ रोमज अर्थात् दुशाला धारणम् ॥ मीलवस्त्रो दिते
धिष्ण्ये रेवती पुष्ययोरपि ॥ शुक्रे शनैश्चरेऽर्के च धारयेद्रोमजांबरम्

टी॰ पुन॰ध॰ऽश्वि॰ह॰चि॰स्वा॰वि॰पू३ उ३ रे॰पु॰ शुक्र॰शनि॰रवि इनके विषरोमज वस्त्र धारण

कसुंभादिवस्त्र रंजनम् ॥ पुनर्वसू द्वये हस्तात्पंचके श्रवण करना
द्वये ॥ अश्विभे ऽर्क कवीज्यारे वास सा रंजनं शुभम्

टी॰ पुन॰पु॰ह॰चि॰स्वा॰वि॰ऽनु॰श्र॰ध॰ऽश्वि॰रवि॰शुक्र॰गुरु॰मंगल॰इन वारोंमे वस्त्र रंगने शुभ हैं– ॥

मौक्तिकादिधारणं नक्षत्राण्याह
नासत्यपौष्ण्या वसुभे करपंचके च मार्त्तंड भौम गुरु मंत्रिश
शांकदारे ॥ मुक्तासुवर्णमणिविद्रुमदंतशंखरक्तांबराणि वि
धृतानि भवंति सिद्ध्यै ॥ ३० ॥

टी॰ त्रिपुष्कर योग ३ उ॰ रे॰ ऽश्वि॰ श्र॰ ध॰ शा॰ मृ॰ पुन॰ पुष्य॰ ऽनु॰ ह॰ चि॰ स्वा॰ रो॰ इन नक्षत्रोंमें आभूषण घड़वाना श्रेष्ठ है-॥

प्रसवस्नानकर्म॥ भानुर्मासं सुलपयति तथा सप्तमार्तंडसूनुर्भौमश्चाष्टौ विनरति सुभं बोधनः पंचमासान्॥ सप्तैवेंदुर्दशसुरगुरुः सुक्र एकादशेति प्राहुर्गर्गप्रभृतिमुनयः सौरके

टी॰ रविको सौर करानेसे ९ महिना आयुनाश सोमको ७ महिने आयुवृद्धि मंगलको ८ महिनेनाश बुधको ५ म॰ आयुवृद्धि गुरुको १० म॰ आयुवृद्धि शुक्रको ११ म॰ आयुवृद्धि शनि ७ म॰ नाश इस प्रकारसे मुनियोंने कहा है॥ विद्यारंभः॥ विद्यारंभः सुरगुरुसितज्ञेष्वभीष्टार्थदायी कर्तुर्भाऽश्विरमपि करोत्यंशुभान्मध्यमोत्र॥ नीहारांशो भवति जडता पंचता भूमिपुत्रे छायासूनावपि च मुनयः कीर्तयंत्येवमाद्या॥ टी॰ गुरु शुक्र बुध इन वारोमें विद्यारंभ करनेसे उत्तम विद्या प्राप्त होती है और चिरंजीवी होता है रविवार मध्य है सोमवार को करनेसे बुद्धी जड होती है मंगल शनीको मृत्यु होती है यह नारद गर्ग मुनियोंने कहा है

व्याकरणारंभः॥ रोहिण्यां पंचके हस्तात्पुनर्भे मृगभे ऽश्विभे पुष्ये सुक्रेज्यविद्वारे शब्दशास्त्रं पठेत्सुधी॥

टी॰ रो॰ मृ॰ आ॰ पु॰ पुष्य॰ ह॰ ऽश्वि॰ शुक्र॰ गुरु इनोंमें शब्दशास्त्र पढना श्रेष्ठ है

गणितारंभः॥ शतद्वये ऽनुराधार्द्रे रोहिण्यां रेवतीकरे॥ पुष्ये जीवे बुधे कुर्य्यादारंभं गणितादिषु॥ ७७॥ ॥

टी॰ श॰ पू॰ भा॰ ऽनु॰ आ॰ रो॰ रे॰ ह॰ पुन॰ गुरु बुधवार इनमें गणितारंभ करना श्रेष्ठ है

न्यायशास्त्र॥ ॥ उत्तरे रोहिणी पुष्ये पुनर्भे श्रवणे करे अश्विन्यां शतभे स्वातौ न्यायशास्त्रादिकं पठेत्॥ ॥

टी॰ ३ उ॰ रो॰ पुन॰ पुष्य॰ श्र॰ ह॰ ऽश्वि॰ श॰ स्वा॰ इनोंमें न्याय शास्त्र पढना श्रेष्ठ है-

धर्मशास्त्र॥ ॥ हस्तादिपंचके पुष्ये रेवती द्वितये मृगे॥ श्रवत्रये सुभारंभो धर्मशास्त्र पुराणयोः॥ ८०॥

टी॰ ह॰ चि॰ स्वा॰ वि॰ ऽनु॰ पुन॰ रे॰ ऽश्वि॰ मृ॰ श्र॰ ध॰ श॰ शुभवार इनमें धर्मशास्त्र पुराणादि पढना श्रेष्ठ है

वैद्यगारुडी विद्यारंभः॥ हस्तत्रये ऽनुराधायां पुनर्भे श्रवणत्रये॥ मूले चैवाश्विनी पुष्ये ज्येष्ठाश्लेषार्द्रभे मृगे॥

टी॰ ह॰ चि॰ स्वा॰ ऽनु॰ पु॰ श्र॰ ध॰ श॰ मू॰ ऽश्वि॰ पु॰ ज्ये॰ श्ले॰ आ॰ मृ॰ इनोंमें वैद्य गारुडी विद्या पढना श्रेष्ठ है-

अथजैनविद्यारंभः॥ श्रुतित्रये मघापूर्वानुराधारेवती त्रये॥ पुनर्भस्वातिभेस्सूर्य्ये शुक्रे जैनागमं पठेत्॥८२॥

अथपारसीविद्यारंभः॥ ज्येष्ठाश्लेषामघापूर्वारेवती भरणी द्वये॥ विशाखा वोत्तराषाढा शतभे पापवासरे॥ लग्ने स्थिरे च चन्द्रे च पारसी मारवी पठेत्॥ ॥

टी॰ ज्ये॰ श्ले॰ म॰ पू॰ रे॰ भ॰ कृ॰। वि॰ उ॰षा॰ श॰ मंग॰ शनि॰ रवि॰ स्थिर लग्न शुभ चंद्रमा फारसी आरंभः करना श्रेष्ठ है-

अथलिखनारंभः॥ शुभे तिथौ शुभे वारे रेवती युगले तथा॥ श्रवणे चानुराधायां तथैवार्द्रादिषु त्रिषु॥ हस्तादि त्रितये कुर्य्याल्लिखनारंभनं सुधीः॥ ८८ ॥

टी॰ रे॰ ऽश्वि॰ श्र॰ ऽनु॰ आर्द्राः पुन॰ पुष्य॰ ह॰ चि॰ स्वा॰ लिखनारंम्भ करना श्रेष्ठ है-

अथरत्नपरीक्षा॥ पुनर्भे शत हस्तर्क्षे श्रवणे परीक्षणम्॥ रत्नानाम षमी भूतं हित्वा भौमं शनैश्चरम्॥८६॥

टी॰ पुन॰ श॰ ह॰ श्र॰ ज्ये॰ इन नक्षत्रोंमें रत्नपरिक्षा श्रेष्ठ है अष्टमी १४ चतु॰ भौम शनिवार येत्यागकर श्रेष्ठ है-

अथशिल्पकर्मारंभः॥ हस्तत्रये श्रवात्त्र्यर्क्षे सुत्तरे रोहिण्यांमृगे॥ रेवत्यामाश्विनी पुष्ये पुनर्वस्वनुराधयोः ६०

टी॰ ह॰ चि॰ स्वा॰ श्र॰ ध॰ श॰ उ३ रो॰ रे॰ मृ॰ ऽश्वि॰ पुन॰ पु॰ ऽनु॰ और श्रेष्ठ चंद्रमा शुभवार इनमें शिल्प कारादिक विद्या पढ़ना श्रेष्ठ है

अथराज्यदर्शनम्॥ सुत्तरे श्रवणद्वंद्वे मृगे पुष्यानुराधयोः॥६१॥ रोहिण्यां रेवतीयुग्मे चित्रा हस्ते शुभे हनि बलिन्यर्केऽर्क वारेऽपि राज्य दर्शनमीरितम्॥६२॥

टी॰ उ३ ध॰ श्र॰ मृ॰ ऽनु॰ रो॰ रे॰ ऽश्वि॰ चि॰ ह॰ शुभदिन बलिसूर्य रवि को राज दर्शन करना श्रेष्ठ है-

अथराजसेवा॥ हस्तद्वयेऽनुराधायां रेवतीयुगले मृगे॥ पुष्ये बुधे गुरौ शुक्रे सत्तिथौ रविवासरे॥ ६३॥ योनि राशि यथो मैत्र्यां स्वामी सेव्योऽनुजीविभिः॥

टी॰ ह॰ चि॰ ऽनु॰ रे॰ ऽश्वि॰ मृ॰ पुष्य॰ बुध गुरु शुक्र रवि वार शुभ तिथ और योनि राशि मैत्र ता होय तो स्वामी सेवक में प्रीति रहेगी-

दासचक्रम्॥ नराकारं लिखेच्चक्रं सेवार्थं भृत्यसंग्रहे॥ शीर्षे त्रीण्यर्थलाभस्यान्मुखे त्रीणि विनाशनं॥ २५॥ हृदि पंच धनं धान्यं पादे युग्मकं दरिद्रता॥ पृष्ठे द्वे प्राणसंदेहो नाभौ वेदाः शुभावहं॥ गुदे द्वे भयपीडा च दक्षहस्तैकमर्थकं॥ एकं वामे नाशकरं भृत्यभात्स्वामिभांतकं॥ २७॥



टी॰ जो दासरक्खतो मनुष्य के। आकारचक्र लिखना उस पर नक्षत्रका न्यास करना नौकर के नक्षत्र से मालिक के नक्षत्र तक गिनना प्रथम मस्तक पर ३ नक्षत्र फल द्रव्यलाभ मुख पर ३ नक्षत्र फल नाश हृदय पर ५ नक्षत्र फल धनधान पाद २ पर २ नक्षत्र फल दरिद्र पीठ पर २ नक्षत्र फल प्राणसंदेह नाभी पर ४ नक्षत्र फल शुभ गुदा पर २ फल भय पीडा दक्षिण हस्त पर १ नक्षत्र फल द्रव्यप्राप्ती वाम हस्त पर १ फल नाशकारक ऐसा दासचक्र जानना–

गोवृषमहिषीचक्रम्॥ शीर्षे त्रयं मुखे द्वे च पादेष्वष्टौ विनिर्दिशेत्॥ हृदये पंच ऋक्षाणि स्तनेष्वष्टौ भगैककं॥ फल॥ शिरस्थाने भवेल्लाभो मुखे हानिः प्रजायते॥ पादयोर्र्थलाभः स्यात् हृदये सौख्यवर्धनं॥ स्तनयोस्तु महालाभो गुह्यस्थाने महद्भयं॥ अर्यमादि गवां ज्ञेयं महिष्यास्सूर्यमान्यसेत्॥ इदमेव वृषे ज्ञेयं विशेषः पत्सु षोडश॥ ३४॥

टी॰ गौ बैल भैंस लेनेका मुहूर्त गौ के आकार चक्र लिखना उत्तराफाल्गुनी से दिन नक्षत्र तक देखने का क्रम प्रथम मस्तक पर ३ इसि क्रम से नक्षत्र लिखना तिसका शुभाशुभ फल ने





परंतु बैल के चक्र में १६ नक्षत्र जानना और महिषी चक्र पर नक्षत्र न्यास सूर्य के नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक करना

अश्वचक्र॥ अश्वेतु सूर्यभाच्चैवसाभिजिद्भानिविन्य सेत्॥ पंचस्कंधेजन्मभांतंपृष्टेतुदशकन्यसेत् ३५ पुच्छे ज्ञेयद्वयंग्रान्ते अतुष्यादे चतुष्टयं॥ उदरेपंचधिष्ण्यानि मुखे द्वेच प्रकीर्तितेि॥३६॥ फल॥ सौभाग्यमर्थलाभश्चस्त्री नाशोरणभंगता॥ नाशश्च अर्थलाभश्चफलंप्रोक्तंमनीषिभिः

टी॰ घोडेके लेनेका सुहूर्त घोडेके आकार चक्र लिखना सूर्यके नक्षत्रसअभिजित्‌के सहितजन्म नक्षत्रतकन्यासकरना प्रथमस्कंधगरदकेपीछेभा गउस्पर ५ नक्षत्र रखना तिसकाशुभाशुभफलकहना

अश्व

द्रव्यलो ५ सौभाग्य लाभ २ स्त्रीनाश ५ नाश ४ ५ रणभंग

गजचक्रम्॥ गजाकारंलिखेच्चक्रंजन्मभांतंच सूर्यभा त्॥ कर्णेशीर्षे द्विजेपुच्छे द्वयंसर्वत्र योजयेत्॥ शुंडायांतु द्वयंयोज्यंवेदाः पृष्ठोदरेमुखे॥ षड्‌चतुर्षुपादेषुसाभिजि द्भैन्यसेत्क्रमात्॥ फल॥ कर्णेचैवमहालाभोमस्तकेला भएवच॥ दंतेचैवभवेल्लाभोपुच्छेहानिःप्रजायते॥ ४०॥ शुंडायांतुशुभंज्ञेयंपृष्टेतुसुखसंपदः॥ उदरेरोग सम्भूतिर्मुखे तुमध्यमंस्मृतं॥ पादयोश्चभवेल्लाभोगजेचैवंविनिर्दिशेत्॥

टी॰ हाथीके आकार चक्रलिखना और सूर्यके नक्षत्र सजन्मके नक्षत्रतक देखना प्रथम कान पर २ नक्षत्र फल। महालाभ मस्तकपर २ नक्षत्र फल लाभ दंतपर २ न॰ फल लाभ पुच्छपर दो नक्षत्र फल हानी सुंडापर २ न॰ फल शुभ पीठ २ सुखसंपत्ति पेट ४ रोगप्राप्ती सुख ४ मध्य म पादपर ६ नक्षत्र फललाभ इसप्रकारगजचक्रजानना शुभ आवेतोलेना–

गज

पालकीचक्रम्॥ सूर्यभाद्दिनभंयावत्पंचपंचचतुर्दि शि॥ मध्येतुसप्तदेयानि चक्रंज्ञेयंसुखावहं ४२ फल॥ पूर्वभागेतुचारोग्यंदक्षिणेकष्टकारकं॥ पश्चिमेरुग्णताचै वउत्तरेव्याधिसंभवः॥ मध्यस्थंचशुभंप्रोक्तमायुर्वृद्धिकरंप रं॥ पर्यंकारोपणंचैतद्वालकस्यवृद्धिहितम्॥ ७॥

टी॰ पालकिकाचक्र लिखनाजन्मे चार दिशा कल्पना करना पूर्वमे ५ नक्षत्र आरोग्य दक्षिण

मे ५न· दुखकारक पश्चिममे ५नक्षत्र क्लेशकारक उत्तरमें ५न· रोग कारक मध्यमे ७न· सुभकारक ऐसे पालकी चक्र देखना और बालकको पलंगके ऊपर प्रथम बैठानेको येही चक्र विचारकरना — ॥



छत्रचक्र ॥ अनुत्तरारोहिणीरौद्रपुष्यश्च शततारका ॥ धनिष्ठा श्रवणश्चैव शुभानि छत्रधारणे ॥ मूले त्रीणि सप्त दंडे कंठे चैव तु पंचकं ॥ मध्ये वसु प्रदातव्यं शिखरे वेद एव च ॥ मूले च जायते नाशो दंडे हानिर्धनक्षयः ॥ कंठे च राजसन्मानो मध्ये छत्रपतिर्भवेत् ॥ शिखरे कीर्त्तिवृद्धिश्च जन्मभात्सूर्यभांतकं ॥

टी· रो· आ· पुष्य· श· ध· श्र· यह नक्षत्रमें छत्रधारणकरना और चक्र लिखना जन्मनक्षत्रसे सूर्यनक्षत्रतक देखनेका क्रम छत्रके मूलमें ३ नक्षत्र फल नाश दंडमें ७ हानी कंठमें ५ राजासे प्रतिष्ठा मध्यमे ८ छत्र पति राजा होय कलशपर ४ कीर्तिवृद्धि ऐसे चक्र में जानना — ॥ ॥



बाणधनुषचक्रम् ॥ सूर्यभाज्जन्मभांतं च धनुष्ये चैव वयोजयेत् ॥ चापाग्रे बाणसंख्याक शराग्रे पंच योजयेत् ॥ ४९ ॥ शरमूले तथा पंच पंच संधौ प्रकीर्त्तयेत् ॥ दंडद्वयं तु दद्याद्वै धनुषश्चक्रमुत्तमं ॥ ५० ॥ फल ॥ अग्रे हानिः शरे लाभो शरमूले जयस्तथा ॥ चापसंधौ तु शौर्यं स्यात् दंडे भंगः प्रजायते ॥

टी· धनुसाकारचक्र लिखना सूर्यनक्षत्रसे जन्मनक्षत्रतक देखना जो अग्रपर ५ नक्षत्र फल हानी बाणके अग्रपर ५न· लाभ मूल ५न· जय धनुषके दूनों संधीपर ५।५न· शूरता मध्यपर २न· संग्राममें भंग ऐसे प्रकारसे धनुषचक्र जानना ॥ · ॥ · ॥ · ॥



रथचक्रम् ॥ रथाकारं लिखेच्चक्रं सूर्यभाज्जनि भं न्यसेत् रथाग्रे त्रीणि ऋक्षाणि षट् चक्रे षु ततो न्यसेत् ॥ ५२ ॥ ऋक्षत्रयं मध्यदंडे रथाग्रे मत्रयं तथा ॥ यूपे च भत्रयं त्रेयं षडश्लीरंयतिमिथ्वनि ॥ शेषमृक्षत्रयं योज्यं चक्रज्ञैः सर्वतो रथे ॥ फल ॥ अग्रे मृत्युर्जवश्चक्रे सिद्धिर्ज्ञेया च दंडके ॥ ५४ ॥ रथाग्रे दंड अध्वानं मध्ये चैव सुखं शुभं ॥ बुधैरेकफलं ज्ञेयं जन्मभांतं क्रमेण च ॥ गर्गेणोक्तानि चक्राणि विज्ञेयानि सदा बुधै

टी॰ रथाकार चक्र लिखना सूर्यनक्षत्रसे जन्मनक्षत्र तक देखनेका क्रम प्रथम रथ के अंगपर ३ नक्षत्र फल मृत्यु चक्रपर ६ नक्षत्र फल जय मध्यदंडपर ३ नक्षत्र फल सिद्धि रथके अग्रपर ३ नक्षत्र फल राजदंड जूयेपर ३ नक्षत्र फल सुख मार्गपर ६ नक्षत्र फल शुभ और शेष ३ न॰ सो सब दिशामें फल शुभ ऐसे गर्गऋषीने चक्र कथित किया है-



तेलका चक्र॥ घाणचक्रं प्रवक्ष्यामि सूर्यभाच्चांद्रमेवच॥ त्रीणि त्रीणि त्रयं त्रीणि त्रीणि त्रीणि त्रयं तथा॥ त्रीणि त्रीणि तु भान्यत्र योजये द्घाणके शुभे॥ फल॥ हानिरैश्वर्यमारोग्यं विनाशो द्रव्यमेवच॥ स्वामिघातो निर्धनता मृत्युरेव सुखं क्रमात्

टी॰ तेल निकालनेका चक्र सूर्यनक्षत्रसे दिननक्षत्र तक गिननेका चक्र तेलके यंत्रमें नो ९ भाग कलपना करना नक्षत्र और चक्रके क्रमसे फल जानना-



वेदद्विनेत्रभूभूतबाणहस्तरसाः क्रमात्॥ फल॥ प्रथमं च लभेल्लक्ष्मी द्वितीये हानिमेवच॥ तृतीये सर्वलाभं च चतुर्थे च क्षयं तथा॥ पंचमे च भवेन्मृत्युः षष्ठस्थाने शुभं स्मृत॥ सप्तमे चैव पीडा स्यादष्टमे धनधान्यदं॥ सूर्यभाद्गणये च्चांद्रमिक्षुयंत्रे नियोजयेत्॥

घाणचक्र

३ प्रथमभाग	
३ भाग॰	हानि
३ भाग॰	ऐश्वर्य
३ भाग	आरोग्य
३ भाग	नाश॰
३ भाग	द्रव्य॰
३ भाग	स्वामिघा
३ भाग	निर्धन
३ भाग	मृत्यु॰

कोल्हूचक्रम्

४ प्रथमभाग	लक्ष्मी
२ भाग	हानि
२ भाग	सर्वलाभ
१ भाग	क्षय
५ भाग	मृत्यु
५ भाग	शुभ॰
२ भाग	पीडा
६ भाग	धनधान्य



इसमें जिसदिन शुभफल आवे उसदिन करना-

कूंआमुहूर्त॥ स्वाती ब्राह्मस्यमृगोत्तरादितिमघा राधा च तत्पूर्व

मघारेवत्युत्तरविष्णुभंत्वषिविधौदेत्रादिवापेविधो
गोकन्याऋषमन्मथ्याश्वसुभदावारा:कुजार्कीतरंष
ष्टीद्वादशिरिक्त पर्वसुतथावर्ज्यंद्वितीयादयं॥ ६०॥

टी॰ स्वाती॰रो॰म्र॰उत्त॰पुनं॰पु॰अनु॰ज्ये॰मू॰पू॰षा॰म॰रे॰उ॰फा॰श्र॰ इननक्षत्रसे और वृष॰कन्या॰मीन॰मि॰ येलग्नखेतीकरनेका आरंभकरना चंद्रबलदेखना आगे॰मंगल॰शनि॰ इनवारका त्यागकरना और तिथी षष्ठी द्वादशी रिक्तातिथी ४।९।१४ पर्व और २ द्वितीया इनका कृषिकर्ममें त्यागकरना–

हलचक्र॥ ॥त्रिकंत्रिकंत्रिकंपंचत्रिकंत्रिकं॥सूर्यभा
गणयेच्चांद्रभसुभंचक्रमात्॥ ६१ ॥



टी॰ प्रथम हलरखने को मुहूर्त सूर्यनक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गिननेका क्रम हलचक्रमें आठ ८ भाग कल्पना करना प्रथम ३ नक्षत्र फल अशुभ द्वितीय ३ न॰ फल शुभ तृतीय ३ न॰ फल॰ अशुभ चतुर्थ ५ न॰ फल॰शुभ पंचम ३ न॰ फल अशुभ षष्ट ५ न॰ फल शुभ सप्तम ३ न॰ फल अशुभ अष्टम ३ न॰ फल शुभ ऐसा हलचक्र जानना जिसदिन शुभनक्षत्र होतव हलजोडना

नौकामुहूर्त॥ पौष्णादितिस्तुरगवासुणमित्रचित्रशीत्तो
ष्णरश्मिवसुजीवकमान्यमूनि॥वारेचजीवभृगुनंदन
केप्रशस्तेनौकादिसंघटनवाहनमेसुकुर्यात्॥६३॥

टी॰ रेवती॰पुन॰अश्विनी॰श॰अनुराधा॰चित्रा॰म्रग॰हस्त॰धनि॰पुष्य॰ येनक्षत्र गुरु शुक्र॰ इनवारमें नौकावनावनेका आरंभकरना अथवा जलमे छोड़ना श्रेष्ठहै–

नौकाचक्र॥रविमुक्तर्क्षमारभ्यकुर्यात्त्रीणिउदयेचषट्॥ना
ल्यांत्रीणिहृदित्रीणिपृष्टेभू:पार्श्वगंत्रयं॥सुक्काणेत्रीणि
षण्मध्येनौकाचक्रेभसंस्थिति॥उपरस्थंचमध्यस्थंश्रेष्ठं

टी॰ सूर्यनक्षत्रसे गिननेका क्रम ऊपर स्तंभ पर ६ नक्षत्र नालीमे तीननक्षत्र हृदय पर ३ नक्ष पीठपर १ नक्षत्र बाजू पर ३ नक्षत्र कान पर ३ नक्षत्र मध्यमे ६ न॰ ऐसे नौकापर नक्षत्रन्यास करना ऊपरस्थ मध्यस्थ नक्षत्र सुभ और अन्य अशुभ जानना

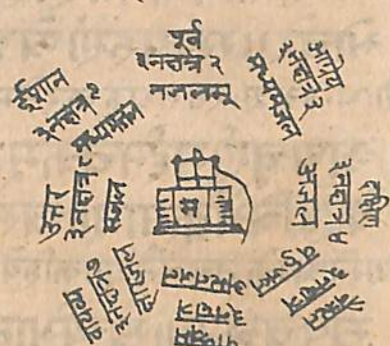
नौका



कूपचक्र।कूपवाप्यस्तुचक्रंवैविज्ञेयंविबुधै: सुभ॥

रोहिण्येगर्भमेतस्य त्रित्रिनक्षत्राणिचद्रूभं ७० मध्येपूर्वेत याग्नेये याम्येचैवतुनैर्ऋते॥ पश्चिमेचैववायव्यांसौम्य शूलदिशिक्रमात्॥७१॥फल॥ शीघ्रंजलंनजलंमध्यमजलं मजलंवहुजलंच॥ अमृतजलंवहुक्षारंसजलंमध्यजलंक्रमात्तंत्रेयं ७२ मत्स्येकुलीरेमकरेजलंवहुतथैवचाद्वैवृष कुंभयोश्च॥ अलोचतोलोचजलामतामताशेया अससर्वे जलदाः

टी॰ कूपवावलीखोदनेका मुहूर्त कूपाकारचक्र लिखना रोहिणीनक्षत्रसेदिननक्षत्रतक देखनेकाक्रम प्रथममध्यमे ३ नक्षत्रफल जलदीनिकलेगा पूर्वमे ३ नक्षत्रजल नही इसीप्रकार चक्रम देखनेसे मालूम होगा—



वगीचालगावनेकामुहूर्त गोसिंहालिगतेस्रचोत्तरग २ तेभानोवुधादित्रयेचंद्र केचसुभावुधेरमिहिताय मप्रतिष्ठाक्रिया॥७४॥ छ॥

टी॰ वगीचालगावनेकामुहूर्त वृषसिंहवृश्चिकयहराशीकेसूर्यमे अथवा उत्तराय णमे और वुधगुरुशुक्रचंद्रसूर्य इनके वारमेवगीचाकी प्रतिष्ठा करना—

अन्यमत॥ आश्लेषाभरणीद्वयंशतभिषकत्यष्का विशा खांकुहूं रिक्तापक्षतिथीष्टमीपरिहरेत्षष्ठीमपिद्वादशीं

टी॰ आश्लेषा भ॰ कृ॰ श॰ विशाखा॰ और अमावास्या रिक्ता तिथी पक्षतिथी अष्ट मी षष्ठी द्वादशी इतनेका त्यागकरना और वगीचालगावना—॥

अथसर्ववस्तुविक्रयः॥ विशाखाकृत्तिकाश्लेषाभरणी पूर्विकात्रयम्॥ विक्रयःसतियावेस्रकर्त्तव्योनक्रयश्शुभः

टी॰ वि॰ कृ॰ श्ले॰ भ॰ पू॰ ३ इनका त्यागकरना और खरिदना श्रेष्ठ है—

अथगृहक्षेत्रभूम्यादीनांक्रयविक्रयौ

जीवेशुक्रेचनंदासु पूर्णायांमूलभेमृगे॥ पूर्वाश्लेषा मघांत्येचविशाखाद्वितयेतथा॥ ८०॥ पुनर्भेसुनिभिःप्रो क्तंक्रयंविक्रयणंध्रुवः॥

टी॰ वृ॰ शु॰ नंदातिथीपूर्णा मू॰ मृ॰ पू॰ श्ले॰ भ॰ रे॰ वि॰ ४ नु॰ पु॰ इननक्षत्रोंमहेत्रादि

क्रयविक्रयशुभहै-॥ अथ वाणिज्यकर्म्म ॥

अनुराधोत्तरा पुष्ये रेवती रोहिणी मृगे॥ हस्त
चित्राश्विभे कुर्य्याद्वाणिज्यं दिवसे शुभे॥२९॥

टी॰ऽनु॰उ३॰पुष्य॰रे॰रो॰मृ॰ह॰चि॰ऽश्वि॰इनोंकेविषवाणिज्यकर्मकरनाश्रेष्ठहैशुभदिनम

द्रव्यादिवृद्धिसंग्रह॥पुष्येमृगेऽनुराधायांश्रवणत्रितये
श्विभे॥ पुनर्भेऽन्त्ये विशाखायांनिधेर्वृद्धिश्चसंग्रह॰

टी॰पुष्य॰मृ॰ऽनु॰श्र॰ध॰श॰ऽश्वि॰पु॰रे॰वि॰इननक्षत्रोंमनिधीसंग्रहकरैतोद्रव्यकीवृद्धिहो-

धान्यरसविक्रय॥रोहिण्यासत्क्रयोऽन्नस्यधनिष्ठासत
भोत्तरे॥रससंग्रहणंश्रेष्टं तोयारंभोदितोहुत॥३५॥

टी॰रो॰ध॰उ३॰श॰रससंग्रहकरनेमपुनर्वसबहुतश्रेष्टहै-

अथचूर्णमर्द्दनचक्रम्॥शनेर्भतोयुगा४ब्ध्य४ष्ट८राम३
वेद४त्रिभैक्रमात्॥असत्सुभंक्रमाच्चक्रेचक्रिकाख्येमनोहरे

टी॰शनिश्चरकेनक्षत्रनैंयुगकहिये४।४।८।३।४३।१येचक्रचक्कीकाहै-

सूपचक्रम्॥सूर्य्यभात्पृषु५त्र्य३ष्टा८ब्धि४मुनि७भेस्व
शुभाशुभम्॥क्रमात्सूर्य्याभिधेचक्रेविज्ञेयंकोविदैःसदा

टी॰सूर्यकेनक्षत्रनैं५।३।८।४।७क्रमसइनकोशुभाशुभजानना-

चुल्लीचक्रम्॥सूर्य्यभादंग६वेदा४ष्ट८राम३शास्त्र६शुभा
शुभम्॥चुल्लीचक्रेक्रमात्ज्ञेयंशुभाशुभविचक्षणैः

टी॰सूर्यकेनक्षत्रतें६।४।८।३।६।इनकोशुभाशुभकरकेगणितज्ञजाननकूंश्रेष्टहै

मार्जनीचक्रम्॥सूर्य्यभाद्राम३रामा३ग६राम३तर्का६ग६
भेषुच॥असत्शुभंक्रमात्ज्ञेयंमार्जनीसंज्ञकेशुभे॥
हरिस्सूर्य्यचित्रादितिमैत्रपुष्येमृगेरोहिदस्रेविरिक्ते
चभौमे॥त्यजेत्कुंभमीनेऽप्यलौलग्नगेहपात्रंतु
कल्यैरवेर्य्यामलानि॥६०॥ ॥ ॥

टी॰सूर्यमनक्षत्रतें३।३।६।३।६।६इनकोअसत्शुभमार्जनीचक्रमेंबुद्धिमानजाननकूंश्रेष्टहैं

टी॰श्र॰ह॰चि॰पु॰ऽनु॰पुष्य॰मृ॰रो॰ऽश्वि॰रिक्ताऔरमंगलवर्जितकु॰मी॰वृ॰येलग्नोमजलपात्र
रखनाश्रेष्टहै-॥ गोमयपिंडकादिचक्रम्

सूर्य्यर्क्षा[illegible]

युग्म मितेः शवस्य दहनं मध्येयुगे स्सार्पभीः॥ त्राग णदिग्वेदभैःस्वसुहृदोस्यात्संमोरोगभीःक्रार्यादेः करणंशुभंचगदितंकाष्ठादिसंस्थापने॥ ६१॥ सूर्य्यभाद्र सतर्का६ब्धि४नाग८वेदा४भिजित्सह॥ शुभाशुभंक्र मात्स्तेयं करीयादिग्संग्रहे॥ ६२॥ छ ॥ छ॥

टी· सूर्यके नक्षत्रैंदेखना चाहिये वर्त्तमान नक्षत्र तक चक्रम–

६	२	४	४	४	४	४
अशुभादि	शुभनादि	शुभाशुभ.	अशु	शुभाणी	अशुभादि	शु.

अथधर्मेक्रिया॥ रेवती द्वितये हस्त त्रितयेरोहिणीद्वये॥ श्रवत्रयोत्तरापुष्ये पुनर्वस्वनुराधयोः॥७०॥ स्तेज्य शुक्रे न्दुसूर्य्येषु स्तेज्यषड्वर्गशालिनि॥लग्नेजीवयुतेजीवेवलि ष्ठेधर्म्ममाचरेत्॥७१॥

टी· रे·ऽश्वि·ह·चि·स्वा·रो·मृ·श्र·ध·श·उ३ पुष्य·पु·ऽनु· वार शुक्र चंद्र रवि बुध· गुरु लग्नमें वृहस्पत हो और वलि होय तौ धर्म के आचरण करने वहुत श्रेष्ट हैं–

अथशांतिपौष्टिकं कर्म्म॥ पुनर्वसु द्वयेस्वातौत्र्युत्तरेश्र वणत्रये॥रेवतीद्वितये हस्तेऽनुराधारोहिणीमघे ७२ शांतिकंपौष्टिकं कर्म्मपुण्याहंकीर्त्तितंवुधैः॥ छ॥

टी·पुन·पु·स्वा·उ३ श्र·ध·श·रे·ऽश्वि·ह·ऽनु·रो·मघा·सांति पौष्टिक कर्म सुन्य दिनोमें वुद्धिमानोंनकहाहै॥

अथहोमादौखेटाहुतिफलम्

रवौवुधे भृगौ मंदेचंद्रेभौमे गुरुएवगौ॥ केतौचसूर्य्य भात्स्तेयं प्रत्येकंभत्रयंक्रमात्॥ ७३॥ होमाहु तिः खले नेष्टा शुभदाशुभखेचरे॥ छ ॥

टी· सूर्यके नक्षत्रतैं तीन तीन नक्षत्र प्रत्येक ग्रहोंकेसुखमेंआहुतिजानों शुभके शुभ पापके अशुभ· ॥

सू	बु	शु	श	चं·	मं·	वृ	रा	के
३	३	३	३	३	३	३	३	३

अथहोमादौवन्हिवासफलम्

तिथिवारयुतिस्सैकावेदभक्ता वशेषका॥ निवासोऽग्नेर्व्योम्नि रूपे१ वित्तप्राणविनाशदः॥७४॥पातालेद्विकशेषेणध न संचयनाशनः॥गुणवेदावशेषेणभूमौविपुलसौख्यदः ॥नमस्कारेसुविचारोऽस्यनकार्य्योनापिवैभवे॥ नित्य–

नैमित्तिके कार्य्येन चाब्दे मुनिभिः स्मृतः ॥७६॥ अर्कश्च
द्वादष्टमे त्वाच तुर्थे मन्द प्रशुक्रा दष्टमे ऽगारकश्च ॥रा
हुर्धर्मे जीवतः खेटसुन्ने होमे नाशः पुत्र दारा धनानाम् ॥

टी॰ तिथी वार को युक्त कर और एक १ उसम और जोड़ और चार ४ का भाग देनो १ बचै तो ऽग्न का वासा आकाश मये विघ्न का और प्राण का नाश करने वाला है और जो २ बचै तो पाताल म वासा जानो धन का नाश करने वाला है और ३।०० बचै तो ऽग्न का वासा पृथ्वी पर विपुल धन सौख्य का करने वाला है और ये हवन विधि त्रयोगांत मन विचारे सूर्य तें ८ चंद्रमा और बुध तें ४ शनि शुक्र तें ८ मंगल राहु तें ९ वृहस्पत ये सौम्य ग्रह हवन के विषसुन्न जानो ये हवन म पुत्र दारा धन का नाश करनें वाले है –

अथ मंत्र दीक्षा ॥ रोहिण्यां च्युत्तरे मौंजी वंधनो दितभा
दिषु ॥ मंत्र दीक्षा शुभे चाह्नि ग्रहणे ऽप्यागमो दित ॥७८

टी॰ रो॰ उ॰३ पुष्य॰ पु॰ इन नक्षत्रों मे मंत्र लेना बहुत श्रेष्ठ है शुभ दिन हो शास्त्रोक्त पर्भादि ग्रहण कू आदलेके – ॥ मंत्रयंत्रोउपासनादि

ऊफा हस्ता श्विनी कर्णो विशाखा म्रग भे हनि ॥
शुभे सूर्य्य युते शस्तं मंत्र यंत्र व्रतादिकम् ॥७९॥

टी॰ उ॰ फा॰ ह॰ इं॰ श्वि॰ वि॰ म्र॰ शुभ दिन शुभ वार जिस देवता का आराधन कर उस का वार या नक्षत्र तौ फल शुभ दायक होता है –

रोगोत्पत्तौ शुभाशुभज्ञानं ॥ स्वात्या श्लेषा रौद्र पूर्वा त्रये
षु शाक्रे भौमे स्पूर्यजे स्पूर्यवारे ॥ नंदा रिक्ता स्वेव रोगस्य
वाप्ति र्म्रत्यु र्स्यैयं शंकरो रक्षितोपि ॥४२॥ ७॥

टी॰ स्वाती आश्लेषा आर्द्रा तीनो पूर्वा ज्येष्ठा इन नक्षत्रों मे मंगल शनि आदित्य इन वारों मे प्रतिपदा षष्ठी एकादशी चतुर्थी नवमी चतुर्दशी इन तिथिन मे जो रोग उत्पन्न होय तो म्रत्यु जानना शंकर सदाशिव भी रक्षण न हि कर सक्ते –

रोगादि दोषज्ञानमाह ॥ आत्मना मादार चैव दूतस्यैव तु
रोगिणः ॥ एकी कृत्वा त्रि गुणितं नव भिर्भागमा हरेत् ॥
शेषे षड्डे ६८४ भूः१ भूतः द्विके सप्त तथैव वरः ॥ अष्टमे
पि नर पश्चैव बाणांके ग्रह जा भवेत् ॥ १८ ॥ ७ ॥

टी॰ रूप कुदोष होय उसके नाम के अक्षर दूत के नाम के अक्षर इन सब अक्षर

रोको जोड़ कर ३ गुण करे और ८ का भाग देजो शेष ६।४।१। बचे तौ भूतदोषजा नो और जो २।७।३।८। बचैनो पितरदोषजोनो और जो ५।६ बचेतौग्रहदोषजानो-

औषधग्रहणेनक्षत्राण्याह॥ ॥पौष्ण द्वयेचादितिभद्वये च हस्तत्रयेचे श्रवणत्रयेच॥ मैत्रेच मूले च मृगे च शस्तं भैषज्यकर्म प्रवदंति संत॥ ४४॥ छ ॥

टी॰ रेवती अश्विनी पुनर्वसु पुष्य हस्त चित्रा स्वाती श्रवण धनिष्ठा शत तारका अनुराधा मूल मृग इन नक्षत्रों में औषध लेनेसे अतिशीघ्र रोग दूर होता है॥

रोगविमुक्तस्नानम्॥ मघा पुनर्वसु स्वाती रोहिणी चोत्तरत्रये॥ अश्लेषायां चरेवत्यां भार्गवे चंद्रवासरे॥ २०॥ नस्नायाद्रोगनिर्मुक्तः शुभेचंद्रे तथैवच॥ त्यक्तायां रविभौमार्कि वासरे चरलग्नगे॥ २१॥ दुष्टचंद्रे तथावि ष्टयांपाताद्यैर्दूषिते हनि॥ रोगहस्तेतथाश्विन्यां श्रवणे रोहिणीद्वये

टी॰ मघा॰ पुन॰ स्वा॰ रो॰ उ ३ श्ले॰ रे॰ और शुक्र चंद्रवार इनमें स्नान न करै और शुभ चंद्रमामें रिक्ता तिथ और रवि मंगल शनिवार चरलग्न दुष्टचंद्र और भद्रा पातादि दोष सहित रोगी स्नान करै और दानादिक न दनंतर ब्रह्मभोज करना-

रोगमुक्तौ प्रमाणमाह॥ व्याध्युत्पत्तिर्यस्य पौष्णे समैत्रे प्राणत्राणं जायते तस्य कृच्छ्रात्॥ वैश्ये सौम्ये रोगमुक्तिस्तु मासाद्विंशत्यः स्याद्वासराणां मघासु॥ ४६॥ पक्षाद्धस्ते वा सवे सद्विदैवे मूलाश्विन्योरग्नि धिष्ण्ये नवाहात्॥ याम्ये त्वाष्ट्रे वैष्णवे वारुणे चनैरुज्यं स्यान्नूनमेकादशाहात्॥

टी॰ रेवती अनुराधा मे जो रोग होय तो उसके प्राण रक्षण अति कष्ट से होगा उत्तराषाढ मृग इनमे जो व्याधि होय तो १ मास नंतर व्याधिनाश होय मघामे नाश और हस्तमें १५ दिनमे नाश और धनिष्ठा मूल अश्विनी कृत्तिका इनमे होय तो ९ दिनमे नाश और भरणी चित्रा श्रवण शत॰ इनमें होय तो ११ दिनमें नाश और उत्तराभाद्रपद पुष्य पूर्वाफा॰ अभि॰ पुन॰ इनमें व्याधि होय तो ७ दिनमे व्याधि नाश ऐसे गर्गादिक ऋषियोंने कहा है

सर्पदंशनेवर्ज्यान्याह॥ ॥ यः कृत्तिका मूल मघा विशाखा सार्पांतकार्द्रासु भुजंगदष्टः॥ स येन तेयेन सुरक्षितो पि प्राप्नोति मृत्योर्वदने मनुष्यः॥ ६४॥

टी॰ कृत्तिका मूल मघा विशाखा आश्लेषा भरणी आर्द्रा इन नक्षत्रोंमेंजो सर्पकाटे तो गरुड़ रक्षण करेतोभी मनुष्य मृत्युमुखसे नबचे–

हलप्रवाहनक्षत्राण्याह॥ मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु मूलेमघा विशाखासहितेषुभेषु॥ हलप्रवाहं प्रथमं विदध्यान्नि रोगसुख्कान्वितसौरभेयैः॥ ६२॥ ७ ॥ ७ ॥

टी॰ चित्रा अनुराधा मृग॰ रेवती रोहिणी तीनोउत्तरा ३ अश्विनी पुष्य॰ हस्त अभिजित् श्रवण धनिष्ठा शततारका पुनर्वसू मूल मघा विशाखा इन नक्षत्रोंमें प्रथम निरोगी सुख्कसाहित ऐसा वैल लगायके हलप्रवाहकरना–

बीजबोवनमुहूर्त्तमाह॥ ॥ हस्ताश्विपुष्योत्तररोहि णीषु चित्रानुराधामृगरेवतीषु॥ स्वातीधनिष्ठासुमघा सु मूले बीजोप्तिरुत्कृष्टफलं प्रतिष्ठा॥ ६३ ॥ ७ ॥

टी॰ हस्त अश्विनी पुष्य तीनो उत्तरा ३ रोहिणी चित्रा अनुराधा मृग रेवती स्वाती धनिष्ठा मूल इन नक्षत्रोंमें बीज वापन करनेसे उत्कृष्ट फलप्रद होता है–

अथशस्यारोपणम्॥ हस्तत्रयोत्तरामूलेधनिष्ठारोहि णीमृगे॥ पुष्येमृगेऽनुराधांत्येमघायां शुभवासरे॥४४॥ त्यक्त्वा रिक्तां शनिभौमं शस्यसांकुररोपणम्॥ ७

टी॰ हस्त॰ चि॰ स्वा॰ उ३ मूल॰ धनि॰ रो॰ मृ॰ पुष्य॰ ऽनु॰ रे॰ म॰ शुभवार रिक्ता तिथी शनि भौम कु वर्जित करके सस्य।का रोपण करना शुभ है–

अथनवान्नप्राशनम्॥ हस्तचित्रानुराधांत्येरोहिणी श्रवणद्वये। मृगाश्विन्युत्तरास्वर्के शुभे वारे तिथावपि ४६॥ नवान्नस्यविधानंच प्राशनफलमूलयोः॥ नवान्न चक्रम्॥ बुधर्क्षान्युत्र ५ पुत्रे ५ षु ५ पुत्र ५ वेद ४ युगेन्दुः कम्॥ सद्धुभंशुभमर्थघ्नं शुभंव्यर्थं शुभंक्रमात्॥ ५०॥

टी॰ हस्त॰ चित्रा॰ ऽनु॰ रेवती॰ रो॰ श्रवण॰ ध॰ मृग॰ ऽश्वि॰ उ३ शुभवार शुभतिथी नवान्न प्राशन करना फल मूलादिभी श्रेष्ठ है बुधकेनक्षत्रतें वर्त्तमाननक्षत्रतक शुभाशु भफल चक्रम देखना नंदा तिथी और विष घटी और चैत्र पोस शनिश्चर और भौम

५	५	५	५	२	१	५
सं	शु	अ	शु	अ	शु	शु

इनके विना अन्न प्राशन करना श्रेष्ठ है–

गायनाभ्यासनक्षत्राणि॥ ॥ हस्तस्त्रिष्येवासवंचानुराधा ज्येष्ठा पौष्णं वारुणंचोत्तराच॥ पूर्वाचार्यैःकीर्तिनश्चंद्र वर्तिन्नृत्यारंभे शोभनोक्तस्तुवर्गः॥ ६५॥ छ॥

टी॰ हस्त पुष्य धनिष्ठा अनुराधा ज्येष्ठा रेवती शततारका तीनो उत्तरा३ इन नक्षत्रोंमें चंद्रानुकूल देखके गाना बजाना नाचना सीखनेका आरंभकरना-

राज्याभिषेक नक्षत्राणि॥ ॥ मैत्र शाक्र कर पुष्यरोहिणी वैष्णवेषु तिसृषूत्तरासुच॥ रेवतीमृगशिराश्विनीषुच स्नानमृतो समभिषेक इष्यते॥ ६६॥ छ॥

टी॰ अनुराधा ज्येष्ठा हस्त पुष्य रोहिणी श्रवण तीनो उत्तरा३ रेवती मृग॰ अश्विनी इन नक्षत्रोंसें राजाकोराज्याभिषेककरना कथित है-

सिक्का चलावनेकामुहूर्त॥ मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु योगे प्रशस्ते शनिचंद्रवर्ज्ये वारे तथा पूर्णजलाढ्येचमुद्रा प्रशस्ता शुभदाहिराज्ञां॥

टी॰ सिक्का चलावने के वास्ते मुहूर्त मृदु नक्षत्र मे ध्रुव नक्षत्र मे क्षिप्र नक्षत्र मे चर नक्षत्र मे और उत्तम योगमे शुभ शनि चंद्र यह वार त्याग करना और पूर्ण योग या जल योग मे राजाने रुपया बनावना-

मासादौ चंद्रोदयफलं॥ रौद्राहियाम्यानिलवारुणेंद्राण्याहुर्जघन्यानितथा बृहंति॥ ध्रुवद्विदैवादितीभानिनूनंसमानिशेषाणि पुनर्मुनींद्रैः॥ बृहत्सुधान्यंकुरुते समर्घंजघन्यधिष्ण्येष्वपिदितो महर्घता॥ समेषुधिष्ण्येषु समं हिमांशुर्वदंति संदिग्धमिदंमहांतः॥ ६९॥

टी॰ आर्द्रा आश्लेषा भरणी स्वाती शततारका ज्येष्ठा येनक्षत्र जघन्य संज्ञक होतेहैं और रोहिणी तीनों उत्तरा३ विशाखा पुनर्वसु येनक्षत्र बृहत्संज्ञक होतेहैं शेषबचेहुये नक्षत्र समसंज्ञक होते हैं उसमें बृहत्संज्ञक नक्षत्रमें मासादिमेंचंद्रोदयजोहोयतो अन्नादिक सस्ताहोगा जो मासादिमें जघन्यसंज्ञकनक्षत्रोंमें चंद्रोदयहोयतो महगा होगा जो समसमें चंद्रोदय होयतो समान रहेगा एसेमुनीलोगोंनेलिखाहै-

राशिकृतचंद्रोदयफल॥ मीनमेषादित श्चंद्रःसन्नतंदक्षिणेन्नता॥ मेषेन्नता उत्तरा यांसमनावृषकुंभयोः॥७०

विड्वरं तुसमे चंद्रे दुर्भिक्षं दक्षिणोन्नते॥ सुभिक्षं तेस्मभा

रोग्यमुत्तरा स्त्रियच चंद्रमाः॥ ७१॥ छ॥ छ॥

टी॰ सुक्लपक्षके द्वितीया का चंद्रोदय जो मीनराशिमे वा मेषराशिपर होय तो चंद्रकी उन्न ता दक्षिणतरफ होती है उस्का फल दुर्भिक्षता होगी और जो मिथुनादि मकरपर्यंत राशीनें चंद्रोदय होय तो उत्तरके तरफ चन्द्रकी उन्नता होती है उस्का फल सुभिक्ष क्षेम आरोग्य होता है और वृष कुंभ राशीमें चन्द्रोदय होय तो समता होगी फल राजों को कलह होगी–

पुष्यनक्षत्रका गुणदोष॥ परकष्टं निखिलं निहंति पुष्यो नखलु निहंति परं तु पुष्यदोषं॥ अवमस्तकरोष्टमेपि पुष्ये विहितमुपैनि सदैव कर्म सिद्धिं॥ ७२॥ छ॥

टी॰ पुष्यनक्षत्र अन्य दोषों को नाश करता है परंतु स्वदोषको नाश नहीं करता और अष्टम चंद्रमा होय तो भी पुष्य कार्य सिद्धि करता है–

अन्यदपि॥ सिंहो यथा सर्वचतुष्पदानां तथैव पुष्यो बलवानुडूनां॥ चंद्रे विरुद्धेप्यथ गोचरेपि सिध्यंति कार्याणि कृतानि पुष्ये॥ ७४॥ छ॥ छ॥

टी॰ जैसा संपूर्ण चतुष्पदां से सिंह बलवान है तैसाही नक्षत्रोंमें पुष्य बलवान है गोचरमें ८।४।१२ चन्द्रमा होय तो भी पुष्यनक्षत्र कार्य्य सिद्धी को करता है–

अन्यदपि॥ ॥ग्रहेण विद्धोप्यशुभान्वितोपि विरुद्ध तारोपि विलोमगोपि॥ करोत्यवश्यं सकलार्थसिद्धिं विहाय पाणिग्रहणं तु पुष्यः॥ ७५॥ ॥ छ॥

टी॰ पुष्यनक्षत्र ग्रह करके विरुद्ध होय अथवा अशुभग्रह युक्त होय अथवा प्र तिकूल तारा होय तो भी सकल कार्य सिद्धि अवश्य करके पुष्य करता है परंतु विवाह छोडके

पुंसवननक्षत्राण्याह॥ श्रवणः सकरः पुनर्वसुर्निऋते भं च स पुष्य कोमृगः॥ रविभूसुतजीववासराः कथिताः पुंसवनादि कर्मसु॥ ३१॥ छ॥ छ॥ छ॥

टी॰ श्र॰ ह॰ पुन॰ मू॰ पुष्य॰ मृग॰ इन नक्षत्रोंमें और रवि मंगल गुरु इन वारोंमें लग्न सुद्ध देखके पुंसवन करना पुंसवन कहिये पुरुषही गर्भमें उत्पन्न होय इसलिये पुंसवन संस्कार प्रथम गर्भसे करना अवश्य है द्वितीयादि गर्भमें कृताकृत है सो ३ महिने संस्कार करना–

कर्णवेधनक्षत्राण्याह॥ पौष्णा वैष्णा वकरा श्विनि चित्रा पुष्य वासवपुनर्वसुमैत्रा॥ सैंदवे श्रवणवेधनिधानं निर्दिशंति मुनयो

द्विशिष्टनां ॥३२॥ टी॰ रेवती श्रवण॰ ह॰ऽश्वि॰ चि॰ पुष्य॰ ध॰ पुन॰ऽनु॰ म्रग॰
इन नक्षत्रोंमे बालकों का कर्ण बेध करनको मुनी लोगोंने कहा है—

मौंजी बंधन मुहूर्त ॥ ॥ पूर्वाषाढ हरित्त्रये श्विम्रगभे ह
स्तत्रये रेवती ज्येष्ठापुष्यभगेषु चोत्तरगते भानौ चपक्ष
सिते ॥ गोमीनप्रमदाधनुर्वनचरे शुक्रे र्कजीवेतिथौ
पंचम्यांदशमीत्रयेव्रतमहच्चैवं द्विजन्मद्वये १ ॥

टी॰ पूर्वाषाढ श्रवण धनिष्ठा शतनारका ऽश्विनी म्रग हस्त चित्रा स्वाती रेवती ज्येष्ठ पुष्य पूर्वाफाल्गुनी यह नक्षत्र उत्तरायण सूर्य शुक्लपक्ष वृषमीन कन्याधनसिंह इन लग्नोमे शुक्रवार रविवार गुरुवार पंचमी दशमी एकादशी द्वादशी त्रदोष वर्जित ऐसे शुभ मुहूर्त्तमें ब्राह्मणको मौंजी बंधन करना शुभ है—।

अन्नमत ॥ ॥ ब्रह्मवर्चसकामस्य कार्यं विप्रस्य पं
चमे ॥ राज्ञोबलार्थिनः षष्ठे वैश्यस्यैवार्थिनोष्टमे ॥२॥

टी॰ ब्राह्मणको तपोबल की इच्छा होयतो ५ वर्षमें मौंजी बंधन करना क्षत्रियको बलकी इच्छा होयतो ६ वर्षमे करना वैश्यको धनकी इच्छा होयतो ८ वर्षमे करना शुभ

अन्यमत ॥ विप्राणमुपनयनं वसंतसमये धराधिनाथानां ॥
ग्रीष्मर्तौ शरदिविशां मासाः साधारणाश्च माघाद्याः ॥ ३ ॥

टी॰ ब्राह्मणने बसंत ऋतूमे मौंजी बंधन करना क्षत्रिय को ग्रीष्म ऋतूमे करना वैश्यको शरद् ऋतूमे करना माघादिक मासमें करना शुभ है—

वर्षसंख्या ॥ गर्भाष्टमेष्टमेवाब्दे पंचमे सप्तमे पिवा ॥
द्विजत्वं प्राप्नुयाद्विप्रो वर्षेत्वेकादशेन्टपः ॥ ४ ॥

टी॰ ब्राह्मणको गर्भसे ८ वर्षमे अथवा जन्मसे ८ वर्षमे वा पंचमे वा सप्तमे वर्षमे जनेव ब्राह्मणको उक्त है और ११ वर्षमे क्षत्रियको उक्त जानना—

मौंजी बंधन नक्षत्र ॥ ॥ वेदक्रमाच्छशि शिवाहिकरत्रि
मूलपूर्वासुपौष्णकरसे त्रम्रगदिनीज्ये ॥ धौवेषुचाश्विव
सुपुष्यकरोत्तरेश कर्णेम्रगात्यलघुभैत्रधनादितौसत्त्र

टी॰ चारोवेद परत्यसे मौंजी बंधन नक्षत्र लिखे हुये चक्रपरसे स्पष्ट देखना—

वेदपरत्वेनक्षत्रचक्रम् ॥

ऋग्वेद	यजुर्वेद	सामवेद	अथ·वे·
मृग	रेवती	अश्वि·	मृग·
आर्द्रा	हस्त	धनि·	रेवती
अश्ले·	अनु	पुष्य·	हस्त
हस्त	मृग·	हस्त	अश्वि·
चित्रा	पुनर्व·	उत्तरा	पुष्य
स्वाती·	पुष्य	आर्द्रा	अनु
मूल	उत्तरा	श्रव·	धनि·
पूर्वाषा	रोहि·	०	पुनर्वसु

वर्ज्यनक्षत्र॥ मघाचभरणीज्येष्ठा विशाखा चैवकृत्तिका॥ नक्षत्रपंच कंप्रशस्तैर्नग्राह्यंव्रतबंधने॥ ६॥

टी॰ मघाभरणीज्येष्ठा विशाखा कृत्तिका यह ५ नक्षत्र मौंजी बंधनमें त्याग करनाशुभ – ॥

राजसेवीवैश्यवृत्तिःशस्त्रवृत्तिश्चपाठकः प्राज्ञोर्थवान्म्लेच्छसेवीकेंद्रेसूर्यादिवचरैः

टी॰ केंद्रमेंसूर्य होयतो राजसेवी चंद्रमा होयतो वैश्यका कामकरे मंगल होयतो शस्त्रसेजीवन बुधहोतो पठन करेगुरु होयतो बहुतबुद्धिमान् शुक्र होतो धनयुक्त शनीहोतो नीचकी सेवाकरे –

मौंजीमेंलग्नशुद्धि॥ ॥ चंद्रःक्रूरा वालग्ने शशिसिततनुपाः षष्ठगेहेसितोंऽत्येसर्वेरंध्रेबुधाःक्वचतनुगइनःश्रेष्ठउच्चेंदुरेके॥ विद्यामौंज्युक्तकालेस्थिरचरहरिजत्र्युत्तरब्राह्यहीने मौंज्या ऊर्ध्वगणेशंगिरमपिविधिवत्पूज्ययित्वाऽऽरमेत॥

टी॰ मौंजीमेंलग्नशुद्धी देखनेका प्रकार चंद्रक्रूरग्रहलग्नमें न होय चंद्रशुक्र लग्नपती यह ६ स्थानमें न होय शुक्र १२ स्थानमें नहीय ८ स्थानमें कोईग्रह न होय कोई आचार्य कहते हैंकि लग्नमें सूर्य श्रेष्ठ कोई कहते हैंकी उच्चका चंद्रमा लग्नमें श्रेष्ठ ऐसे लग्न शुद्धीमें मौजी शुभ जो कालमौंजीमें कथन किया उसमें विद्याका आरंभ करना स्थिरनक्ष चरनक्षत्र श्रवणतीनो उत्तरारोहिणी इसका त्याग करना मौंजीकेअंतर गणेशका सरस्वती का विधीसे पूजन करके आरंभ करनाशुभहै॥

अन्यमत॥ ॥ शुद्धिर्नविद्यतेयस्य वर्षेप्राप्तेष्टमेंयदि ॥ चैत्रेमीनगतेभानौतस्योपनयनं शुभं॥ ८॥ ७ ॥

टी॰ बालक को अष्टम वर्ष प्राप्त भया और मौंजी को कालशुद्धि न होय तो चैत्रमे मीनके सूर्यमे करनाशुभ ॥

अन्यमत॥ ॥ वर्णाधिपे बलोपेते उपनीत क्रियाहिता॥ सर्वेषांचगुरौ सूर्ये चंद्रेच बलशालिनी॥ ९॥

टी॰ वर्णपतिबलवान् होयतो मौंजीबंधन श्रेष्ठसबकोगुरुबलसूर्यचंद्रबल होयतो करना

अन्यमत॥ ॥ शुभदोबलवान्भानुर्लग्नगोदशमस्थ या॥ सर्वशाखाधिपोयस्मात्सर्वेषां व्रतबंधने॥ १०॥

टी॰ सूर्य बलवान् लग्नमें १० स्थानमें होयतो शुभ सब शाखा का अधिपती सूर्य है इस वास्ते ११। १० होयतो यज्ञबंध करना शुभ—

गुरुबल॥ झष चाप कुलीरस्थो जीवो वाप्य शुभो वरः॥ अनि शोभनतो दद्या द्विवा हो पनयादिषु॥११

टी॰ मीन धन कर्क इन रासी का गुरु अशुभ होय तथापि विवाह और मौंजी इसे शुभ है

गलग्रहयोगः॥ त्रयोदश्या दिचत्वारि सप्तम्या दिदिन त्रय॥ चतुर्थी कृष्ण पक्षस्य अष्टावेते गलग्रहाः॥१२॥

टी॰ त्रयोदशी चतुर्दशी पोर्णिमा अमावास्या प्रतिपदा सप्तमी अष्टमी नवमी कृष्ण पक्षकी चतुर्थी यह आठ तिथी की गलग्रह संज्ञा सो शुभ कर्म मे त्याग करना—

शूद्राणां व्रतबंध संस्कारमाह॥ मूलार्द्रा श्रवण द्विदैव वसुभे पुष्ये तथा चाश्विसे रेवत्यां मृगरोहिणी दितिकरे मैत्रे तथा वारुणे॥ चित्रा स्वाति मघोत्तरा भृगुसुते भौमे तथा वा बुने शूद्राणां तु बुधैः शुभं हि कथितं संस्कार कर्मोत्तमम्

टी॰ मूल आर्द्रा श्रवण विशाखा धनिष्टा पुष्य अश्विनी रेवती मृग रोहिणी पुनर्वसु हस्त अनुराधा शततारका चित्रा स्वाती तीनो उत्तरा ३ यह नक्षत्रोंमें और सुक्र मंगल बुध इन वारोमे शूद्र को संस्कार करना शुभ है—

अन्यमत॥ ॥शूद्राणां राजपुत्राणां मौंज्यभावे सूत्रबंधनं॥ मौंजी बंधोक्त तिथ्यादौ कार्यं भौम दिनं विना॥१४

टी॰ राजपुत्रको शूद्रको मौंजी बंधनके स्थानमें शास्त्र बंधन करावना परंतु मौंजी बंधनमें तिथी वार नक्षत्र जो कहा है उस्से करना परंतु मंगल का त्याग करना शुभ

अन्यमत॥ ॥जीवे शुक्रे च भूपुत्रे चंद्र तारा बलान्विते ॥मौंजीबंधर्क्ष तिथिषु कुजवर्जित वासरे॥१५॥ ॥

टी॰ गुरु शुक्र मंगल चंद्रबल ताराबलमे मौंजी बंधनमें जो नक्षत्र तिथी वार जो कहे है उस्से शूद्रको संस्कार करना शुभ परंतु मंगल वारका त्याग करना शुभ है—

अन्यमत॥ ॥केशांतं षोडशे वर्षे ब्राह्मणस्य विधीयते ॥राजन्य बंधोर्द्वाविंशे वैश्यस्य ह्यधिके ततः॥१६॥

टी॰ केशांत कहिये दाढी वनावना ब्राह्मणने १६ मे वर्ष राजाने २२ वर्ष वैश्यने २४ वर्ष मे करना॰

विवाह प्रकर्ण

तत्रादौ दैवज्ञपूजनं॥ दैवज्ञं पूजयेदादौ फलतांबूल पूर्वकं॥ निवेदयेत्सुमनसा स्वकन्योद्वाहनादिकं॥ १॥

टी॰ प्रथम ज्योतिषीकी यथा शक्ति फल तांबूल पूर्वक पूजा करनी तनतर पिताने कन्या के विवाहका शुभाशुभ प्रश्न करना-

विवाहप्रश्नमाह॥ ॥ विषमभांशगतौ शशिभार्गवौ तनुगृहं बलिनौ यदि पश्यतः॥ रचयतो वरलाभमिमौ यदा युगलभांशगतौ युवतिप्रदौ॥ २॥ ७॥

टी॰ प्रश्नकालमें चंद्र शुक्र यह विषम राशीमें वा अंशमें होय और दूनो बली होय के लग्न को देखे तो कन्या को पती प्राप्ति और सम राशीमें वा अंशमें चंद्र शुक्र होय तो पुरुषको स्त्री प्राप्ति कहना शुभ हैं-

प्रश्नसमयेऽशुभानि॥ ॥ अष्टर्विलग्नात्सबलः शशांकः षष्ठस्थितो मृत्युगृहस्थितो वा॥ यद्यष्टमाब्दान्तरतो विवाहात्करोति मृत्युं करकन्ययोश्च॥ ३॥

टी॰ प्रश्नलग्नसें बलवान् चंद्रमा षष्ठ अथवा अष्टम स्थानमें होय तो विवाहसे अष्टम वर्षमें दूनो स्त्री पुरुष को अरिष्ट जाननना-

अन्ययोगः॥ ॥ यद्युदयस्थश्चंद्रस्तस्माद्यदि सप्तमो भवेद्भौमः॥ समाष्टकं सजीवति विवाहकालात्परं पुरुषः

टी॰ प्रश्न लग्नमें चंद्रमा होय और चंद्रमासे सप्तम स्थानमें मंगल होय तो विवाहसे अष्टम वर्षमें पतीको अरिष्ट जानना-

अन्ययोगः॥ ॥ स्वनीचगः शत्रुदृष्टः पापः पंचमगो यदा॥ मृतपुत्रां करोत्येव कुलटां वा न संशयः॥ ५॥

टी॰ प्रश्नकालमें पापग्रह अपने नीचस्थानमें होय अथवा शत्रु गृह देखते होय वा पापग्रह पंचमस्थानमे होय तो संतानका नाश और वेश्या होय ऐसे जानना-

प्रश्नसमयेऽशुभान्याह॥ भिद्यति यद्युदकुंभः शयनासनपादुकास्थभंगो वा॥ प्रश्नसमये प्रियस्यास्तस्या वैधव्यमादेश्यं

टी॰ विवाहप्रश्नकालमें अकस्मात् जलकुंभका भंग होय अथवा निद्रा नाश आसन भंग पादुकाभंग ऐसा जिसकन्याके विवाह प्रश्नसमय होय उसको विधवा योग जानना-

स्त्रीणां कुयोगः॥ ॥ मूलजा च गुरुं हंति व्यालजा कु

ल्टांगना॥ विशाखजादेवरघ्नीज्येष्ठजाज्येष्ठनाशका॥

टी॰ कन्याजन्ममूलनक्षत्रमें होयतोगुणनाश आश्लेषानक्षत्रमेहोयतो वेश्याहोय विशाखामेहोयतोपतीकेछोटेभाईकानाशज्येष्ठामेहोतोपतीकेवडेभाईकानाशजानना-

अन्यमत॥ ॥अज्येष्ठाकन्यकायत्रयज्येष्ठपुत्रोवरोयदि ॥व्यत्ययोवातयोस्तत्रज्येष्ठोमासः शुभप्रदः॥ ८॥

टी॰ कन्याज्येष्ठन होय पुरुषज्येष्ठहोयऐसादूगोकाभेद होयतोज्येष्ठमासमेंकरनाशुभ-

वर्षप्रमाणमाह॥ ॥षडब्दमध्येनोद्वाह्या कन्यावर्षद्वयंयतः ॥सोमोभुंक्तेततस्तद्वद्गंधर्वश्चतथानलः॥ ९ ॥ ७॥

टी॰ प्रथम ६वर्षकन्याकाविवाहकरनानही कारणप्रथम २वर्षचंद्रमाभोग करताहैनं तरदोवर्षगंधर्वभोगकरतेहैंनंतर २वर्षअग्नीभोगकरताहैनंतरविवाहकोशुद्धजानना-

वर्षप्रमाण॥ ॥ अष्टवर्षाभवेद्गौरीनववर्षातुरोहिणी॥दशवर्षाभवेत्कन्याद्वादशेवृषलीमता॥ गौरीदानान्नागलोकंवैकुंठरोहिणीददत्॥ कन्यादानाद्ब्रह्मलोकंरौरवंतुरजस्वला॥ ११ ॥ ११॥

टी॰ आठ८वर्षकीकन्याहोयतवउसकानामगौरीनव९वर्षकीरोहिणीसंज्ञादशवर्षकीहोयतो कन्याउसकानाम वारवर्षकी होयतवशूद्रीनामजाननाइसकाफलगौरीदानसेनागलोकप्राप्ती रोहिणीदानसेवैकुंठप्राप्तीकन्यादानसेब्रह्मलोकप्राप्तीशूद्रीदानसेघोरनरकप्राप्ती ऐसायहदान फलजानना-

अन्यमत॥ ॥विवाहोजन्मतस्त्रीणांयुग्मेब्दे पुत्रपौत्रदः॥अयुग्मेश्रीप्रदंपुंसांविपरीतेतुमृत्युदः॥ १२॥

टी॰ स्त्रीकोविवाहकालजन्मसेसमवर्षमे करनातोपुत्रपौत्रप्राप्तीपुरुषकोजन्मसे विषमवर्षमेंविवाह होयतोल॰ क्ष्मीप्राप्तीइसेविपरीत होयतोमृत्युप्राप्तीजानो

अन्यमत॥ ॥कन्याद्वादशवर्षाणियाप्रदत्तावसेद्गृहे ॥ब्रह्महत्यापितुस्तस्याःसाकन्यावरयेत्स्वयं १३॥

टी॰ कन्यावार१२वर्षकी होयऔरपिताकेघरमेंरहेतोपिताकोब्रह्महत्याप्राप्तहोतीहै अनंतरकन्यानेअपानेइच्छासेपतीकरना ऐसाआचार्य कहतेहै-

मंगलविचार॥ ॥लग्नेव्ययेचपातालेयामित्रेचाष्टमेकुजे॥पत्नीहंतिस्वभर्तारंभर्तुर्भार्याविनाशयेत्॥

टी॰ स्त्रीको वा पुरुषको मंगल रहताहै तिस्का प्रकार १।१२।४।७।८ इतने स्थानमें मंगल हो यतो स्त्री मंगली कहावती है तो मंगलसे मंगल होय तो करना अथवा पुरुषके ग्रह बलवान् होय करना शुभः॥ भौमपरिहार॥ जामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुके पि वा॥ नवमे द्वादशे चैव भौमदोषो न विद्यते॥ १५॥ ॥

टी॰ स्त्रीको वा पुरुषको ७।१।४।९।१२। इतने स्थानमें शनी होय तो मंग॰ का दोष न होजानना

ज्येष्ठविचार॥ ॥ द्विज्येष्ठौ मध्यमौ प्रोक्तावेकज्येष्ठं शुभावहः॥ ज्येष्ठत्रयं न कुर्वीत विवाहे सर्वसंमतं॥ १६॥

टी॰ पुरुष ज्येष्ठ वा कन्या ज्येष्ठ होय अथवा ज्येष्ठमास होय ऐसा कोई २ ज्येष्ठमें करना मध्यम एक १ ज्येष्ठमें करना शुभ और पुरुष ज्येष्ठ स्त्री ज्येष्ठ मासे ज्येष्ठ तीनो ज्येष्ठ होंतो विवाह करना नहीं

अन्यमत॥ ॥ ज्येष्ठायाः कंन्यकायाश्च ज्येष्ठपुत्रस्य वै मिथः॥ विवाहो नैव कर्त्तव्यो यदि स्यान्निधनं तयोः॥ १७॥

टी॰ प्रथमगर्भमें जो होय उस्को ज्येष्ठ कहना सो पुरुष ज्येष्ठ होय और कन्या भी ज्येष्ठ होय तो करना नहीं दुःखदायक होताहै॥

अन्यमत॥ ॥ दशवर्षव्यतिक्रांता कन्या शुद्धिविवर्जिता॥ तस्यास्तारेंदुलग्नानां शुद्धो पाणिग्रहो मतः॥

टी॰ दशवर्षके नंतर कन्या शुद्धीसे रहित होती है तो तारा शुद्धी चंद्र शुद्धी लग्न शुद्धी देखके विवाह करना शुभ है—

कन्यालक्षणमाह॥ हंसस्वरां मेघवर्णां मधुपिंगललोचनां॥ तादृशीं वरयेत्कन्यां गृहस्थः सुखमेधते॥ १८॥

टी॰ स्त्रीलक्षण स्त्रीका बोलना हंसके ऐसा होय मेघके ऐसा वर्ण होय नेत्रका वर्ण सहतके ऐसा होय वा पिंगल कहिये कुछ सफेद कुछ काला होय ऐसे कन्यासे विवाह करे तो गृहस्थ सुख पावता है ऐसा जानना—

वरलक्षणमाह॥ ॥ जातिविद्यावयः शीलमारोग्यं बहुपक्षता॥ अर्थित्वं वित्तसंपत्ति रष्टावेते वरे गुणाः॥ १९॥

टी॰ पुरुषलक्षण जातीमें उत्तम होय विद्यायुक्त होय वयमें वृद्धत होय स्वभाव अच्छा होय निरोगी परिवार बहुत होय स्त्रीकी इच्छा होय द्रव्य संपत्ती होय ऐसा आठ लक्षणसे युक्त वर होय तो कन्या देना—

वरदोषमाह॥ ॥ दूरस्थानामविद्यानां मोक्षधर्मान्

वर्तिने॥ शूराणां निर्धनानां च न देया कन्यका बुधैः २०

टी॰ पुरुषके दोष दूर रहने वाले को कन्या देना नही मूर्ख को देना नही मोक्षधर्म जो योगाभ्यासादिक करे उसको देना नहीं शूर को देना नही दरिद्री को देना नही ऐसा पंडित लोक कहते हैं—॥

वर्णाद्यष्टगुणनाम॥ ॥वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकं॥ गणमैत्रं भकूटं च नाडी चैते गुणाधिकाः

टी॰ वर्णसे लेके नाडी तक गुण के स्थान के वास्ते यथाक्रमसे चक्रमे स्पष्ट देखना—

वर्ण॥ ॥मीनालिकर्कटा विप्रा नृपा सिंहाजधन्विनः॥ कन्या नक्र वृषा वैश्या शूद्रा युग्मतुलाघटाः

वश्य॥ ॥द्वंद्वचापघटकन्यकातुला मानवा अजवृषौ चतुष्पदाः॥ कर्कमीनमकरा जलोद्भवा केसरी वनचरालिकीटकाः॥ ३॥ ७॥ ७॥ ॥

वश्यावश्यज्ञानमाह॥ हित्वा मृगेंद्रं नरराशिवश्याः सर्वे तथैषां जलजाश्च भक्ष्याः॥ सर्वेपि सिंहस्य वशे विनालिं ज्ञेयं नराणां व्यवहारतो न्यत्॥ २४ ॥ ॥

टी॰ इन तीनो श्लोकों का टीका चक्रपरसे समझलेना—

वर्ण	वश्य	तारा	योनि	१	२	३	४	ग्रह	गणमै	भकूट	नाडी	५	६	७	८
मेष	वृष	मिथु॰	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चि	धन	मक॰	कुं	मीन	राशि			
क्षत्री	वैश्य	शूद्र	ब्राह्म॰	सिंह	वैश्य	शूद्र	ब्राह्म	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	ब्राह्म	वर्ण			
चतुष्पद	चतुष्पद	मानव	जलचर	वनचर	मानव	मानव	वनचर	मानव	जलचर	मानव	जलचर	वश्य			

तारावल॥ ॥कन्यर्क्षाद्वरभं यावत्कन्याभं वरभादपि॥ गणयेन्नवभिः शेषे त्रिष्वद्रिभमसत्स्मृतम्॥

टी॰ कन्याके नक्षत्रसे वरनक्षत्र तक गिनना जो अंक नवके भीतर तृतीय ३।५।७। आवे तो अशुभ जानना कदाचित नवसे विशेष आवे तो नवसे भाग देना ऐसा क्रमसे वरके नक्षत्रसे कन्याका नक्षत्र गिनना पूर्व लिखे क्रमसे जानना।

३	५	७	१२	१४	१६
२१	२३	२५	०	०	०

योनि॥ अश्वो गजश्छागसर्पौ सर्पश्वानविडालकाः॥ मेषो विडालकश्चैव मूषको मूषकश्च गौ महिषी च ततो व्याघ्रो महिषो व्याघ्र कः क्रमात्॥ मृगो

मृगस्तथाश्वाच कपिर्नकुलएवच ॥२७॥ नकुलोवानरः सिंहोतुरगोमृगराट्पशुः ॥ अयोरणक्रमेणैव अश्वि न्यादिभयोनयः ॥२८॥ वैरयोनि ॥ गोव्याघ्रंगजसिंहमश्व महिषंपूर्वेणंचवभ्रूरगंवैरंवानरमेषयोश्चसुमहत्तद्ध द्विडालोद्रं ॥ लोकानांव्यवहारतोन्यदपितज्ज्ञात्वाप्र यत्नादिदंदंपत्योर्नृपभृत्ययोरपिसदावर्ज्यंशुभस्यार्थिभिः गण ॥ ॥ दस्त्रादितीज्यमृगमैत्रकरानिलांत्यलक्ष्मीश्र भानिनवदेवगणाप्रदिष्टाः ॥ पूर्वात्रयांतकविधात्रह रोत्तराश्चधिष्ण्यानिमानुषगणोत्रनवप्रदिष्टः ॥३२॥ पि त्रहिदेव ॥ विशातंद्रमूलवस्वाहि ॥ चित्रर्क्षगणोसुराख्यः ॥ देवासुराणांमनुजासुराणांवैरंमहास्त्रेहमथेतरेषां ॥ नाडी ॥ अंत्यनाडी ॥ कृत्तिकारोहिणीस्वातीमघाश्लेषा चरेवती ॥ श्रवणश्चोत्तराषाढा विशाखाअंत्यनाडीकी ॥ मध्यनाडी ॥ पूर्वाफाल्गुनी चित्रा चधनिष्ठाभरणीमृगाः पूर्वाषाढानुराधाचपुष्योहिर्बुध्यमेवच ॥४१॥ आद्य नाडी ॥ पूर्वाभाद्रपदामूलंज्येष्ठाहस्तपुनर्वसुः ॥ अश्वि न्यार्द्राशतभिषाचोत्तरात्वेकनाडिका ॥ ४२ ॥

टी॰ योनि गण नाडी अश्विनी आदिलेके सत्ताईसनक्षत्रइनसबकाचक्रआगेस्पष्टहै

यहमैत्रीचक्रं ॥ मित्राणिद्युमणेःकुजेज्यशशिनःशुक्रा र्कजौवैरिणौसौम्यश्चास्यसमोविधोर्बुधरवीमित्रेनचा स्यहिवत् ॥ शेषाश्चास्यसमाःकुजस्यसुहृदश्चंद्रेज्यसूर्या बुधःशत्रुःसुक्रशनीसमौचशशभृत्सूनोःसिताहस्करौ ३० मित्रेचास्यरिपुः शशीगुरुशनिक्ष्माजाःसमाश्चेतर्मि त्राण्यर्ककुजेंदवोबुधसितौशत्रूसमःसूर्यजः ॥ मित्रे सौम्यशनीकवेःशशिरवीशत्रूकुजेज्यौसमौ मित्रेसु क्रबुधौशनेरविशशिक्ष्माजाहिषोऽन्यःसमः ॥ ३१ ॥

टी॰ सूर्यादिग्रहकामित्रसमशत्रुत्त्वानकेवास्तेचक्रमदेखना आगेचक्रम् ॥

नक्षत्र	योनि	गण	नाडी	युंजा	वैर
अश्विनी	अश्व	देव	आदि	पूर्वा	भैंस
भरणी	गज	मनुष्य	मध्य	पूर्वा	सिंह
कृत्तिका	मेंढा	राक्षस	अन्त्य	पूर्वा	वानर
रोहिणी	सर्प	मनुष्य	अन्त्य	पूर्वा	नौला
मृगशिर	सर्प	देव	मध्या	पूर्वा	नौला
आर्द्रा	श्वान	मनुष्य	आदि	मध्य	मृग
पुनर्वसु	मार्जार	देवता	आद्य	मध्य	मूसा
पुष्य	मेंढा	देवता	मध्य	मध्य	वानर
आश्लेषा	मार्जार	राक्षस	अन्त्य	मध्य	मूसा
मघा	मूसा	राक्ष	अंत्य	मध्य	मार्जार
पूर्वा	मूसा	मनुष्य	मध्य	मध्य	मार्जार
उत्रा	गौ	मनुष्य	आदि	मध्य	वाघ
हस्त	भैंस	देव	मध्य	मध्य	अश्व
चित्रा	व्याघ्र	राक्षस	अंत्य	मध्य	हाथी
स्वात	भैंसा	देव	अंत्य	मध्य	अश्व
विशाखा	व्याघ्र	राक्षस	अन्त्य	मध्य	हाथी
अनुराधा	हिरण	देव	मध्य	मध्य	कुत्ता
ज्येष्ठा	मृग	राक्षस	आद्य	पर	कुत्ता
मूल	श्वान	राक्षस	आद्य	पर	बीलाव
पूर्वाषा	वानर	मनुष्य	मध्य	पर	मेंढा
उत्तराषा	नकुल	मनुष्य	अंत्य	पर	व्याघ्र
अभिजित	नकुल	मनुष्य	अंत्य	पूर	सर्प
श्रवण	नकुल	देव	अन्त्य	पूर	मेंढा
धनिष्ठा	वानर	राक्षस	मध्य	पूर	हाथी
शतभिषा	सिंह	राक्षस	आद्य	पूर	भैंसा
पूर्वाभा॰ उत्तराभा॰	अश्व गज	मनु २	आद मध्य	पूर	व्याघ्र
रेवती	पशु	देव	अंत्य	पूर्वा	सिंह

राशि अनुसार स्वामी

राशि	वर्ण	वश्य	स्वामी
मेष	क्षत्री	चतु॰	भौ॰
वृष	वैश्य	चतु	शुक्र
मि॰	शूद्र	मान	बुध
क	विप्र	जल	चंद्र
सिं	क्षत्री	वन॰	रवि
कं	वैश्य	मान	बुध
तु॰	शूद्र	मान	शुक्र
वृ	विप्र	कीट	भौ
ध	क्षत्री	मान	गुरु
म	वैश्य	जल	शनि
कुं॰	शूद्र	मान	शनि
मी	ब्राह्म	जल	गुरु

अवर्ग	१६	गरुड
कवर्ग	५	मार्जार
चवर्ग	५	सिंह
टवर्ग	५	कुक्कुर
तवर्ग	५	सर्प
पवर्ग	५	चूहा
यवर्ग	४	मृग
शवर्ग	४	मृग
वर्ग	०	०

चरण	राशि
४	
४	मेष
१/३	मेष
४	वृष
२/२	
४	मिथु
३/१	
४	कर्क
४	
४	
४	सिंह
१/३	
४	कन्या
२/२	
४	तुल
३/१	
४	वृ॰
४	
४	
४	धन
१/३	
४	म॰
३/२	
४	कुम्भ
३/१	
४	
४	मीन

ग्रह॰	रवि	चंद्र	मंगल	बुध॰	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	चंद्र मंग॰ गुरु	रवि बुध	गुरु चंद्र रवि	रवि शुक्र	रवि चंद्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र
सम	बुध	मंग॰ गुरु शुक्र॰ शनि	शुक्र शनि	मंग॰ गुरु शनि	शनि	मंगल गुरु	गुरु
शत्रु	शनि॰ शुक्र॰	०	बुध	चंद्र	बुध शु॰	रवि॰ चंद्र	रवि॰ चंद्र मंग

भकूटनवपंचक॥ ॥मीनेलिभ्यांयुतेकीटेकुंभेमिथुन संयुते॥ मकरेकन्यकायुक्ते न कुर्यान्नव पंच के॥ ३४

टी॰ मीनसे नवम वृश्चिक वृश्चिक सेमीन पंचम राशी होती है और कर्क सेमीन नवम मीनसे कर्क पंचम नो यह नव पंचम और कुंभ मिथुन और मकर कन्या यह नवपंचम त्याग करना संतान नाश कारक है इस्वास्ते—

मृत्युषडाष्टक॥ ॥मेषकन्यकयोरेवतुलामीनक योस्तथा॥ युग्मालयोस्तुवृधैर्ज्ञेयोमृत्युर्वैनक्रसिंहयो ॥३५॥ कुंभकर्कटयोश्चैव वृष को दंडयोस्तथा॥ ॥

टी॰ मेष कन्या इनका परस्पर षष्ट ६ आठ ८ इसी क्रमसे तुला मीन मिथुन वृश्चिक मकर सिंह कुंभ कर्क धन वृष यह दो २ राशी मृत्यु षडाष्टक हैं इसका त्याग करना—

प्रीतिषडाष्टक॥ ॥सिंहोमीनयुतश्चैव तुला वृषयुत स्तथा॥ धनुः कर्कयुतं चैव कुंभ कन्य कयोस्तथा॥ ३६॥ नक्रस्य मिथुने प्रीतिरजाल्योः प्रीतिरुत्तमाः॥ ७॥

टी॰ सिंह मीन तुला वृष धन कर्क कुंभ कन्या मकर मिथुन मेष वृश्चिक यह दो २ राशी प्रीतिषडाष्टक हैं सो सुभ जानना—

द्विर्द्वादश॥ ॥मेषरुषौ वृषमिथुनौ कर्क हरी तुलक न्यके॥ अलिधनुषीमकरकुंभावेतौ द्विर्द्वादशौ राशी ३७

टी॰ मेष मीन वृष मिथुन कर्क सिंह तुला कन्या वृश्चिक धन मकर कुंभ यह दो २ राशी द्वि र्द्वादश आवे तो सुभ जानना इसे अन्य राशी मे द्वि र्द्वादश होय तो दरिद्री जानना

अन्यमत॥ ॥वरस्य पंचमे कन्या कन्यायां नवमे व रः॥ एतत्त्रिकोणकं ग्राह्यं पुत्र पौत्र सुखा वहं॥ ३८॥

टी॰ वरसे पंचम कन्या होय कन्यासे नवम वर होय तो यह नवपंचम लेना पुत्र पौत्र सुख दायक होता है—

अन्यमत॥ ॥चतुर्थं दशमश्चैव तृतीयैकादशः शुभः॥ उभयः सप्तमः साम्यमेकर्क्षं शुभमुच्यते॥ ३९॥

टी॰ वरकन्या की राशी परस्पर चतुर्थ दशम अथवा तृतीय एकादश होय तो सुभ होगे सप्तम होय तो सम शुभ जानना वरके वा कन्या के राशीपती एक होय तो सुभ जानना—

नक्षत्रचरणस्थान॥ अश्विनीभरणीकृत्तिकापादंमेषः॥कृत्तिकास्त्रयोरोहिणीमृगशिरार्द्धंवृषभः॥मृगशिरार्द्धं आर्द्रापुनर्वसुत्रयोमिथुनः॥पुनर्वसोःपादंपुष्य आश्लेषांतंकर्कटकः॥मघापूर्वाउत्तराःपादंसिंह॥उत्तरात्रयंहस्तचित्रार्द्धंकन्या॥चित्रार्द्धंस्वातीविशाखात्रयस्तुलः॥विशाखापादंअनुराधाज्येष्ठांतंवृश्चिकः॥मूलपूर्वाषाढाउत्तराषाढाःपादंधनुः॥उत्तराषाढात्रयंश्रवणधनिष्ठार्द्धंमकरः॥धनिष्ठार्द्धंशततारकापूर्वभाद्रपदात्रयंकुंभः॥पूर्वाभाद्रपदापदंउत्तराभाद्रपदारेवत्यंतंमीनः॥

टी॰एकनक्षत्रके४चरणतो९चरणमेएकराशीहोतीहैइसीप्रकारचक्रमेंस्पष्टहैचक्रपीछेहै

अन्यदपि॥ ॥एकराशौपृथग्धिष्ण्येयुत्तमंपाणिपीडनं॥एकधिष्ण्येपृथग्राशौसर्वैक्येपिचमृत्युदं॥

टी॰स्त्रीपुरुषकीएकराशीहोयनक्षत्रकाभेदहोयतोविवाहशुभ औरएकनक्षत्र होयराशीमेंभेदहोय औरचरणएकहोयतोमृत्युकारकहोताहै इसमेंविवाहकरनानहीं

गुणकामेलनप्रकार

वर्णकागुण१

स्त्रीपुरुषकाएकवर्णहोयतोगुण१

अथवापुरुषकाउच्चवर्णहोयतो१

इससेविपरीतहोयतोगुण०

	वरकागुण			
स्त्रीकागुण	ब्रा	क्ष	वै	शू
ब्राह्मणी	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

वश्यकागुण२

वैरभक्ष्येगुणाभावोद्वयोःसख्येगुणद्वयं॥वश्यवैरेगुणश्चैकोवश्यभक्ष्येगुणार्धकं॥१॥ टी॰शत्रुभक्ष्य होयतोगुण०दूनोसमानजातीहोयतोगुण२ वश्यशत्रुहोयतोगुण१वश्यभक्ष्यहोयतोगुण आधाजानना॥

चतुष्पद	२	॥	१	०	२
मानव	॥	२	०	०	०
जलचर	१	०	२	२	२
वनचर	०	०	२	२	०
कीटक	१	०	१	०	२

तारोकेगुण॥एकनोल्भतेतराशुभाचैवाशुभान्यतः॥तदासार्द्धोगुणश्चैवताराशुध्यासिधस्मृतः॥उभयोर्नशुभातारास्तदाशून्यंसमादिशेत्॥ टी॰ स्त्रीवापुरुषकिसीकाशुभतारा औरकिसीकाअशुभहोयतो

गुण ३ जानना और दोनो का एक तारा अथवा शुभतारा होयतो ३ गुण जानना और दोनो का अशुभ तारा होयतो गुण शून्य जानना—

तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	३॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	१	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	१	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

योनीके गुण॥ महावैरेच वैरेच स्वस्वभावे यथाक्रमं॥ मैत्रैच वातिमैत्रेच खेवंद्वित्रि चतुर्गुणं॥

टी॰ स्त्रीपुरुषमे दोनोमे एकसे महावैर होयतो गुण शून्य दोनोसे परस्पर शत्रुत्व होयतो गुण १ दोनोंका स्वभाव एक होयतो गुण २ दोनो सामान्य मित्र होयतो गुण ३ दोनोकी वहुत मित्रता होयतो गुण ४ दोनो एकजाती होयतो गुण ४ जानना—

	अ॰	ग॰	मे॰	स॰	श्वा	मा॰	मू॰	गो	भैं॰	व्या	मृ	वा॰	ने॰	सिं
अश्व	४	२	२	३	२	२	२	१	०	१	३	३	२	१
गज	२	४	३	३	२	२	२	२	३	१	२	३	२	०
मेष	२	३	४	२	१	२	१	३	३	१	२	०	३	१
सर्प	३	३	२	४	२	१	१	१	१	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	१	२	४	२	०	२	२	१	०	२	१	१
मार्जार	२	२	२	२	२	४	४	२	२	२	३	३	२	२
मूषक	२	२	१	१	१	०	२	२	२	२	२	२	२	१
गौ	१	२	३	२	२	२	२	४	३	०	३	२	२	१
भैंस	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	१	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
मृग	३	२	२	२	०	३	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	३	३	०	२	२	३	२	२	२	१	२	४	३	२
नेउर	२	३	३	०	१	२	१	२	२	२	२	३	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	१	१	१	३	२	२	२	२	४

ग्रहमैत्रीका गुण॥ नत्रैकाधिपतित्वेच मित्रत्वे गुणपंचकं चत्वारः सममित्रत्वे द्वयोःसाम्ये त्रयोगुण॥४६॥ मित्रवैरे गुणस्त्वेको समवैरे गुणार्द्धकं॥ परस्परं खेटवैरे गुणशून्यं विनिर्दिशेत

टी॰ ग्रहमैत्रीमे गुण विचार दोनोके राशिस्वामी एक होय अथवा मित्रता होयतो गुण ५ दोनोमे सम मित्र होयतो गुण ४ दोनो सम होयतो गुण ३ दोनोमे मित्र शत्रू होयतो गुण १ दोनोमे सम शत्रू होयतो॥ आधा गुण दोनोसे शत्रू होयतो गुण शून्य जानना—

गणके गुण॥ पुरुष स्त्रीये दोनोका एक गण होयतो गुण ६ अथवा पुरुष देवगण

कन्यामनुष्यगण होयतो गुण ६ दोनोंमेंमनुष्यराक्षससेवैरगुण शून्य दोनोंमें देवराक्षसहोयतोगुण ६ यहरीतसेगणकेगुणजानना।

वर			
	दे	म॰	रा
देव	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	१	०	६

वर							
	र	चं	मं	बु॰	बृ	भृ	श
र	५	५	५	३	५	०	०
चं	५	५	४	१	४	॥	॥
मं	५	४	५	॥	५	३	॥
बु	३	१	॥	५	॥	५	४
बृ॰	५	४	५	॥	५	॥	३
भृ	५	॥	३	५	॥	५	५
श॰	०	॥	॥	४	३	५	५

॥ भकूटकेगुण ॥

एकराशी होयनक्षत्रभिन्न होय अथवा १ नक्षत्र होय चरणभिन्न होयतोगुण ७ दोनोसमसप्त होयतोगुण ७ तृतीय एकादश होयतो गुण ७ चतुर्थ दशम होयतोगुण ७ भिन्नराशी १ नक्षत्र होयतोगुण ५ प्रीतिषडाष्टक और द्विर्द्वादशनवपंचम इस्मे परस्पर योनी शत्रुता होयतो भकूट गुण ६ जानना– शुभदोनोकापरस्परनक्षत्र एक और चरणभी १ होयतोगुण शून्यजानना–

	मे	वृ	मि	क॰	सिं॰	कं॰	तु॰	वृ॰	ध॰	म॰	कुं॰	मी॰
मष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	७
वृष	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०	०
कर्क	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	७
कन्या	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	०
तुला	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०
वृश्चि॰	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	७
धन	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७
कुंभ	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७

नाडीकेगुण॥ टी॰ दोनोंकी भिन्न नाडी होयतो गुण ८ एकनाडी होयतो गुण शून्यजानना इसप्रकारसे अठारहगुण आवेंतो शुभ इस्से न्यून आवेतो अशुभ १८ सेअधिक आवेतोउत्तमजानना–

	वरकेगुण		
	आद्य	म	अं।
आद्य	०	८	८
मध्य	८	०	८
अंत्य	८	८	०

वर्णफल॥ वर्णश्रेष्ठतुयानारीवर्णहीनस्तुयःपुमान्॥ विवाहंयदिकुर्वीत तस्याभर्त्ताविनश्यति॥४८॥

टी॰ वर्णमेंस्त्रीज्येष्ठहोय औरपुरुषहीनवर्ण होय कदाचित् विवाह होयतोपतीनाशकारकजानना–॥ योनीफल॥ टी॰ घोडा और भैंसा ऐसेवैरयोनीपरस्परदोनोंकी होय औरराजासेवकमेंभीऐसाघेर होयतोत्यागकरनाशुभ॰

गणफल॥ ॥स्वगणेचोत्तमाप्रीतिर्मध्यमानरदेवयोः कलहोदेवदैत्यानांमृत्युर्मानवराक्षसः॥ ४९॥ ७॥

टी॰ स्त्रीपुरुषका एक गण होयतो उत्तम प्रीति मनुष्य देव होयतो मध्यम देव दैत्य होयतो कलह मनुष्य राक्षस होयतो मृत्युकारक होताहै-

कूटफलमाह ॥ षष्ठाष्टके मृत्युर्पंचमनवमे नपत्यता ज्ञेया ॥ द्विर्द्वादशे निधनता शेषेषुमध्यमता सेव्या ॥ ५०

टी॰ स्त्रीपुरुषका षडाष्टक मृत्युकारक और नवपंचम संतान नाश कारक और द्विर्द्वादश दरिद्रकारक शेष जो राशी उसमें शुभ-

नाडीफल ॥ ॥ अग्रनाडी वधेद्भर्त्ता मध्यनाडी वधेद्द्वयं ॥ पृष्ठनाडी वधेत्कन्या म्रियते नात्र संशयः ॥ ५१ ॥

टी॰ स्त्रीपुरुषकी आद्यनाडी होयतो पती को अशुभ और दूनो की मध्यनाडी होयतो दोनो को अशुभ और दोनो की अंत्यनाडी होयतो कन्याको अशुभ जानना-

अथ सत्कूट

टी॰ स्त्री नक्षत्रसे पुरुष नक्षत्र नगीच होयतो अशुभ और पुरुष नक्षत्रसे स्त्री नक्षत्र दूर होयतो शुभ जो एक नक्षत्र अथवा दोनो के एक स्वामी होयतो शुभ जानना-

नक्षत्रमेलन ॥ जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभं ॥ व्यत्ययेन यदा योज्यं दंपत्योर्निधनप्रदं ५२

टी॰ पुरुषका जन्मनक्षत्र होयतो स्त्री के जन्मनक्षत्रसे मेलन करना और पुरुष का नामनक्षत्र होयतो स्त्री के नाम नक्षत्रसे मेलन करना शुभ इससे विपरीत होयतो मृत्युकारक होताहै

वर्णपरत्वे मेलन ॥ ग्रहमैत्रं ब्राह्मणानां क्षत्रियाणां गण स्तथा ॥ वैश्यानी राशिकूटं हि शूद्राणां योनिरुत्तमा ५३

टी॰ ब्राह्मण को ग्रहमैत्री और क्षत्रिय को गण विचार वैश्य को राशि कूट शूद्र को योनी विचार करना शुभ-

अन्यमत ॥ जन्ममासे जन्मर्क्षे न जन्मदिवसेपि च ॥ आद्यगर्भसुतस्याथ दुहितुर्वा करग्रहः ॥ ५४ ॥

टी॰ प्रथम गर्भ में जो होय उसका विवाह जन्म महिने मे वा जन्म राशी मे वा जन्म दिन मे करना नही स्त्री होय अथवा पुरुष होय-

स्त्रीपुरुषका एकत्र गुण जानने का चक्र

		रा.	मे.	मे.	मे.	वृ	वृ.	वृ	मि.	मि	मि	क	क	क	सिं	सिं	सिं.	कं	कं.
		भा	१	१	।	।।।	१	।।	।।	१	।।।	।	१	१	१	१	।	।।।	१
राशि	भा	नक्ष	अ	भ.	कृ	कृ	रो	मृ.	मृ.	आ.	पुन	पुन	पु.	आ	म	पू	उ	उ	ह
मेष	१	अ.	३६	३३	३२	२४	२१	२२	२७	२८	१९	३२॥	३१॥	२८	२७॥	२१॥	३२	११	१२
मेष	१	भ	३४	३४	३४	३१	२२॥	१४॥	१९	२६	२७	३१॥	३३॥	२५॥	३२॥	२४॥	३२॥	२१॥	२०
मेष	।	कृ	३२॥	३२	३६	३३	१०	१६॥	२०	२२	२१	२५	२३॥	२३॥	२३	२६॥	२६॥	२५॥	१५
वृष	।।।	कृ	१८॥	१८॥	३६	३६	३४	३२॥	२५॥	२५॥	२५॥	२२	२४	२०	१८	२१॥	३१॥	२८	२८
वृष	१	रो	२३॥	२४॥	१३	३४	३६	३४॥	३५॥	३२	२९	२६॥	२९	१२	१०	२४	२७॥	३४	३४
वृष	।।	मृ	२४	११	१२॥	३२॥	३६	३५	३३	२१॥	२६	२०	२१	१८	१८	१५	२५	३१	३४
मिथु	।।	मृ.	२८	२९	३२॥	२७॥	३५	३६	३६	३४	३१	२०॥	१३॥	१४॥	२२॥	१८	२८॥	३१॥	३२॥
मि.	१	आ	२०	१८	२२	३३॥	३३॥	३४	३३	३४	३४	२३॥	१५॥	२३॥	१९	२१	२४	२४	२४
मिथु	।।।	पुन	३०	२७	२३	२७॥	३०॥	३१॥	३०॥	३४	३४	३४	३४	३६	१६॥	२१॥	२५॥	२०॥	२३	२४॥
कर्क	।	पुन	२३॥	२८॥	२५॥	२२	२५	२६	३०॥	१३	३३	३४	३४	३२॥	२२	२६	२२	१८॥	१८॥
कर्क	१	पु.	३०॥	२४	२७	२४	२१	१९	१३॥	२४	२३॥	३४	३६	३४	२५	२१	३०	१४॥	२६॥
कर्क	१	श्ला	२६	२६	२२॥	१३	१२	२०	२४॥	१५॥	१५॥	३२	३४	३४	२०॥	२१	१४	२१॥	२०॥
सिंह	२	म.	२२	२८॥	३१	१७	१०	१८	२१॥	२२॥	२०॥	२२	२५	२५॥	३६	३६	३२	२८॥	१५॥
सिंह	१	पू.	२६	२४॥	३२॥	२०	२४	१६	१९॥	२८	२६॥	२९	३३	१९	३६	३६	३४	३०	२१॥
सिंह	।	उ	१७	३२	३२	२०	२६	२५	२८	२०॥	२३॥	३१	३१	३२	३४	३४	३६	३३	१५
कन्या	।।।	उ	१३	३२	१६	३४	३४	३२॥	३१॥	२३॥	२३॥	२०	२८	२२॥	२३॥	३१	३४	३५	३४
क	१	ह.	१३	२०	२१॥	२८	३३	३४	३३	२२॥	२३॥	२०॥	२८॥	२३॥	२४॥	२८॥	२०	३५	३६
कन्या	।।	चि	१४	७	२०	३१	२८	२०	१९	२६	२४॥	२१॥	१३॥	२७॥	२९॥	१५॥	१४॥	३०	३३
तुला	।।	चि	२३॥	१६	१९॥	२४॥	२१	१३	२०	२७	३५॥	२२	१३	२७	२५	१९॥	१७॥	१८॥	३४
तुला	१	स्वा	३०॥	२६॥	११॥	१२॥	१६॥	२७	३४	३३	३४॥	२३॥	२८	१५	२२॥	२४॥	२५॥	२६॥	३४
तुला	।।।	वि	२२॥	२४॥	२१॥	२६॥	१९॥	८॥	३५॥	२७॥	२१	२२॥	२२॥	१८॥	१७॥	११॥	१७॥	१८॥	२५॥
वृ.	।	वि	१७॥	२५॥	१५॥	२०	१५	२३	१३	१३॥	१३॥	२०	२०	११॥	११॥	२३॥	११॥	१८॥	१९
वृ.	१	अ	२४॥	१९॥	१८॥	२४॥	२८॥	२१॥	११	१६	२०॥	१७	१९	२१	२४	२०	२८	२५	२०
वृ.	१	ज्ये	१२	१७॥	२४॥	२७॥	२३॥	२३॥	१३	३	५	१२॥	२१	२६	२३	२०॥	१५॥	१२	१२
धन	१	मू	२८	२८	३३	२०	१४	१४	२१	१३	१३	२०॥	१९॥	२६	३२॥	२६॥	१७	१६॥	१३
धन	१	पू	३४	२६	३४॥	१५	२०	१२	१९	२७	२७	२४॥	१६॥	२८॥	३२॥	३४॥	३२	३२॥	२०
धन	।	उ	३२	३३	३४	१६	१९॥	२८	२४	२७	२७	२४॥	२४॥	२०॥	२३	३२॥	३२॥	१२	१८॥
मकर	।।।	उ	२८	२८॥	१५॥	२६	२३	२१॥	२१॥	२३॥	२३॥	२८	२८	१४	१६	२०॥	२०॥	२७	२७
मकर	१	श्र	२८	२७	२५	२१	२१	३४	२५	२२॥	२३॥	२३॥	२८	२८	१५	१३	१९	१९॥	२७
मकर	।।	ध	२१	१२	२६	१३	२८	२०	११	१८	१६॥	२०	१२	२६	२६	१५	१२	१८॥	२०
कुंभ	।।	ध	२१	१२	२६	३१॥	२८	२०	१२	१९	१७॥	२४	१६	२०	२५	११॥	१८॥	३४॥	२९
कुंभ	१	श	१६	२२	२८	२२॥	२६॥	२८	२०	१२	१२	८॥	१५	२१	२५॥	१९॥	११॥	७॥	१०॥
कुंभ	।।।	पू	१९	२६	२०	३४	३२॥	२२॥	१४॥	१७	१७॥	१८॥	१३॥	१४॥	१९॥	२४॥	१६॥	३२॥	१५
मीन	।	पू	२१॥	२८॥	२३॥	३३॥	२७	२७	२७	२७	१६	२६	७॥	३०	२३	१४	१८॥	१४॥	१८
मीन	१	उ	३१॥	२३॥	३१॥	३१॥	२७	१९	१९	२७	२८	२६	१९	२०	३०	१५॥	२५	२९	२८
मीन	१	रे	३२	३०	१८॥	१८॥	१८	२७	२७	२६	२६	२४॥	२३	१३	१०॥	२२	२२	२६	२७

के	तु	तु	तु	वृ	वृ	वृ	ध	ध	ध	म	म	म	कुं	कुं	कुं	मी	मी	मी	०
॥	॥	१	।॥	।	१	१	१	१	।	।॥	१	॥	॥	१	।॥	।	१	१	०
चि	वि	स्वा	वि	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	उ	श्र	ध	ध	श	पू	पू	उ	रे	०
२४	२३॥	२९	२३॥	१९॥	२४	१५	२१	३३	३१	३६	२७	२१	२१	१६	१०	२२	३१	३४	१
५	१३॥	१९॥	२३॥	१८॥	३५॥	१९॥	३४	२६	३४	२८॥	२७॥	११	११	२७	२५	३०॥	२४	३२	२
१९॥	२७॥	१५॥	१९॥	१६॥	१८॥	२५॥	३३॥	२८	२०	२४॥	२४	२५	२६	२७	२०	२५॥	२६॥	१०॥	३
२८	२०	७॥	१२॥	२०॥	१६॥	३०॥	२२॥	२३॥	१॥	१४	२०॥	३१॥	३०॥	३१॥	२४॥	२१॥	२१॥	१४	४
३४	१७	१३॥	६॥	१४	२६॥	२४॥	१५	३१	१२॥	१८	२६	३४॥	३३	३१॥	३१	२८	२८	३०	५
२१	१०	२३	१५॥	२३॥	२१॥	१५॥	३६	१२	१८	२३॥	३४	२१	२०	२८	२०॥	२७	२९	२८	६
२३	२१	३४	३४॥	२४	११	१५॥	२३	१९	१८	२१॥	२६	१३	१४	२९	२४॥	२७	२९	२८	७
३४	३४	३४	३४	२१॥	२७	४	१४	२८	२८	२४॥	२९	१९	२०	३३	८	२०॥	२८	२८	८
२७॥	२७॥	३४	२९	१५॥	२१॥	७	१५	२७	२७	२३॥	२४॥	१८	१९॥	१४	१०	१९	२८	२८	९
२२॥	२२	२८	२३	२१	२६	१३॥	१०॥	२३॥	२६	२६	२७	२१	१४	८॥	११॥	२०	३६	२५	१०
१२॥	१२	२७	२२॥	२१	१८	११	१२॥	१४॥	२२॥	२६	२७	२३	६	१५	१०॥	८	१८	२७	११
२७	२७	६	१०	१६॥	२०	२६	२५	१७॥	८॥	२३	२३	२६	८	२०	१३	२४	३१	१३	१२
२८॥	२४॥	१०	१९	३२॥	२४॥	३२	१६॥	१७॥	४	४	१९	२४॥	२४॥	१८	१८	१८	११॥	१३॥	१३
१४	१६॥	१४॥	१८॥	२४॥	२२॥	३०॥	३२॥	२४॥	३२॥	१९॥	७२	६॥	१९॥	२४॥	२४	१६	१६	२४	१४
१९॥	१५॥	२५॥	१५	२१॥	३०॥	२३	३२॥	३२॥	१९॥	१९	१२	१६॥	१०॥	१७॥	१५	२६	२६	२४	१५
३०	२०॥	३०॥	२२॥	१८	२७	१२	२४	२९॥	२८॥	२६	२६	२८	१६	८॥	११	१८	३०	२८	१६
३३	२६	३२॥	२४॥	२०	२७	१४	१५	२०	२६॥	२५	२६	२१	१७	१०॥	१३	१८	३०	२८	१७
३४	३३	२६	३०॥	२७	११	२५	२६	१२	१२	१०॥	१९	१८	१९	२२॥	१७	२०	१२	२२	१८
३४	३४	३२॥	३२॥	२२॥	७॥	१॥	२१	१२	२२	२६॥	२६	२४	२४	३०॥	२६	२४	५	५	१९
२८	३३	३६	३३	२३	२०	२७॥	२३	२७	१८	२३॥	२४	२७	२७	३८	३४	२१	३३	१३	२०
३२॥	३३॥	३३	३४	२६	१७॥	२१॥	२६	२०	१४	१८॥	१६॥	३०	३०	३१	२०	१५॥	१४॥	७	२१
२९	१६॥	२६॥	२६	३२	३३	३१॥	२८॥	२३	१०॥	१३	१५॥	२४॥	२४॥	२५॥	११॥	२६	२५	१९॥	२२
१२	८	३२	१८	३३	३६	३६	२४॥	३२॥	३०॥	२६	३१	२६	११	२१	२४॥	३१	२५	३४	२३
२५	२१॥	१६॥	२१॥	२१॥	३६	३६	२२	२५	२५	२१॥	२५॥	२९॥	२४॥	२६	१०॥	१६॥	२८	२८	२४
२७	२७	२६	२७	३२॥	१४॥	२४	३४	३५	३२॥	२२॥	२६॥	३०॥	२७	२०॥	१३॥	१६	२६	२८	२५
१२	१८	१९	२६	३१॥	१४॥	३२॥	३४	३६	३४	२४	३४	१६॥	१३॥	२३॥	२४	३०॥	१७॥	३२॥	२६
२१	२७	१८	१९	२३॥	३२	३३॥	३२॥	२४	३४	३६	३५	२६	३२॥	३३	२५॥	३२	३२	२४	२७
१७	३१॥	३१॥	२३॥	१९॥	२७॥	२२	२८॥	२५	३३	३६	३४	३२	३१॥	१८॥	३१॥	३०	३०	२२	२८
२०	२७	२२॥	१७॥	१४	२७	२३	१९॥	२८	२७	३४	३६	३३	३६	३९॥	१९॥	२७	२७॥	३२॥	२९
१७	२४	२९	३०॥	२७	१३	१४	२४॥	९॥	१८	३२	२७	३४	३२	२५	२५	२४	१४	२२॥	३०
१७	२५	२७	३१॥	२६	१२	२६	१२॥	१५॥	२४	२६॥	१९	३१	३४	३३	३२	१७॥	८	१५॥	३१
२५	३३	२८	२३	२७	२१	१९	३३॥	२४	२४	२६	१८॥	२५	३३॥	३६	३२	१८	१	२७॥	३२
१७॥	३१	३३	३३	२७॥	२७॥	३४	१६॥	१९॥	३०॥	३२॥	२३॥	१८॥	३२॥	३३	३४	३४	३४	२१॥	३३
२०	१३	२७॥	१४॥	२७	२६	२३	२३॥	३०॥	३१	२९॥	३०॥	३१	३०॥	१०	१०॥	३४	३३	३०॥	३४
११	५	२१	३२॥	२६	१९	३४	३१॥	२३॥	३१॥	२९॥	२१॥	२२	८॥	२०॥	२०	३३	३६	३४	३५
२२	१८	१२	८	२८॥	२७	१९	२८	३०	२२॥	२०॥	२३॥	१९॥	२५॥	१७॥	२५॥	३०॥	३४	३४	३६

वर्गज्ञानमाह॥ ॥अकचटतपयशा वर्गाः खगेशमार्जा रसिंहश्वानाः॥ सर्पाखुमृगावीणां निजपंचमवैरिणामष्टौ॥५५

टी॰ वर्गमैत्रीकेवर्ग स्वामी ज्ञानके वास्ते चक्रपरस्पष्टहै पीछेचक्र लिखाहै और गरुड पंचमसर्पतो इसेमहा वैरकहा सो असुभ॰

अन्यमत॥ ॥स्ववर्गात्पंचमः शत्रुश्चतुर्थो मित्र एव च॥ उदासीनस्तृतीयोपि वर्गभेदस्त्रिधोच्यते॥

टी॰ अपनेवर्गसे पंचम शत्रु और चतुर्थ मित्र तृतीय उदासीन ऐसेवर्गमैत्री ३ प्रकार कीहै

प्रीतिज्ञान॥ ॥स्ववर्गे परमा प्रीतिर्मित्रे प्रीतिश्च कथ्यते॥ उदासीने प्रीतिरल्पा शत्रुवर्गे त्वतिग्रदः॥५७

टी॰ स्त्रीपुरुषका समान वर्गमे जैसे सिंह सिंह होयतो महाप्रीति मित्र होयतो समान प्रीति और उदासीनमे थोडी प्रीति और शत्रुवर्गमे होयतो मृत्युकारकहै॰

दुष्टकूटदान॥ ॥षडाष्टके गो मिथुनं प्रदद्यात्कांस्यं सरूप्यं नवपंचमेत्र॥ नाड्यां सुधेन्वान्नसुवर्णवस्त्रं द्विर्द्वादशे ब्राह्मणतर्पणं

टी॰ बहुत संकट प्राप्त होयतो षडाष्टकमे दो गौ दान देना उसमे नवम पंचम होयतो कांस्यपात्र और चांदी दान देना एकनाडी होयतो धेनु और अन्न सुवर्ण वस्त्र दान देना द्विर्द्वादश होयतो ब्राह्मणभोजन करना इससे दुष्टकूटका नाश होता है

स्वयंवरकाल॥ ॥पितापितामहो भ्राता माता वंधुर्यदा नहि॥ ऋतो वर्षत्रयादूर्ध्वं कन्या कुर्यात्स्वयंवर

टी॰ कन्या अपने माता पिता भाई और भी बंधुवर्गसे ही न होय और विवाह कदाचित न होयतो ऋतुप्राप्तीके नंतर तीन वर्षसे अपने इच्छासे पती करना ऐसे स्वयंवरकाल कहते हैं—

मुहूर्तसगाईका॥ धरणिदेवोऽथवा कन्यका सोदर शुभदिने गीतवाद्यादिभिः संयुतः॥ वरवृत्तिं वयस्तोपवीता दिना धृ वयुतेवान्हि पूर्वात्रये रोवरेत्

टी॰ पिरोहत अथवा ब्राह्मण पूज्य कुल अथवा कन्याका सहोदर शुभदिनको वरका वर्णकर वस्त्र धन, द्रव्यादि करके रोहिणी उ३ कृ॰ पू॰ इन नक्षत्रोंमें उत्पादिकयोगन हो—॥ विवाहकेनक्षत्र॥ मूलमैत्रकरस्वातीमघा पौषणध्रुवेंदवः॥ एतैर्निर्दोषभैस्त्रीणां विवाहः शुभदः स्मृतः॥६०

अन्यमत॥ मूलमैत्र्यमृगरोहिणी करैः पौषमारुतमघोत्तरान्वितैः॥ निर्विधाभिरुडभिर्भ

॥ विवाहनक्षत्रानि ॥६१॥

टी॰ मूल अनुराधा हस्त स्वाती मघा रेवती रोहिणी तीनों उत्तरा मृग यह नक्षत्र दोष से वर्जित होयतो विवाह करना स्त्रीको सुभ-६०॥

इकईस महा दोष॥ ॥पंचांगशुद्धिरहितो दोषस्त्वाद्यः प्रकीर्त्तितः॥उदयास्तशुद्धिरहितो द्वितीयः सूर्य संक्रमः॥ तृतीयःपापषड्वर्गो भृगुःषष्टः कुजोष्टमः॥गंडांतकर्तरी रिःफषडष्टेंदुश्च संग्रहः॥ दंपत्योरष्टमं लग्नं राशिर्वा विष घटीतथा॥दुर्मुहूर्त्तो वारदोषखार्जूरीकं समांघ्रिभं॥ग्रहणोत्पातभं क्रूर विद्धर्क्षं क्रूरसंयुतं॥कुनवांशोमहापातो वैधृतिश्चैकविंशतिः॥ ६४ ॥ छ॥

टी॰ विवाहमें इकईस महा दोषका त्यागकरना पंचांगशुद्धि रहित १ उदयास्त २ सूर्य संक्रांति ३ पापग्रह का वर्ग ४ षष्ठ शुक्र ५ अष्टम मंगल ६ गंडांत ७ करतरी ८ चंद्रमा १२।८।६।६ स्त्री पुरुषका अष्टम लग्न १० लग्नमे चंद्रमा पापग्रह न होय ११ विष घटी १२ दुष्टमुहूर्त १३ वारदोष १४ सन्ना १५ ग्रहणनक्षत्र १६ उत्पातनक्षत्र १७ पापग्रहकावेध १८ पापग्रहयुक्त १९ पापग्रहका अंश २० महापात २१ वैधृति इनकात्याग

अस्तोदयकाल॥यमशरभुजवासरव्यतीतो दिशिहिसत सितास्तमनं तथा॥गगनबाणयमै दिशिपश्चिमेन वदितास्तमनं तुभृगोर्बुधैः॥ ६५ ॥ छ ॥

टी॰ शुक्रका अस्त पूर्वमें २५२ दिनपर होता है तिस्का उदय ७२ दिनमें पश्चिममे होताहै और २५० दिनपर पश्चिममें अस्त होताहै सो ९ दिनमें पूर्वमे उदय होता है सो विचारकरके जानना-

अवस्था विचार॥ ॥प्रागुद्गतः शिशुरहास्त्रितयं सितः स्यात्पश्चाद्दशाभिरहपंच दिनानि वृद्धः॥प्रागुदितमेव गदितो ग्रव सिष्टमुख्यैर्जीवस्तुपक्षमपि वृद्धशिशुर्विवर्ज्यः

टी॰ पूर्वदिशामे शुक्रका उदय होयतो बालत्व तीन दिन होताहै पश्चिममे अस्तके पहिले १५ दिन वृद्ध रहताहै सो पश्चिममे उदय होय तब ५ दिन बालत्व और १० दिन वृद्ध रहता है सो सुभकर्ममें त्यागकरना और गुरुभी उदय अस्तमे १५ दिन बालत्व १५ दिन वृद्ध रहता है सो सुभकर्ममें त्यागकरना-

अस्तमे वर्ज्यकर्म॥ वापीकूपतडागयज्ञगमनंक्षौ

रंभनिष्ठान्नतंविद्यामंदिरकर्णवेधनमहादानंगुरोःसेव
नं॥तीर्थस्नानविवाहकाम्यहवनंमंत्रोपदेशंशुभंदूरेणैव
जिजीविषुःपरिहरेदस्ते गुरोर्भार्गवे॥ ६७ ॥ ६८

टी॰गुरुशुक्रास्तमे इतनेकाम करनानहींबावलीकूवातलावयज्ञयात्राचौल
देवतास्थापनमौंजीवंधनविद्यारंभघरकानछेदनामहादानगुरुसेवातीर्थ
स्नानविवाहकाम्यनिकहोममंत्रकाउपदेशयहसवकर्मजिस्कोजीवनेकीइच्छा
होयउन्होंने गुरुशुक्रकाअस्तत्यागकरना–

गुरुविचार॥ ॥नष्टात्मजाधनवतीविधवाकुशीलाप
त्रान्विताहतधवाशुभगाविपुत्रा॥स्वामिप्रियाविगतपु
त्रधवाधनाढ्यावंध्याभवेत्सुरगुरोःक्रमशोभिजन्मः॥६८॥

टी॰ कन्याकोगुरुविचारविवाहकालमेंजन्मस्थगुरुहोयतोसंतानंनाशकारक
द्वितीयहोयतोधनयुक्ततृतीयहोयतोपतीहीनचतुर्थहोयतोजारकर्मीपंचम
होयतोपुत्रयुक्तषष्ठमहोयतोपतीहीनसप्तमहोयतोसुखअष्टमहोयतोपुत्रहीन
नवमहोयतोपतिप्रियदशमहोयतोपुत्रपतीहीनएकादशहोयतोधनयुक्तद्वाद
शहोयतो वंध्याएसेक्रमसेवारहोंस्थानकाफलजानना–

अन्यमत॥ जन्मत्रिदशमारिस्थः पूजया शुभदोगुरुः॥
विवाहेच चतुर्थाष्ट द्वादशस्थो मृतिप्रदः॥ ६९॥

टी॰ विवाहकालमेंजन्मस्थतृतीय दशम षष्ट यह गुरु पूजा करनेसे शुभ
और चतुर्थ अष्टम द्वादश यह मृत्यु कारक होताहै–

दोषलक्षण॥लग्नाच्चंद्राद्व्ययद्विस्थौ पापखेटौयदातदा
कर्तरीवर्जनीयासाविवाहोपनयादिषु॥नहिकर्त्तरिजोदोषः
सौम्ययोर्यद्विजायते॥शुभग्रहयुतंलग्नंक्रूरयोर्नास्तिकर्तरी॥

टी॰ लग्नसेवा चंद्रमासे १२स्थानमे २स्थानमेपापग्रह होयतो कर्तरीहोतीहै सो
विवाह औरजनेउइसमेत्याग करनाशुभ औरशुभग्रहकी कर्त्तरीहोयतो दोष न
हींपरंतुलग्नसेशुभग्रहहोय औरक्रूरग्रहकीभी कर्त्तरीहोयतो दोषनहीं–

अष्टमलग्न॥ वरवध्वोर्वटोश्चापिजन्मराशेश्चलग्नतः
॥त्याज्यमष्टमलग्नंस्याद्विवाहव्रतवंधयोः॥ ७२॥

टी॰ स्त्रीपुरुष औरवटु इनके जन्मराशीसे अथवा जन्मलग्नसे अष्टम लग्नका

विवाहजेनेउइसमेत्यागकरना-

दुष्टमुहूर्त्त॥ ॥तिथ्यंशोदिनमानस्यरात्रिमानस्यचैव हि॥मुहूर्त्तःकथितस्तेषु दुर्मुहूर्त्तं शुभेत्यजेत्॥७३॥

टी॰दिनका१४वांभागश्रोररात्रीका१५वांभाग दुष्टमुहूर्त्त होतेहैं सोत्यागकरना-

यामार्धे॥ ॥सूर्याद्यामदलं दिवैवनिगमाद्भूपवीषुनागा त्रिषट्संख्या कंकुलिकं दिवेंदूरविदिङ्नागर्तुवेदाद्विकं ॥ज्येकेनं निशिषोडशांशमपरेतिथ्यंशमुद्भूतितैःकाल कंटकमैनियंटममरेज्यसास्फुजिद्भः क्रमात्॥७४॥

टी॰दिनमेरविवारसेश्रर्द्धयामकेश्रंक हैंसो निवृत्तीश्रोरप्रवृत्तीकेश्रंकभीकोष्ट कमेहैंयथाक्रमसेदेखना शुभकर्ममेंत्यागकरना दिनमेरविवारसे दिनकेसोलवे भागमेकुलिकश्रंक चक्रसेंदेखना शुभकर्ममेंत्यागकरना कोई श्राचार्य्य कहते हैंकिरात्रीमेसोलवांभाग कुलिकनहीं पंद्रवांभाग हैसोत्यागकरना गुरुवारसेकाल क्षेष बुधवारसेकंटकयोग शुक्रवारसे ऐनियंटयोग यह यथाक्रमसे चक्रमेंदेखना शुभकर्ममेंत्यागकरना एकदिनमेंश्राठश्रर्द्धयाम ८कुलिकादि सोलह ऐसेवा रपरत्वसेजानना परंतु जोवारपरत्वसेत्यागसो चक्रमेंदेखना-॥ यामार्द्धचक्रम्

वार	यामार्द्धघटिका संख्या	प्रवृत्ति	निवृत्ति	कुलिक घ०२	काल घ०२	कंटक घ०२	ऐनियंट घ०२
रवि	४	१२	१६	१४	८	६	१०
चंद्र	७	२४	२८	१२	६	४	८
मंगल	२	४	८	१०	४	२	६
बुध	५	१६	२०	८	२	१४	४
गुरु	८	२८	३२	६	१४	१२	२
शुक्र	३	८	१२	४	१२	१०	१४
शनि	६	२०	२४	२	१०	८	१२

चंद्रविचार॥ ॥चंद्रेसूर्यादिसंयुक्ते दारिद्र्यंमरणंशुभं॥ सौख्यंसापत्न्यवैराग्येपापद्वययुतेमृतिः॥७५॥

टी॰चंद्रमासूर्यादिकग्रहकेसाथ होय तिस्का फल चक्रमें देखना परंतु दो पापग्रहसे युक्त होयतो मृत्युकारक होताहै-

चंद्रसूर्यादिचक्र

सू	मं	बु	गु	शु	श
चं	चं	चं	चं	चं	चं
दारि	मरण	शुभ	सौख्य	साप	वैरा

ग्रहणउत्पातनक्षत्रदोष॥ यस्मिन्धिष्ण्येयम होत्पातोग्रहणंवाभवेद्यदि॥तस्मिन्धिष्ण्ये

शुभंकर्मषण्मासेवर्जयेद्बुधः॥ टी॰ जिसनक्षत्रमेउत्पात होयभूकंपा दिकऔरजिसनक्षत्रपरग्रहण होयसोनक्षत्रकात्याग६महिनेतकशुभकर्ममेकरना

लत्तादोष॥ ज्ञराहुपूर्णेंदुसिताः स्वपृष्ठेभसप्त७गो९ जाति२२शैरे १श्मितंहि॥संलत्तयंतेऽर्कशानी ज्यभौमसूर्या१२ष्ट८तर्का६ग्नि ३मितंपुरस्तात्॥

टी॰ बुधजिसनक्षत्रपरहोयउसनक्षत्रसेपीछे सप्तमनक्षत्रपरलत्तादोषऔरराहुजिसनक्षत्र परहोयउस्सेपीछेनवमनक्षत्रलत्ता॥ पूर्णचंद्र माजिसनक्षत्रपरहोयउस्सेपीछे२२वेनक्षत्र परलत्ता शुक्रजिसनक्षत्रपरहोयउस्सेपीछे५ वेनक्षत्रपरलत्तायहपृष्ठलत्ताआगेअग्रल त्ता सूर्यजिसनक्षत्रपरहोयउसनक्षत्रसेआ गे१२वेनक्षत्रलत्तादोष शनीजिसनक्षत्रपर होयउसे८वेनक्षत्रपरलत्ता गुरुजिसनक्षत्रपर होयउसे ६नक्षत्रपरलत्तामंगल जिसनक्षत्र परहोयउसे ३नक्षत्रपरलत्तायहअग्रलत्ता जाननासोशुभकर्ममेत्यागकरना—

	अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	अश्विन्या
र	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	आगेसूर्य १२
चं	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	चंद्र २२ पृष्ठ
मं	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	अ	भ	मंगल ३ आगे
बु	श्र	ध	श	पू	उ	रे	अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	बुध ७ पृष्ठ
बृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	अ	भ	कृ	रो	मृ	गुरु ६ आगे
शु	श	पू	उ	रे	अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध	शुक्र ५ पृष्ठ
श	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	शनी ८ आगे
रा	पू	उ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	राहु ९ पृष्ठ

वेधमाह

चक्रेसप्तशलाकाख्येभवेधः सर्वकर्मसु॥त्याज्यएवविवा हेचतथैवपंचरेखजे॥१९॥

टी॰ विवाहमेसप्तशलाकाऔरपंचशलाका देखनापरंतुपंचशलाकामौंजीवंधनमेंकथि तहैसप्तशलाकासर्वकर्ममेकथितहैविवाहमेवेध अवश्यदेखना—

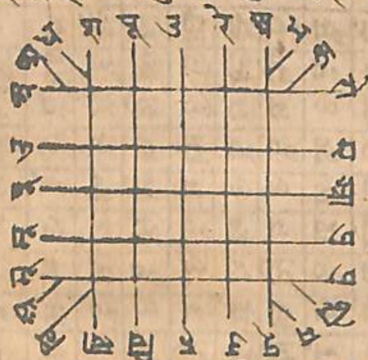
पंचशलाका॥ ॥ रेखाश्चोर्ध्वाःपंचतिर्यक्चपंचदेहे रेखेकोणयोरत्रचक्रे॥नाड्योन्यस्यक्रुमुकोणेद्वितीये

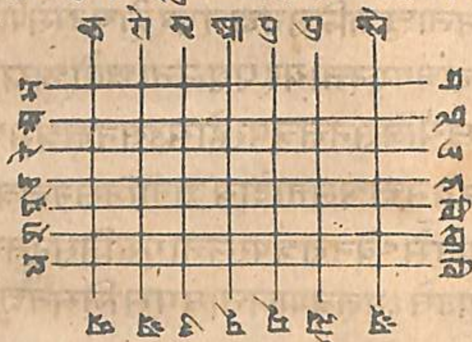
रेखायांभान्यग्निमात्साभिजिद्वी ॥ ७९ ॥ छ ॥

टी॰ पंचशलाका चक्र सुद्धी ५ रेखा करना उस पर आडी ५ रेखा करना और कोनोंमें दो २ रेखा तिरछी करना परंतु ईशान्यके कोनमे दूसरी रेखासे कृतिका आदि लेके अट्ठाईस नक्षत्र का न्यास करना—

सप्तशलाका ॥ ॥ सप्तसप्त विनिपात्यरेखिकास्तिर्य
गूर्ध्वमथकृत्तिका दिकं ॥ लेखयेदभिजितासमान्वितं
चैकरेखगमनेन विध्यते ॥ ८० ॥ छ ॥ छ ॥

टी॰ सप्तसलाका चक्र ७ रेखा सूधी करना और उसपर ७ रेखा आडी करना और अभिजित् के सहित नक्षत्र का न्यास करना परंतु १ रेखामे होय तो वेध होता है जैसा एक ग्रह रोहिणी पर है और दूसरा ग्रह अभिजित पर होय तो वेध होता है सो वेध शुभ ग्रहका होय तो शुभ अशुभ ग्रहका होय तो अशुभ परंतु वेधित होय तो करना नहीं





अन्यमत ॥ चक्रेतस्मिन्नेकरेखास्थितेन तद्विद्धंतत्खेचरेणात्र
दिष्टं ॥ क्रूरैर्विद्धंसर्वधिष्ण्यं विवर्ज्यं सौम्यैर्विद्धं नाखिलपादमेव

टी॰ सप्तशलाका चक्रमे २ ग्रह एक रेखामे होय तो वेध होता है सो पापग्रहसे वेधित नक्षत्रका संपूर्ण त्याग करना और शुभग्रहसे वेधित होनो जिस चरणमे वेध हो उसका त्याग करे

वेधनक्षत्रमाह ॥ अन्त्यग्निभेभिजिद्वास्ये वैश्वेंद्वर्ये वुरु
द्वभे ॥ मूलादित्ये च पुष्येंदुमैत्रा श्लेषेमघांतके ॥ दस्रभाग्य
यमांत्ये च हस्तादिर्बुधभे तथा ॥ चित्राजचरणे स्वातीवारु
णे च परस्परं ॥ द्विदैववासमे तद्वद्वेधः सप्तशलाकजः त्या
ज्यः पापोद्भवो यत्नाद्व्रतवंधादिकर्मसु ॥ ८१ ॥ छ

टी॰ वेधजानने का प्रकार श्रवण कृतिका इनका वेध इसी प्रकारसे अभिजित् रोहिणी उत्तराषाढ मृग पूर्वाषाढ आर्द्रा मूल पुनर्वसु पुष्य ज्येष्ठा अनुराधा श्लेषा

मघाभरणी अश्विनी पूफा उफा रेव. हस्त उभा चित्रा पूभा स्वाती शततारका विशाखा धनिष्टा ऐसे २ नक्षत्रमे वेधजानना सो मौंजी विवाहादिमे अवश्य त्याग करना-

अन्यमत॥ धिष्ण्यं सौम्यग्रहैर्विद्धं पादमात्रं परित्यजेत्
क्रूरैस्तु सकलं त्याज्यमिति वेधविनिश्चयः॥ ९५॥

टी. नक्षत्र शुभग्रहसे वेधित होय तो जिस चरणमे वेधित होय उसको त्याग करना और पापग्रहसे वेधित होय तो वह सब नक्षत्र त्याग करना शुभ.

वेधप्रकार॥ वेधमाद्यंतयोरंघ्र्योरन्योन्यं द्वितृतीययोः
॥ क्रूरैरपि त्यजेत्त्यादं केचिदूचुर्महर्षयः॥ ९६॥॥

टी. वेध प्रथम चरण और चतुर्थ चरणसे और द्वितीय चरणसे वेध होता है कोई ऋषिलोक कहते है कि क्रूरग्रहसे वेध होय तो भी पाद त्याग करना-

क्रांतिसाम्य॥ युग्मे धनुः कर्किरलौ च युक्ते कन्या च मीने वृषभनक्रयुक्ते। मेषे च सिंहे च घटे तुलायां क्रांतिश्च साम्यं शशिसूर्ययोगे

टी. मिथुन धन ऐसे २ राशी पर चंद्र सूर्य होय तो क्रांति साम्य होता है इसी रीतसे कर्क वृश्चिक कन्या मीन वृषभ मकर मेष सिंह कुंभ तुल यह क्रांतिसाम्य शुभ कर्ममे त्याग करना-॥ चक्रका क्रम॥ उर्ध्वरेखात्रयं चैव तिर्यग्रेखात्रयं तथा॥ क्रांतिसाम्यं बुधैर्ज्ञेयं मध्ये मीनं तु योजयेत्

टी. क्रांतिसाम्यका प्रकार तीन रेखा सूधी और ३ रेखा आडी करना और मध्यके रेखापर मीनलग्नसे न्यास करना ऐसे बारे राशीमे सूर्य चंद्रका क्रांति साम्य देखना-

कुं मी मे

कांतिसाम्य

एकार्गल॥ लिखेदूर्ध्वगतामेकां तिर्यग्रेखास्त्रयोदश॥ यत्र खार्जूरिके चक्रे कथितं मूर्ध्नि विन्यसेत्॥ टी. एक रेखा सूधी करना उसपर १३

टी. रेखा आडी करना तब यह खार्जूरचक्र होता है उस्पर अश्विनी नक्षत्रसे न्यास करना-

अन्यमत॥ व्याघातगंडव्यतिपूर्वमूलं त्यक्त्वे परिघातिगंडे॥ एकार्गलाख्योह्यभिजित्समेतो दोषः शशी चेद्विषमर्क्षगोऽर्कात्

टी. व्याघात गंड व्यतीपात इसके पूर्वमे पात शुभ अंत्यमे अशुभ शूल वेधृति परिघ वज्र अतिगंड इसके अंत्यमे पात होता है सो अशुभ एकार्गल होता है परंतु

।अभिजित्सहितसूर्यसेचंद्रमा विषमराशीमेहोयतोदोषिनहोताहैव्याघातादि दुष्टयोगकेदिनसूर्यनक्षत्रसेदिननक्षत्रअभिजित्सहितविषमंसंख्याहोयतो दोषएकार्गलजानना–

अन्यमत॥ विरुद्धनामयोगेषुसाभिजिद्विषमर्दोग:॥ अर्कादिंदुस्तदायोगोनिंद्यएकार्गलाभिधः॥ ६२॥

टी॰दुष्टनामयोगमेअभिजित्सहितचंद्रमासूर्यसेविषमहोयतोनिंदित एकार्गलहोताहैसोशुभकर्ममेत्यागकरनाइसयोगकेअंतमेजोनक्षत्र सोपातसंज्ञकहोताहै॥

जामित्रदोष॥ लग्नेंदोर्नास्तगःपापस्तत्तुल्यांशोयदि स्थितः॥तदाजामित्रदोषःस्यान्नहिन्यूनाधिकांशके क्रूरोवायदिवासौम्योलग्नाच्चंद्राच्चखेचरः॥ ६ ॥ एकोपियदिजामित्रेसमांशेचतदाभवेत्॥जामित्रमत्रशस्तं निगर्गकश्यपदेवला॥आयषष्ठत्रतीयेषुधनधान्यप्रदोरवि

टी॰लग्नसेऔरचंद्रमासेपापग्रहबराबरअंशाहोयकेसप्तममेहोयतोजामित्रदो षहोताहैअंशअधिकअथवाकमतीहोयतोजामित्रदोषनहींअथवापापग्रहऔ रशुभग्रहकोईभीलग्नसेअथवाचंद्रमासेएकभीसप्तमस्थानमेसमानअंश होयतोजामित्रदोषहोताहैऐसेदुष्टजामित्रहोयतोविवाहकरनानहीऐसेगर्ग कश्यपदेवलयहआचार्यकहतेहैऔरसूर्य११।६।३इतनेस्थानशुभहोताहै–

अश्विन्यादिविषघ॰॥खाब्धाजिनाव्योमगुणाःखवेदा इंद्राकुदस्त्राःखगुणनखाश्च॥दंताःखरामाःखयमाः पुराणाःक्ष्मावाहवोविंशतिरब्धिचंद्रा॥६६॥इंदुसुकाष्ठा मनवःषडसावेदाश्विनोव्योमभुजादशाग्नाः॥नागेंद्वोभ्रू पतयोऽब्धिदस्त्राःव्योमाग्नयोदस्त्रसुखवर्तकाणां॥६७॥

टी॰अश्विनीनक्षत्रसेविषघटीकास्तानचक्रमेहोगा विषनाडी॥आभ्यःपरस्ताद्विघना डिकाख्यास्त्याज्याश्चतस्रःखलु शोभनेषु॥विषाख्यनाडीषुकृतं शुभंयद्विनाशमायात्यचिराच्चसर्वं

विषघटीचक्रम्

अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	आ
५०	२४	३०	४०	१४	२१	३०	२०	३२
म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये
३०	२०	१८	२१	२०	१४	१४	१०	१४
मू	पू	उ	श्र	ध	श	पू	उ	रे
५६	२४	२०	१०	१०	१८	१६	२४	३०

टी॰ यह जो विष नाड़ी कहा इसकी अंतकी ४ चार घड़ी सुभकार्यमे त्यागकरना कदाचित् विषनाडीमें शुभकर्म होयतो थोडे दिनमे नाश होताहै—

तिथीविषघटी॥ ॥तिथीषुनागाद्रिगिरीशवारिधिर्गजाद्रिदिक्पावकविश्ववासवाः॥ सुनीभसंख्यात्र्यथमातिथेक्रमात्॥ परंविषंस्याद्घटिकाचतुष्टयं॥ ९९ ॥

टी॰ प्रतिपदासेलेके पंद्रतिथीकी विषघटीचक्रपरसेजानना और विषघटीकी अंत्यकी चार घड़ी त्यागकरना—॥ तिथीविषघटीचक्रं

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	०
१५	५	८	७	७	११	४	८	७	१०	३	१३	१४	७	८	०

वारविषघटी॥ नखाद्वयंद्वादशदिक्शैलावाणश्चनत्वानियथाक्रमेण॥ सूर्यादिवारेषु परंचतस्रोनाड्यो विषंस्यात्खलुवर्जनीया

टी॰ सूर्यादि शनी तक विषघटी चक्रसे देखना परंतु अंत की ४ घटी का त्याग करना विवाहमें॥ विषघडीचक्रम्॥

र	चं	मं	बु	गु	शु	श
२०	२	१२	१०	७	५	२५

दिनरात्रमुहूर्त॥ शिवसर्पमित्रपितरोवसुजलविश्वाभिजिद्रुहिण॥ सुरपद्विदेवदनुजाःशंवरनाथाऽर्यमाख्यभगाः॥ दिवसमुहूर्ताः कथिता दशपंचमितास्तथैवरात्रेश्च॥ रुद्राजपादावहिर्बुध्नाख्यस्ततश्चपूषाख्य॥१०२॥ अश्वियमवह्निधातृसुधाकरास्त्वदितिसूरमंत्री॥ हरिस्तीक्ष्णकरस्त्वाष्ट्रः प्रभंजनाश्चेतिपंचदश॥ १०३ ॥ ७ ॥ ७ ॥

टी॰ यह नक्षत्र दिनके मुहूर्त और रात्रीके मुहूर्त यथाक्रमसे चक्रमे देखना—

आर्द्रा	श्ले	अनु॰	म	ध	पू॰षा	उ॰षा	अभि	रो	ज्ये॰	वि॰	मू॰	श॰	उ॰फा	पू॰फा	दिवा
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	मुहूर्त
आर्द्रा	पू॰फा	उ॰फा	रे	अभि	म	कृ	रो	मृ॰	पुन	पु॰	श्र॰	ह	चि॰	स्वा	रात्री
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	मुहूर्त

वारदुर्मुहूर्त॥ अर्यम्णोभानुवारे शशिधरदिवसे राक्षसब्राह्मसंज्ञौ पित्र्याग्नेयौ कुजाहे शशिसुतदिवसे चाभिजित्संज्ञकःस्यात्॥ जीवाहेराक्षसाख्यौ भृगुसुतदिवसे ब्राह्मपित्र्यावहीशौ सौरावेतेविवर्ज्यास्त्वथचनिधनदामंगलेदुर्मुहूर्ताः

टी॰ सूर्यवारसे शनिवारतक जैसा रविवारको उत्तराफा॰ होनेसे त्यागकरना इसका क्रमचक्रमें देखना

सू	च	मं	बु	गु	शु	श
उ·फा	मू·	म	अभि	मू·	रो·	ज्ये
०	रो	कृ	०	मू	म·	आर्द्रा

वारदुर्मुहूर्तचक्रम्

अभिजितमाह॥ वैश्वमुत्तराषाढान्तस्य प्रांत्यश्चतुर्थचरणः॥ श्रवणस्य पंचदशांशस्ताभ्यांमिलित्वाभिजिद्भागस्यात्॥

टी· उ·षा·का अंतका ४ चरण श्र·का प्रथम १५ अंश मिलकरके अभिजित् होताहै इसप्रकार अभिजित्की उत्पत्तीजानना -

॥ वारमुहूर्त ॥

बुधशुक्रेंदुजीवानां दिने रंते विवाहिता॥ कन्या सुख मवाप्नोति पुत्रारोग्यधनान्विता॥ १०८॥

टी· बुधशुक्र चंद्रगुरु इनके वारमें विवाह करेतो कन्या पुत्र आरोग्यता धन इनकरके युक्त होती है·

बाणमाह॥ लग्नेनाढ्यायाततिथ्यों कनष्टाः शेषेनागद्व्यब्धितर्के दुशेषे। रोगोवन्हीराजचौरौचमृत्युर्बाणश्चायंदाक्षिणात्यप्रसिद्धः

टी· विवाहलग्नमें शुक्लपक्षादितिथी मिलावना ९ सेभागले ना शेष ८ रहेतो रोगबाण शेष २ रहेतो अग्निबाण शेष ४ रहेतो राजबाण शेष ६ रहेतो चोरबाण शेष १ रहेतो मृत्युबाण जाननायहयोगदक्षिणदेशमें प्रसिद्धहै आगे चक्रमे तिथीसहितस्पष्ट देखना -

	मे·	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी·	मेषलग्नसे क्रमति·
रोग बाण	८ १७ २६	७ १६ २५	६ १५ २४	५ १४ २३	४ १३ २२ १	३ १२ २१ ३०	२ ११ २० २९	१० १९ २८	९ १८ २७	८ १७ २६	७ १६ २५	६ १५ २४	रोगबाणमेयहतिथीनिसिद्धमेयादि
अग्नि बाण	२ २० २९	१० १९ २८	९ १८ २७	८ १७ २६	७ १६ २५	६ १५ २४	५ १४ २३	४ १३ २२	३ १२ २१	२ ११ २९	१० १९ २८	९ १८ २७	अग्निबाणमेयहतिथीनिषिद्ध
राज बाण	४ २२ ३	३ २१ ३०	२ २० २९	१० १९ २८	९ १८ २७	८ १७ २६	७ १६ २५	६ १५ २४	५ १४ २३	४ १३ २२	३ १२ ३०	३ १० २८	राजबाणमेयहतिथीनिषिद्धः
चौर बाण	६ १५ २४	५ १४ २३	४ १३ २२	३ २१ ३०	२ २० २९	१० १९ २८	९ १८ २७	८ १७ २६	७ १६ २५	६ १५ २४	५ १४ २३	४ १३ २२	चौरबाणमेयहतिथीनिषिद्ध
मृत्यु बाण	१ १९ २८	९ १८ २७	८ १७ २६	७ १६ २५	६ १५ २४	५ १४ २३	४ १३ २२	३ १२ २१ ३०	२ ११ २० २९	१० १९ २८	९ १८ २७	८ १७ २६	मृत्युबाणमेयहति·नि·मेषल·जा·

बाणपरिहार॥ ॥रात्रौचोररुजौदिवानरपतिर्वन्हिः सदासंध्ययोर्मृत्युश्चाथशनौनृपोविधिमृतिर्भौमेनिचौरस्त्वो॥ रोगोयत्रनगेहगोपनृपसेवायानपाणिग्रहेवर्ज्याश्चक्रमशोबुधैरुगनलक्ष्मापालचौरामृतिः॥

टी· रात्रीमे चौरबाण रोगबाणका त्यागकरना दिनमे राज्यबाणका त्याग और अग्निबाणका संपूर्णमेंत्याग· मृत्युबाणका त्यागसंधीमे करना आगे वारक्रम शनिको राजबाण बुध

वारको मृत्यु बाण मंगलको अग्नि और चोरबाण रविको रोगबाण यह पाँच बाणमें मौंजीबं धनघरका बनावना राजोंकी सेवा यात्रा विवाह इतने कर्ममें त्याग करना चक्रमें स्पष्ट देखना

रोग	अग्नि	राज	चोर	मृत्यु	यह बाण ५
सूर्य	मंग	शनि	मंग	बुध	यह ५ वार
रात्री	सदा	दिन	रात्री	संधी	यह काल
जनेउ	घर	सेवा	यात्रा	विवा	यह वर्ज

संक्रांतिघटी॥ देवद्व्यंकर्त्तवोष्टा ष्टोनाड्यो का: स्वल्पा: क्रमात्॥ वर्ज्या: संक्रमणेर्कादे: प्रायोर्क स्यातिनिंदिता: ॥ १०८ ॥ ॥

टी॰ सूर्यसे शनीतक ग्रहकी संक्रांतकी आदी अंतकी घडी त्याग करना परंतु सूर्य संक्रांतकी घडी निंदित है सो चक्रपरसे मालूम होगा—

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श
३३	२	८	६	८८	९	१६०
घ	घ॰	घ	घ	घ	घ	घ॰

अंधादिसंज्ञा॥ मेषो वृषो मृगेंद्रश्च दिवसेंऽधा: प्रकीर्त्तिता:। नृयुक्कर्कटकन्याश्च रात्रावंधा: प्रकीर्तिता:॥ तुला च वृश्चिकश्चैव दिवसे बधिरौ तथा॥ धनुश्च मकरश्चैव बधिरौ निशिकीर्त्तितौ॥ कुंभमीने च पंगू द्वौ दिवारात्रौ यथाक्रमं॥ टी॰ मेष वृष सिंह यह दिनमें अंध रहते हैं मिथुन कर्क कन्या यह रात्रीमें अंध रहते हैं तुला वृश्चिक यह दिनमें बधिर रहते हैं धन मकर यह रात्रीमें बधिर रहते हैं कुंभ दिनमें पंगू रहता है मीन रात्रीमें पंगू रहता है चक्रमें यथाक्रमसे देखना—

मेष	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धन	मकर	कुंभ	मीन
दिन	दिन	रात्र	रात्र	दिन	रात्र	दिन	दिन	रात्र	रात्र	दिन	रात्र
अंध	अंध	अंध	अंध	अंध	अंध॰	बधिर	बधिर	बधिर	बधिर	पंगू	पंगू

अंधादिदोष॥ अंधे वैधव्यमाप्नोति दारिद्र्यं बधिरे तथा॥ अर्थनाशो भवेत्पंगौ विति धात्रा विनिश्चितं॥ ११२॥

टी॰ अंधलग्नमें विवाह होय तो विधवा होय बधिर लग्नमें दरिद्रता पंगूलग्नमें द्रव्यनाश इस लग्नको विवाहमें त्याग करना—

चरत्रयदोष॥ कर्कलग्नेऽथवा मेषे घटांशो यदि दीयते॥ तुलायां मकरे चंद्रे वैधव्यं जायते ध्रुवं॥ ११३ ॥

टी॰ कर्कलग्नमें अथवा मेष लग्नमें कुंभांश जो होय तुला और मकर इसमें चंद्रमा होय तो यह तीन योग वैधव्य कारक हैं इसका त्याग करना—

तिथिपरत्वेलग्नवर्ज्य॥ ॥ प्रतिपदि तुलामकरौ सिंहमकरौ तृतीयायां॥ कन्यामिथुने पंचम्यां सप्तम्यां चैव धनु:कर्कौ॥ ११४॥ नवम्यां कर्कोसिंहौ एकादश्यांतु

धनुर्मीनौ। त्रयोदश्यां वृषभमीनौ शून्यं लग्नानि तिथियोगात्।

टी॰ प्रतिपदा को दिन तुला और मकर लग्न शून्य होता है तृतीया के दिन सिंह और मकर शू॰ पंचमी के दिन कन्या और मिथुन शू॰ सप्तमी को धन और कर्क शू॰ नवमी को कर्क और सिंह शू॰ एकादशी को धन और मीन शू॰ त्रयोदशी को वृष और मीन शू॰ यह लग्न तिथियोगसे शून्य होते हैं सो त्याग करना-

दोषनिवारण॥ घूनं विना केंद्रगतो सुरेज्यस्त्रिकोणगो वापि हि लक्षमेकम्॥ निहंति दोषान्द्विशतं भृगुश्च शतं बुधो वापि हि दृश्यमूर्त्तिः॥ ११६॥ ६१॥

टी॰ गुरु केंद्र में और त्रिकोणमे १।४।१०।९।५। सप्तमस्थान वर्जित होय तो १००००० दोषका नाश करे शुक्र २०० दोषका नाश करे बुध १०० दोषका नाश करे है-

राशीके उदय॥ कुदस्रदस्रा गुणबाणदस्रा वेदाभ्रिरामा यमवेदरामाः॥ शराब्धिरामा शरशामरामा मेषात्क्रमादुत्क्रमतस्तुलाया।

टी॰ यह राशी के उदय चक्रमे देखना परंतु पलात्मक राशी का मान जानना-

मेष	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	क॰	तुला	वृश्चि	धन	मकर	कुंभ	मीन
२२१	२५३	३०४	३४२	३४५	३३५	३३४	३४२	३४२	३०४	२५३	२२१

टी॰ मेषादि बारलग्नका प्रमाण घडी और पल इस का क्रम चक्रमे देखना-

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ॰	ध॰	म॰	कुं	मी	राशी
३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३	घडी
४१	१३	४	४२	४५	३५	३५	४२	४	१३	१३	४१	

लग्नभोगकाल॥ मीनाजे सप्तषट्पंच पलानि विपलानि तु॥ गोकुंभे ष्टौ युगशरा दिग्विंशतिर्न्युक्मृगे॥ कर्कचापे भवाः सूर्याः सिंहाल्यो रुद्रदृग्मिताः॥ तुलांगे दिक्चषट्त्रीणि लग्नख्वेकांशसंमितिः॥ टी॰ जिस राशी पर सूर्य रहता है सो लग्न उदय कालमें एक दिन कितना भोग करता है यह चक्र परसे मालूम करना- ॥ भोगचक्रम्॥

मे	वृ	मि	क	सि	कं॰	तु॰	वृ॰	ध	म॰	कुं	मी॰	लग्न
७	८	१०	११	११	१०	१०	११	११	१०	८	७	पल
५६	५४	२०	१२	२	३६	३६	२	१२	२०	५४	५६	विपल

उदयास्तलग्न॥ यस्मिन्राशौ यदा सूर्यस्तल्लग्नमुदये भवेत्॥ तस्मात्सप्तमराशिस्तु अस्तलग्नं तदुच्यते

टी॰ जिस राशी पर सूर्य रहे सो उदयलग्न जिस लग्न पर अस्त होय सो सूर्य से सप्त

मस्थानऐसोउदय ओर अस्तजानना-

नवांशमाह॥ ॥वृषश्च मिथुनंकन्यातुलाधन्वी झष स्तथा॥ एते शुभानवांशास्तु ततोन्येकुनवांशका॥ ७१॥

टी॰ वृषमिथुनकन्यातुलाधनमीन इनकानोकेनवांशहैं विवाहलग्नमे १२ लग्नकोहोयतोशुभदूसेदूसेलग्न अशुभमेषादि १२लग्न ओर अंश १ को एकमेंहै उसे जिस अंशकी वर्गशुद्धी आवेउसअंशकेनीचे कोष्टकमें जोल ग्न होयसोलेना ओर अंश घडी इस्को अयनांशदेना ओर अपना भुक्तकाल जाननाकोष्टकमें चार अंकहैउस्कानामराशीअंशकलाविकलाजाननाराशी कीसंज्ञाशून्यहोतोमेष ओर एकहोतोवृष इसप्रकारसे वारेराशीकाज्ञानकरना

अष्टमविचार

लग्नादष्टमराशीशः केंद्रगःशुभवीक्षितः यद्यदष्टमलग्नोत्थंदोषमाशुव्यपोहति॥ १२२॥

टी॰ विवाहलग्नसे अष्टमराशीकास्वामी केंद्रमेंहोय अथवाशुभग्रहदेखतेहोयतोलग्न संवंधीदोषकोनाशकरैहै

	मे	मि॰	क	कं	तु	ध॰	मी
मेष	० ३ २०	० ६ ४०	० १० ०	० १६ ४०	० २० ०	० २६ ४०	० ० ० ०
वृषभ	१ ३ २०	१ ६ ४०	१ १० ०	१ १६ ४०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ०
मिथुन	२ ३ २०	२ ६ ४०	० ० ० ०	० ० ० ०	२ ० ० ०	२ ६ ४०	२ १६ ४०
कर्क	० ० ० ०	० ० ० ०	३ १० ०	३ १६ ४०	३ २० ०	३ २६ ४०	३ २६ ४०
सिंह	४ ३ २०	४ ६ ४०	४ १० ०	४ १६ ४०	४ २० ०	४ २६ ४०	० ० ० ०
कन्या	५ ३ २०	५ १६ ४०	५ २० ०	५ २६ ४०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०
तुला	६ १३ २०	६ २६ ४०	६ ० ०	६ ० ०	६ ० ०	६ ६ ४०	६ १६ ४०
वृश्चिक	० ० ० ०	० ० ० ०	७ ० ०	७ ६ ४०	७ १० ०	७ १६ ४०	७ २६ ४०
धन	८ ३ २०	८ ६ ४०	८ १० ०	८ १६ ४०	८ २० ०	८ २६ ४०	० ० ० ०
मकर	९ १३ २०	९ १६ ४०	९ २० ०	९ २६ ४०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०
कुंभ	१० २३ २०	१० २६ ४०	० ० ० ०	० ० ० ०	१० ० ०	१० ६ ४०	१० १६ ४०
मीन	० ० ० ०	० ० ० ०	११ ० ०	११ ६ ४०	११ १० ०	११ १६ ४०	११ २६ ४०

लग्नशुद्धीपंचकदेखना

गततिथियुतलग्नंनंदहृत्शेषकंचवसुयमयुगषड्क्षोणिसंख्याक्रमेण॥ रुगनलनृपचोरंमृत्युदंपंचकंस्याद्व्रतगृहनृपमार्गोद्वाहकेवर्जनीयम्॥ ८४॥

टी॰ गततिथीमेंलग्नयुक्तकरना ९ सेभागलेनाशेष ८ रहेतोरोगपंचकसोजनेउमेंवर्ज्यशेष २ रहतो अग्निपंचक सोगृहारंभकरनानहीशेष ४ रहेतो

रानपंचक और शेष ६ रहे तो चोरपंचक ऐसे दोनोंमे गमन करना नहीं शेष १ रहे तो मृत्युपं० उसमे विवाह न करे दूसरे दूसरे अंकशेष रहे तो पंचक नहीं ऐसे जानना

दृष्टकालीनस्पष्टसूर्यबना ॥ गतगम्यदिनाहत

तद्युभुक्तेःखरसाप्तांशवियुग्युतोग्रहः स्यात् ॥ तत्कालभं वस्तुयाद्यदिष्ट्याः खरसैर्लब्धकलोनसंयुतःस्यात् ॥

टी० पंचांगमें ग्रहके कोष्टकमें आठ दिनके अवधीका सूर्य है परंतु पौर्णिमाका सूर्य स्पष्ट है सो जिस दिनका अपने को करना होय वह दिन गिनके उससे सूर्य की गती कोष्टकसे गुण देना और ६० से भाग लेना जो अंक आवे सो अंश घडी पल जानना यह आगेका सूर्य बनावने का प्रकार अब पीछे का सूर्य बनवे कोष्टकमे पौर्णिमाका सूर्य है तो अपने को पीछे ल्यावना होय तो पंचांगस्थ सूर्य मे अंश घडी पल कमती करना और आगे का सूर्य बनावना होय तो वह फल अंश घडी पल पंचांगस्थ सूर्य में मिलाय देना तो तत्काल सूर्य होता है सो उदाहरण मे स्पष्ट जानना ॥

भुक्तदिनका उदाहरण

संवत १९३६ तत्र शाके १८०१ माघकृष्ण ० ९ बुधके दिन सो लावने का प्रकार चालन ऋण ६ दिन

सूर्य गति । अत्र गत्यार्कं गुण दिन षट्

६० × ६ = ३६० + ४ = ३६४ गुणक

४९ × ६ २९४ षष्ट्याप्तादूर्द्धाके युतः

तेन ३६४ । ५४

इसलीये

६०) ३६४ (६

३६०

४ × ६० = २४० + ५४ = २९ ४ । ४

घड्हिनीयर्तीनह २४०

घटी पल गतिगुणय) ५४ शेष रहा

६० ४९

६ ६ गुणक ९ दिन ९ से । अंशादिफलके अंक मे गुणना

$\frac{360}{60}$ ल $\frac{264}{60}$ गुणनफलभया
= ६ = ४ लब्धांकशेष

पंचांगस्थरवि	रा	ंशा	क	वि ५४
	९	२६	२८	१७
चालनकरणं		·६	·४	५४
शेषसंख्या	९	२३	२३	२३

स्पष्टार्कः

संवत् १९३६ शाके १८०१ माघ सुक्ला ५
रवि दिनसो लावनेका प्रकार

चालन धनं ५ दिनं

घटी	पल	
६०	४९	गति गुण्य
५	५	गुणकांक

३०० ५ ६०)२४५(४
६०)३०५(५ २४०
३०० ५
५

पंचांगरवि	रा	ंशा	क	वि
	९	२६।	२८	१७
चालनधनं		०५।	०४।	०५
स्पष्टार्कः	१०।	०४।	३२।	२२

६०
२४०
५
६०)२४५(४
२४०
५

अयनांशलावनेकीरीति॥ शाकोवेदाब्धिवेदोनः षष्टिभक्तोयनांशकाः॥ देयास्तुरवौस्पष्टेचरलग्नादिसिद्धये॥

१८०१ शाकेमें		६०)१३५७(२२
४४४ घटाव		१२०
१३५७ इसमे ६० भा०		६०)१५७(
		१२०
		३७ इसमे ६० से गुणे
		६०
इसलियें अयनांशाये		६०)२२२०(३७
हुवा इसमें १ मास पीछ		१८०
५ जोडे अयनांशाः राश्या		६०)४२०(
दि		४२०
००। २२। ३७। ०७		००८

अन्यमत

शाकेमें ४२१ घटाकें उसकू ३ सें गुणकरैं २०० का भाग देतो अयनांश होंं उदाहरण शाके १८०१ में ४२१ घटाये तौ शेष १३८० ये रहे इनकू त्रिगुना करा तो ४१४० इतने हुये इनमें द्विशत २०० का भाग दिया तो २० । लब्धि मिली शेष १४० रहे इनको ६० से गुणा तो ८४०० हुये इनमे २०० का भाग दिया तो ४२ लब्धि मिली इसलिये राशि ०० अंश २० कला ४२ हुये विकला ५० पाये अयनांशमें प्रत्येक मास ४। जोडदो विकलामें तो प्रत्येक मास का अयनांश होगा अयनांश २०।४२।४४ इस अयनांशमें सूर्यस्पष्ट जोड़नेंसे चरादि लग्नस्पष्ट होता है और इसै सायनार्क कहते हैं इस सायनार्क कूं सप्रया दि जानें लग्नस्पष्टका उदाहरण लिखते हैं॥ लग्न बनाबने का क्रम॥ तात्कालीकः सायनः स्वोदयघ्ना भोग्यांशाः खत्रुध्दृतो भोग्यकालः॥ एवं यातांशैर्भवेद्यातकालो भोग्यः शोध्यो भीष्टनाडीपलेभ्यः॥ तदनुजहीहि ग्रहोदयांश्च शेषं गगनगुण ३० घ्नमशुद्धहृल्लवाद्यं॥ सहितमजादिग्रहैरशुद्धपूर्वैर्भवति लग्नमदोयनांशहीनं॥ ॥ जो इष्टमध्यानसें पहल होय तो दिनगत उसकी सञ्ज्ञा होगी और भोग्यांशो से स्पष्ट होगा और जो मध्यानोन्तर इष्ट हो तो उसकी सञ्ज्ञा दिनशेष होगी दिनशेष बनाने की ये रीत है कि उस इष्ट कू दिनमें घटादेंगें जो शेष रहे उसें दिनशेष कहते हैं और ये भुक्तांशोंसे वनेगा और जो अर्द्ध रात्रीसें पूर्व इष्ट है तो रात्रीगत उसकी सञ्ज्ञा होगी रात्रीगत वनाने की ये रीती है कि इष्टमें दिनमान घटादेंगे तो रात्रीगत होगी इसभी भोग्यांसोंसे लग्न स्पष्ट होगा और जो अर्द्धरात्रीसे पीछेका इष्ट है तो उसे साठमें घटावगे तो रात्रीशेष संज्ञा कहावगी ह्यां भुक्तांशोंसे लग्न वनगा इसरीतीसे चारखड कीये जाते है और दोखंड मध्यानोन्तरसें अर्द्धरात्रीतक के जो दोखंड है व्हां सायनार्क की राशिमें छः राशी जोडदो और भोग्यांश वनाने की ये रीति है कि अंशादिकों ३० तीसमें घटायदें तो भोग्यांश होंगे और भुक्तांशोंमें वोही शायनार्क रहता है सायना राशिसहित उपर लिखके देखैं कि किस राशि अर्थात् लग्न का उदय है जिस लग्नका उदय होय उसके पलोंसें अंशादि गुणदे और विकला जो साठसे अधिक हो तो साठ का भाग दे कै कलामें जोड़ै फिर कला साठसे अधिक जानें तो कलामें वी साठके भागसे अंशमें जोडै और अंशमें ३० का भाग ले के प्रथम स्थानमें धरै जो शेष बचें उसे साठ गुणकर कलांक जोड़दे फिर ३० का भाग दे के द्वितीय स्थान धरै जो शेष रहे उस साठ गुणकर विकलांक शेष जोड़दे और तीसके भागसे तृतीयस्थान स्थापित करै तो भुक्त भोग्य पलादि प्राप्त होने हैं इन पलादिकों कू इष्टके पलोंमें घटादे अर्थात् दिनगत वा दिनशेष

वा रात्रिगत वा रात्री शेष स्पष्ट पूर्व कीये हैं उनकी घड़ी को साठसे गुणपल जोड़ दे उन पलोंमें भुक्तभोग्य पलादि घटावैं और जो शेष रहै उसमें जो भुक्तांशोसे कर तो पिछले लग्नो के पल घटाव जहां तक घटसके और जो भोग्यांशोंसे करे तो अगले घटावै और जो राशिन घटै तो उसै अशुद्ध शुद्ध कहते हैं अर्थात् भुक्तांस में अशुद्ध और भोग्यांशमें शुद्ध कहाती है और जो घटनसे शेष पल वचैं हैं उन ३० तीस गुना करें अशुद्ध वा शुद्ध का भाग दे जो लब्धि प्राप्ति हो उसे प्रथम स्थान रखें शेष वच उसे साठ गुना कर वीचका अंक जोड़ के भाग दे द्वितीय स्थान धरै जो शेष रहै उसे साठ गुण कर तीसरा अंक जोड़ के भाग ले उसे तृतीय स्थान स्थापित करै जो भुक्तांशोंसे कीया होय तो उस ३० तीसमें घटावै अयनांश घटाव और जो भोग्यांस कीया है तो जो लब्धि अंशादि मिली है उन्हीमें अयनांश घटाव तौ लग्न स्पष्ट तात्कालि होता है और इष्टमें भुक्तभोग्य पलादि न घटै तो इष्टकू ३० तीस गुना करै फिर अपने उदयके पलोंको भाग दे जो शेष वच उसे साठ गुना कर भाग दे द्वितीय स्थान रखे जो शेष ० साठ गुना कर भाग दे तीसरे स्थान धरै जो भुक्तांश होय तौ सूर्यमे घटावे और जो भोग्यांश है तो सूर्यमै जोड़ दे लग्न स्पष्ट होजायगा॥ अग्रे उदाहरण इष्टकाल ५।२५

तात्कालरवि ९।२३।२३।२३
अयनांशा: २०।४२।४४
इस्में जोड़ा हुवा १०।१४।०६।०७
इष्टनाडीपलेभ्य:

सायनरवि	१०।१४।०६।०७		
तस्य भोग्यांश	१५	५३	५३
कुंभोदयफलं	२४७	२४७	२४७
तयोर्घात:	३७०५	१३०९१	१०९१
लब्धभोग्यपलं	२२१	२१८	६०

१३३०९ शेष ११
६०
शेष ४९

०५ । ३२५ घटायदे
६० १३० ५३ ३८
३०० १९४ ०६ २२ घटाहुवा, ३०)३९२६(१३० ६०
२५ मीनशुद्ध
३२५ ३० ३० ३० ३०
५८२० १८० ६६० २९३ ९२
९०
३ ११ ६० २६
२९३)५८२३(२७ १९१ ० ६०
लब्धांक ४२६ १८० १५६०
२० १५६३ ११ ४९
२० १४९१ ३०)१६०९(५३
७२ ७१ १५०
६० ६०

स्पष्टलग्न ११।२७।२०।२० युक्त
अयनांश: २०।४२।४४ हीनं
११।०६।३७।३६ इतिसिद्धं

लग्नसेभुक्तकालवनावना॥ स्फुटसायनभागर्कभोग्यांशफलसंभित:॥सायनांशलग्नोप्यपिभुक्तांशफल संयुत:॥ मध्यलग्नोदयैर्युक्ताषष्टि हृदिष्टनाडिका:॥

टी० सायनसूर्यसेभोग्य औरसायनलग्नसेभुक्तकालवनाय ने का प्रकार दोनोंकायोग करना सूर्य और लग्न इनके बीचका उदययुक्त करना और ६० से भाग लेने वालो लग्नसे सूर्यका भोग्यकाल स्पष्ट होता है

उदाहरण

संवत् १९३६ शाके १८०१ माघ कृष्ण ६ बुधेऽर्क ९।२३।२३।२३ अयनांश: २०।४२।४४ तेनयुत १०।२४।०६।०७ होनाहैयह कुंभार्क हुवा और लग्न ११।०६।३७।३६ है सायनलग्न ११।२७।००।२० हुवा सूर्यके भोग्य पलादिकोंसे लग्नके भुक्त पलादियुत करै और ६० का भाग देजोलब्धिप्राप्ति हो यसो अपनी इष्टघरी होगी और शेष पलजानो आगे न्यास लिखते हैं

सायन रविभोग्य — सायनार्क १०।२४।६।७

तयो घात

तस्यषष्ट्यांश ६०

लब्धांक

रवेभोग्यपलं १३१

सायनलग्नभुक्तं — सायनलग्न ११।२७।२०।२०

तयोर्घात

तस्यषष्ट्यंश ६०

लग्नभुक्तपल १९४

रवेभोग्यपल १३१

शेष तयोरैक्यं ३२५

तस्यघटी ५।२५

सूर्यऔरलग्नएकराशीहोयतोइष्टघ॰

यदि तनु दिन नाथावेकराशौ तदंशां तर हत उदयः स्यान्खाग्नि हृत्विष्टकालः ॥ १२७ ॥ ७ ॥ ॥

टी॰ सूर्यऔरलग्नएक राशी होयतोदोनोंके अंशका अंतरकरना औरउसी राशी के उदयसे गुणदेना ३॰ सेभागलेनाजो आवेसोइष्ट कालजानना रात्री काल नअथवा इष्ट कालवनावना होयतोसूर्यकेराशीमे ६मिलावनातोरात्रीकाइष्टहोताहै

लग्नशुद्धीदेखना॥ लग्नेचंद्रखलारिपौ शशिसितौस वैद्युनेखेवुधोनोंत्येगुःसुखगोष्टमाःकुजसभाःशुक्रस्तृतीयेशुचे। लाभेसर्वेखगाःशुभाअखिलगाः त्र्यष्टारिगास्युःखलाश्चंद्रस्य वुधने श्रियें शुभहृकेंद्रस्यान्मृत्यवेष्टारिगः

टी॰ विवाहलग्नमें चंद्रमा औरपापग्रह षष्टस्थानमे चंद्रशुक्र होय और सप्तमस्थानमे कोईग्रहनहोय दशमस्थाने वुधहोय १२ स्थानमे चंद्रमा होयचतुर्थस्थानमेराहु होय अष्टमस्थानसे मंगल होय वा शुभग्रह तृतीय स्थानमे शुक्र होय ऐसा विवाहलग्न होयतो अनिष्ट शोक कारक होताहै एकादशस्थानमेसवग्रह शुभ पाप ग्रह तृतीय अष्टम षष्ट यह स्थानमे शुभ औरचंद्रमा तृतीय चतुर्थ द्वितीय ऐसा विवाहलग्नहोय तो शुभ लक्ष्मीकारक होताहै औरलग्नका स्वामी अथवा अंशकास्वामी अथवाद्रेष्काणस्वामीयहषष्ट अष्टमस्थानमेमृत्युदायक होतेहैं

अन्यमत॥ पंचभिरिष्टैरिष्टं पुष्टमनिष्टैरष्टिमादेष्यं॥ स्थानादिफलसम्हद्धिश्चतुर्भिरपिकथ्यतेयवनैः१२

टी॰ विवाहलग्नसे५ग्रहशुभस्थानमेहोयतोपुष्टकारकजानना कमती होय तोअरिष्टकारक औरयवनकेमतसे चारग्रहभी इष्टकारकजानना—

त्रिंशांशादिकथनं॥ त्रिंशद्भागात्मकंलग्नं होरानस्यार्द्धमुच्यते॥ लग्नात्त्रिभागोद्रेष्काणो नवांशो नवमांशकः॥ द्वादशांशो द्वादशांशः त्रिंशांशस्त्रिंशदंशकः

टी॰ ३० अंशकालग्न १५ अंशकी होरा लग्नका त्रिभाग द्रेष्काण लग्नकाजो नवमांशसो नवांश लग्नकाजो द्वादशांश सो द्वादशांश लग्नकाजो त्रिंशांश सो त्रिंशांशजानना इसप्रकारसेसर्वजानना—

ष्याद्यैग्रहदेखना॥ यस्यग्रहस्ययोराशिस्तस्यतद्गृह मुच्यते॥ टी· जिसग्रहकी जोराशीउस्कावहग्रहपूर्वजात कर्मेंस्वामीकहाहैउसीचक्रपरसेजानना॥ राशिस्वामी॥

मेष	वृष	मिथ	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धन	मकर	कुंभ	मीन	राशी
मंग	शुक्र	बुध	चंद्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मंग·	गुरु	शनि	शनि	गुरू	ग्रह

होराकथन॥ होरयोरोजराशौतुरवींदूक्रमतःप ती॥समराशौतुचंद्रार्कौहोरेशौक्रमतोवदेत् १३१

टी· विषमराशीमेप्रथमसूर्यकी होरानंतरचंद्रकी होरा· समराशीमेप्र थमचंद्रहोरानंतरसूर्यहोरासोचक्रपरसेदेखना–

मे	वृ	मि·	क	सिं	क	तु	वृ	ध·	म	कुं	मी·	राशी
र·	चं·	र·	चं·	र·	चं·	र·	चं·	र·	चं·	र·	चं·	१५
चं·	र·	चं·	र·	चं·	र	चं	र·	चं·	र·	चं·	र·	३०

द्रेष्काणकथन॥ द्रेष्काणश्राद्योलग्नस्यद्वितीयःपंच मस्यच॥द्रेष्काणस्तृतीयस्तुलग्नान्नवराशियः १३२। म

टी· द्रेष्काणकाप्रकारतोलग्नके ३० अंशप्रथम १० अंशतक प्रथम द्रेष्का णसोहोयतोलग्नकास्वामीद्रेष्काणाधिपतीहोताहै दूसरा द्रेष्काण २० अं शतकहोयतोपंचमस्थानकास्वामीद्रेष्काणधिपतिहोताहै ३ द्रेष्काण ३० अंशतकहोयतोनवमस्थानकास्वामीद्रेष्काणधिपतिहोताहै परंतुशनिसू र्यमंगलइनग्रहोंकी होरात्यागकरनासो चक्रमेयथाक्रमसेदेखना–

लग्न	मेष	वृष	मिथ	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धन	मक	कुंभ	मीन
१अं१०	१मं·	२शु·	३बु·	४चं·	५र	६बु·	७शु·	८मं·	९गु·	१०श·	११श	१२ गु·
२अं·१·	५र·	६बु·	७शु	८मं·	९गु·	१०श·	११श·	१२गु	१मं·	२शु·	३बु·	४चं·
३अं·१·	९गु·	१०श·	११श	१२गु	१मं·	२शु·	३बु·	४चं	५र·	६बु·	७शु·	८चं·

कुजार्किजीवज्ञसितांशकाणं वागेषुवष्ठाद्रिमार्गणः॥ भागास्तुविषमेतेतुसमराशौविपर्ययात्॥१३३॥

टी· मंगलशनिवृहस्पतीबुधशुक्रयहपांचग्रहविषमराशीमेमंगलसेत्रिंशांश औरसमराशीमेउल्टाशुक्रसेत्रिंशांशजानना मंगल५ शनी५ गुरु८ बुध७ शुक्र५ क्रमेअंशसहितदेखना। आगे विषमऔरत्रिंशांशस्पष्टलिखाहै–

मेष	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चि	धन	म	कुं	मी.	०
५मं.	५शु.	५मं.	५शु.	५मं.	५शु	५मं.	५शु	५मं.	५शु.	५मं.	५शु.	०
५श.	७बु	५श.	७बु.	५श.	७बु.	५श.	७बु.	५श.	७बु.	५श.	७बु.	
८गु.	८गु.	८गु	८गु	८गु.	८गु.	८गु.	८गु.	८गु.	८गु.	८गु.	८गु.	०
७बु	५श.	७बु.	५श.	७बु	५श.	७बु	५श.	७बु	५।श	७बु.	५श	०
५शु.	५मं.	५शु.	५मं.	५शु.	५मं.	५शु.	५मं.	५शु.	५मं.	५शु	५मं.	०

टी. यह सप्तांशचक्र इसका सप्तांसमें प्रयोजन जानना- सप्तांशचक्रं

ल.	मे.	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध.	म	कुं	मी
४।१७	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६
८।३४	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७
१२।५१	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८
१७।८	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९
२१।२५	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०
२५।४२	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११
३०।०	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२

लग्ननवमांश
मेषसिंहधनुर्लग्नेनवांशा मेषतःस्मृताः। वृषकन्यामृगे लग्ने मकरान्नवमांशकाः॥१३४॥ कर्कालिमीनलग्नेषु नवांशाः कर्कितः स्मृताः। नृयुग्मतौलिकुंभेषु तौलितस्युर्नवांशकाः॥१३५॥

टी. मेष सिंह धन यह लग्नमे नवांश मेषसे वृष कन्या मकर यह लग्नमे नवांश मकरसे कर्क वृश्चिक मीन यह लग्नमें नवांश कर्कसे मिथुन तुला कुंभ यह लग्नमे नवांश तुलासे जानना आगे चक्रमे स्पष्ट देखना.

		मे	वृ.	मि.	क.	सि	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं	मी
३	२०	मं.१	श.१०	शु.७	चं.४	मं.१	श.१०	शु.७	चं.४	मं.१	श.१०	शु.७	चं ४
६	४०	शु २	श.११	मं.८	र ५	शु २	श.११	मं.८	र.५	शु.२	श.११	मं ८	र ५
१०	०	बु.३	गु.१२	गु ९	बु.६	बु.३	गु १२	गु ९	बु.६	बु ३	गु.१२	गु ९	बु ६
१३	२०	चं ४	मं १	श.१०	शु.७	चं.४	मं.१	श १०	शु.७	चं.४	मं.१	श१०.	शु ७
१६	४०	र ५	शु.२	श ११	मं.८	र ५	शु २	श.११	मं ८	र ५	शु २	श११	मं ८
२०	०	बु ६	बु ३	गु १२	गु.९	बु.६	बु.३	गु.९	गु ९	बु ६	बु ३	गु १२	गु ९
२३	२०	शु.७	चं.४	मं.१	श.१०	शु.७	चं.४	मं.१०	श.७	चं.४	चं ४	मं.१	श१०
२६	४०	मं ८	र ५	शु.२	श.११	मं.८	र.५	शु.२	श.११	मं.८	र.५	शु.२	श ११
३०	०	गु ९	बु ६	बु.३	गु.१२	गु ९	बु ६	बु.३	गु.१२	गु.९	बु.६	बु.३	गु.१२

द्वादशांशकथनम्

लग्नस्य द्वादशांशास्तु स्वराशेरेव कीर्त्तिताः ॥

टी॰ लग्नका अंश ३० उस्के बारसो द्वादशांश उस्का क्रम वारे राशीका स्वामी सो द्वादशांशपती मंगल शनी सूर्य होयतो अशुभ अपने राशी से जो द्वादशांसो द्वादशांशपती जनाना-

	मे	वृ॰	मि	क॰	सि॰	क॰	तु॰	वृ॰	ध॰	म॰	कुं	मी॰
२।३०	मं॰१	शु॰२	बु॰३	चं॰४	र॰५	बु॰६	शु॰७	मं॰८	गु॰९	श॰१०	श॰११	गु॰१२
५।०	शु॰२	बु॰३	चं॰४	र॰५	बु॰६	शु॰७	मं॰८	गु॰९	श॰१०	श॰११	गु॰१२	मं॰१
७।३०	बु॰३	चं॰४	र॰५	बु॰६	शु॰७	मं॰८	गु॰९	श॰१०	श॰११	गु॰१२	मं॰१	शु॰२
१०।०	चं॰४	र॰५	बु॰६	शु॰७	मं॰८	गु॰९	श॰१०	श॰११	गु॰१२	मं॰१	शु॰२	बु॰३
१२।३०	र॰५	बु॰६	शु॰७	मं॰८	गु॰९	श॰१०	श॰११	गु॰१२	मं॰१	शु॰२	बु॰३	चं॰४
१५।०	बु॰६	शु॰७	मं॰८	गु॰९	श॰१०	श॰११	गु॰१२	मं॰१	शु॰२	बु॰३	चं॰४	र॰५
१७।३०	शु॰७	मं॰८	गु॰९	श॰१०	श॰११	गु॰१२	मं॰१	शु॰२	बु॰३	चं॰४	र॰५	बु॰६
२०।०	मं॰८	गु॰९	श॰१०	श॰११	गु॰१२	मं॰१	शु॰२	बु॰३	चं॰४	र॰५	बु॰६	शु॰७
२२।३०	गु॰९	श॰१०	श॰११	गु॰१२	मं॰१	शु॰२	बु॰३	चं॰४	र॰५	बु॰६	शु॰७	मं॰८
२५।०	श॰१०	श॰११	गु॰१२	मं॰१	शु॰२	बु॰३	चं॰४	र॰५	बु॰६	शु॰७	मं॰८	गु॰९
२७।३०	श॰११	गु॰१२	मं॰१	शु॰२	बु॰३	चं॰४	र॰५	बु॰६	शु॰७	मं॰८	गु॰९	श॰१०
३०।०	गु॰१२	मं॰१	शु॰२	बु॰३	चं॰४	र॰५	बु॰६	शु॰७	मं॰८	गु॰९	श॰१०	श॰११

विषमत्रिंशांश ॥ कुजार्किगुरुविच्छुक्राः त्रिंशांशपतयः क्रमात् ॥ पंचपंचाष्टशैलेषुभागानां विषमे गृहे

टी॰ यहस्पष्ट विषमत्रिंशांश मंगलसे अंश ५।५।८।७।५। सहित जानना-

	मे	मि	सि	तु	ध	कु
५।०	मं	मं	मं	मं	मं	मं
१०।०	श	श	श	श	श	श
१८।०	गु	गु	गु	गु	गु	गु
२५।०	बु	बु	बु	बु	बु	बु
३०।०	शु	शु	शु	शु	शु	शु

समत्रिंशांश ॥ शुक्रेज्ञेज्यार्किभूपुत्रास्त्रिंशांशपतयः समे ॥ पंचागाष्टेषु पंचानां भागानां कथिता बुधैः ॥

टी॰ यहस्पष्टसमत्रिंशांश शुक्रसे अंश ५।७।८।५।५। सहित जानना-

समत्रिंशांश

	वृ	क	क	वृ	म	मी	
५।०	शु	शु	शु	शु	शु	शु	५
१२।०	बु	बु	बु	बु	बु	बु	७
२०।०	गु	गु	गु	गु	गु	गु	८
२५।०	श	श	श	श	श	श	५
३०।०	मं	मं	मं	मं	मं	मं	५

षड्वर्ग ॥ लग्नहहोराश्च द्रेष्काणो नवांशो द्वादशांशकः ॥ त्रिंशांशश्चेति षड्वर्गास्ते सौम्यग्रहजाः शुभाः ॥१३८

टी॰ लग्न होरा द्रेष्काण नवमांश द्वादशांश

लग्न	होरा	द्रेष्का	नवां	द्वाद	त्रिंशां
वर्ग	वर्ग	वर्ग	वर्ग	वर्ग	वर्ग

श त्रिंशांश यह उच्चांश षड्वर्ग जानना सो शुभ ग्रह का शुभ अशुभ का अशुभ जानना-

उच्चांश॥ ॥मेषे षष्ठघटौ वृषे त्रिदृगिना द्वद्वि गोकी ग्नयः कीटे व्यंग नवाद्रयो र्कभवने गाश्वा स्त्रियां त्र्य केषद्॥ जूके कौ द्विखगा अलौ गवगषट् चापे त्रिषट् गोद्र्योनक्रे शाख्य रुणांघटे घ्रयवयौ मीने द्विगो षट्शुभाः।

टी॰ यह उच्चांश का स्थान चक्र पर से जानना-

उच्चांशचक्रम्

रा॰	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म॰	कुं	मी॰
अं	६	३	७	४	६	३	१३	८	३	३	१२	७
॰॰	७	२	८	६	७	१२	७	७	६	१२	२	८
॰॰॰	०	१२	१२	८	०	६	८	६	८	०	०	६
॰॰॰	०	०	३	७	०	०	०	०	७	०	०	०

वर्गविचार षड्वर्गं पंचवर्गं वा चतुर्वर्गमथापि वा केष्वित्त्रिवर्गसंप्रोक्तं द्वेकवर्गं तनुं त्यजेत्॥

टी॰ विवाह लग्न को ६ वर्ग आवे तो उत्तम ५ अथवा ४ मध्यम कोई त्रिवर्ग मध्यम कहते हैं जिस लग्न मे २ अथवा १ वर्ग आवे तो वह लग्न त्याग करना-

लग्नांशफल॥ लग्ने चतुर्दशे भागे वृषस्य मकरस्य च ॥कन्या कर्कट मीनानामष्टमे द्वादशो लिनः॥१४१॥

टी॰ विवाह लग्न मे वृष अथवा मकर इसके १४ अंश शुभ कन्या कर्क इसके ८ अंश शुभ वृश्चिक के १२ अंश शुभ यह लग्न विवाह मे लेना होय तो अंश देखना

अन्यमत॥ ॥एकविंशतिमे भागे मेषस्याद्वादशो हरेः ॥संपूर्णफलदं चादौ मध्ये मध्यफलप्रदं॥१४२॥

टी॰ विवाह लग्न मे मेष १२ अंश सिंह लग्न १८ अंश यह संपूर्ण उत्तम फल करते हैं मध्यम होय तो मध्यम फल जानना-

अन्यमत॥ ॥कुंभस्यांशे च षड्विंशे चतुर्विंशे च तौलिनः॥ न्युग्मकार्मुकयोर्लग्नं शुभं सप्त दशांशके १४३

टी॰ विवाह लग्न मे कुंभ २६ अंश शुभ तुला २४ अंश शुभ मिथुन धन १७ अंश शुभ यह लग्न मे जो अंश कथित किया सो शुभ जानना-

वर्गोत्तमलक्षण॥ अंशोतुच्छफलं लग्नं यदि वर्गोत्तमं न चेत्॥ लग्नस्य स्वनवांशो यः स वर्गोत्तम उच्यते १४४

टी॰ लग्नजो वर्गोत्तम न होयतो अंतमें थोडा फल करताहै लग्न अपने नवांशमे होयतो वह वर्गोत्तम होताहै सो शुभजानना-

स्त्रीविचार॥ ॥क्रीता द्रव्येण यानारी नसा पत्नी विधीयते॥नसा पित्र्येनसा दैवेदासीतां कश्यपोब्रवीत् १४५

टी॰ द्रव्यदेकरकेजो स्त्रीसे विवाहकरतेहै सो वह स्त्री केवल भोग केकाम की होतीहै और विनाजो द्रव्य के करतेहैं वह स्त्री देवता और पितरके काम की होतीहै ऐसा कश्यप ऋषि कहतेहैं-

अन्यमत॥ ॥दुर्भिक्षे राष्ट्रभंगे च पित्रोर्वा प्राणसंकटे ॥प्रौढायामपि कन्यायां प्रतिकूलं न दुष्यति॥ १४६॥

टी॰ कालपडे राजभंग पिता का प्राण संकट ऐसा काल होय और कन्याको यौवनप्राप्ती होय वहकन्याको यह बलनहोयतथापि करनादोषनहीं-

वैधव्यभंगविचार॥ ॥बलवद्विधवायोगेबाल्येसति मृगीदृशां॥पितारहसि कुर्वीत तद्भंगं शास्त्रसंमतं॥

टी॰ कन्याकोबाल अवस्थामे बलवान् विधवायोगहोयतो पिताने शास्त्रके संपतीसे एकांतमे उस्काभंग होनेके वास्ते कुंभविवाहकेरीतसे करना-

अन्यमत॥ ॥बालवैधव्ययोगेपि कुंभद्रुप्रतिमादिभिः॥कृत्वालग्नं रहः पश्चात्कन्योद्वाह्येतिचापरे॥

टी॰ कन्याको बाल अवस्थामें वैधव्ययोग होयतो पिताने पहिले एकांतमें घडेसे अथवा पेडसे या विष्णुकी प्रतिमासे इतने से विवाह करके तव मनुष्यसे विवाह करना ऐसा कोई आचार्य कहतेहैं-

अन्यमत॥ ॥विवाहात्पूर्वकाले तु चंद्रताराबलेशुभे॥विवाहर्क्षे च मंथन्या कुंभेनच सहोद्वहेत्॥

टी॰ विवाहके पहिले चंद्रबल ताराबल शुभदिनमे विवाहके नक्षत्रमें मथनीसे अथवा कुंभसे विवाहकरना तो विधवायोगनाशहोते हैं-

अन्यमत॥ ॥स्वर्णांबुपिप्पलानां च प्रतिमा विष्णुरूपिणी॥तयासहविवाहे च पुनर्भूत्वं न जायते॥

टी॰ सुवर्ण जल कुंभ पिप्पल विष्णूकी प्रतिमा इनके साथ विवाहकरनेसे पुनर्विवाहका दोषहोतानहीं सोजानना-

विवाहप्रकार॥ब्राह्मोदैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथा
सुरः॥गांधर्वोराक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोधमः॥१५१
टी॰ ब्राह्म॰ दैव॰ आर्ष॰ प्राजापत्य॰ आसुर॰ गांधर्व॰ राक्षस॰ पिशाच
यह ८ प्रकारका विवाह होताहै-

ब्राह्मविवाह॥ ॥ब्राह्मो विवाह आहूय दीयतेशक्त्यलं
कृता॥तज्जःपुनात्युभयतःपुरुषानेकविंशतिः॥१५२॥
टी॰ प्रथमब्राह्मविवाह ब्राह्मणको निमंत्रण करको औरअपने कोजो श
क्ति होयउस्से कन्याको अलंकृत करके ब्राह्मण को यथाविधीसेक
न्यादानकरनातो १२पुरुष अपने पूर्व और १२पुरुषनंतर पवित्र होनेहै-

दैवविवाह॥ ॥यज्ञस्थऋत्विजेदैव॥ ७ ॥
टी॰ दैवविवाह कन्या अलंकृत करके यज्ञमेंऋत्विजकोदानकरेतोदैवविवाहहोता

आर्षविवाह॥ ॥आदायार्षस्तुगोद्वयमिति॥ है
टी॰ आर्षविवाह पुरुष कन्याको बैल गाय अथवाइनकेमोल काद्रव्यदे
के कन्याका पूजन करके विवाह करेतो वह आर्ष विवाहजानना-

प्राज्यापत्यविवाह॥सहधर्मंचरतामितिभाषणपूर्वक
मलंकृताकन्या यत्रदीयते सप्राजापत्यः॥ १५३॥
टी॰ प्राजापत्य विवाह धर्मके सहित आचरण करेंगे ऐसे भाषणपू
र्वक अलंकृत कन्या जो देतोवह प्रजापत्य विवाहजानना-

आसुरविवाह॥आत्मार्थंद्रविणमादाय यत्कन्यार्पणंसआ
टी॰ आसुरविवाह जोपुरुषने अपने वास्ते द्रव्य कमाया औरद्रव्य सुरः
कन्याके अर्पण करकेविवाह करेतो वह आसुरविवाहजानना-

गांधर्वविवाह॥ ॥त्वंमेभार्यात्वमेपतिरितिगांधर्वः॥
टी॰ गांधर्वविवाह स्त्रीपुरुष यह दोनों वयप्राप्तीमे आयके यह कहाकितु
महमारे पती औरतू हमारीस्त्री ऐसे परस्पर भाषण करेंसो गांधर्वविवाह

राक्षसविवाह॥ ॥राक्षसोयुद्धहरणम्॥
टी॰ राक्षसविवाह दूसरे के राज्यमेसे कन्याजीत करके स्त्रीबनायेराक्षसवि

क्षात्रविवाह॥ ॥अलंकृतामभिजयन्क्षात्रइत्यभिधीयते॥वाह
टी॰ क्षात्र विवाह राजालोक अलंकारसहित कन्याको जीतलेतेहैं इस्वास्ते यह क्षात्र
विवाहजानना-

पिशाचविवाह॥ कपटेनस्वापाद्यवस्थासुकन्यकाहरणंपैशाचोवि
वाह॥ टी॰ पिशाचविवाह कपटकरकेनिद्राअवस्थामेंकन्याकोउठायलेजा
नायहपिशाचविवाहजानना—

पुनर्विवाह

गांधर्वादिविवाहेषुपुनर्वैवाहिकोविधीः॥ कर्त्तो
व्यश्चत्रिभिर्वर्णैः समयेनाग्निसाक्षिकः॥१५५॥
टी॰ गांधर्वविवाह, राक्षस आसुर पिशाच यहचारविवाहकेनंतर पुनर्विवा
हविधीतीनवर्णकेहैंसोअग्निसाक्षीकरकेकरना परंतुविवाहकासमयहोयतोउचि
तहै
अन्यमत॥ ॥चतुरोब्राह्मणस्याद्यान्प्रशस्तान्कव
योविदुः॥राक्षसंक्षत्रियस्यैकमासुरंवैश्यशूद्रयोः॥
गांधर्वासुरपैशाचराक्षसाख्याश्चसर्वदा॥
टी॰ ब्राह्मणको ब्राह्म॰ दैव॰ आर्ष॰ प्राजापत्य॰ यहचारविवाहकरनाउक्तहै
क्षत्रियकोराक्षसविवाह वैश्य, शूद्रकोभीवहीजानना औरगांधर्व॰ आसुर
पिशाच॰ राक्षस॰ यहचारोंविवाहकोसर्वकालमेकरनाइसेनिथीनक्षत्रविचारनहीं
अन्यमत॥ ॥नशास्त्रदृष्ट्याविदुषाकदाचिदुल्लंघ
नीयाःकुलदेशधर्माः॥ मूलंहितेषांश्रुतवेदशाखा
भ्रष्टानधर्मःस्थितिभंगदोषात्॥ १५६॥ ६७॥
टी॰ पंडितनेबहुशास्त्रदेखके अपनाकुलधर्मकभीत्यागकरनानहीं
क्योंकिवहमूलभ्रष्टहोताहैवेदभ्रष्टहोयकेधर्मनाश होनेहै—
अन्यमत॥ ॥पुत्रोद्वाहात्परंपुत्रीविवाहोनऋतुत्र
ये॥नतयोर्व्रतमुद्वाहान्मंडनादपिमुंडनं॥ १५७॥
टी॰ पुत्रकेविवाहनंतर कन्याकाविवाह ६ महिनेकरनानहीं विवाहबाद
जनेऊकरनानहीजनेऊबादमुंडनकरनानहीं—

मुंडनविचार

व्रतंसमावर्त्तनकःसचौलंकेशांतमेतानिवदंतितज्ज्ञा॥
चौरंपुरस्कृत्यभवंतियस्माच्चत्वारितस्मादिहमुंडनानि
टी॰ जनेऊ, समावर्त्तन, चौल, और १६ वर्षमेंदाढी, और चौर आदि
लेकेयह ४ मुंडनहोताहैसोजानना—
अन्यदपि॥ एकोदरस्योर्द्वयोरेकदिनेहनेभवेन्नाश॥

न ह्यंतरएक दिने प्याहुः संकटेच शुभं ॥ १५९ ॥
टी० दो कन्या की एक माता होय तो दोनों कन्या का विवाह एक दिनमें करने मैं नाश होता है जो अंतर न होय और संकट प्राप्ती होय तो करना शुभ

अन्यमत ॥ आदौ चौलं ततो मौंजी विवाहश्च शुभप्रदः ॥
मातृभेदे बुधै रुक्तो मातुरैक्यं न कर्हिचित् ॥ १६० ॥
टी० प्रथम चौल तव जनेऊ तव विवाह शुभ माता का भेद होय तो करना माता एक होय तो करना नहीं ॥

अन्यमत ॥ वरवध्वोः पिता माता पितृव्यश्च सहोदरः ॥ एतेषां प्रतिकूलं चेन्महा विघ्नकरं भवेत् ॥ १६१ ॥
टी० पुरुष अथवा कन्या दोनो के वंशमें पिता माता चाचा भाई इन लोगों को विघ्न होय तो वह प्रतिकूल होता है तो निश्चय के नंतर ऐसा होय तो विवाह करना नहीं

अन्यमत ॥ वाग्दानानंतरं यत्र कुलयोः कस्यचिन्मृतिः ॥ तदा संवत्सरादूर्ध्वं विवाहः शुभदो भवेत्
टी० विवाह का वाक्यदान भयानंतर दोनों के कुलमें जो किसी की मृत्यु होय तो १ वर्ष तक करना नहीं १ वर्ष के बाद करना शुभः

अन्यमत ॥ अन्येषां तु सपिंडानामाशौचं मास संमितं ॥ तदंते शांतिकं कृत्वा ततो लग्नं विधीयते ॥ १६३ ॥
टी० और जो अपने वंश के बाहर का अशौच होय तो १ मास पर्यंत विवाह करना नहीं नंतर शांती करके करना शुभ०

अन्यमत ॥ ॥ श्रवः श्रविष्ठाम्बु सनानुराधा सविश्वपूर्वात्रय वह्निभेषु ॥ निमित्तसद्धां फल पुष्यपूर्णैः शुभे सुहूर्त्ते वरयेत्कुमारीं ॥ १६४ ॥ ७ ॥
टी० श्रवण० धनिष्टा० स्वा० अनु० उत्तराषाढ० तीनो पूर्वा० कृति० इतने नक्षत्रोंमें विवाह के पहिले फल पुष्प पूर्णपात्र और वस्त्र इससे शुभ मुहूर्तमें कन्या का वरण पूजन करना और अपने कुलाचार की जो रीति विवाह के पहले करने की होय सो करना

अन्यमत ॥ पूर्वात्रितयमाग्नेयमुत्तरात्रितयं तथा ॥ रोहिणी तत्र वरणे भगणाः शस्यते बुधै ॥ उपवीतं फलं पुष्पं वासांसि विविधानि च ॥ देयं वराय वरणे कन्या भ्राता द्विजेन वा

टी. तीनों पूर्वा कृतिका तीनो उत्तरा रोहिणी इतने नक्षत्रमें श्रौर तारावल देखके वरका विवाहके पहिले यज्ञोपवीत फल पुष्प श्रौर नाना प्रकारके वस्त्र देके वरका पूजन कन्याके भाईने वा ब्राह्मणद्वारा करना पश्चात् कन्याका पूजन करना-

श्रन्यमत॥ तद्धन्मंगलघोषैश्च विप्राशीर्वचनैः सह॥
श्रादौ कृत्वा शची पूजां पश्चात्सर्वं समाचरेत्॥१६७॥

टी. विवाह कर्म श्रारंभ होते ही पहिले वाद्य घोषके सहित श्रौर ब्राह्मणके श्राशीर्वाद वचन युक्त कन्यासे इन्द्राणी का पूजन करावना नंतर विवाह को श्रारंभ करना श्रौर विवाहके बाद जो कुलाचार होय सो करना-

श्रन्यमत॥ तथेति तन्यिता कन्या वरणे कर्तृ वासरे॥
कुर्यात्प्रदानं कन्यायाः स्वस्तिवाचन पूर्वकं॥१६८॥

टी. कन्याका पिता कबूल करे कि हम तुम को कन्या देते हैं तब जिस नक्षत्र में वर्णन किया है वह इन नक्षत्रमें वा विवाह नक्षत्रमे पिता स्वस्ति वाचन पूर्वक कन्यादान विधीयुक्त करे श्रौर ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनको वेदविधीसे करना शूद्रको गांधर्व विवाहादिकसे करना ऐसे कथित है-

श्रन्यमत॥ दलन कंडन मंडन वेदिका ग्रह सुमार्जवारक मंडपाः॥ करतल ग्रह मध्यगतागतं तदखिलं विदधीत विवाहभे॥ १६९॥ छ॥

टी. विवाहका जितना काम पीसना कूटना वेदि बनावना घर स्वच्छ करना विवाहका मंडप श्रौर जो सब कार्य लेना देना वह सब विवाहके नक्षत्रमें करना

घटिका विचार माद॥ कुंडेमः परिपूरिते सुघटिका मद्धोदयास्ते न्यसेत्॥ स्नुत्वा गिन्त्रयवायुगान सुभदा पूर्णाग्निपंचस्वथ

टी. विवाहकाल सिद्धीके वास्ते ज्योतिषशास्त्रके श्रनुसार कोल साधनकु इमें श्रथवा नादमें घडी स्थूनी करके छोड देना दिनमें इष्टकाल होय तो सूर्यका श्राधा विंव उदय होय तब घडी छोडना श्रौर रात्रीमें इष्टकाल होय तो श्राधा विंब श्रस्त होय तब घडी छोडना श्रौर छोडते ही श्राग्नि दिशा. दक्षिण नैऋत्य. वायु इतने दीशामे घडी गमन करे तो श्रशुभ श्रौर भरी घडी श्राग्नि दक्षिण. नैऋति पश्चिम वायु इतनी दिशामें पूर्ण घडी गमन करे तो श्रसुभ जान

घटिकागमन फल॥ पूर्वाशादिफलं कुर्यात्स्थितानाम (ना

ध्ये धनप्रदा ॥ सौभाग्यं निर्धनं नार्या अपमृत्युरुजान्वि
ता ॥ भर्तृप्रिया च वेश्या च मान्या वित्तसुतान्विता ॥
टी॰ घडी कुंडमें छोडने के नंतर आठ दिशामें गमन फल कुंडमें घडी छोड़
तेही मध्यमें रहे तो धनयुक्त पूर्वदिशामें सौभाग्य आग्निदिशामें दरिद्र
दक्षिण दिशामें अपमृत्यु नैऋत्यदिशामें रोगयुक्त पश्चिम दिशामें पति
प्रिया वायुदिशामें वेश्या उत्तर दिशामें मान्यमुक्त ईशान्य दिशामें धनपुत्र
युक्त स्त्री होती है ऐसा यह आठों दिशाका फल जानना-

लग्नविचार ॥ ॥ घटीलग्नं यदा नास्ति तदा गोधूलि
कं स्मृतं ॥ शूद्रादीनां बुधाः प्राहुर्न द्विजानां कदाचन ॥
टी॰ दिनमें घडी लग्न न मिले अथवा रात्रीमें भी न मिले तो शूद्रको मात्र गोधू
ली लग्न कथित है ब्राह्मणको गोधूलीलग्न कभी करना नहीं परंतु संकटकालमें क

गोधूलीलक्षण ॥ पिंडीभूते दिनकृति हेमंततौ स्यादर्द्धा स्ता
स्ते तपसमये गोधूलिः संपूर्णास्ते जलधरमालाका
ले त्रेधायोज्या सकल शुभे कार्यादौ ॥ १७२ ॥
टी॰ हेमंतऋतुमें गोधूली सूर्यका बिंब संपूर्ण बाहर रहे उसकालमें आ
धा अस्तपर गोधूली वर्षाकालमें संपूर्ण अस्त होय तब गोधूली होती है
ऐसे तीन प्रकारकी गोधूली शुभकार्यमें शूद्रको कथित है ॥

गोधूलीलग्न ॥ गोधूलं प्रकृजादिके शुभकरं पंचांगशु
द्धौ रवेरर्धास्तात्परपूर्वमोर्धघटिकं नेत्रेंदुमष्टारिगं ॥ सौ
म्नांगं कुजमष्टमं गुरुयमाहःपातमर्कक्रमं जह्याद्द्विप्र
मुखेति संकट इदं संघो वनाद्येक्वचित् ॥ १७३ ॥
टी॰ गोधूलीलग्न शूद्रादिकको शुभ पंचांगशुद्धी देखको गोधूलीका काल
सूर्य अर्ध अस्त होनेके बाद पल १५ और अर्ध अस्त होनेके पहिले १५ प
ल यह गोधूली सो इसमेंभी विचार चंद्रमा अष्टम षष्ठ लग्नमें पापग्रह अ
ष्टमस्थानमें मंगल और गुरु शनी इनके वार महापात सूर्यसंक्रांती इ
तने दुष्टयोग का त्याग करना ब्राह्मणको संकट प्राप्ती होय अथवा कन्या
यौवनवती होती होय तो विचार करना नहीं गोधूलीमें करना-

वधूप्रवेश ॥ विवाहमारभ्य वधूप्रवेशो युग्मेऽथवा

षोडशवासरांतात्॥ तदूर्ध्वमब्देयुजिपंचमांतादतः
परस्तान्नियमोनचास्ति॥ १७४ ॥ ७ ॥

टी॰ विवाहसे समदिनमे वधूप्रवेश करना अथवा सोल दिनमे वधूप्रवेश समदिनमे करना इसके अनंतर पांच वर्षतक समवर्षमे करना आगे विचार नहीकार

उक्तमासादि॥ ॥माघफाल्गुनवैशाखेसुशुक्लपक्षेशु(न भे दिने॥ गुर्वादित्यविशुद्धौस्यात् नित्यं पर्व॥ द्विरागमः

टी॰ माघ फाल्गुन और वैशाखमें शुक्लपक्षमें शुभदिनमे गु. शुद्धी सूर्य शुद्धी मेवधूप्रवेश दूसरीदफेसो द्विरागमन करना शुभ

वधूप्रवेश॥ नीहारांशुयुगुत्तरादितिगुरूब्राह्मानुराधाश्विनीशाक्रेभास्करवायुविष्णुवरुणत्वाष्ट्रप्रशस्तेतिथौ॥ कुंभाजालिगतेरवौशुभंकरेशशोदयेभार्गवे
जीवज्ञास्फुजितां दिनेनववधूवेश्मप्रवेशः शुभः १७६

टी॰ मृग तीनों उत्तरा पुनर्वसु पुष्य रोहिणी अनुराधा अश्विनी ज्येष्ठा हस्त स्वाती श्रवण शततारका चित्रा यह नक्षत्रमें शुभतिथीमें कुंभ मेष वृश्चिक यह राशीके सूर्यमें शुक्रके उदयमें और गुरु बुध शुक्र यह वारमें वधूप्रवेश करना शुभ

अन्यमत॥ ॥हस्तादिपंचमृगपूषभदस्रभेषुविष्णुद्वयेबुधदिनेगुरुशुक्रवारे॥ स्त्रीणांशुभंप्रथमपट्टवधारणंस्यात्पाणिग्रहोक्तसमयेखलुपीतवस्त्रैः॥ १७७ ॥

टी॰ हस्त, चित्रा, स्वाती॰ विशाखा॰ अनुराधा मृग रेवती अश्विनी॰ श्रवण॰ धनिष्ठा यह नक्षत्रमें बुध गुरु शुक्र इनवारोंमे और विवाह नक्षत्रमें स्त्रीको प्रथमवस्त्रपीत धारण करना अर्थात् माथेपरसे धोती पहिरावना शुभ॰

शूद्रादिकोपुनर्विवाह॥ शूद्रांत्येषुपुनर्भवापरिणयः प्रोक्तोविवाहोक्तभैर्नालोक्यं तिथिमासवेधभृगुजेज्यास्तादितत्रार्कभानु॥ त्रिव्यर्क्षेसुमृतिर्धनंमृतिमृतीपञ्चो मृतिर्दुर्भगंश्रीरौन्नत्यमथोध्रुतीशकुननन्वर्क्षेत्पयसाभितं

टी॰ शूद्रादिजातीको पुनर्विवाह करनेका प्रकार विवाहके नक्षत्रमे करना परंतु तिथी मास और वेध गुरु शुक्र इनका अस्तोदय इसका विचार करना नही सो इस सूर्यनक्षत्रसे दिन नक्षत्रतक गिनना प्रथम ३ मरण दूसरे ३

धनतीसरे ३ मरण चौथे ३ मरण पंचम ३ पुत्रलाभ षष्ट ३ मरण सप्तम ३ दुर्भग अष्टम ३ लक्ष्मी नवम ३ श्रेष्ठता श्रौर सूर्यनक्षत्रसे १८।११।४।५ इननक्षत्रका अन्यमत॥ ॥ इंद्राद्दितिशिवाश्लेषा आग्नेयं वारुणं त्यागतया॥ अश्विनी वसुदैवत्यं पट्टकाले शुभे स्मृतं॥ ९७८॥

टी॰ ज्येष्ठा॰ पुनर्वसु॰ आर्द्रा॰ आश्लेषा॰ कृत्तिका॰ शततारका॰ अश्विनी॰ धनिष्ठा॰ इननक्षत्रमें मूढ़ने विवाह करना सो स्त्रीका पुनर्विवाह होनाहै भाषामें सगाई ऐसे कहतेहैं–

दत्तपुत्रमुहूर्त्त॥ हस्तादिपंचकभियकवसुपुष्यभेषु सूर्यक्ष्माजगुरुभार्गववासरेषु॥ रिक्ताविवर्जिततिथिष्वलिकुंभलग्ने सिंहवृषेभवति दत्तपरिग्रहोयं॥

टी॰ हस्त॰ चित्रा॰ स्वाति॰ विशाखा॰ अनुराधा॰ अश्विनी॰ धनिष्ठा॰ पुष्य॰ इन नक्षत्रोंमें श्रौर रवि मंगल॰ गुरु॰ शुक्र॰ इनवारोंमें रिक्तातिथीका त्यागकरके वृश्चिक कुंभ यहलग्नकाभी त्याग करना श्रौर सिंह वृष यहलग्नमे दत्तक लेना लड़का गोद लेना वंशके वास्ते॥ प्रथमभागसमाप्तः

वास्तुप्रकरणम्

ग्रामादिअनुकूल॥ ग्रामादेरनुकूलत्वं दिशोभूतग्रहस्य च॥ मासधिष्ण्यादिशुद्धिंच वीक्ष्यायव्ययभांशकान् १

टी॰ घरबनावना होयतो पहिले ग्राम देखना दिशा भूमी मास नक्षत्र शुद्धी लाभ खर्च लग्न अंश इतना विचार करके तव घर बनावना शुभहै

ग्रहबल॥ गुरुशुक्रार्कचंद्रेषु स्वोच्चादिबलशालिषु॥ गुर्वर्केंदुबलं लब्ध्वा गृहारंभः प्रशस्यते॥ २॥

टी॰ गुरु सुक्र सूर्य चन्द्र यह अपने उच्चमे होय श्रौर वलवान होय ऐसे कालमें गुरु चंद्र सूर्य इनके वल प्राप्तीसे घरबनावनेका आरंभ करना शुभ

गृहेवर्ज्य॥ विवाहोक्तान्महादोषांस्त्यजेज्जामित्रशुद्धितः॥ रिक्ताः कुजार्कवारौ च चरलग्नं चरांशकं॥ ३

टी॰ विवाहमें जो महादोष कथित है उसका जामित्र छोड़के त्याग करना रिक्तातिथी मंगल रवि इनकी वार श्रौर चरलग्न चरलग्नका अंश यह घरवनावनेमे त्यागकरना–

अन्यमत॥ त्यक्त्वा कुजार्कयोरंशं पृष्ठे चाग्रे स्थितं
विधुं॥ बुधेन्यराशिगं चार्कं कुर्याद्गेहं शुभाप्तये॥४॥
टी॰ रविभौमके अंश और पीछे वा आगे स्थित चंद्रवर्जित है मिथुन कन्या
धन और मीन इन राशियोंका सूर्य गृहारंभ करनेमें शुभहै—
द्वारशुद्धिं॥ द्वारशुद्धिं निरीक्ष्यादौ भशुद्धिं वृषचक्रतः
निर्व्यंच के स्थिरे लग्ने ध्वंगे चालयमारभेत्॥ ५
टी॰ प्रथम घर द्वार शुद्धि और वृषचक्रसे नक्षत्र शुद्धि देखिकेरिपंचकरहि-
तस्थिर वा द्विस्वभावलग्नमें प्रारंभकीजिये॥ ग्राम अनुकूल॥
स्वनाम राशेर्यद्राशि र्द्विपञ्चाङ्केशादि स्थितः॥
सग्रामः शुभदः प्रोक्तः स्व शुभः स्यात्ततोन्यथा
टी॰ अपनीराशिसे २।५।९।११।१० जिसग्रामकी राशि होय वह शुभ
और अन्यथा अशुभजानिये॥
अन्यमत॥ एकभे सप्तमे व्योम गृहहानि स्त्रिषष्ठगे
तुर्याष्टद्वादशे रोगाः शेषस्थाने भवेत्सुखम्॥
टी॰ एकराशि अथवा सप्तम होयतो शून्य तीसरी अथवा सप्तम होयतो
गृहकी हानि चौथी आठवीं बारहवीं अथवा जन्मकी होयतो रोगकारक
जानिये और शेष स्थान शुभ॥ गृहजातकमाह॥
अकचटतपयशवर्गा अष्टौ क्रमतः स्मृताः॥ एको
नरवेषु वर्णानां स्वरशास्त्र विशारदैः। अवर्गे षोडश
ज्ञेयाः स्वराः कादिषु पंचसु। पञ्च पंचैव वर्णास्तु र्य
शौ तु च तुरक्षरौ॥८॥ टी॰ अवर्गादि सवर्ग पर्यंत ४९ अक्षर हैं
तिनमें अवर्गके स्वर १६ और कवर्गके पवर्ग पर्यंत ५ तिनके अक्षर २५ और
यश इन दोनों वर्गोंके अक्षर चार ४ होते हैं यह स्वरशास्त्रके ज्ञाननेहारे कहतेहैं
वर्गस्वामी॥ तार्क्ष्यमार्जारसिंहाश्व सर्पाखुगजसूकराः
वर्गेशाः क्रमतोज्ञेयाः स्ववर्गात्पंचमो रिपुः॥६॥
टी॰ अवर्गका स्वामी गरुड़ १ कवर्गका मार्जार २ चवर्गका सिंह ३ टवर्गका स्वान ४
तवर्गका सर्प ५ पवर्गका मूषक ६ यवर्गका गज ७ शवर्गका शूकर ८ प्रकार वर्गस्वामी
जानिये और जिस वर्गका अक्षर अपनेनामका होय उससे पांचवें वर्गका स्वामी

उस्का शत्रु जानिये और चौथा मित्र और तृतीय उदासीन जानिये ॥

काकिणी॥ स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्॥ अष्टभिश्च हरेद्भागं योधिकः स ऋणी भवेत् ११

टी॰ अपने नाम अक्षरका वर्ग द्विगुणित करना और ग्रहके नामके अक्षरवर्ग उस्मे मिलाय देना और आठसे भाग लेना जो अधिक होय सो ऋणी जानना

चंद्रमुखविचार॥ वान्हामैत्रान्त्यगर्क्षस्थे चंद्रे याम्योत्तरामनं पित्र्याद्वासवतस्त ह्न्याग्यरास्याद्गृहं शुभं ॥ ७ ॥

टी॰ कृत्तिका आदि ७ नक्षत्रोंका चंद्रमा होय तो गृहोंका सुख दक्षिणको और अनुराधा आदिसे ७ नक्षत्रोंका चंद्र होय तो गृहोंका सुख उत्तरको और मघासे ७ नक्ष॰ चंद्र होय तो गृहोंका सुख पूर्वको और धनिष्ठासे ७ नक्षत्रोंका चंद्रमा होय तो गृहोंका सुख पश्चिमको शुभ जानिये ॥

भूमिलक्षण॥ श्वेता शस्ता द्विजेंद्राणां रक्ता भूमिर्महीभुजां॥ विशांपीता च शूद्राणां कृष्णान्येषां तु मिश्रिता

टी॰ भूमीकी परीक्षा ब्राह्मणको श्वेत भूमी राजाको लाल भूमी वैश्यको पीली शूद्रको काली भूमी और चंडालादिकको मिश्रित सब वर्ण युक्त शुभकारक

भूमीपरीक्षा॥ श्वभ्रं कृत्वा निशां चादौ पानीयेन प्रपूरयेत्॥ प्रातर्दृष्टे जले वृद्धिः समे पंके व्रणे क्षयं॥ १३ ॥ (कहै

टी॰ रात्रीको भूमी हात १ खोदना उस्में पानी भर देना और दूसरे दिन सवेरे देखना समान जल होय तो वृद्धी और कम तो होय अथवा कीचड होने क्षय नाशकारक

खोदनेका प्रकार॥ जलांतं प्रस्तरांतं वा पुरुषांतमथापि वा॥ क्षेत्रं संशोध्य चोद्धृत्य शल्यं सदनमारभेत् ॥ (जानना

टी॰ भूमीमें पानी लगे तवतक खोदना अथवा पत्थर लगे तवतक खोदना अथवा एक पुरुष खोदना जगा शुद्ध करना शल्य निकालना और घर बनावना

शुभ अशुभ भूमी॥ खन्यमान्ये यदा क्षेत्रे पाषाणः प्राप्यते तदा॥ धनायुश्चिरतास्य दिष्टकासु धनागमः॥ कपालागारकेशादौ व्याधिना पीडितो भवेत्॥ ७ ॥

टी॰ भूमी खोदनेके कालमें नीचे पत्थर निकले तो धन आयुष्य धान्य वृद्धि जानना ईट निकले तो धनप्राप्ती और हाड कोल केश निकले तो रोगपीड़ा॰

खातपूर्ती॥ कर्पोशीर्षप्रमाणैश्च ग्रावाणैः पूरयेत् दृढं॥
खातं तुत्समं कृत्वा ततः प्राचीं प्रसाधयेत्॥ १६ ॥
टी॰ भूमीखोदनेकेवाद उसभूमीमें बंदरकेमस्तकके ऐसे पाषाणसे मजबूत भरना खातवरोवरकरना तव प्राची साधन करना —
आयादिसाधन॥ गृहेशकरमानेन गृहस्या यादिसाधयेत्
करैश्चैव्हेष्टमायादिसाध्यमंगुलितस्तथा॥ १७ ॥
टी॰ गृहस्वामीके रूस्तमानसे अथवा अंगुलीमानकरके इष्ट आयादिसाधनक
क्षेत्रफल॥ विस्तारगुणितं दैर्ध्यं गृहक्षेत्रफलं लभेत्॥ रै
तत्पृथग्वसुभिर्भक्तं शेषमायो ध्वजादिकः॥ १८॥
टी॰ ध्वज आदिसाधनकार॥ चौडाई लंवाई अथवा लंई चौडाई को आपसमें गुणनेसे क्षेत्रफलजानिये॥ औरउसीमें आठका भागदेनेसे जो शेष बचै सो ध्वज आदि आयजानिये॥

आयोंकेनाम

ध्वजो धूमोथ सिंहः श्वासौ रभेयः खरोगजः ध्वांक्ष
श्चैव क्रमेणैतदायाष्टकमुदीरतं॥ १९ ॥ ७
टी॰ ध्वजा १ धूम २ सिंह ३ श्वान ४ वैल ५ गर्द्धभ ६ हस्ती ७ काक ८ याक्रम करिकै आयाष्टकजानिये॥
वर्णअनुसारउक्त आय॥ ब्राह्मणध्वजोज्ञेयो सिंहोवैक्षत्रियस्यच॥ वृषभश्चैव वैश्यस्य सर्वेषां तु गजस्मृतः॥ १२
टी॰ ब्राह्मणको ध्वजा आय क्षत्रीको सिंह वैश्यका वृषभ और सर्ववर्णोंके गज आय (उक्तहै

मतांतरसे आयोंकाफल

ध्वजे रूनार्थो मरणंच धूमे सिंहेजयश्वय शुनिप्रकोपः
वृषेचराज्यंचखरेच दुःखं ध्वांक्षेम्रतिश्चैवगजेसुखंस्यात्
टी॰ ध्वजायका फल कृतार्थ धूमायकामरण सिंहायकाजय श्वान आयकाकोप वृष आयका राज्य खर आयका दुःख ध्वांक्ष आयकामृत्यु और गज आयका फल सुख प्राप्ति होतीहै —
नक्षत्र अनुसार व्यय साधन॥ पूर्वद्वारे वृषः श्रेयान् गजः प्रा
च्यमदीङ्मुखः। दोत्रमष्टाहतं धिष्ण्यैर्विभक्तं स्याद्गृहस्यभं
भेष्टभक्ते व्ययः शेषमायादल्पो व्ययः शुभः॥

टी॰ पूर्वाभिमुख गृहोंका व्यय और आय श्रेयस्कर होता है और पूर्वदक्षिणाभिमुख गृहोंका आय कहा है पूर्वके क्षेत्रफलको आठसे गुणा करै और २७ का भाग दे शेष बचै सो घरके नक्षत्र जाने उन नक्षत्रोंमें ९ का भाग दे शेष रहै सो उस गृहका व्यय और आयकी अपेक्षा व्यय अल्प होय तो शुभ॥

गृहोंकी राशि॥ अश्विन्यादित्रये मेषो मघादित्रितये हरिः मूलादित्रितये धन्वी भद्वयं शेषराशिषु॥ १९

टी॰ गृहोंके नक्षत्र अश्विनी भरणी कृत्तिका इन नक्षत्रोंकी राशि मेष १ रोहिणी और मृगशिरकी वृष २ आर्द्रा पुनर्वसुकी मिथुन ३ पुष्य श्लेषाकी कर्क ४ मघा पूर्वा और उत्तराकी सिंह ५ हस्त चित्राकी कन्या ६ स्वाति विशाखाकी तुला ७ अनुराधा ज्येष्ठाकी ८ मूल पूर्वाषाढ उत्तराषाढकी धन ९ श्रवण धनिष्ठाकी मकर १० शतभिषा पूर्वाभाद्रपदकी कुंभ उत्तराभाद्रपद रेवतीकी मीन १२ इस क्रमसे राशि जानिये॥

गृहोंके नाम॥ गृहस्य पूर्वतो दिक्षु क्रमात्कक्षाब्धिदंतिनः संस्थाप्यालिंदजानं कास्तन्मित्या षोडशगृहाः॥ २०॥

टी॰ गृहोंके पूर्व दिशा क्रमसे अंक स्थापित करै वे ऐसे पूर्वको १ दक्षिणको २ पश्चिमको ४ उत्तरको ८ ऐसे चारों दिशाको स्थापित करै और जिस ओर को गृहका सुख होय तिस दिशाके अंकमें सालकी संख्या अधिक एक करके मिलावै जो अंक सो नाम जानिये

गृहोंके नाम॥ ध्रुवं धान्यं जयं नंदं खरं कांतं मनोरमम्॥ सुमुखं दुर्मुखं क्रूरं रिपुदं धनदं क्षयम्॥ आक्रंदं विपुलं चैव विजयं चेति षोडश॥ गृहं ध्रुवादिकं ज्ञेयं नाम तुल्य फलप्रदम्॥ २२॥

टी॰ और इन गृहोंके ध्रुव धान्य जय इत्यादिक सोलह नाम हैं इनका शुभाशुभ नामानुसार जानिये

अंशलानेका प्रकार॥ व्ययेन संयुते क्षेत्रे गृहनामाक्षरान्विते॥ त्रिभिर्भक्तांश कास्तेषां द्वितियोंशो न शोभनः॥

टी॰ पीछेका जो व्यय होय इसे क्षेत्रफलमें मिलावै और गृहोंको नामके अक्षर संयुत करिके ३ का भाग दे शेष बचै तो अशुभ १ अथवा पूर्णभाग लग जाने से शुभ फल होता है

गृहोंके भाग॥ नवभागं गृहं कुर्यात्पंचभागं तु दक्षिणे त्रिभागं वामतः कुर्याच्छेषं द्वारं प्रकल्पयेत्॥

टी॰ गृहक्षेत्रके नवभाग करै तिसमें से पांच भाग दक्षिणको तीन भाग उत्तरको और एक भाग मध्यमे तिसमें द्वारकी कल्पना करै॥

गृहोंके द्वार ॥ द्वारस्योपरियद्द्वारं द्वारस्यान्यच्चसंमुखं
व्ययदन्तुयदानच्च न कर्त्तव्यं शुभेप्सुभिः ॥ २५ ॥

टी॰ द्वारकेऊपर द्वार और आमने सामने के द्वार व्ययदायक होते हैं शुभा भिलाषी पुरुषों को ऐसे वरन वन । वाने चाहियें ॥

गृहोंके स्थानोंकी योजनाप्रकार

स्थानागारं दिशिप्राच्यामाग्नेय्यां पंचनालयं । याम्यायां
शयनागारं नैर्ऋत्यां शास्त्रमंदिरं । २७ । प्रतीच्यां भोजनागा
रं वायव्यां पशुमंदिरं । भाण्डकोशं चोत्तरस्यां ईशान्यां देवमंदिरं

टी॰ पूर्वमें स्यानकाघर १ अग्निकोणमें रसोई कास्थान २ दक्षिणमें सोनेका स्थान ३ नैर्ऋत्यमें शास्त्रालय ४ पश्चिममें भोजनस्थान ५ वायव्यमें पशुमंदिर ६ उत्तरमें भंडार कोश ७ ईशान्यमें देवमंदिर ८ इसप्रकारस्थानयोजना करें

अल्पदोष ॥ अल्पदोषंगुणैः श्रेष्ठं दोषायनभवेद्गृहं ॥
आयव्ययौ प्रयत्नेन विरुद्धं भंच वर्जयेत् ॥ २८ ॥

टी॰ जिसगृहमें दोष तो अल्प होयँ परंतु वह बहुत गुणों करिके श्रेष्ठ होय तौ दोष नहीं होता और आय व्यय अथवा नक्षत्र विरुद्ध होय तो यत्न करिके वर्जित (करै

गृहारंभचक्रं । आरंभेवृषभं चक्रं स्तंभे ज्ञेयं तु कूर्मकं
प्रवेशे कालशं चक्रं वास्तुचक्रं बुधैः शुभम् ॥

टी॰ गृहारंभमें वृषचक्र और स्तंभस्थानमें कूर्मचक्र गृहप्रवेशमें कलशचक्र ये वास्तुचक्रमें हैं

गृहारंभके मास ॥ सौम्यफाल्गुणवैशाखभाद्रश्रावणकार्त्तिकाः
मासाः स्युर्गृहनिर्माणे पुत्रारोग्यधनप्रदाः ॥ ३४ ॥

टी॰ पौष १ फाल्गुण २ वैशाख ३ भाद्रपद ४ श्रावण ५ कार्त्तिक ६ इन महीनोंमें गृहारंभ और शिल्यान्यास और स्तंभनिवेश शुभ जानिये पुत्रलाभ । आरोग्यता और आयुकी वृद्धि और धनकी प्राप्ति होय ॥

गृहारंभके मासोंका फल ॥

शोको धान्यं पशुनाशं (?) पशुत्वं स्वाप्तिनैःस्वं संगरं
भृत्यनाशं । लक्ष्मीप्राप्तिं वन्हिं । भीतिं च लक्ष्मीं कुर्युश्चै
त्राद्या गृहारंभकाले ॥ टी॰ चैत्रमासमें शोकप्राप्ति १ और वैशा खमें धनप्राप्ति २ ज्येष्ठमें मृत्यु ३ और आषाढमें पशुहीनता ४ श्रावणमें द्रव्यप्राप्ति ५ भाद्रपदमें दरिद्र ६ आश्विनमें कलह ७ कार्त्तिकमें भृत्योंकानाश ८ मार्गशीर्षमें धनप्राप्ति

पौषमें लक्ष्मी १० माघमें अग्निभय ११ फागुनमें लक्ष्मी १२ इसप्रकार सुभासुभफल जानिये

दिशानुसार गृहोंका सुख करना

कर्कनक्रहरिकुंभगतेर्के पूर्वपश्चिमसुखानि गृहाणि
तौलिमेषवृषवृश्चिकयाते दक्षिणोत्तरसुखानि वदंति

टी॰ कर्क मकर सिंह कुंभ इनराशियोंका सूर्य होयतो घरका द्वार पूर्व अथवा पश्चिमको करै तुलामेषवृष वृश्चिक इनराशियोंका सूर्य होयतो गृहोंका सुख दक्षिण अथवा उत्तरको करै इस प्रकार रत्नमालाग्रन्थमें कहाहै ॥

गृहारंभकेनक्षत्र॥ उत्तरामृगरोहिण्यां पुष्यमैत्रकरत्रये धनिष्ठाद्वितये पौष्णे गृहारंभः प्रशस्यते॥ आदित्यभौमवर्ज्यंतु सर्वे वाराः शुभावहाः। चंद्रादित्यबलंलब्ध्वा लग्ने शुभनिरीक्षिते॥ स्तंभोच्छ्रायस्तु कर्त्तव्य अन्यतु परिवर्जयेत्॥ प्रसादेष्वेवमेवस्यात्कूपवापीषु चैवहि ॥

टी॰ तीनों उत्तरा मृगरोहिणी पुष्य अनुराधा हस्त चित्रा स्वाति धनिष्ठा शतभिषा रेवती ये नक्षत्र शुभ और रवि भौम वार वर्जिके शेष वार शुभ और स्थिर लग्नमें शुभग्रह की दृष्टि देखै और स्तंभारोपण करावै अन्यकर्मोंको उक्त नहीं है देवालय कूप तडाग वापी इन सभ्योंको शुभ जानिये ॥

वृषचक्र॥ त्रिवेदाब्धित्रिवेदाब्धिद्वित्रिभैर्व्यर्कतःश्रीः। कुर्याल्लक्ष्मीं समुद्वासं स्थैर्यं लक्ष्मीं दरिद्रतां ॥
धनं हानिं क्रमान्मृत्युमारंभे वृषचक्रकम् ॥

टी॰ सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्रतक जितने नक्षत्र होंय तिनसें प्रथमभाग ३ नक्षत्र लक्ष्मीदायक दूसराभाग ४ उद्वासत्तीयभाग ४ स्थिरताकारक चतुर्थभाग ३ लक्ष्मी पंचमभाग ४ दरिद्रता षष्ठ ४ धनदायक सप्तमभाग २ नक्षत्र हानिकारक अष्टम ३ नक्षत्र मृत्यु इस क्रमसे जिसदिन का नक्षत्र शुभफलदायक होउसीमे गृहारंभ करावै ॥

शिलान्यास॥ दक्षिणपूर्वकोणे कृत्वा पूजां शिलां न्यसेत् प्रथमां शेषाः प्रदक्षिणेन स्तंभाश्चैवं प्रतिष्ठाप्याः॥

टी॰ पूजन करिके आग्नेय कोणमें प्रथमशिला स्थापन करे शेष शिला प्रदक्षिण स्थापित करावै इसी प्रकार स्तंभस्थापन भी करे॥ शिलान्यासनक्षत्र

शिलान्यासप्रकर्त्तव्यो गृहाणां श्रवणे मृगे ॥

पौष्णे हस्ते च रोहिण्यां पुष्ये श्विन्युत्तरात्रये
टी॰ श्रवण मृगशिर रेवती हस्त रोहिणी पुष्य अश्विनी तीनो उत्तरा इनमे शिला न्यास कर्त्त
शेषे कुसुख ॥ कन्यासिंहे तुलायां भुजगपतिमुखं शंभु (व्यैहै)
कोणे निखातं वायव्ये सात्रि दास्यं त्वलिधनमकरे ईशखातं व
दंति। कुम्भे मीने च मेषे निऋतिदिशि मुखं खातं वायव्य कोणे च॥
ग्न्येकोणे सुखं वै वृषमिथुनगते कर्कटे रक्ष खातम् ॥
टी॰ कन्या तुला सिंह इन लग्नोंमे शेषके मुख ईशान कोणको जानो नो अग्निको
णमें खान करावे। वृश्चिक धन मकर इन लग्नोंमे शेषके मुख वायव्य को तिनमें ईशान कोरख
न करावे। कुंभ मीन मेष इन लग्नोंमें शेषके सुख नैऋत कोनामें वायव्य कोणमें खान कर
वै। वृष मिथुन कर्क इनमें शेषके सुख आग्नेय कोनामें नैऋत्न कोरवान करावे ॥
दुष्टयोग। वज्रव्याघातशूलश्च व्यतीपातश्च गंडकः
विष्कुंभ परिघौ वर्ज्यौ वारौ मंगल भास्करौ ॥
टी॰ वज्र व्याघात शूल व्यतीपात गंड विष्कुंभ परिघ और भौम रविवार ये वर्जित हैं
कूर्मचक्र॥ तिथिस्तु पंचगुणिता कृत्तिकाद्यर्क्षसंयुता।
नया द्वादशमिश्रा च नवभागेन भाजिता॥ फल ॥
त्रिषड्नवस्थाकाशा त्रिविधं कूर्मलक्षणम्॥ ५१ ॥
जले लाभस्तथा प्रोक्तः स्थले हानिस्तथैव च ॥
आकाशे मरणं प्रोक्तमिदं कूर्मस्य चक्रकम् ॥५२
टी॰ गृहारंभकी तिथियोंको पांचसे गुणकरे और कृत्तिका नक्षत्रसे लेकरा दिवस
नक्षत्रनककी नक्षत्र संख्या को उसगुणन फलमें मिलावे फिर १२ और उसीमे मिला
वे नवका भाग दे जो ४।७।१। शेष रहै तो कूर्म जलस्थानमें जानिये ताको फल लाभ औ
२।५।८ बचै तो कूर्म स्थलमें जानिये तिसका फल हानि और ३।६।९। शेष बचै तो
कूर्म आकाशमे जानिये तिसका फल मरण ये तीनों प्रकारका कूर्म कहा है ॥
स्तंभचक्र॥ सूर्याधिष्ठितभद्वयं प्रथमतो मध्ये न यान्विशति
स्तंभाग्रेरससंख्यया मुनिवरैरुक्तं मुहूर्ते शुभं। फल॥ स्तंभाग्रे मरणं भवे
त्तु गृहपतेर्मूले धनार्थक्षयो मध्ये चैव तु सर्वसौख्यमतुलं ग्रामेति कर्त्तासदा
टी॰ सूर्यनक्षत्रसे दिवस नक्षत्र पर्यंत लिखने का क्रम तिसमें प्रथम दो २ नक्षत्र स्तंभमू
लमें तिसका फल धनक्षय और द्वितीय २ नक्षत्र स्तंभके मध्यमें तिसका फल लक्ष्मी

औरकी तिर्जिशनि औरतृतीय६नक्षत्रस्तंभके अग्रभागमें मृत्यु जानिये ऐसे सुभफल देष के स्तंभारोपण करावै ॥

देहलीका मुहूर्त्त

मूलेभौमे मित्ररक्षं गृहपति मरणं पंचगर्भे सुखं स्यात् मध्ये दे याष्ट्रस्थ धनसुखसुखदं पुच्छ देशोष्टहानि ॥ पश्चादेयं त्रिरक्षं गृहपतिसुखदं भाग्यपुत्रार्थदेयं सूर्यक्षीचंद्रकरक्षं प्रतिदिनगणये न्मोभचक्रं विलोक्य ॥ टी॰ सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्र नककी नक्षत्र संख्या औरफल ऐसे क्रमसे जाने प्रथम तीन नक्षत्र मूलमें तिसमें स्तंभारोपण करे तो मृत्यु द्वितीय ५नक्षत्र गर्भमें फल सुख तीसरे ८नक्षत्र मध्यमें फल धन सुत सुख चतुर्थ ८नक्षत्र पुच्छभाग फल मित्रहानि पंचम ३ नक्षत्रमें अग्रभागमें सुखभाग पुत्रलाभ ऐसे शुभफल है

द्वारचक्र।

अर्काच्चत्वारि रक्षाणि ऊर्ध्वे चैव प्रदापयेत् द्वौ द्वौ कोणेषु दद्याद्वै शाखायां च चतुष्टयं ॥ अधश्च त्वारि देयानि मध्ये त्रीणि प्रदापयेत् ॥ ऊर्ध्वेतु लभते राज्यं मुद्वासं कोणकेषु च ॥ शाखायां लभते लक्ष्मीर्मध्ये राज्य प्रदं तथा ॥ अधःस्थे मरणं प्रोक्तं द्वारचक्र प्रकीर्तितम् ॥ टी॰ सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्र पर्यंत लिखने या क्रमतिसमें प्रथम ४नक्षत्र ऊर्ध्व तिनका फल राज्यप्राप्ति द्वारकोण चारतिनमें प्रतिकोणमें २नक्षत्र तिनका फल उद्वसन वा जूदो तिनमें नक्षत्र ४ चारितिनका फल लक्ष्मी और नीचे नक्षत्र ४ फल राज्य मध्यमें नक्षत्र ३ तिनका फल मरण यह जानिये ॥

गृहप्रवेशका मुहूर्त्त

अथ प्रवेशो नवमं दिरस्य यात्राभिरुक्ता वथ भूपतीनां ॥ सौम्यायने पूर्वदिने विधेयं वास्त्वर्चनं भूतबलिश्च सम्यक् टी॰ यात्रा और राजदर्शनके मुहूर्त्तमें उत्तरायणसूर्य होय और प्रवेशके प्रथम दिवसमें वास्तु पूजा और भूतबलि करिके गृहप्रवेश योग्य है ॥

चित्रानुराधा मृगपौष्ण पुष्य स्वाति श्रविष्ठा श्रवणं च मूलं वारेश्च सूर्याक्षितिजे च रिक्ता तिथौ प्रशस्तो भवन प्रवेशः टी॰ चित्रा अनुराधा मृग रेवती पुष्य स्वाति धनिष्ठा श्रवण मूल ये नक्षत्र और रवि भौम ये वार तथा रिक्ता तिथि को त्यागके गृहप्रवेश कीजिये ॥

कलशचक्र

प्रवेशे कलशोर्केर्क्षात्पंच नागाष्टषट् क्रमात्
अशुभं च शुभं ज्ञेयं मशुभं च शुभं तथा ॥ ॥

टी॰ सूर्यनक्षत्रसे दिवस नक्षत्र तक जो नक्षत्र होय उसमें प्रथम ५ नक्षत्र अशुभ और आठ नक्षत्र शुभ आवे ८ नक्षत्र अशुभ और शेष ६ नक्षत्र शुभ ऐसे कलश चक्र जानिये ॥ वामार्कलक्षण ॥ रंध्रात्सुखाद्धनाद्दायात्पंचस्वर्के स्थिते क्रमात् ॥ पूर्वाशादिमुखं गेयं विशेद्वामो भवेद्रविः ॥

टी॰ घरमें प्रवेश करनेके समय सूर्य वामार्क होय तिसके जानने का क्रम प्रवेशलग्नसें अष्टमस्थानसें पंचम स्थानों सूर्य होय और घरका द्वार पूर्व तथा दक्षिणकी ओरको होय तिस्का स्थान ५ या॰ पंचम स्थान पर्यंत २ और घरका मुख पश्चिम को होय तस्या॰ या॰ पंचमस्थान पर्यंत ३ अथवा गृहका मुख उत्तरको होय तो सूर्य ११ स्थान ५ स्थानों तक आवे तो प्रवेशमें वामार्क युक्त है ॥

शुभाशुभग्रह और लग्न ॥ त्रिकोण केंद्रगैः शुभैः स्त्रिषष्ठलाभसंस्थितैः ॥ असद्ग्रहैः स्थिरोदये गृहं विशेद्बले विधौ

टी॰ त्रिकोण और केंद्रस्थानमें शुभग्रह होय ऐसी स्थिरलग्न देखिके और तीसरे छटे तथा लाभस्थानमें पापग्रह होय तो बली चंद्रमामें गृहप्रवेश करना शुभ जानिये ॥

गृहारंभकी लग्नशुद्धि ॥ त्रिषष्ठायगतैः पापैः रन्ध्रांत्यैतरगैः शुभैः ॥ चंद्रलग्नारिरंध्रांत्यवर्जिते स्याच्छुभं गृहम् ॥

टी॰ ३।६।११ स्थानमें पापग्रह शुभ और ८।१२ स्थानसे इतर स्थानोंमें शुभग्रह होय तो शुभ जानिये परंतु चंद्रमा लग्न तथा षष्ठ द्वादश अष्टम स्थानसें न होय ॥

अशुभयोगोंके लग्न ॥ धनकेंद्रत्रिकोणस्थः क्षीणश्चंद्रो न शोभनः ॥ प्राग्नेनवांशगः खेटः स्वास्तसंस्थोपि नो शुभः

टी॰ लग्नविशेष २।१।४।७।१०।५।९। स्थानोंमें क्षीणचंद्र स्थित होय तो अशुभ हैं और स्वराशिका शत्रुनवांशकमें होय तो भी अशुभ क्षीण चंद्र कृष्णपक्षकी पंचमी सें जानो ॥ आयुष्यप्रमाण ॥ लग्ने जीवः सुखे शुक्रो बुधे कर्मण्यरौ रविः ॥ रविजस्सहजे नूनं शतायुस्यात्तदा गृहम्

टी॰ लग्नमें बृहस्पति ४ शुक्र ४ बुध १० सूर्य ३ शनि ऐसी लग्नमें गृहारंभ करनेसे उसगृहकी १०० वर्षकी आयु निश्चय कर जाननी ॥

दूसरा प्रकार

भृगुर्लग्नेबुधोव्येम्निलाभेर्कः केंद्रगौगुरुः॥ यस्या रंभेचनस्यार्सुवत्सराणंशत द्वयम्॥ ६०॥ ८७॥

टी॰ सुक्र और बुध १०मस्थानी ११रवि और १।४।७।१०। गुरुऐसी लग्नमें गृहा आरंभ करावैतो २०० वर्षकी आयुकहिये॥

अन्यच्च॥जीवोबुधोभृगुर्व्योम्निलाभगौभानुभूमिजौ प्रारंभेयस्यतस्यायुः समाशीतिः सहश्रिया॥ ॥

टी॰ गुरुबुधशुक्रये १०स्थानी ११रविभौम होंयतौलक्ष्मीयुतघरकी८०वर्ष की आयुजाननी॥

स्वोच्चवर्तिनिभृगौविलग्नगेदेवमंत्रिणिरसातलेथवा स्वोच्चगेरविसुतेथवागेस्यात्स्थितिश्चसुचिरंसहश्रिया

टी॰ लग्नमेंउच्चकाशुक्रहोकेवैठाहोगुरु ४ होयउच्चकावास्वक्षेत्रीशनि होके ११स्थानी हो तो लक्ष्मीयुक्त चिरकारकी आयुकहना॥

स्वर्क्षगेहिमगौलाभेसुरेन्येकेन्द्रसंस्थिते॥ धन धान्यसुतारोग्ययुक्तंधामचिरंभवेत्॥

टी॰ कर्कका चंद्रमा ११मेंस्थानमें औरगुरु केंद्रमें १।४।७।१०। होयतौवह धनयुक्त और सुत आरोग्य सहित चिरकाल रहे॥

दूसरेमतसेपृथ्वीशोधनेकाप्रकार

कुण्डार्थपृथ्वीपरिशोधहेतवेप्रश्नुर्सुखाद्यःप्रथमंस्फु टीवेत्॥ वर्गादिवर्णैःकिलतद्दिशिस्मृतंशल्यंमुनीद्रैर्ह्र्दयेस्तुमध्यतः। स्मृत्वेष्टदेवतांप्रष्टुर्वचनस्याद्यमक्षरं गृहीत्वातुततःशल्याशल्यंसमग्विचार्यते॥ ६५॥

टी॰ कुंडकेनिमित्त अर्थात् नूतन गृहके वनानेको प्रथमभूमिशोधनेकाप्रकार कहतेहैं इष्टदेवताकास्मरणकरके व्राह्मणसेप्रश्न करेताके मुखसे आदि अक्षर जिसवर्गका निकले तिसकेउत्तर अकचटतपयश वर्ग पूर्वादि अष्ट दिशा ओंमेमध्य भागी हपय वर्गों के आदि अक्षरजहां होंय तिसस्थानमें अशुभ शल्यहै तिसका प्रकार नीचे लिखाहै जिसमेंसे इन२ स्थानोंका फलजानिये॥

प्रश्नअक्षरफल

पूर्व॥ पृच्छायांयदिच्चेत्तः प्राच्यांनरशल्यंतदाभवेत्। सार्धे हस्तप्रमाणेनतत्स्यमानुष्यमृत्युकृत्॥ आग्नेय॥ आग्नेय्यां दिशिकः प्रश्नेखरशल्यंकरद्वये। राजदंडोभवेत्तत्रभयंनैव निवर्त्तते। दक्षिण॥ याम्यायांदिशिचः प्रश्नेतदास्याकटिसं स्थितंनरशल्यंगृहेतस्यमरणंचिररोगतः॥ नैऋत्य॥ नैऋ त्यांयदिटः प्रश्नेसार्धहस्तादधः स्थले। शुनोस्थिजायतेतत्र बालानांजायतेमृतिः॥ पश्चिम॥ तः प्रश्नेपश्चिमायांतुशि शोःशल्यंप्रजायते॥ सार्द्धहस्तेगृहस्वामीनतिष्ठतिसदागृहे ॥वायव्य। वायव्यांदिशिपः प्रश्नेतुषांगाराश्चतुष्करे॥ कुर्वं तिमित्रनाशंचदुःस्वप्नदर्शनंसदा। उत्तर॥ उदीच्यांदिशि यः प्रश्नेविप्रशल्यंकरादधः। तच्छीघ्रंनिर्धनत्वायकुबेरस दृश्यहि॥ ईशान॥ ईशान्यांयदिशः प्रश्नेगोशल्यंसार्धहस्ततः तच्चधनस्यनाशायजायतेगृहमेधिनः। मध्यभाग॥ हृपया मध्यकोष्ठेचवक्षोमात्रंभवेदधः। नृकपालमथोभस्मलोहंत कुलनाशकृत्॥ टी॰ पृच्छकके सुखमें आदिअक्षर अवर्गका निकलै तौ पूर्व कोडेढहाथगहराखोदै तौ मनुष्यकीहड्डीनिकलैं वह मृत्युकारकजानिये १ (क) नि कलेतौ २ हाथकेगहरावमें गदहेकी निकलै उस्सेराजदंडकाभय कभीनिवृत्तनहोय २। (च) अक्षरकाउच्चारण होयतौ दक्षिणकी ओर कटितरावरखोदनेसेनरके अस्थिनिकलैं तिसकाफलचिरकालकेरोगसेमरण। ३। (ट) काउच्चारहोयतौ नैऋत्यदिशामें डेढहाथ गहराखोदनेसे कुत्तेके अस्थिनिकलैं तिसकेफल बालकनजीवे। ४। (त) काउच्चारणकरेतोप श्चिमदिशामें डेढहाथकेगहरेमें बालकके अस्थिनिकलै तिसकाफलगृहकास्वामीसदाघ रमेंनरहे ५। (प) होयतौ वायव्यदिशामें ४ हाथपरजलीहुईधातुकीभूसीवा कोयले निकलें तिसकाफलमित्रनाशदुःस्वप्नदरशन ६ (य) वर्गहोयतौ एकहाथपरउत्तरकोणमें ब्राह्मणके हाड़ निकलें तिसकाफलकुबेरकेसमानभी धनाढ्यदरिद्रीहोय। ७ (श) होयतौ ईशानदि शामें डेढहाथपरगौकीअस्थिनिकलैं तिसकाफलगोधनकानाश॥ ८। (हृपय) होय तौ मध्यभागमें छातीबराबरगहरेमें मनुष्यका कपालवाभस्मवा लोहनिकले तिसकाफलकुलकानाश॥ ९॥ जिसवर्गकानामप्रश्नकर्त्ताकेमुखसेउच्चारणहोयतो उसीदिशाकोदेखै॥

यात्राप्रकरण

शुक्रविचार॥ एकग्रामेपुरेवापिदुर्भिक्षेराष्ट्रविप्लवे॥
विवाहेतीर्थयात्रायांप्रतिशुक्रोनविद्यते॥ १ ॥
टी० गांवकेगांवमे अथवाशहरकेशहरमेंहोदुर्भिक्षहोयाराज्यभ्रष्टहो इतनेका
लत्रानहोयतोविवाह और तीर्थयात्रामेंसन्मुखशुक्रकादोषनहीं जानना
अन्यमत॥ ॥पौष्णादावग्निपादांतंयावत्तिष्ठतिचं
द्रमाः॥ तावच्छुक्रोभवेदंधःसन्मुखेगमनंशुभं॥२॥
टी० रेवती अश्विनीभरणी कृतिका अर्थात्सवातिन नक्षत्रमे शुक्र अंध
रहताहै तोसन्मुख शुक्रहोय और यात्राकरेतो दोषनहीं जानना–
शुभाशुभफल॥ दक्षिणेदुःखदःशुक्रःसन्मुखोहंति
मंगलं॥ वामेपृष्ठेशुभोनित्यंरोधयेदस्तगःशुभः ३
टी० यात्रामे दाहिने शुक्र होयतोदुःखदायक सन्मुख होयतोमंगलनाशबामहो
यतोशुभपीछेहोयतो शुभ इसप्रकारयात्रामे शुक्र विचारकरलेना॥
घातचंद्र॥ प्रयाणकालेयुद्धेचकृषौवाणिज्यसंग्रहे
॥वादेचैवगृहारंभेवर्जयेद्घातचंद्रमाः॥ ४॥
टी० यात्राविषै० युद्धविषै खेतीकरनेमें वाणिज्यमें वादकरनेविषेघरकेआ
रंभकरनेविषेइतनेकर्ममेघातचंद्रमाकात्यागकरना॥
घातप्रकार॥ घाततिथिंघातवारंघातनक्षत्रलग्नच॥
यात्रायांवर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसुशोभनं॥ ५॥ ॥ क्रजानना
टी० घाततिथीघातवारघातनक्षत्रघातलग्नइनकात्यागकरनायात्रामेऔरसबकर्ममे
मेषेरविर्मघाप्रोक्ताषष्ठीप्रथमचंद्रमाः॥ वृषेभेपंचमोहस्तश्चतु
र्थीशनिरेवच॥६॥ मिथुनेनवमस्वातीअष्टमीचंद्रवासरः॥ कर्के
द्विरनुराधाचबुधःषष्ठीप्रकीर्तिता॥ सिंहेषष्ठश्चंद्रमाश्चदशमी
शनिमूलके॥ कन्यायांदशमश्चंद्रःश्रवणःशनिरष्टमी ८ तुले
गुरुर्द्वादशीस्याच्छततृतीयचंद्रमाः॥ वृश्चिकेरेवतीसप्तदशा
मीभार्गवस्तथा॥ धनेचतुर्थीभरणीद्वितीयाभार्गवस्तथा॥
मकरेष्टमोरोहिणीद्वादशीभौमवासरः॥ कुंभेएकादशश्चा
र्द्राचतुर्थीगुरुवासरः॥ मीनेचद्वादशःसार्पेद्वितीयाभार्गवस्तथा॥
॥घातलग्नानि॥ मेषगोकर्कटतौलिनक्रमीनांगनालयः॥ धन्विकुंभौ
युग्मसिंहौघातलग्नानिमेषात॥ टीका इनश्लोकोंकाअर्थचक्र

मेदेखनापरंतु अपनीराशीसेघातचतुष्टययात्रामेत्यागकरना-												
राशी	मे	वृ०	मि०	क	सिं	क०	तु०	वृ	ध०	म	कुं	मी
चंद्र	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
वार	रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	भौम	गुरु	शुक्र
नक्षत्र०	मघा	हस्त	स्वाती	अनु	मूल	श्रव	शत	रेव	भर	रोहि	आ	अश्ले
तिथी	६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२
लग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५

सूर्य्यादिघातग्रहा॥ वेदाष्टार्केषुनंदेन्दुरसदिक्शैलसंमिता॥रुद्र नेत्राग्निसंख्याश्चघातसूर्य्यास्तुमेषत:॥१॥ इन्दुवाणांकनेत्राग दिगग्निशैलसंख्यका:॥ वेदाष्टेशार्कसंख्याका मेषा द्दातेंदव:क्र मात्॥वाणांकेन्दुरसाशा दृक्शैलरुद्रभसंमिता:॥सूर्य्या:ग्न्य ब्धिमितामेषात्क्रमाद्घातोधरात्मज:॥बुध॥नेत्रांगाशाग्निशैले शवेदाष्टेष्वंकसंमिता:॥द्वादशेन्दुमिताघातबोधन:क्रमात्स्यजा त्॥गुरु॥रसनेत्रेशशैलेशवन्हिनागार्कसंमिता:॥नंदेन्द्वाब्धित्रिसं ख्यानाघातेज्यामेषत:क्रमात्॥शुक्र:॥शैलदिग्वन्हिनागार्कवेदनं देन्दुभिर्म्मिता:॥आशाब्धिवाणदृक्संख्याघातशुक्रस्तुमेषत:॥ शनि॥वन्हिशैलेशवेदाष्टसूर्य्यवाणांकभूमिता:॥ दिगीन्दुरससं ख्याश्चमेषाद्घातशनैश्चर:॥स्त्रीणांघातचन्द्र:॥भूनागाब्ध्यंकवेदाग्नि रसाग्न्याशाशिवेषुभि:॥सूर्य्यैश्चप्रमितामेषाद्घातचन्द्रास्तुगोदशा दी०इनश्लोकोंकाअर्थचक्रमेसमझलेना-॥ सूर्य्यादयोघातग्रहाचक्रं

मे	वृ	मि	क	सिं	क०	तु	वृ०	ध०	म०	कुं	मी	राशय
४	८	१२	५	९	१	६	१०	७	११	२	३	सूर्य
१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२	चंद्र
५	९	१	६	१०	२	७	११	८	१२	३	४	भौम
२	६	१०	३	७	११	४	८	५	९	१२	१	बुध
६	२	११	७	११	३	८	१२	९	१	४	३	गुरु
७	१०	३	८	१२	४	९	१	१०	२	५	२	शुक्र
३	७	११	४	८	१२	५	९	१	४	१	६	शनि
१	८	७	९	४	३	६	२	१०	११	१५	१२	स्त्रीघा

कालचंद्र॥ मेषेवेदावृषेष्टौच मिथुनेचतृतीयकः। दशार्क
कैरविः सिंहे कन्यायांकःप्रकीर्तितः। ९३। षट्तुलेवृश्चिके
खेंदुर्धनेरुद्राःप्रकीर्त्तिताः। मकरेऽष्टमयःप्रोक्ताःकुंभेवाण
उदाहृताः। मीनेऽब्धिःकालचंद्राख्यौनकश्चेदमब्रवीत्॥
टी॰ मेषका ४ चंद्र वृषका ८ चंद्र मिथुनका ३ कर्कका १० सिंहका १२ कन्याका ६ तुल
का ६ वृश्चिकका १० धनका ११ मकरका ७ कुंभका ५ मीनका ४ ऐसे बारहो राशी
यहकालचंद्र शौनकनें कहाहै सो सब शुभ कर्ममें त्याग करना।

तिथीपरत्वेलग्नकात्यागः। नंदायमलिहर्योस्तुतुलामकरयो
स्तथा। भद्रायांमीनधनुषोःकालास्तिष्ठतिसर्वदा। ९४। जयायां
स्त्रीमिथुनयोरिक्तायांमेषकर्कयोः। पूर्णायांकुंभवृषयोर्मनुष्यमरणंध्रु
टी॰ भद्रातिथीमें वृश्चि॰ सिं॰ तुल॰ मकर॰ इनलग्नकात्याग भद्रातिथीमें मीनधनकात्या
गकरना जयामें कन्या मिथुनलग्नकात्यागकरना रिक्तामें मेष कर्क इनकात्याग करना
पूर्णतिथीमें कुंभ और वृषलग्नकाकरनायेमृत्युकारकहै॥ यात्राकेनक्षत्र
हस्तेंदुमैत्रश्रवणाश्विनितिष्यपौष्णाःश्रविष्ठाचपुनर्वसूच
प्रोक्तानिधिष्ण्यानिवप्रयाणेत्यक्त्वात्रिपंचादिमसप्ततारा
टी॰ हस्त॰ मृ॰ अनु॰ श्रव॰ अश्वि॰ पु॰ रे॰ ध॰ पुन॰ इननक्षत्रमेंयात्राकथितहै ताराबि
चार तीसरा ३।५।१।७। तारा येतारा चारताराकात्यागकरना यात्राविषै—

मध्यमनक्षत्र॥ रोहिणीउत्तराचित्रामूलमार्द्रातथैव
च॥ षाढोत्तराभाद्रविश्वेप्रयाणेमध्यमाःस्मृताः॥
टी॰ रो॰ उत्तरा॰ चि॰ मू॰ आर्द्रा पूखा॰ उ॰भा॰ उ॰षा॰ येनक्षत्रयात्रामेमध्यमजानना
वर्ज्यनक्षत्र॥ त्रीणिपूर्वामघाज्येष्ठाभरणीजन्मकृत्तिका। सार्पःस्वा
तीविशाखाचनित्यंगमनवर्जयेत्॥ कृत्तिकाएकविंशत्याभरण्याः
सप्तनाडिकाः। एकादशमघायाश्चत्रिपूर्वाणांचषोडश॥ विशाखा
सार्पचित्रासुस्वातीरौद्रचतुर्दश॥ आद्यासुघटिकास्त्याज्याशेषांशेगमनं
शुभं॥ ॥ टी॰ ३ पूर्वा मघा ज्येष्ठा भरणी जन्मनक्षत्र कृत्तिका अश्लेषा स्वाती विशा॰
इननक्षत्रकात्यागकरना और अवश्यकार्यमेंत्यागकरो कृत्तिकाकी २१ घडीत्या॰ और
भरणीकी ७ घडी मघा ११ घडी ३ पूर्वाकी १६ घडी वि॰ अश्ले॰ चि॰ स्वा॰ आर्द्रा इन
नक्षत्रकी १४ घडीयात्रामेंत्यागकरनातोशुभ॥ शुभाशुभवार॥
अर्केक्लेशमनर्थकंचगमनेसोमेचवंधुप्रियंचांगारेनल

तस्करेज्वरभयंप्राप्नोतिचार्थंबुधे।।क्षेमारोग्यसुखंकरोति चगुरौलाभश्चशुक्रेशुभोमंदेवंधनहानिरोगमरणंस्युक्तानिगर्गादि

टी॰ रविवारकोगमनकरेतोमहाक्लेशबहुतअनर्थप्राप्तीसोमवारकोवंधुप्रियदर्शन मंगलकोअग्निचोरभय बुधकोधनप्राप्ती गुरुकोक्षेमआरोग्यसुखप्राप्ती शुक्रको लाभप्राप्तीशनिकोवंधनहानिरोगमरणप्राप्तीयहगर्गादिकमुनीनेकथनकियाहै

होराकथन।।वारात्षष्टस्यहोरासार्द्धद्विनाडिका।अर्क शुक्रोबुधश्चंद्रोमंदोजीवधरासुतौ।।गुरोर्विवाहेगमनेच शुक्रोबोधेसौम्यःसर्वकार्येषुचंद्रः।कुजेचयुद्धंरविराजसे वामंदेचवित्तंस्तुतिहोरयोगाः। यस्यग्रहस्यवारस्यकर्मकिं चित्प्रकीर्त्तितम्।।तस्यग्रहस्यहोरायांसर्वकर्मविधीयते

टी॰ होराज्ञानजिसदिनजोवारहोयउसवारकाहोराप्रथम२।।घडीवादउसेजो षष्टवारउस्कीहोराजाननारविवारकोप्रथम२।।घडीसूर्यकीहोरा दूसरी२।।घडी सुक्रकीहोरातीसरी२।। घडीबुधहोराचवथे२।।घडी चंद्रहोरापांचवें२।।घडी शनिहोराषष्ट२।।घडीगुरुकीहोरासातवें२।।घडीमंगलकीहोरा यहक्रमसे जोवारहोयउस्कीहोरापहिलेहोतीहैआगेकौनहोरामेंक्याकरनागुरुकेहो रामेंविवाहसुक्रकेहोरामेगमन बुधकीहोरामेंवुद्धीचंद्रकेहोरामेंसवकाममं गलकीहोरामेंयुद्धसूर्यकीहोरामेंराजसेवाशनीकीहोरामेंद्रव्यसंग्रहइसक्रमसे होरामेंकरनाशुभजिसवारमेजोकर्महैसोपूर्वमेंकथिलहैसोकर्मउस्केहोरामेकर (ना)

सूर्यहोरा।।सूर्यस्यहोरेरजकीसुवस्त्रंकुमारिकाविप्रचतुष्ट यंच।।काकद्वयंद्वौनकुलौतथैवचाषस्तथैकोवृषभस्तुगोष्ठ।।

टी॰ सूर्यहोरामेगमनकरेतोरस्तेमेधोवीवस्त्रसहित मिलेगाकुमारिकाचारब्राह्मण ३कौवा२नेउरश्नीलकंठ१वैल१गौइतनेमेसेकोईभीशकुनरस्तेमेंमिलेंगेऐसेजानना

चंद्रहोरा।।चन्द्रस्यहोरेद्विजयुग्मकाकमेरीमृदंगानकुलःखरोष्ट्रौ।।हयश्चगोमेषभुनस्तथैवपुष्पाणिनारीद्वयमेवमार्गे।।

टी॰ चंद्रकेहोरामेगमनकरेतोरस्तेमेदोब्राह्मणमिलेंगेकौवानगारामृदंगनेऊरगदहा उटघोडागोमेंढाकुत्ताओरफूलदोस्त्रीइसमेसेकोइभीशकुनरस्तेमेमिलेंगेऐसेजानना

मंगलहोरा।।मार्जारयुद्धंकलहःकुटुंवेरजस्वलास्त्रीभुवनस्य दाहः।नपुंसकश्चलितयांकुजेश्चनग्नोविमुक्तोधरणीधरस्य

टी० मंगलकी होरामे गमन करेतो रस्तेमें बिलाई की लढाई कुटंबमेल डाई ऋतुम
तीस्त्री घरका जलनानपुंसक ऊंट कुत्ता नंगा ब्राह्मण सिद्ध इन्हमेंसे कोईभी शकुमिलेगा ऐसे

बुधहोरा॥ बुधस्य होरेशकुनश्चसर्वः स्त्रीपुत्रयुक्ताकलशं जानो
सुपूर्णः सुचातकश्चाय गजो कुमारः पुण्याणि नारी खलु दर्पणश्च

टी० बुधके होरामें गमन करेतो रस्तेमें सर्व शकुन स्त्री पुत्रयुक्त पूर्ण कलश चातक
पक्षी नीलकंठ हाथी लडका फूल स्त्री सेना दूत नेमेसे कोईभी शकुन मिलें ऐसे जा

गुरुहोरा॥ गुरोर्द्विजातिर्गणिकाचधेनुस्त्रीबालयुक्तासजलो नना
घटस्तु ऊर्णं च काकोन कुलो बकश्च हंसस्तु राजा वह वस्तु वैश्यः

टी० गुरुके होरामें गमन करेतो रस्तेमें ब्राह्मण वेश्या गौ स्त्री बालयुक्त जलका घडा
कंबल वा दुशाला काक नेउरबगुला पक्षी हंस राजा वनियां ये शकुन मिलेंगे ऐसे जानना-

शुक्रहोरा॥ शुक्रस्यहोरेगणिका द्विजेन्द्रः काकत्रिकं चाथ नपुंसकोवा
मद्यं हि मांसगणकश्च धेनुर्धान्यं च मृदुत्रितयं च वैश्यः॥

टी० शुक्रकी होरामें गमन करेतो रस्तेमें वेश्या ब्राह्मण काक ३ नपुंसक मद्य मांस ज्योति
षी गौ अन्न तीन मृदु वनियां इतनेमें से कोईभी शकुन मिलेंगे ऐसा जानना

शनिहोरा॥ पतंगसूनोर्यवनश्च नग्नो रजश्चला स्त्री चमृतं तथैव
पिशाचगृध्रो विधवा च वह्निर्नपुंसकश्चाथ युवा प्रचंडः॥३३

टी० शनीके होरामें गमन करेतो रस्तेमे नंगा मुसलमान ऋतुमती स्त्री प्रेत पिशा
च गृध्रपक्षी विधवा स्त्री अग्नि नपुंसक जवान बडा पराक्रमी इतनेमेंसे कोई
भी शकुन रस्तेमे मिलेगा ऐसा जानना यह सात ग्रहका होराफल जानना-

पूर्वदिशामे वर्ज्य॥ मूलश्रवणज्येष्ठासु प्रतिपन्नवमीषु
च॥ शनौ सोमे बुधे चैव पूर्वस्यां गमनं त्यजेत्॥ ३४॥

टी० मूल श्रवण ज्येष्ठा यह नक्षत्रमें प्रतिपदा नवमी यह तिथीमें शनिवार सो
मवारसे बुधवार यह वारमें पूर्व दिशामें यात्रा करना नहीं॥

दक्षिणदिशामें वर्ज्य॥ पूर्वाभाद्रपदाश्विन्यो पंचमीत्रयो
दशी॥ गुरुर्धनिष्ठा चार्द्रा च याम्ये सप्त विवर्जयेत्॥३५॥

टी० पूर्वाभाद्रपद अश्विनी इन नक्षत्रोंमे पंचमी त्रयोदशी इन तिथीमें गुरुवार
और धनिष्ठा आर्द्रा इन नक्षत्रोमें दक्षिण दिशामें यात्रा करना नहीं-

पश्चिमदिशामें वर्ज्य॥ रोहिण्यां च तथा पुष्ये षष्ठीं च वचतु
र्दशी॥ भौमार्कगुरुवारेषु न गच्छेत्पश्चिमां दिशां॥ ३६॥

टी० रोहिणी पुष्य इन नक्षत्रमें ६।४ इन तिथीमें मंगल रवि गुरु ये वार इनमें पश्चि० कू यात्रा क

उत्तरदिशामें वर्ज्य ॥ कोरे चोत्तरे फाल्गुन्यां द्वितीया दशमी तथा ॥ बुधे रवौ भौमवारे न गच्छेदुत्तरां दिशं ॥ ३७ ॥ (स्नान ही)

टी० इ० उत्तराफा० यह नक्ष द्वितीया दशमी तिथी बुध रवि मंगल इन वारमें उत्तरदिशामें यात्रा करनी नहीं योग्य ॥ ॥ दिक्शूल ॥ ॥

दिक्शूलं पूर्वदिग्भागे ज्येष्ठायां शनिसोमयोः ॥ पूर्वभाद्रपदे याम्यां तथैव गुरुवासरे ॥ ३९ ॥ रवौ शुक्रे च रोहिण्यां पश्चिमायां त्यजेद्बुधः ॥ उदीच्यामुत्तराफाल्गुण्यां निषेधे मंगले बुधे

टी० दिक्शूल पूर्वदिग्भागमें जानना ज्येष्ठा नक्षत्र शनि चंद्रवार ले पूर्वभाद्रपद गुरुवार में दक्षिण दिग्भागमें दि० जानना रवि शुक्रवार रोहिणी नक्षत्र में पश्चिममें दि० जानना उत्तरमें उत्तराफाल्गुनी मंगल बुधवार दिक्शूल जानो यात्रामें त्याज है

विदिक्शूल ॥ ईशान्यां सोमशनौ शूलो आग्नेय्यां गुरुसोमयो ॥ वायव्यां भूमिपुत्रस्तु नैर्ऋत्यां शुक्रसूर्ययोः ॥ ४०

टी० ईशानमें बुध शनिको दिशाशूल जानना अग्निदिशामें गुरु सोमको दिशाशूल जानना मंगलको वायुदिशामें दिशाशूल जानना नैर्ऋत्यमें शुक्रको रविको दिशाशूल

सूर्यवारे घृतं पीत्वा गच्छेत्सोमे पयस्तथा ॥ गुडं मंगारवारे तु बुधवारे तिलानपि ॥ गुरुवारे दधि ज्ञेयं शुक्रवारे यवानपि ॥ माषा भुक्त्वा शनेर्वारे शूलदोषोपशांतये ॥ ४१ ॥ (जानना)

टी० रविको घृत पान करके यात्रा कर सोमवारको दूध मंगलको गुड बुधको तिल गुरुको दहि शुक्रको जव शनीको उडदी ये पदार्थ भक्षण करके तब यात्रा करे तो शुभ०

दिक्दोहद ॥ प्राचीं गच्छेद् घृतं प्राश्य दक्षिणं शांतिलोदनं ॥ पश्चिमां दोहदं मीनमुदीचीं तु पयस्तथा ॥ ४२ ॥ छ ॥

टी० पूर्वदिशमें घृत भक्षण करके गमन करना दक्षिणको तिल पश्चिम दिशामें मछरी भक्षण उत्तरदिशामें दूधपान करके गमन करना श्रेष्ठ है—

पंचकवर्ज्य ॥ शय्या वितानं प्रेताग्निक्रिया काष्ठतृणार्जनं ॥ याम्यदिग्गमनं कुर्यान्न चंद्रे कुंभमीनगे ॥ ४३ ॥

टी० कुंभ और मीनके चंद्रमामें सय्या वनावना नहीं प्रेतकी अग्निक्रिया करना नहि लकडी भूसा ये खरीद करना नहीं दक्षिणको यात्रा करना नहीं इतने कर्म पंचकमें करने

सन्मुखचंद्र ॥ करणभगणदोषं वारसंक्रांतिदोषं कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्द्धदोषं ॥ कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वा (टी)

द्दिदोषं हरति सकलदोषं चंद्रमा सन्मुखस्थ॥ टीका॥ करणदोष नक्ष
त्रदोष वारदोष संक्रांति दोष दुष्टतिथीदोष कुलिकयामदोष यामार्ध मंगल शनि
रविदोष इनके चार का दोष राहू और केतु इतने दोष यात्रामे चंद्रमा साम्हें होनो सब नाश न
चंद्रविचार॥ मेषेच सिंहे धन पूर्वभागे वृषेच कन्या मकरे च याम्ये होनेहै
तुलेच कुंभे मिथुने प्रतीच्यां कर्कालिमीने दिशि चोत्तरस्यां॥ फल॥
सन्मुखो अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसंपद॥ पृष्ठतः प्राणनाशाय वामे चंद्रो धनक्षयः
टी॰ मेष सिंह धन इनके चंद्रमा होनो पूर्व मे वास और वृष कन्या मकर इन राशीके चंद्र
मा में दक्षिण मे वास और मिथुन तुला कुंभ इन राशीके चंद्रमा का पश्चिम मे वास रह
ताहै कर्क वृश्चिक मीन इन राशीका चंद्रमा उत्तर मे रहताहै सो उसका फल यात्रामे
सामने होतो द्रव्यलाभ दहिने होतो सुखधन पीछे होनो प्राणनाश वाम चंद्र होतो
धननाश यह विचार यात्रामे करना शुभ है—॥ तत्कालचंद्र अष्टदिक्ष

नाड्यस्सप्तदश प्राच्यां याम्यां तिथिमितास्ततः॥ ततस्वर्ग
मिताः प्रत्यगुत्तरस्यां तु योड्गश॥ पुनस्सप्तदश प्राच्यां दक्षिण
स्यां चतुर्दश पश्चिमे तत्वसंख्याता उदीच्यां पंचभूमिताः॥
वारद्वयं भ्रमेच्चन्दुः स्ववासस्थानतः क्रमात्॥ एकराशि
स्थितोऽपी हतां दिशाजं फलं दिशोत्॥ ७ ॥७॥

टी॰ दोवार चंद्रमा एक दशा मे आता है क्रमकर
क एक राशिहीके बीचमे स्थित हुवा जो चंद्र

पू	द	प	उ	पू	द	प	उ	दिशा
१७	२५	२१	२६	१७	१४	२०	२१	१३५

मा है जिस दशामे क्रम के अनुसार आवेगा तिसी दशा का फल देगा दशा
ओं कि चंद्र स्थिती चक्र के अनुसार जानो॥

कालविचार॥ पूर्वान्हे चोत्तरां कृष्णे प्राच्यां मध्यान्हके तथा
॥ दक्षिणे अपराण्हे तु पश्चिमे अर्द्ध रात्र के॥ ४७॥
टी॰ दिनके प्रथम भाग में उत्तर दिशा में गमन करे और मध्यान्ह मे पूर्व दिशा मे
गमन करे और दिन के तीसरे भाग मे दक्षिण दिशा मे गमन करे और अर्द्धरा
त्रीमें पश्चिम दिशामे गमन करे ऐसा कथित है सो जानना—

योगिनी विचार॥ प्रतिपन्नवमी पूर्वे द्वितीया दिशि चोत्त
रे॥ तृतीये कादशी वन्हौ चतुर्द्वादशि नैऋते॥ पंचत्र
योदशी याम्ये षष्ठी भूतं च पश्चिमे॥ सप्तमी पूर्ववायव्ये अ
मावास्याष्टमी शिवे॥ फल॥ पृष्ठे च शुभदा प्रोक्ता वामे

चैवविशेषतः॥ योगिनीसंभवेन्नित्यं प्रयाणे शुभदंनृणं॥

टी॰ पड़वा नवमीको पूर्वमे योगिनी वास जानना। द्वितीया दशमी को उत्तर दिशामे वास ३।११ को अग्नि दिशामे वास ४।१२ को निऋत दिशामे वास ५।१३ को दक्षिण दिशामे वास ६।१४ को पश्चिम दिशामे योगिनी वास ७।१५ को वायु दिशामे वास ३०।८ को ईशान्य दिशामे जानना। इस प्रकारसे योगिनी देखना॥ फल यात्रामे योगिनी पीछे होतो सुभ बाऐं होयतो शुभ ऐसे विचार करके यात्रा करना श्रेष्ठ है-

कालराहु॥ अर्कोत्तरेवायुदिशा चसोमेभौमे प्रतीच्यां बुधनैऋतेच॥ याम्येगुरौवन्हिदिशा चशुक्रे मंदेचपूर्वे प्रवदंति कालं

टी॰ कालविचार रविवारको काल उत्तर दिशामें जानना सोमवारको काल वायुदिशा में मंगलको काल पश्चिम दिशामें बुधवारको काल निऋत दिशामें गुरुवारको काल दक्षिण दिशामें सुक्रवारको काल अग्नि दिशामें शनिको काल पूर्व दिशामें जानना

अन्यमत॥ रविदिनगुरुपूर्वेसोमेशुक्रे चयाम्येवरुणदिशि तुभौमेचोत्तरेसौरिसंस्थे॥ प्रतिदिनमतिमत्वा कालराहुदिशानां सकलगमनकार्ये वामपृष्ठेच सिद्धिः॥

टी॰ रविगुरुवारको पूर्वमे यात्रा करेतो कालराहू वाम और पृष्ठभागमे आवता है फल सर्वकार्य सिद्धी सोम सुक्रवारको दक्षिण दिशामे गमन करना मंगलको पश्चिम दिशामें यात्रा करना शनिको उत्तरको गमन करना ऐसे कालराहूका विचार करना

क्षुधितराहु॥ ॥ ऐंद्रेवायौ यमे रुद्रे तोयेग्नौ शशिरक्षसोः॥ यामार्द्धे क्षुधितो राहुर्भ्रमत्येव दिशाष्टके॥ ६०॥ नतिथिर्नचनक्षत्रं नयोगो नचचंद्रमाः॥ सिध्यंति सर्वकार्याणि यात्रायां दक्षिणे रवौ॥ ६१॥ ७॥

टी॰ प्रथम यामार्द्धमें क्षुधित राहु पूर्वको जानिये द्वितीयमे वायव्यको तृतीयमे दक्षिणको चतुर्थमे ईशानको पंचममें पश्चिमको षष्ठमे आग्नेयको सप्तममे उत्तरको अष्टम यामार्द्धमे नैऋत को इस प्रकारसे अष्ट दिशाओंमें भ्रमण करता है परंतु दक्षिण भागमें स्थित रवि विचारके गमन करेतो तिथि नक्षत्रादिकका दोष जाता रहे और समस्त कार्य सि

कालस्थानविचार॥ कालंफलंयातकलोहपाते दावानलः इंद्रे खड्गकचश्चकांति॥ नखाश्चतुर्विंशतिषट्तथा दिक्रुद्रार्धृतिर्विंद्रगुणक्रमेण॥॥ तिथ्यायुतंचैवसुभाजितं शेषश्च कालो मुनयो वदंति॥ फलं॥ कालं [illegible] ॥

खड्गंचचाग्रेकवचंचवामे कांतिश्चयोज्यादिशिदक्षिणस्याम्

टी० कालोंकेनाम १ काल २ पल ३ पातक ४ लोह ५ पात ६ वडवानल ७ खड्ग ८ कवच ९ कांति ऐसे आठनाम तिनके नीचे अंकोलिखेहैं उनमें गमन कालकीतो तिथी है उनको एक२ अंकमें मिलावे आठकाभागदेशेवजो अंकरहे विसदिशाको कालजानिये इसप्रकार पूर्वादिआठदिशा क्रमसेजानियेपृष्ठभागी काल शुभ सन्मुखका फल शुभ पृष्ठभागमे पातकलोह और वडवानल येतीनों शुभ अग्रभागमें खड्ग शुभ बाम भागमें कवच शुभ दक्षिणभागमें कांतिशुभ ऐसे दिशानुसार शुभविचारिके उसदिशाकोयुद्धमें किंवा यात्रामें गमन करेतो शुभहोय॥ पंथाराहुचक्र

स्युर्धर्मेदस्रपुष्योरगवसुजलपद्वीशमैत्राण्यथार्थे यास्याज्यांघ्रीदकर्णादितिपितृपवनोडून्यथोभानि कामे॥ वन्ह्यार्द्राबुध्न्यचित्रानिऋतिविधिभगाख्यानिमोक्षोथरोहिण्यर्यम्णाप्येंदुविश्वांतिममदिनकरर्क्षाणिपथ्यादिराहो॥

धर्म	अश्विनी	पुष्य	आश्ले	विशाखा	अनुरा	धनिष्ठा	शततार०
अथ	भरणी	पुनर्वसु	मघा	स्वाती	ज्येष्ठा	श्रवण	पूर्वाभाद्र
काम	कृत्तिका	आर्द्रा	पूर्वा	चित्रा	मूल	अभि०	उत्तराभा
मोक्ष	रोहिणी	मृग	उत्तरा	हस्त	पूर्वाषा	उत्तराषा	रेवती

टी० नक्षत्र २८ इसके चारभागतो प्रथम धर्म इसके नक्षत्र ७ दूसराअर्थ नक्षत्र ७ तीसराकाम नक्षत्र ७ चौथामोक्षनक्षत्र ७ इसप्रकारसे चारोमार्गकेनक्षत्रजानना और इसे सूर्यएकमार्गमेरहते चंद्रचारोमार्गमे घूमेगा तिसका फल आगे देखना—

धर्ममार्गकाफल॥ धर्ममार्गगतेसूर्ये अर्थगश्चंद्रमा यदि॥ तदाशत्रुभयंतस्यज्ञेयंतु विबुधैः शुभं॥ ४८

टी० धर्ममार्गमेसूर्यहोय और अर्थमार्गमे चंद्रमाहोयतो यात्राकरेतो शत्रूसेभयहो

अन्यमत॥ धर्ममार्गगतेसूर्येचंद्रे तत्रैवसंस्थिते॥ संहारश्चभवेत्तत्रभंगोहानिःप्रजायते॥ ४९॥

टी० धर्ममार्गसूर्यहो और धर्ममार्गचंद्रमा होय यात्राकरेतो कार्यभंग हानि ऐसाजान

धर्ममार्गगतेसूर्येचंद्रेमोक्षगतेयदि। गृहलाभोभवेत्तस्य(ना) विस्येयोनात्रसंशयः॥ टी० धर्ममार्गमेसूर्य होय औरमोक्षमार्गमें चंद्रहोय यात्राकरेतो घरमिगा और सुख प्राप्ती होगी ऐसाजानना

अर्थमार्गकाफल॥ अर्थमार्गगतेसूर्येचंद्रेधर्मस्थिते यदि॥ गजलाभोभवेत्तस्यतत्र श्रीसर्वतो सुखी॥

टी० अर्थमार्गसूर्यहो धर्ममार्ग चंद्रमा होयात्राकरेतो हाथीमिलेगा बहुतसुखप्राप्तीहोगी

अन्यमत॥ अर्थमार्गगतेसूर्येचंद्रेतत्रैव संस्थिते॥

प्रथमंजायतेकार्यंतत्रभंगोभविष्यति॥ ५३॥

टी० अर्थमार्गमेसूर्यहो अर्थमार्गमेचंद्रहोय तौयात्राकरेतोपहिलेकार्यहोगा फिर

॥ अर्थमार्गगतेसूर्येचंद्रेकामेषु संस्थिते॥

सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्यजानीयान्नात्रसंशयः॥

टी० अर्थमार्गमेसूर्य होयकाममार्गमेंचंद्रमाहोययात्रा करेतोसर्वसिद्धी होगी ऐसाजा (नना

॥ अर्थमार्गस्थितेसूर्येचंद्रेमोक्षास्थिते

यदि॥ भूमिलाभोभवेत्तस्यहर्षयुक्तःसुखीभवेत्

टी० अर्थमार्गसूर्य मोक्षमार्गचंद्रमा होय यात्रा करेतोभूमीलाभहर्षयुक्त सुखीहो (गा

काममार्गकाफल॥ काममार्गगतेसूर्येचंद्रे तत्रैव संस्थिते

॥ गजाश्वाश्च विलभ्यंते राजसन्मानसंभवात्॥ ५६॥

टी० काममार्गीसूर्यहो धर्ममार्गीचंद्रहो यात्राकरेतो हाथीघोडा मिलेराज्यमे सन्मानपावै

काममार्गगतेसूर्येचंद्रे चैवार्थसंस्थिते॥

सकलंजायतेतस्यविघ्नभंगोविनिर्दिशेत्॥

टी० काममार्गीसूर्य अर्थमार्गीचंद्रमाहोययात्रा करेतोसर्वकामहोंय विघ्नकाभंगहोय

ऐसाजानना॥ काममार्गगतेसूर्येचंद्रे तत्रैव संस्थिते॥

विघ्नंदारुणंचैव कार्यनाशंविनिर्दिशेत्

टी० काममार्गीसूर्य और काममार्गचंद्रहोय यात्राकरेतोशत्रूसेभय कार्यनाशजानना

काममार्गगतेसूर्येचंद्रेमोक्षगते पिवा

राजलाभोभवेत्तस्यस्वर्णलाभंविनिर्दिशेत्

टी० काममार्गीसूर्य मोक्षमार्गीचंद्रहोय यात्राकरेतोराजदर्शसुवर्णलाभजानना-

मोक्षमार्गकाफल॥ मोक्षमार्गगतेसूर्येचंद्रे धर्मास्थि

तेयदि॥ हेमलाभोभवेत्तस्यसर्वकार्यंप्रसिध्यति॥

टी० मोक्षमार्गमेंसूर्यहोय और धर्ममार्गमें चंद्रमा होय यात्रा करेतोसुवर्ण

कालाभ और सर्व कार्य कीसिद्धीजानना-

॥ मोक्षमार्गगतेसूर्येअर्थांशेचंद्रमायदि

विफलंतस्यकार्यंच चोरराजरिपुर्भयं॥

टी० मोक्षमार्गीसूर्य और अर्थमार्गीचंद्रमाहोयतोराजा चोरसेरिपुसे भयहोय॥

।।मोक्षमार्गगते सूर्ये चंद्रे काम स्थिते यदि।।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति कार्यं च जयमेव च।।७१।।

टी· मोक्षमार्गी सूर्य काममार्गी चंद्रमा होय यात्रा करे तो सर्व सिद्धि हो कार्यमें जय जानना

।। मोक्षमार्गगते सूर्ये चंद्रे तत्रैव संस्थिते।।
विग्रह दारुणं चैव विघ्नस्तस्य भविष्यति।।७२।।

टी· मोक्षमार्गी सूर्य मोक्षमार्गी चंद्रमा होय यात्रा करे तो शत्रुभय विघ्न होगा जानना

पंथाराहूमेकर्म।। यात्रा युद्धे विवादे च प्रवेशे नगरादिषु।।
व्यापारेषु च सर्वेषु पंथाराहुः प्रशस्यते।।७३।।

टी· यात्राकालमे युद्धमें विवादमें ग्रामप्रवेशमे व्यापारमें सर्वकाममें पंथाराहु देखना

गर्गाचार्यमुहूर्त्त।। उषः प्रशस्यते गर्गः शकुनं च बृहस्पतिः।। अंगिरा मन उत्साहो विप्रवाक्यो जनार्दनः।।

टी· गर्गआचार्यका वचन प्रातःकाल यात्रा करना बृहस्पतीका वचन शकुन देखके यात्रा करना अंगिराका वचन मन उत्साहमे यात्रा करना अथवा जनार्दनके वचनसत्य माय ना

शुभाशुभवाहन।। आत्मनो जन्मनक्षत्राद्दिननक्षत्रमेव च।। एकीकृत्वा हरेद्भागं नवशेषे च वाहनं।। रासभो श्वो गजो मेषो जंबुको सिंहसंज्ञकः।। काकश्चैव मयूरश्च हंस इत्येव वाहनं।।फल।। रासभो अर्थनाशश्च धनलाभश्च वाहयः।। लक्ष्मीप्राप्तिर्गजाख्ये यं मेषे च मरणं ध्रुवम्।। जंबुके स्वल्पलाभश्च सर्वसिद्धिश्च सिंहगे।। काके च निष्फलं कार्यं मयूरे च सुखावहं।। हंसेत सर्वसिद्धिः स्याद्वाहनानां फलं स्मृतं।। वाहन

टी अपना जन्मनक्षत्र दिननक्षत्रमें मिलावना और ९ से भाग लेना जो शेष रहे सो जानना शेष १ रहे तो गदहा फल अर्थनाश २ शेष रहे तो घोड़ा फल धनप्राप्ती ३ शेष रहे तो हाथी फल लक्ष्मीप्राप्ती ४ शेष रहे तो मेढा फल मरण ५ शेष रहे तो सियार फल थोड़ा लाभ ६ शेष रहे तो सिंह फल सर्व सिद्धी ७ शेष रहे तो काल फल निष्फल कार्य ८ शेष रहे तो मोर फल सुखप्राप्ती ० शेष रहे तो हंस फल सर्व सिद्धी इस प्रकारसे यात्रा विचार वाहनसे करना शुभअशुभ देखके यात्रा करना।।

अंकमुहूर्त्त।। तिथयः पक्षगुणिताः सप्तभिर्भाजिताश्च ताः।। वारास्तु वह्निगुणिता वसुभिश्चैव भाजिताः।।
चतुर्गुण्यानि भान्यंगभाजिता नियपात्क्रमात्।।

टी· जिस तिथीमें गमन करना होय उस तिथीको दूना करना ७ से भाग लेना गमनमें

जोवारहोय उस्को ३ से गुणदेना ८ सेभागलेना गमनमेजो नक्षत्रहोय उस्को ४ सेगुण
देना ९ सेभागलेना तिथीवारनक्षत्रयहतीनोशेषअंकहोयतो शुभ शून्यआवे तो अशु
भयहअंवकमे कथितहै ॥ फल ॥ पीडास्यात्प्रथमेशून्येमध्येशून्यंम
हद्भयं ॥ अंत्यशून्येतुमरणंत्र्यंकेचविजईभवेत् ॥ ८० ॥
टी० तिथीकेशेषमे शून्य आवेतो पीडाकारकवारकेशेषमे शून्य आवेतो महाभय
नक्षत्रकेशेषमें शून्य आवेतो मरण और तीनो अंक आवेंतो विजयकारकजानना-
भ्रमणडलमुहूर्त्त ॥ सूर्यभाद्गणयेच्चांद्रं सप्तभिर्भागमाहरेत्
त्रिषट्कभ्रमणंचैवद्विसप्तमहदाडलं ॥ प्रथमंपंचचत्वारि
आडलोनास्तिनिश्चितं ॥ आडलंताडनंप्रोक्तंभ्रमणेकार्यनाशनम्
टी० सूर्यनक्षत्रसेचंद्रनक्षत्रतकगिनना ७ सेभागलेना शेष ३ अथवा ६ रहेतो यात्रा
होगी परंतु कार्यनाश शेष २ अथवा ७ रहेतो आडलयोग यात्राकरनानहीं आड
लयोगमेताडन और शेष १ अथवा ५ या ४ रहतो आडलनहीगमनकरना कथितहै ॥
हैवरमुहूर्त्त ॥ ॥ सूर्यभाद्गणयेच्चांद्रंपक्षादितिथिवार
युक् ॥ नवभिस्तुहरेद्भागंसप्तशेषंतुहैवरं ॥ ८३ ॥
टी० सूर्यनक्षत्रसेदिननक्षत्रतकगिनना उसमेपक्षादितिथी मिलावना औरवारमि
लावना ९ सेभागलेनाशेष ७ रहेतो हैवरमुहूर्त्तजानना सो यात्रामे कथित है ॥
घवाडमुहूर्त्त ॥ ॥ सूर्यभाद्गणयेच्चाद्रं त्रिगुणंतिथि
मिश्रितं ॥ नवभिस्तुहरेद्भागंत्रीणिशेषंघवाडकं ॥
टी० सूर्यनक्षत्रसेदिननक्षत्रनकगिनना उस्कोतीनसेगुणदेना गमन की तिथी
मिलावना ९ सेभागलेना शेष ३ रहतो घवाडमुहूर्त्तजानना सो यात्रामे शुभ ॥
वारपरत्वेस्वरशकुन ॥ गुरौशनौरवौभौमेशुभोवैदक्षिणस्वरः
अन्यवारेषुवामस्तुस्वरश्चैवशुभस्मृत ॥ निर्गमेवामतःश्रेष्टः
प्रवेशेदक्षिणःशुभः ॥ यःस्वरःसैवनासाग्नेयोगीनांमतमीदृशं ॥
टी० गुरु शनि रवि मंगल ये चारो वारमें अपना दक्षिणस्वर चलता होयतो प्रवेशशुभ और
चंद्र बुध शुक्र येतीनो वारमें अपना वामस्वर चलता होतो गमन शुभ ये स्वर योगियोंने कहाहै
वारपरत्वेछायाशकुन ॥ अष्टौपादाबुधेस्युर्नवधरणिसुते
सप्तजीवेपदानिज्ञेयंचैकादशार्केशनिशशिभृगुषुप्रोक्त
मर्धेचतुष्कं ॥ तस्मिन्कालेमुहूर्त्तेसकलगुणयुतेकार्यसि
द्धिःशुभान्नानास्मिन्यं चागस्त्यौद्दैनखलुशशिवलंभाषितंगर्गमुख्यै

टी० बुधवारको ८ गोड छाया आवे तो गमन करना भौमको ९ गोड छाया आवे तो गमन करना गुरुको ७ गोड छाया आवे तो गमन करना रवि शनि सोम शुक्र इन चारोंमें ११ गोड छाया आवे तो गमन करना तो सब गुणयुक्त सर्व कार्य सिद्धी शुभ इसे पंचांग शुद्धी चंद्रबल इनका विचार नही ऐसे गर्गजीने कहा है ॥

काकशब्दशकुन

काकस्यवचनंश्रुत्वापादछायांतुकारयेत् ॥ त्रयोदशयुतां कृत्वाषड्भिर्भागमाहरेत् ॥ फल ॥ लाभःखेदस्तथासौख्यंभोजनंचधनागमः ॥ असुभंचक्रमेणैवगर्गस्यवचनंतथा ॥

टी० यात्रामकाकशब्दसुनके अपनी पादछायाह उसमें १३ मिलावे ६ से भाग लेना जो शेष रहे उसका फल १ शेष रहे तो लाभ २ शेष रहे तो खेद ३ शेष रहे तो सुख ४ शेष रहे तो भोजन ५ शेष रहे तो धनप्राप्ति ० शेष रहे तो अशुभ इस क्रमसे देखना ये गर्गमुनीने कहा है

पिंगलाशब्दशकुन ॥ उल्हासःकिल्विलेचैवचिल्यिल्या भोजनंतथा ॥ वंधनंखिटिखिट्टिस्यात्कुर्कुर्शब्देमहद्भयं ॥

टी० यात्राकालमें पिंगलका किलविल शब्द होय तो आनंद चिलपिल शब्द होय तो भोजन प्राप्ती और खिटखिट शब्द होय तो वंधन कुरकुर शब्द होय तो महाभय इस प्रकारसे पिंगलके शब्दका विचार करना

छायाशकुन ॥ वुधैःशिंकारवंश्रुत्वापादछायांचकारयेत् ॥ त्रयोदशयुतांकृत्वाचाष्टभिर्भागमाहरेत् ॥ लाभःसिद्धिर्हानि शोकभयंश्रीदुःखनिःफले ॥ क्रमेणैवफलंज्ञेयंगर्गेणचयथोदितम् ॥

टी० यात्राकालमें छींक होतेही अपनी छाया पांवसे गिनना उसमें १३ मिलावना ८ से भाग लेना फल १ शेष रहे तो लाभ २ रहे तो सिद्धी ३ रहे तो हानी ४ रहे तो शोक ५ वचे तो भय ६ वचे तो लक्ष्मी ७ शेष रहे तो दुःख ० शेष रहे तो निष्फल ऐसे क्रमसे देखना -

छिंकाशकुन ॥ छिंकाप्रश्नंप्रवक्ष्यामिपूर्वस्यामशुभंफलं ॥ आग्नेय्यांशोकदुःखंस्यादरिष्टंदक्षिणेतथा ॥ ६३ ॥ नैर्ऋत्यांचशुभंप्रोक्तंपश्चिमेमिष्टभक्षणं ॥ वायव्येधनलाभंतुउत्तरेकलहस्तथा ॥ ६४ ॥ ईशान्यांचशुभंज्ञेयंमात्मशिंकामहद्भयं ॥ उर्ध्वंचैवशुभंज्ञेयंमध्येचैवमहद्भयं ॥ आसनेशयनेचैवदानेचैवतुभोजने ॥ वामांगेपृष्ठतश्चैवषट्शिंकाअशुभावहा ॥

टी० यात्राकालमें आठों दिशामें छींक होय तिसका फल पूर्व दिशामें होय तो अशुभ अग्निदिशामें होय तो दुःख शोक दक्षिणदिशामें होय तो अरिष्ट निऋति दिशामें होय तो शुभ पश्चिम दिशामें होय तो मि

ष्टान्नभोजनवायुदिशामेंधनलाभउत्तरदिशामहोयतोलडाईईशानदिशामेंहोय तोशुभकदाचित्अपनेकोछीकआवेतोमहाभयअपनेउपरछीकहोयतोशुभ मध्यमेहोयतोमहाभयऔरआस नपरनिद्राकालमेदानकालमेभोजन कालमें वामांगमेपृष्टभागमेंयह ६ जगेछीकनेका फलशुभजानना-

पल्लीशकुन॥ विंत्तंव्रह्मणिकार्यसिद्धिमतुलांशक्रेहुतांशेभयंया म्येमित्रवधःक्षयश्चनिर्ऋतेलाभःसमुद्राशये॥ वायव्यांवरमि ष्टमन्नमशनंसौम्यार्थलाभस्तथा ईशान्येगृहगोधिकार्यमतुलंसर्वत्रभू मौभयं॥ टी॰यात्राविषैपल्लीशब्दऊपरहोयतोधनपूर्वदिशामेकार्यसिद्धीअग्नि दिशामेंभयदक्षिणदिशामेंमित्रनाशनिर्ऋतीदिशामेंक्षयपश्चिमदिशामेंलाभवा युमेमिष्टान्नउत्तरमेलाभईशान्यमेंकार्यसिद्धीभूमिपरभयऐसेपल्लीकाशब्दजानना

पल्लीपतन॥ राज्यंतुशिरसिज्ञेयंललाटेवंधुदर्शनं॥ भ्रूमध्येराज्य सन्मानमुत्तरोष्टेधनक्षयं॥ अधरोष्टेधनैश्वर्यंनासाग्रेव्याधिपीडनं॥ आयुष्यंदक्षिणेकर्णेवहुलाभस्तुवामके॥ अक्ष्णोस्तुवंधनंज्ञेयंभु जेर्भूमतितुल्यता॥ राजक्षोभंतथावामेकंठेशत्रुविनाशनं॥ १००॥ स्तनद्वयेचदुर्भाग्यमुदरेमंडनंशुभं॥ प्र ज्ञानाशःपृष्टदेशेजानुजंघेस्य भावहे॥ करद्वयेवस्त्रलाभस्कंधयोर्विजयीभवेत्॥ नाभौवहुधनंप्रोक्त मूर्वोश्चैवहयादिकं॥ दक्षिणेमणिवंधेचमनस्तापंधनक्षयं॥ मणि वंधेतथावामेकीर्त्तिवृद्धिधनप्रदं॥ नखेषुधान्यलाभंच वक्त्रेमिष्टा न्नभोजनं॥ गुल्फयोर्वंधनंज्ञेयंकेशांतेमरणंध्रुवं॥ अध्वानंदक्षिणे पादेवामेंवंधुविनाशनं॥ स्त्रीनाशस्यात्पादमध्येपादांतेमरणंभवेत्॥ पल्याःप्रपतनेज्ञेयंसरटस्याधिरोहणे॥ यत्प्रोक्तंमनुष्यस्यशुभा शुभहिस्तुचकं॥ १०६॥ तिलमाषादिदा नंचस्नात्वादेयंद्विजन्मने॥ पिनाकिनंनमस्कृत्यजपेन्मंत्रंषडक्षरं॥ शतंसहस्त्रमथ वासर्वदोषविवर्हणं॥ शिवालयेप्रपद्याहृदीपदोषोपशांतये टी॰ पुरुष अथवा स्त्री इनकेयात्रा कालमेंशरीर परविस्तुया।गिरे अथवा गिरगिटानचढेतो शुभा शुभशरीरकेस्थानसेमालूमकरना-

शरीरस्थानपरत्वेशुभाशुभफल॥

१ शीर्ष· राज्य प्राप्ती	११ वामभुजा· राजक्रोध	२१ कटिभग्न: घोडा प्राप्ती
२ कपाल· बंधुदर्शन·	१२ कंठ· शत्रुनाश·	२२ द· कंकणस्थान· धनक्ष·
३ भोंव· राजमान्य·	१३ स्तन दुर्भाग्य	२३ वा० कंकणस्था· कीर्ति·
४ ऊपरका ओठ धनक्षय	१४ पेट· शुभमंडन·	२४ नख· धान्यलाभ०
५ नीचेका ओठ धनऐश्वर्य	१५ पीठ· बुद्धिनाश·	२५ मुख· मिष्टान्नभोज
६ नाक· व्याधिपीडा·	१६ जानु· शुभ·	२६ गुल्फ· बंधन
७ दक्षिणकान· आयुष्य	१७ जंघा· शुभ	२७ केश· मरण
८ वामकान· बहुलाभ·	१८ हाथ· वस्त्रलाभ	२८ दक्षिणपाद· गमन
९ नेत्र· बंधन	१९ स्कंध· विजई	२९ वामपाद· बंधुनाश
१० भुजा· राजा समान	२० नाभी· बहुधन	३० पावकामध्य· स्त्रीनाश

टी०· अंगेपरुजी शरीरपरगिरे औरसरटचले तोतत्काल वस्त्रसहित स्नानकरना और ब्राह्मणको तिल उडिद दान देना और महादेवका दर्शन करना षडक्षरमंत्र का शत १०० अथवा १००० जपकरना सर्वदोषनाश होंगे शिवालयमे दीपक जलावना

अंगस्फुरण॥ ॥ब्रूहिमेत्वंनिमित्तानि अशुभानिशुभा। निच॥सर्वधर्मभृतश्रेष्ठत्वंहिसर्वविबुध्यसे॥ १०९।

टी०· मनूमत्स्यको प्रश्न करतेहैं हे सर्वधर्मभृत्य सवधर्मके जाननेवाले हो इसकारण अंगस्फुरणका शुभाशुभ कथन करो॥

अंगस्यदक्षिणेभागेप्रशस्तंस्फुरणंभवेत्॥ अप्र शस्तंतथावामेपृष्टस्यहृदयस्यच॥ ११०॥

टी०· शरीरके दक्षिण भागमें पुरुषको स्फुरण होयतो शुभ और वाम भागमें पृष्ट हृदय स्फुरण होयतो अशुभ जानना—

अंगस्फुरणफल॥ अंगानांस्पंदनंचैवशुभाशुभविचेष्टितं॥ तन्मे विस्तरतोब्रूहियेनस्यात्तद्विधंभुवि १११ पृथ्वीलाभोभवेन्मूर्ध्निललाटे रविनंदन॥ स्थानंविवृद्धिमायातिभ्रूनसोः प्रियसंगमः ११२ भृत्यल ब्धिश्चाक्षिदेशेदृगुपांतेधनागमः॥ उत्कंठोपगमामध्येदृष्टंराजान्विच क्षणैः॥ दृग्बंधनेसंगरेचजयशीघ्रमवाप्नुयात्॥ योषिद्भोगोपांगदेशे श्रवणांतेप्रियश्रुतिः॥ नासिकायांप्रीतिसौख्यंयान्तिरथरोष्टयोः॥ कंठे तुभोगलाभस्याद्भोगवृद्धिरथांसयो॥ सुहृत्स्नेहश्चबाहुभ्यांहस्तेचै वधनागमः॥ पृष्टेपराजयोयुद्धेजयोवक्षस्स्थलेभवेत्॥ कुक्षिभ्यां प्रीतिरुद्दिष्टास्त्रियाः प्रजननंभगे॥ स्थानभ्रंशोनाभिदेशेअंत्रेचैव धनागमं॥ जानुसंधौपरैः संधिर्बलवद्भिर्भवेन्नृप॥ एकदेशेभवे

स्वामीजंघाभ्यांरविनंदन॥११९॥उत्तमस्थानमाप्नोतिपद्भ्यांप्रस्फुरणेनृ
प॥अलाभंचाध्वगमनंभवेत्पादतलेनृप॥
टी॰ अंगकाजोसुभाशुभफलकहाहैसोविस्तारकरकेशरीरकेस्थानयहजंतमेजानना

१मस्तकस्फुरण॰ पृथ्वी	८नेत्रकाअंत॰ स्त्रीलाभ	१७छाती॰जयप्राप्ती
लाभ ··········	९कान॰प्रियवाणी ····	१८ कोख॰ प्राप्ति
२ललाट॰ स्थानवृद्धी	१० नाक॰ प्राप्ति सुख॰	१९ भग॰ प्रीसूती ····
३भौवकेमध्यमे॰मित्रभेट	११ ओठ२ प्रियकरवस्तुप्रा॰	२०लिंग॰स्त्री प्राप्ती
४नेत्रकेपास॰ मित्रभेट	१२कंठ॰ऐश्वर्य प्राप्ती ····	२१नाभी॰स्थानभ्रम
५नेत्र॰ धनप्राप्ती ····	१३स्कध॰ भोग वृद्धी ····	२२ आंत॰ धन प्राप्ती
६ नेत्रकापलक१ राजप्रा॰	१४वाहू॰ मित्र प्राप्ती ····	२३ गोडकीसंधीवलवान्‌राजा
७नेत्रकापलक२ संग्राम	१५ हाथ॰ धनप्राप्ती ····	२४जंघा॰एकदेशस्वामी
ममेजय ··········	१६पीठ॰दूसरेसेजय	२५पाव॰उत्तमस्थान
		२६पावकातल॰गमन

स्त्रीका अंगस्फुरण॥ ॥लांछनंपीठकंचैवज्ञेयंस्फुर
णवत्तथा॥ विपर्ययेणविहितःसर्वस्त्रीणांविपर्ययः॥
१२०॥ दक्षिणेविप्रशस्तंगप्रशस्तंस्याद्विशेषतः॥॥
टी॰ मस्सा तिलयहस्फुरणकेस्थानमेजाननाइसकोउलटाकरकेस्त्रीकोवा
मांग शुभ और दक्षिणांग अशुभजानना-॥ दुष्टस्थानेस्फुरणेदान
मनन्यथासिद्धिरजन्मनस्यफलस्यशास्त्रस्यचनिंदि
तस्य॥अनिष्टरिष्टोपगमेद्विजानांकार्यंसुवर्णेनतुतर्पणंस्यात्
टी॰ यहजो अंगस्फुरण कहासो राजाको अनिष्टफल नाश होनेके वास्ते
ब्राह्मणकोसुवर्णदानकरना और ब्राह्मणकोभोजन कराना-
नेत्रस्फुरण॥ ॥नेत्रस्योर्ध्वंहरतिसकलंमानसंदुःख
जालंनेत्रोपांतेदिशतिचधनंनासिकांतेचमृत्यु॥नेत्रस्याधः
स्फुरणमसकृत्संगरेभंगहेतुर्वामेचैतत्फलमविफलंदक्षिणे
वैपरीत्यं॥ टी॰ नेत्रस्फुरणकाफलनेत्रकेऊपरस्फुरणहोयतोमनकेदुःख
कानाशनेत्रकेदोनोकोनेमेंस्फुरणहोयतोधनप्राप्तीनाककेअग्रमेंस्फुरणहोयतो
मृत्युनेत्रकेनीचेस्फुरणहोयतोसंग्राममेभंगहोययहपुरुषकावाममेजानना
दक्षिणमेंविपरीतजानना। स्त्रीको दक्षिणमेजानना। वाममे विपरीतजानना-
त्रिशूलयंत्र॥ रोहिण्येचकुजाद्यर्क्षदिनाद्यर्क्षंचसंख्य
नः॥ कृत्तिकागमनेदद्यादन्यत्रविदीयते॥

टी· त्रिशूलचक्रका विचार रोगी का प्रश्न होय तो मंगलके नक्षत्रसे स्थापन करना युद्धप्रश्नमे चंद्रनक्षत्रसे स्थापनकरना और यात्राप्रश्नमें कृत्तिकासे आरंभ करना और अन्यत्र कार्यमें सूर्यनक्षत्रसे जानना नायहस्थापन क्रम आगे फल देखना -

फल॥ त्रिशूलाग्रे भवेन्मृत्युर्मध्यमं वहिरष्टकं॥ लाभक्षेमं जयारोग्यं चंद्रगर्भेषु संस्मितं॥

टी· पूर्वमे नक्षत्र स्थापन कहा सो उस्का फल देखना जो अपना नक्षत्र त्रिशूलके अग्रभेंम आवे तो मृत्यु जानना मध्यके अष्टकमें आवे तो मध्य और वीचके गोलमें जो नक्षत्र आवे तो लाभक्षेम जय आरोग्य ना चंद्रगोलमे होय तो जानना

परिघविचार॥ ॥ अग्निधिष्ण्यात्सप्तसप्त क्रमात्दिक्षु न्यसेत्सुधीः॥ वाय्वग्निदिग्गतं दंडं परिघं तु न लंघयेत्॥ ९५॥

टी· कृतिकासे ७ नक्षत्र पूर्वमे स्थापन करना और दक्षिण दिशामें ७ और पश्चिम दिशामें ७ और उत्तर दिशामें ७ ऐसे क्रमसे नक्षत्र स्थापन करना और पूर्वके नक्षत्रमे पश्चिममे गमन करना नहीं और पश्चिमके नक्षत्रमे पूर्वमे गमन करना नही और दक्षिणके नक्षत्रमें उत्तरमे गमन करना नहीं उत्तरके नक्षत्रमें दक्षिणमे गमन करना नहीं और अग्निदिशामे और वायुसे परिघदंड उल्लंघन करना नहीं यात्रामे

कालस्तान॥ कौवेरीतो वैपरीत्येन कालो वारेर्काद्येसंमुखे तस्यपाशः॥ रात्रावेतो वैपरीत्येन गण्यो यात्रायुद्धे संमुखे वर्जनीयौ॥ टी· उत्तरदिशामें उलटा सूर्यादिवारसे सन्मुख काल जानना रात्रीमे भी उल्टा जानना ऐसा कालचक्र जानना - परिघदंडचक्रम्

र	चं	मं·	बु·	गु·	शु·	श
उ	वा·	प·	नै·	द·	आ·	पूर्व

कालचक्र उत्तर

योगिनीचक्र॥

र	चं	मं·	बु·	गु·	शु·	श
पू	उ	आ	नै	द·	प·	वा

यहवारके क्रमसे योगिनीका दिशा वास चक्रपरसे जानना॥

कृ· रो· मृ· आ· पु· पु· आ·

[illegible]

एवावुत्तरतः कालः सोमेवायव्यभागके॥ भौमेतुपश्चिमे भागेबुधेनैर्ऋत्यकोणके॥ २७॥ जीवेतुयाम्यदिग्भागेशुक्रे चाग्नेयकोणके॥ शनौतुपूर्वदिग्भागेकालचक्रंप्रवर्त्तितं॥ पाशज्ञान॥ सौम्यादौ वामे मार्गेण रवितः कालसंस्थितिः॥ तत्संमुखेभवेत्पाशोराज्ञौस्येयोविलोमतः॥ १२९॥ दक्षिणस्थःस्थितः कालः पाशो वाम दिगाश्रयः॥

टी॰ इसप्रकारसे चक्रपरसे कालज्ञानकरना और उत्तरमार्गसे सूर्यसे कालस्थितीसमुजानना एसीमें दक्षिण स्थिती काल होयतो वाममे जानना॥

पाशचक्रम्

र॰	चं॰	मं॰	बु॰	गु॰	भृ॰	श॰
उ॰	वा	प॰	नै॰	द॰	आ	पू

र	चं	मं	बु॰	गु॰	भृ	श
द	आ	पू॰	ई॰	उ॰	वा॰	प

गमनेलग्नशुद्धी॥ चरलग्ने प्रयातव्यंद्विस्वभावे तथानरैः॥ लग्ने स्थिरे नगंतव्यं यात्रायां क्षेम मीप्सुभिः॥ १३०॥

टी॰ यात्रा कालमें लग्न प्रकार चर लग्न मेष कर्क तुला मकर इसमे यात्रा करना और द्विस्वभावलग्नमें यात्रा करना ये ८ लग्नमें गमन कथिन है स्थिरलग्नमें यात्रा करनानहीं कल्याणकी इच्छा होयतो लग्न सुद्धी देखके गमन करना—

लग्नेकार्मुकमेषतौलिगमने कार्येविलंवो नृणां पचत्वंकरे तथैवचयदेतद्वल्फलं वृश्चिके॥ सिंहेकर्कटके वृषेपरिगतः सर्वार्थसिद्धिंलभेत्कन्यामीनगतस्तथैवमिथुने सौख्यंशुभान्नंवसुः

टी॰ धनमेष तुला ये लग्नमें यात्रा करेतो कार्य विलंवसे होगा और मकर कुंभ वृश्चिक इनलग्नमे यात्रा करेतो मृत्युकारक और सिंह कर्क वृष इनलग्नमें गमन करेतो सर्व अर्थसिद्धि कन्या मीन मिथुन यह लग्नमे यात्रा करेतो सौख्य अन्नभूमी इसकी प्राप्ती जानना आगे यात्रा लग्नमें वारोस्थान काफल कहते हैं —

प्रथमस्थान॥ जन्मस्थं चाष्टमंत्याज्यंलग्ने द्वादशमेचच॥ ग्रहाणांचवलं वीक्ष्य गच्छेद्दिग्विजयंनृपः॥ १३२॥

टी॰ यात्रा कालमे जन्मस्थ अष्टम द्वादश स्थानमें पापग्रहकोत्याग करना और ग्रहवलदेखके गमन करेतो राजा विजइ होताहै— ॥ अन्यमत ॥

स्थानेयदास्युर्गुरुसौम्यशुक्राः सिद्ध्यंति कार्याणिचपंचमेंन्हि॥ राज्यास्पदंवासुखदेश लाभंमासस्यमध्येगृहभावयुक्तं

टी॰ यात्रा लग्नमे गुरु बुध शुक्र होयतो सर्वकार्य ५ दिन अथवा १ मासमे सर्व सिद्धि जानना

द्वितीयस्थान ॥ जीवो बुधो वा भृगुनंदनो वा स्थाने द्वितीये गमन स्य काले ॥ सुवस्त्रलाभं चतुरंगलाभं मासत्रयमध्ये च चतुर्दशे हि (दिने)

टी॰ यात्रालग्नसे द्वितीस्थान गुरु बुध सुक्र होंतो वस्त्र घोडा पाती १ मासमे जानना या १४

अन्यमत ॥ क्रूरा धनस्था रविराहुभौमाः सौरिश्च केतुस्त्रिभि रेव मासैः । वित्तस्य नाशं च ददाति मृत्युं सत्यं हि वाक्यं मुनयो वदंति

टी॰ यात्रालग्नमें द्वितीयस्थानमें क्रूरग्रह रवि राहु मंगल शनी केतु इनमे से कोई ग्रह होय तो मृत्यु कारक धनं नाश तीन मासमे जानना ऐसे मुनियों कहा है ॥ ने ।

तृतीयस्थान ॥ स्थाने तृतीये गुरुभार्गवौ च सोमश्च सूनुश्च निशापतिश्च ॥ करोति कार्यं सुफलं च सर्वं पक्षद्वयेनापि दिनत्रयेण

टी॰ यात्रालग्नमे ३ स्थान गुरु शुक्र अथवा बुध चंद्र होंतो १ महिने अथवा ३ दिनमे कार्य सुफ (लहो)

चतुर्थस्थान ॥ क्रूराश्चतुर्थे गमने यदा तु न स्युश्च शोवाः शुभदा हि कार्ये ॥ तत्रापि दैवेन भवेच्च सिद्धिर्मासत्रयेण पि दाशाहमध्ये

टी॰ यात्रालग्नमें चतुर्थस्थानमें पापग्रह होय तो असुभ सुभग्रह होय तो दैवयो गसे कार्य सिद्धी ३ मासमे अथवा १० दिनमे जानना -

पंचमस्थान ॥ गुरुर्भृगुश्चंद्रबुधौ यदा स्यात् सुभे च लग्ने तु सुतेच युक्ताः । कुर्वंति कार्यस्य च सिद्धिमिष्टां मासद्वयेनापि वदंति सत्यं

टी॰ यात्रालग्नमे ५ स्थान गुरु सुक्र चंद्र बुध यह चारोमेसे कोई ग्रह होय तो कार्यसिद्धि २ मासमे जानना ॥ षष्ठस्थान ॥ जीवश्च शुक्रश्च बुधश्च षष्टे करोति यात्रा सफलां विलग्नात् । पक्षद्वयेनापि वदंति सत्यं सौम्यर्क्षसंस्थः सबलश्च चंद्रः ॥ टी॰ यात्रालग्नसे ६ स्थानमे गुरु सुक्र अथवा बुध होय तो यात्रा सफल जानना और मिथुनका चंद्र होय के ६ स्थानमे बलवान् होय तो १ मासमे कार्य (सिद्धि)

सप्तमस्थान ॥ चेत्सप्तमस्था गुरुसोमसौम्याः कुर्वंति यात्रा विजयं नृपाणां । सर्वे नृपास्तस्य भवंति वश्या मासद्वयेनापि च पंचभिर्दिनैः

टी॰ यात्रालग्नसे ७ स्थानमे गुरु चंद्र अथवा बुध होय और राजा यात्रा करे तो विजय पामी और उस्के सव राजा वस होंय २ मासमे अथवा ५ दिनमे ऐसा जानना -

अष्टमस्थान ॥ क्रूराश्च सर्वे यदि लग्नकाले मृत्युस्थिता मृत्युकरा भवंति ॥ सौम्यो गुरुर्वा भृगुनंदनश्च दीर्घायुषं मृत्युकरश्च चंद्रः ॥ टी॰ यात्रालग्नसे ८ स्थानमे क्रूरग्रह होय तो मृत्यु कारक और बुध गुरु सुक्र यह ८ स्थानमे होय तो आयुष्य बढे और चंद्रमा होय तो मृत्युकारक जा॰

नवमस्थान॥ धर्मस्थितायदिभवंतिह्रिपापखेटाःत्र्ययाणकाले चतथैवचंद्रमा॥ तदाजयंवैसबलेचचंद्रेमासत्रयेणापिदिनैस्त्रिभिर्वा

टी॰ यात्रालग्नसे ९स्थानपापग्रहहोउसीस्थानमेचंद्रमाहोपरंतुबलवान् चंद्रहोयतो ३ मासमे अथवा ४ दिनमेंजयप्राप्तीजानना॥ ॥ अन्यमत॥

धर्मस्थितोवायदिजीवशुक्रौसोमस्यसुनुर्यदिलग्नकाले॥ लग्नचरेवायदिवास्थिरेवाकार्यस्यसिद्धिश्चभवेच्चलाभः

टी॰ यात्रालग्नसेनवमस्थानमेंगुरुशुक्र अथवाबुधयहचरलग्नमेहोय अथवाद्विस्वभावलग्नमेहोयतो कार्यसिद्धी औरद्रव्यलाभजानना—

दशमस्थान॥ कर्मस्थितापापखगास्तुसौम्याःकुर्वंतिकार्यंशनिवर्जिताश्च॥ लग्नेचरेवायदिवास्थिरेवामासत्रयेणापिचचैकमासत

टी॰ यात्रालग्नसेदशमस्थानमेपापग्रहशनीछोडकेअशुभ और शुभग्रहचरलग्नमेअथवास्थिरलग्नमेहोयतो ३ महिनेमेअथवा १ महिनेमेकार्यसिद्धिजानना

एकादशास्थान॥ लाभस्थितौगुरुबुधौभृगुनंदनोवाक्रूराश्चसर्वेशशिनैवयुक्ताः॥ सद्यःफलाप्तिश्चभवेद्धियात्रापक्षैकमध्येदिवसत्रयेच

टी॰ यात्रालग्नसेएकादशस्थानमेगुरुबुधशुक्र अथवाक्रूरग्रहचंद्रकरकेयुक्तहोयतो १ पक्षमे अथवा ३ दिनमे फलप्राप्तीजानना—

द्वादशास्थान॥ सर्वेशुभाद्वादशसंस्थिताश्चयात्राभवेत्तत्रविचित्रलाभः॥ पापाश्चसर्वेव्ययदाभवंतियात्राफलंगर्गमुनिप्रणीतं

टी॰ यात्रालग्नसेद्वादशस्थानमेसर्वशुभग्रहहोयतोविचित्रलाभ औरसबपापग्रहहोयतोखर्चकरावेऐसायात्राफलगर्गमुनीनेकथितकियाहैसोजानना—

अन्यमत॥ शुक्रेचास्तंगतेजीवेचंद्रेचास्तमुपागते॥ तयोर्बाल्येवार्द्धकेचसायात्राभयरोगदा॥ १४७॥ ॥

टी॰ यात्राकालमेशुक्रका अस्तहोयगुरुका अस्तहोय अथवाचन्द्रकाअस्तहोय औरइनकाबालत्वबृद्धत्वहोय औरयात्राकरेतोभयरोगदायकहोती

गमनेत्याज्य॥ निंद्योनिखिलयात्रासुघटलग्नंघटांशकं॥ दैवकःपंथामीनलग्नेयातुर्मीनांशकेपिवा॥ १४८॥

टी॰ यात्राकालमेंकुंभलग्न औरकुंभलग्नकानवांशनिंद्यहैत्यागकरनाकारणद्रव्यनाश औरमीनलग्न औरमीनलग्नकानवमांशइनकात्यागकरनाकारणरस्ताम्लहोपूसताहैकार्यहोतानहींसोचक्रमेदेखना—

११	११	१२	१२	लग्न.स्थे.
द्रव्य नाश	द्रव्य नाश	वक्रः पंथा	वक्रः पंथा	दुस्कान्त्या गकरना

गमनेग्राह्य॥ वर्गोत्तमांश्रलग्नेत्वथवा पिसुधाकरे॥ यात्राकामद्दुयायालुर्मोना पुत्रस्यवैयथा॥ टी० यात्राकालमेलग्नवर्गोत्तम होय अथवा चंद्रमावर्गोत्तम होयतो और यात्राकरेतोसर्व सुखप्राप्तीजैसीपुत्रकोमातासेसुखप्राप्तीजानना-

दिग्द्वारमाह॥ पूर्वादिदिक्षुमेषाद्यैः क्रमाद्दिग्द्वारराशयः
दिग्द्वारराशयः सर्वेनद्दिश्यातुश्रुभ।प्रदाः॥ १५०॥

टी० पूर्वदिशामेंदिग्द्वारकीराशीमेषादीसेजानना औरजिसदिशामेंगमनकरना होयतोउसदिशाकीजोराशीउस्मेगमन करना-॥ पूर्वादिनांस्वामी॥

दिगीश्वराभास्करशुक्रभौमराह्वार्किचंद्रज्ञसुरार्चितास्युः॥

टी० आठदिशाकेस्वामीसूर्यशुक्रमंगलराहुशनिचंद्रबुधगुरुयेदिशापतीचक्रमेदे

पू०	द०	प०	उ०	अशु०
१	२	३	४	
५	६	७	८	
९	१०	११	१२	
अशुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ	
प	उ	पू०	द०	

ई० पू० अ० गु० उ० सू० दि० द० बुध० दि० भौम० दि० वा० पु० शनी दि० नै० चं० दि० र०

खन ॥ गमनचक्रं

लालाटियोग॥ लग्नेभानुःसुनरिपुगतश्चंद्रमाऽरोनभस्थःपाता लस्थोहिमकरसुतःस्वत्रिगोदेवमंत्री।तद्दत्शुक्रोव्ययभवगतो भास्करिःसप्तमस्थोराहुर्नित्यंनिधननवगःस्वांदिशंवारयति॥

टी० यात्रालग्नमेसूर्यहोयतोललाटियोगहोनाहैतोपूर्वमेयात्राकरनानहींचंद्रमा ५ अथवा षष्टहोयतो वायुदिशामेलालाटियोगयात्राकरनानहींमंगल १० स्थानमें होयतोला० दक्षि० यात्रावर्ज्य ४ स्थानमेबुधहोयतोला० उत्त० यात्राकरनानहीं २ स्थानमे ३ स्थानमेंगुरुहोयतोला० ईशान्यमेंयात्राकरनानहीं १२ स्थानमेंशुक्रहोयतोला० अग्निदिशामेयात्रा करनानहीं ७ स्थानशनिहोतोला० प० दि० यात्रा करनानहीं ८ स्थानमे ९ स्थानमेराहूहोतोला० निऋतीदिशामेयात्राकरनानही॥

ई० गु० गुरु २ पू०१ सू० १२ शु० अ० अ० शु ११ ३ ४ उ मं० १० द० चं० वा ५ ७ श० प० र० नै० वा चं० ६ ८ र० नै०

यात्राविचार॥ उषः कालोविना पूर्वांगोधूलीपश्चिमांविना
॥विनोत्तरांनिशीथश्चयानेयाम्यांविनाभिजित्॥ १५२॥

टी० यात्राविचारप्रातःकालमेपूर्वमेयात्राकरनानहींसायंकालमेपश्चि० करनानहीं औरआधीरातमेउत्तरमेयात्राकरनानहींमध्यान्हमेदक्षि० मेयात्राकरनानहीं-

सर्वेषांविचार॥ फलसिद्धिर्योगवशाद्राज्ञोविप्रस्यधिष्ण्यतः
मुहूर्त्तशक्तितोन्येषांशाकुनैस्तस्करस्यच॥ १५३ ॥

टी॰ यात्राराजाकोयोगवलसेफलसिद्धिब्राह्मणकोनक्षत्रवलसेसिद्धिऔरअन्यमनुष्योंकोमुहूर्त्तवलसेसिद्धिचोरकोशकुनसिद्धिऐसेयातीविचारकरनायात्राविषे-

यात्रायोग॥ लग्नेगुरुर्वुधभृगुहिवुकात्मजस्थौषष्ठेकुजा
र्कतनयौदिनकृत्तृतीयः॥ चंद्रस्त्र्यस्यदशमेभवतिप्रया
तुस्तस्याभिवांछितफलाप्तिरलंनृपस्य॥ १५४ ॥

टी॰ यात्राकालमेंकुंडलीमेंऐसेग्रहहोययात्राकरेतोवांछितफलप्राप्तीहोयंयेपांच
कुंडलीमेंवलग्नसेसोनहीजोलग्नहोयपरंतुग्रहइसरीतीसेहोयऐसाजानना-

शुक्रवाक्पतिवुधैर्धनसंस्थैःसप्तमेशशिनिलग्नतेऽर्के॥
निर्गतोनृपतिरेतिक्षनार्योवैनतेयवदरीन्विनिहत्य॥

टी॰ यात्राकालमेंऐसेग्रहहोयऔरराजायात्राकरेतोशत्रूकोवहुतजलदीजीते

यात्रायोगचक्रं — (कुंडली: २, १२, ३, १ रा, ११, बु॰ ४, १० चं॰, ५ शु॰, ७, ९, ६ मं॰ श॰, ८)

यात्रायोगचक्रं — (कुंडली: बु॰ गु॰ शु॰ २, १२, ३, सू॰ १, ११, ४, १०, ५, चं॰ ७, ९, ६, ८)

अशुभखगैरनवाष्टमदस्थैर्हिवुकसहोदरला
भगृहस्थैः। कविरिहकेंद्रगणेष्यतिहृष्टोवसु
चयलाभकरःखलुयोगः॥

टी॰ इसप्रकारग्रहहोयंयात्राकरतोद्रव्यलाभसुखहोय

यात्रायोगचक्रम् — (कुंडली: २ पा॰, १२, ३ सू॰, पा॰ १ शु॰, ११ श॰, पा ४ भृ॰, १० पा, ५ पा॰, ७ गु॰, ९, ६ पा, ८)

सितेलग्नेगतेसूर्येलाभगेवुस्थितेविधौ॥
तनौराजारिपून्हंतिकेसरीवेभसंहतिं॥

टी॰ ऐसेयोगमेयात्राकरेतोजैसेसिंगजकेसमूहकोनाश
करताहैउसीरीतिसेराजाशत्रूकानाशकरताहै-

यात्रायोगचक्रम् — (कुंडली: २, शु॰ १, १२, ३, ११ सू॰, ४ चं॰, १०, ५, ७, ९, ६, ८)

रविषष्ठेसितःछिद्रेतृतीयेभूमिनंदने॥ पिना
कियोगोविख्यातोयातुर्विजयकारकः॥

टी॰ ऐसेयोगमेयात्राकरेतोवहपिनाकिनामयोगहोताहैसो
गमनकरनेवालेकोविजयकारकजानना-

यात्रायोगचक्रम् — (कुंडली: २, १२, मं॰ ३, १, ११, ४, १०, ५, ७, ९, सू॰ ६, ८ शु॰)

गुरौकर्कटगेलग्नेभानावेकादशस्थिते॥

पुंडरीकोमहायोगःशत्रुपक्षविनाशकृत्॥
टी॰यात्राकालमेकर्कलग्नमेगुरुहोयश्रौर११स्थानमें
सूर्यहोयतोवहपुंडरीकनामयोगहोताहैयात्राकरतोशत्रूका
नाश) वृषराशिगतेचंद्रेलाभस्थेकेंद्रगेगुरौ।।का
मधेनुरयंयोगःकामदोयायिनांरणे।।
टी॰यात्राकालमेवृषराशीकाचंद्रमाएकादशस्थानमे
होयश्रौरकेंद्रमेंगुरुहोयतोकामधेनुयोगहोताहै
रणमेकामदेताहै॥

त्रिषष्ठलाभगेष्वेषुरविमंदकुजेषुच॥पू
र्णचंद्रोमहायोगःपूर्णराज्यप्रदःसदा॥
टी॰यात्रासममेलग्नसे३स्थानमेसूर्यहोयश्रौर ६स्थान
मेंशनीहोय११स्थानभौमहोययहयोगमयात्राकरेतोराज्यदा
यकजानना-) लग्नेशुक्रशशीबंधौकर्मस्थानेगु
रुर्यदा॥मृगेंद्रयोगोविख्यातोयातुःसर्वार्थसाधकः
टी॰यात्रासमेलग्नमें शुक्रहोय४स्थानमेंचंद्र१०स्थानमे
गुरुहोयतोमृगेंद्रयोगहोताहैगमनकरेतोसर्वसिद्धिजानना
आपोक्लिमगतेचंद्रेकेंद्रस्थेसुरपूजिते॥
योगःकेंद्रइतिख्यातोयातुरिष्टार्थसूचकः
टी॰ यात्रासममे३।६।९।१२इतनेस्थानमेंचंमाहोयश्रौर
केंद्र१।४।७।१०इतनेस्थानमेगुरुहोयतोकेंद्रनामयोगहै
इसमेगमनकरेतोइष्टसिद्धिजानना-
लग्नेसौम्योरवौषष्ठेलाभगेदेवपूजिते॥
महापाशुपतोयोगःशत्रुवर्गविनाशकृत्।
टी॰यात्रासमलग्नमेबुधहोयश्रौरसूर्यषष्ठस्थानमेंहो
य११स्थानमेगुरुहोयतोमहापाशुपतयोगहोताहै यात्राम
करेतोशत्रूवर्गकानाशजानना-॥ प्रस्थानमुहूर्त्त॥
सुमुहूर्त्तेस्वयंगमनासंभवेप्रस्थानंकार्यं॥श्लो०॥यज्ञोपवी
तंकशस्त्रंमधुचस्थापयेत्फले॥विप्रादिक्रमतःसर्वस्वर्ण
धान्याम्बरादिकं॥टी॰सुमुहूर्तमेयात्राजानकरसकेतोप्रस्थानरखनाजासरण

पुंडरीकयोगचक्रम्
५ ६ गु४ २सू ७ १ ८ १० १२ ९ ११

कामधेनुयोगचक्रम्
५ ३ ६ गु॰४बो॰ २चं ७ गु॰बो॰ गु॰१बो॰ ८ १० गु॰बो॰ १२ ९ ११

पूर्णचंद्रयोगचक्रम्॥
२ १२ सू ३ १ ११मं ४ १० ५ ७ ९ श॰६ ८

मृगेंद्रचक्रम्॥
२ १२ ३ शु १ ११ ४चं॰ १०गु॰ ५ ७ ९ ६ ८

केंद्रयोगचक्रम्॥
चं॰ २ १ चं॰१२ ३ गु ११ ४इ १० गु॰ श॰ ७इ॰ चं ६चं ८

पाशुपतयोगचक्रम्
३ २ १बु १२ ११गु ४ १० ५ ७ ९ सू६ ८

कोप्रस्थानयज्ञोपवीत करना क्षत्रिको शस्त्र वैश्यको मधुकरना शूद्रकोफलकरना यहचारोवर्णको प्रस्थानकरना औरसुवर्णधान्यवस्त्र यहसबको कथितहै-

अन्यमत॥ ॥राजादशाहं पंचाहमन्योन्यप्रस्थितोवसेत्॥ अंगप्रस्थानसंपूर्णं वस्तुप्रस्थानकेऽर्धकं ॥१६६॥

टी॰ राजाकोप्रस्थानरखनेपर१० दिन रहना औरअन्यको५ दिन औरअंगप्रस्थान करेतो संपूर्णफलवस्तुप्रस्थानकरेतोअर्धफलजानना॥ ॥ अन्यमत ॥

गेहाद्गेहांतरंगर्गःसीमःसीमांतरोभृगुः। बाणक्षेपंभरद्वाजोवसिष्ठोनगराद्बहिः॥ प्रस्थानेपिकृतेनोयान्महादोषान्वितेदिने ॥

टी॰ प्रस्थानप्रकारगर्गकावचन प्रस्थान अपनेघरसे दूसरेकेघरमेरखना भृगुका वचन प्रस्थानशहरकेसीमापररखना भरद्वाजकावचन प्रस्थान जितने दूरबाणजाय उतनेदूररखना वसिष्टकावचन प्रस्थान शहरकेबाहररखना औरप्रस्थानकिया कदाचित् उसदिन महादुष्टयोगहोयतोयात्रा करनानहीं– यात्राकेदिनवर्ज्य

क्षौरमैथुनतिलमाभिषगुडघृताम्लुदुग्धासवक्षाराभ्यंगभयासितांवरवमितैलं कटुद्रव्यं त्यजेत्॥ क्षीरक्षौररतीःक्रमाच्चिशरसप्ताहं परंतद्दिनेरोगंस्व्यार्तवकंसितान्यतिलकंप्रस्थानकेपीतिच ॥१६९॥

टी॰ यात्राकरनेकेदिनत्यागकोपक्षौरस्त्रीसंगमहितनमांसगुड घृतरोदन दूधमद्य क्षारसुगंधतेलभय कृष्णवस्त्र वमनतेलकटु पदार्थयहयात्राकेदिनत्यागकरना औरदूधक्षौरस्त्रीसंग यहतीनक्रमसे यात्राकेपहिले ३।५।७। इतनेदिन त्यागकरना औररोगचिंताविषयचिंता औरश्वेततिलकसे अन्यतिलक इसप्रस्थानकेदिनकरना नहीं

यात्रामेंवाहनविचार॥ प्राच्यांगच्छेद्गजेनैव दक्षिणस्यां रथेनहि॥ दिशिप्रतीच्यामश्वेनतथोदीच्यांनरैर्नृप ः॥

टी॰ पूर्वदिशामेंयात्राहाथीपरबैठकेकरना औरदक्षिणदिशामेंरथपरबैठकेकरना औरपश्चिमदिशामेघोडेपरबैठकेकरना औरउत्तरदि॰ पालकीपरतोयात्राकरना

अन्यमत॥ पूर्वंदक्षिणमुद्धृत्यपादंयायान्नराधिपः॥ (शुभ) द्वात्रिंशत्पदंगत्वा यानमारुह्यसंव्रजेत्॥ १७०॥

टी॰ यात्रैसमराजापहिलेदक्षिणचरणरखे और३२गेड चलना पिछे सवारीपरबैठना अथवा गोडसेयात्राकरना॥ अन्यमत॥ ताम्रपात्रेतिलान्कृत्वासघृतांन्हेमसंयुतान्॥ निवेद्यमुख्यविप्रायदेवज्ञायविशेषतः॥

टी॰ यात्रासमेताम्रपात्रतिलयुत घृत सुवर्णयुक्त उत्तमब्राह्मणको देनापरंतु

ज्योतिषीकोदेनाकल्याणकेवास्ते॥ यात्रासेआयकोगृहप्रवेश॥

शुभःप्रवेशोमृदुभिर्ध्रुवाख्यैःक्षिप्रैश्चरैःस्यात्पुनरेवयात्रा॥

वी॰ उग्रैर्नृपोदारुणभैःकुमारोराज्ञीविशाखासुविनाशमेति॥

टी॰ यात्राकरकेआवतेही गृहप्रवेशकरनेकेवास्तेचक्रपरसेशुभाशुभनक्षत्रजानना॥

अन्यमत॥ निर्गमा
नवमेमासिप्रवेशोव
शोभनःनवमेदिवसेनै
वप्रवेशंनैवकारयेत्
टी॰ यात्राकेबादनवममहीन
समेगृहप्रवेशकरनानही

मृदु॰	मृ	रे॰	चि॰	अनु॰	यहनक्षत्रमेगृहप्रवेशशुभ
ध्रुव	उ॰फा॰	उ॰षा॰	उ॰भा॰	रो॰	यहनक्षत्रमेगृहप्रवेशशुभ
क्षिप्र	ह॰	अ॰	पु॰	अभि	यहनक्षत्रमेगृहप्रवेशशु॰
चर	स्वा॰	पुन॰	श्र॰	ध॰श॰	येनक्षत्रमेपुनःआगमन
उग्र॰	पू॰फा॰	पू॰षा॰	पू॰भा॰	भ॰म॰	इननक्षत्रमेमरण
दारुण	मू॰	ज्ये॰	आ॰	श्ले॰	इननक्षत्रमेपुत्रनाश
०	वि॰	०	०	०	स्त्रीनाश॰
०	कृ॰	०	०	०	गृहदाह॰

औरनवसदिनमेप्रवेसकरनानहींशुभहोतानहीं॥ मत्स्यकथितदुष्टशकुन॥

औषध्याचनियुक्तोहिधान्यंकृष्णंतुभद्ववेत्॥ कर्पासस्त्वतृणंशुष्कंशुष्कंगो
मयमेवच॥ टी॰ यात्रासमेघरसेनिकलेही दुष्टशकुनऔषधीयुक्तमनुष्य
कालाअन्नकपासभूसागोइठायहसामनेशुभ॰

इंधनंचतथांगारंगुडंसर्पिस्तथाशुभं॥ अभ्यक्तो
मलिनोमंदस्तथानग्नश्चमानवः॥ १७५॥ ॥

टी॰ काष्ठअग्निगुडघीवऔरदुष्टपदार्थतेललगायापुरुषमलिनमूर्ख
नग्नपुरुषयहयात्रामेनिकलतेहीसामनेआवेतोअशुभ॰

मुक्तकेशोरुजार्तश्चकाषायांवरधारिणः॥ उन्मत्तः
कथितोसत्वोदीनोवाथनपुंसकः॥ १७६॥

टी॰ पुरुषवालखोलेरोगीसंन्यासीउन्मतगुदडालपेटेपुरुषपापीपुरुष
नपुंसकयहयात्रामेंनिकलतेहीसामनेआवेतोअशुभः॥

आयःपंकस्तथाचर्मकेशवंधनमेवच॥ तथैवो
द्धृतसाराणिपिण्याकादिनथैवच॥ १७७॥

टी॰ लोहाकीचडचमडाबालबांधनेहोयतत्रखरीआयेयात्रामेनिकलेतोसामनेअसमजो

चांडालस्यशवंचैवराजवंधनपालकाः॥ वध रम्मा
काःपापकर्माणोगर्भिणीस्त्रीतथैवच॥ १७८॥

टी॰ डोमप्रेतवंडीवानलाशकरनेवालेपापकर्मीगर्भिनिस्त्रीयेयात्रामेनिकलेहीसामनेअशुभ

तुषभस्मकपालास्थिभिन्नभांडानियानिच॥ नानन

रक्तानिचैवभांडानिमृत्स्नारंगस्तथैवच ॥ १७६
एवमादीनिचान्यानिस्यप्रशस्तानिदर्शने ॥
टी॰ भूसाभस्मकपालहाडजूदाजूदावरतनतांबेकावरतनमृत्तिकाकावरतनअथव
रांगकावरतनइनकात्यागकरनाऔरभीदुष्टपदार्थत्यागकरनायात्रासमेंसामनेअशुभ
क्वयासितिष्ठ आगच्छ किंनेतत्रगतस्यतु ॥ अन्य
शब्दाश्चयेनिष्टास्तेविपत्तिकराअपि ॥ १८० ॥
टी॰ यात्रासमेनिकसेहीकोईपूछेतुमकहांसेआयेखडेरहोकहाजाओगे
औरऐसेअन्यशब्दहोयतोविपत्तिकारकहोनाहेऐसाजानना-
ध्वजादौवायसास्थानंक्रव्यादानंविगर्हितं ॥ स्ख
लनंवाहनानांचवस्त्रसंगस्तथैवच ॥ १८१ ॥ छ
टी॰ पताकाकेऊपरकौवाबैठाअग्निलेकेपुरुषअथवावाहनपरसेगिरनाव
स्त्रपहिरनापुरुषयहयात्रामेनिकसेहीसामनेअशुभजानना-
दुष्टनिमित्तेप्रथमेश्रमंत्यविनाशनं । केशवंपूजयेद्विद्वान्स्तवेनमधुसूदनं ॥
टी॰ यात्रासमेपूर्वमेंशकुनकहाहैतिससेदुष्टशकुनपहिलेदेखेतोदोषनिवारण
केवास्तेविष्णुपूजनकरनामधुसूदनकास्तवनकरना सुभफिरयात्राकरनाशुभ
द्वितीयेचततोदृष्टेप्रतीपेप्रविशेद्गृहं ॥ अथेष्टानिप्रवक्ष्यामिमंगलानितथाघनः
टी॰ दूसरयात्राकालमेंदुष्टशकुनहोयतोघरमेआवना फिरसुभशकुनआवे
तोगमनकरनाऐसेशुभशकुनकहतेहैं ॥

यात्राकालमेउत्तमशकुन ॥ प्रशस्तोवाद्यशब्दस्तुभिन्न
भेरीरवास्तथा ॥ पुरतःशब्दएहीतिशस्यतेनतुपृष्ठतः ॥
गच्छेतिचैवयच्चाद्यःपुरस्ताद्धुविगर्हितः ॥
टी॰ यात्रासमेउत्तमशकुनबाजाशब्दनगरकाशब्दअपनेअगनभा आओऐसा शब्दहो
होयतोउत्तमजाननायहशब्दपीछेअशुभऔरजाओयहशब्दपीछेअच्छाआगेअशुभ
अन्यमत ॥ ॥ श्वेताःसुमनसःश्रेष्ठःपूर्णकुंभस्तथैव
च ॥ जलजाःपक्षिणश्चैवमांसंमत्स्यपार्थिव ॥ १८५ ॥
टी॰ यात्रासेमेनिकसेहीसामनेसफेदफूलउत्तमपूर्णकुंभमच्छपक्षीमच्छकामांसयहशुभजा
गावस्तुरंगमोनागोवद्ध एकःपशुस्त्वजा ॥ त्रिदशाः नना
सुहृदोविप्राःज्वलितश्चहुताशनः ॥ १८६ ॥
टी॰ यात्रामेनिकसेहीसामनेगौघोडाहाथीएकवद्धपशुबकरीदेवताकीमूर्त्ती

मिचयाह्लए २ प्रज्वलित अग्नियह शुभजानना-

गणिकाचमहाभागा दूर्वाश्चार्द्राश्चगोमयं।

रुक्मं रूप्यंचताम्रंच सर्वरत्नानिचाप्यथ॥

टी॰ यात्रामे निकस्ते ही सामने वेश्या दूर्वा श्रीदागोवर सुवर्णरौप्यताम्र श्रौर सर्वप्रकारके रत्नयहसुभजानना॥ श्रौषधानिचसर्वच्चायवाःसर्वार्थकास्तथ॥

खड्गपात्रंपताकाचमृत्तिकायुधपीठकं॥ १९८॥

टी॰ यात्रासमै निकस्ते ही सामने श्रौषधी उत्तम पंडित सफेद सरसो खड्ग पात्र पताका मृत्तिका शस्त्र श्रासन यह सुभजानना॥

राजलिंगानिसर्वाणिशवंरुदितवर्जितं

घृतंदधिपयश्चैवफलानिविविधानिच॥

टी॰ यात्रामे निस्ते ही सामने राजचिन्ह देखे प्रेत रोदनवर्जित घी दही दूध श्रौर नानाप्रकारके फल यहसुभ॥ स्वस्तिवृद्धिनिनादश्चनंद्यावर्त्तःसकौस्तुभः।

वादित्राणांशुभःशब्दोगंभीरःसुमनोहरः॥

टी॰ यात्रामे निकस्ते ही सामने स्वस्ती श्राशीरवाद वचन का शब्द कौस्तुभमणि युक्तमाला श्रौर नानाप्रकारके उत्तम वाद्यके शब्द गंभीर मनोहर यह सुभजानना-

गंधारखड्जऋषभायेगीताःसुस्वराःस्वराःवायुःस्पर्शकरोत्युष्णःसर्वविघ्नविनाशकृत्॥ टी॰ यात्रामे निकसते ही सामने उत्तमप्रकारका गायन स्वरसहीत वायुमधुर श्रथउष्णयह होयतो सवविघ्ननाशजानना॥

प्रतिलोमस्तथानीचोविज्ञेयोभयकृद्द्विजः

श्रनुकूलोमृदुःस्निग्धोसुखःस्पर्शःसुखावहः

टी॰ यात्रामेवर्णशंकर वैसानीच यवन ब्राह्मणभयंकर श्रपनेको श्रनुकूल पदार्थ उत्तमसुखसंग श्रौर सवसुखावहजानना॥

प्रशस्तान्येतानिधर्मज्ञयच्चस्यान्मनसःप्रियं।

मनसस्तुष्टिरेवात्रपरमंजयलक्षणं॥ १९९॥

टी॰ यहजो पूर्वमे कथितकिया शाकुन सो उत्तम परंतु मनको प्रियहोय नवयात्राकरना नय मनोसुखत्वंमनसःप्रहर्षःशुभस्यलाभोविजयप्रवादः॥ श्रागीहो मांगल्यलब्धिःश्रवणंचराज्ञांज्ञेयानिनित्यंविजयावहानि

टी॰ मनसुद्धहोयेयात्राकरनेसेवादमेविजयमांगल्यप्राप्तीश्रवणराजानेविचारकरके यात्राकरनाशुभ॥ क्षेमंकरानीलकंठाःश्योलूकखरजंबुका॥

प्रस्थानेवामतःश्रेष्टाःप्रवेशेदक्षिणःशुभाः॥१६५॥

टी॰यात्रामेनिकसेहीअपनेवाएतरफमोरकुत्ताउलूकपक्षीगदहासियारयहक ल्याणकारकजानना औरप्रवेशकालमेंदहिनेशुभजानना-

नौयानमिष्टजलराशिलग्नेतदंशकेवान्यग्रहोदयेपि॥

टी॰नावकीयात्रासवयात्राकेऐसीविशेषजलराशीकालग्नऔरजलराशीका अंशहोयसंकटमेंअन्यग्रहकेराशीकोभीकरना-

अथप्रसंगात्शिवलिखितघटीमुहूर्त्तानि॥देव्युवाच

श्रीशंभोप्राणनाथेशवदमेकरुणानिधे॥त्रिपुरस्यवधे प्रोक्तामुहूर्त्तायेशुभाप्रदा॥१॥भूतानामुपकारार्थंसर्वका लेषसिद्धिदम्॥यात्रार्थंप्रदंब्रूहिकरुणाकरसुंदर॥२॥ ईश्वरउवाच॥ शृणुदेविप्रवक्ष्यामिज्ञानंत्रैलोक्यदीपकम्॥ ज्योतिस्सारस्ययत्सारंदेवानामपिदुर्ल्लभम्॥३॥नतिथिर्नै चनक्षत्रंनयोगंकरणंतथा॥कुलिकंयमयोगंचनभद्रान चचंद्रमाः॥४॥नमूलयोगिनीराशिर्नहोरानतमोगुणः॥ व्यतीपातेचसंक्रांतौभद्रायामशुभेदिने॥५॥शिवालिखितमित्येवं सर्वविघ्नोपशांतये॥कदाचिच्चलतेमेरुस्सागरश्चमहीधराः॥६॥ सूर्य्यःपततिवाभूवन्हिर्वायातिशीततांम्॥निश्चलश्चभवेद्वायुर्न्नो न्यथाममभाषितम्७॥तत्रादौकथयिष्यामिमुहूर्त्तानिचषोडश गुणत्रयप्रयोगेनचलन्त्येवअहर्निशम्॥८॥अथषोडशमुहूर्त्तम्॥ रौद्रंश्वेतंतथामैत्रंचार्वटंचचतुर्थकम्॥पंचमोजयदेवश्चषष्टंवै रोचनंतथा॥९॥तुरगादिकंसप्तमंचतथाष्टाचभिजित्तथा॥रावणं नवमंप्रोक्तंवालवंदशमन्तथा॥१०॥विभीषणंरुद्रसंज्ञंद्वादशंच सुनंदनम्॥याम्यंत्रयोदशंज्ञेयंसौम्यंज्ञेयंचतुर्दशम्॥११॥भार्गवं तिथिसंज्ञंचसविताषोडशंभवेत्॥अथमुहूर्त्तकार्य्यम्॥रौद्रेरौद्रतरं कार्य्यंश्वेतेकुंजरबंधनम्॥१२॥स्नानदानादिकंमैत्रेचार्वटेस्तंभनंभवे त्॥१३॥कार्य्यंयजयदेवसंज्ञकवेरसर्वार्थकं साधयेत्॥तद्वैरो चनेसंज्ञकेप्रभवतिपट्टाभिषेकंक्रमात्॥ज्ञात्वैवंतुरदेवनाग्नि दिदितेशास्त्रादिकंसाधयेत्॥सत्कार्य्यमभिजित्मुहूर्त्तकवरेग्राम प्रवेशंसदा॥१४॥रावणेसाधयेद्वैरंयुद्धकार्य्यंचवालवे॥

विभीषणे शुभं कार्य्यं यन्त्रकार्य्ये सुनन्दने ॥ १५ ॥ याम्ये भवेन्मारणका र्य्यमप्यसौ सौम्ये सभायां नृपवेशनं स्यात् ॥ स्त्रीसेवनं भार्गवके मुहूर्त्ते सावित्रिनाम्नि प्रपठेत्सुविद्याम् ॥ १६ ॥ अथ मुहूर्त्तोदयं वारपरत्वेन ॥ उदये रौद्रमादित्ये मैत्रं सोमे प्रकीर्त्तितम् ॥ जयदेवं कुजे वारे तु रक्षं बुधे तथा ॥ १७ ॥ रावणं च गुरौ ज्ञेयं भार्गवे च विभीषणम् ॥ शनौ याम्यं मुहूर्त्तं च दिवारात्रिप्रयोगतः ॥ १८ ॥ अथ मुहूर्त्तगत्वेन गुणोदयम् ॥ गुरुसोमदिने सत्वं रजश्चांगारके भृगौ ॥ रवौ मन्दे बुधे चैव तमो नाडीचतुष्टयम् ॥ १९ ॥ सत्वं गौरं रजश्श्यामं तामसं कृष्णमेव च ॥ क्रमं वर्णं विजानीयात्सत्वादीनां यथोदितम् ॥ २० ॥ अथ सत्वादिगुणानां फलम् ॥ सत्वेन साधयेत्सिद्धिं रजसा धनसंपदाम् ॥ तमसा साधयेन्मोक्षमिति ज्ञेयं सदा बुधैः २१ सत्वे रजसि सत्कार्य्यमथवा शुभमेव च ॥ तमसा छेदभेदादि साधयेन् मोक्षमार्गकम् ॥ २२ ॥ अथ मुहूर्त्तगत्वेन रेखाज्ञानम् ॥ शून्यं नभः स्वादिभिरेव वर्णैर्विघ्नं धनुर्य्युग्मगणाधिपाद्यैः ॥ मृत्युं तथा पादयमादिवर्णैः श्री विष्णुनाम्नामृतसञ्ज्ञसिद्धिः ॥ २३ ॥ अमृतश्चोर्द्धरेखैव कालरेखा त्रयं भवेत् ॥ विघ्नमावर्त्तकं तत्र शून्ये शून्यमिति क्रमात् ॥ अथ रेखाफलम् ॥ शून्ये नैव भवेत्कार्य्यं विघ्नमावर्त्तके भवेत् ॥ कालरेखा मृत्युकरी सर्वसिद्धिरुतामृते ॥ २४ ॥ धनुर्म्मीनकर्कटानां घातनसत्वे विनिर्द्दिशेत् ॥ तुलालिवृषमेषाणां घातो रजसि निश्चितम् ॥ २५ ॥ कन्यामिथुनसिंहानां कुम्भस्य मकरस्य च ॥ घातस्तामसवेलायां विपरीतं शुभावहम् ॥ २६ ॥ धनुः कर्कटमीनाख्या गौरवर्णाः क्रमोदिताः ॥ वृषे मेषे तुलायां च वृश्चिके श्यामवर्णता ॥ २७ ॥ मिथुने मकरे कुम्भे कन्यासिंहे च कृष्णता ॥ गौरश्च म्रियते सत्वे श्यामवर्णो रजोगुणे ॥ कृष्णं तामसवेलायां म्रियते नात्र संशयः ॥ २८ ॥ यस्मिन्वर्षे भवेन्मासो गौणो धेवपस्तथाक्षयः ॥ मासेन गृह्यते मासस्सर्वकार्य्यार्थसाधने ॥ २९ ॥ माघफाल्गुणचैत्रेषु वैशाखे श्रावणे तथा ॥ नभस्ये मासि वाराणं मुहूर्त्तानि यथाक्रमात् ॥ ३० ॥ रुद्रप्रोक्तमिदं ज्ञानं शिवायै रुद्रयामले ॥ गोपनीयं प्रयत्नेन सद्यः प्रत्ययकारकम् ॥ ३१ ॥ रवौ नभः केशव विघ्नराजो गोविन्दनामा नभश्चारवुगामी ॥ रात्रौ नृसिंहो युगलं नमायतु लक्ष्मी शलवो दरामसञ्ज्ञो ॥ सोमे हरिर्विघ्नपतिस्सुरेशः

रवि·	रौ	ध्वे	मै	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा·	वि	सु	या·	सौ	भा·	सा	ध्वे	मै	चा	जा	वै·	तु	श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	रवि
दिने	न	न	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त·	त·	स	स	र	र·	न	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
०	१	१	१	१	⌒		⌒		१	१	१	१	⌒		⌒		१	१	१	⌒		०	[illegible]	१	१	१	⌒		⌒		१	१	

मूल्यंच गौरीसुत विघ्नसञ्ज्ञौ॥ पदंनिशायां खरव विष्णु मूल्यं युग्मंच नारायण विघ्ननाथौ॥

सोम	मै	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा·	सा	रौ	ध्वे		चा	ज	वै	तु·	श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	ध्वे	मै	सोम
दि·	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र		त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	रात्रौ
	१	१	⌒		⌒		१	१	१	०	⌒		⌒		१	१		८	०	०	१	१	०	⌒		१	१	१	१	⌒		⌒		

भौमेयमौमारमणेऽथ युग्मयुग्म हरि ध्वेवगजाननश्च॥ नक्तंच [illegible] विघ्नद्विपद सुकुंद॥ पदन

भौम	ज	वै	तु·	श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	ध्वे	मै	चा		वै	तु	श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	ध्वे	मै	चा	जा	भौम
दिने	र	र	न	त	स	स	र	र	न	त	स	स	र	र	न	न		स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	रात्रौ
	५	५	१	१	१	१	⌒		⌒		१	१	⌒		⌒			⌒		५	५	१	१	१	५	५	५	१	१	१	०	०	१	

ये श्रीपतिरवंनमः श्री॥ बुधेधनुःक्रमयमौ च शौरिः सिद्धिर्द्वनुः सौरियमौ च सिद्धिः

बुध	तु·	श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	ध्वे	मै	चा	ज	वै		श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	ध्वे	मै	चा	ज	वै	तु	बुध
दिने	त	न	स	स	र	र	त	न	स	स	र	र	त	त	स	स		र	र	त	न	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	स	न	रात्रौ
०	⌒		१	१	५	५	१	१	८	⌒		१	५	५	५	१		१	१	१	१	१	⌒		०	१	१	१	१	⌒		⌒		

रात्रौसुपर्णध्वजएवयुग्मंनभोऽथदामोदरकुंजरास्यौ॥ गुरौगोपिनाथस्तथा विघ्नरा

गुरु	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	ध्व	मे	चा	ज	वै	तु	श्र
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
	१	१	१	१	~		~		०	१	१	१	~		~	

वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	ध्व	मे	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	गुरु
त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	स	त	स	स	रात्रौ
४	१	१	१	४	४	४	४	०	१	१	१	~		१	१	

जोनभः केशवः कुजरास्यस्तथैव॥ निशायां पदं नंदनं [illegible] सूर्य्ये स्तन्नभो माधवश्चापमेकं हरिश्च ॥३६
शुक्रे हृस्मः स्याधमः खंमुरारि गौरीपुत्रः श्रीपतिः पून्यमेकम् ॥ नक्तं का

शुक्र	वि	तु	या	सौ	भा	सा	रौ	ध्व	मे	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
०	१	१	४	४	०	१	१	१	~		~		१	१	१	०

सु	या	सौ	भा	सा	रौ	ध्व	मे	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा	वि	शुक्र
स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	रात्रौ
४	४	१	१	१	०	~		४	४	१	१	१	०	४	४	

लः कंशाहा खंच युग्मं पादहन्दो वामनः खंच पादौ ॥ ३७॥ शनौ पद श्रीः स्वनभो नमः खं
नारायणो नो हरि खं हरिश्च॥ रात्रौ च शून्यं यमयुग्म माधवो खं विघ्नराजो न हरिश्च पादौ ३८ ॥

शनि	या	सौ	भा	सा	रौ	ध्व	मे	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा	वि	सु
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
०	४	१	०	०	०	०	१	१	१	१	०	१	१	०	१	१

सौ	भा	सा	रौ	ध्व	मे	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा	वि	सु	या	शनि
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
०	४	४	१	१	१	०	~		~		१	१	१	४	४	

तथाश्विने कार्त्तिक मार्गपौषे सूर्य्यादिवारेषु मुहूर्त्तयोगाः॥ नाम्ना स्वराणां प्रचन प्रवृत्त्या विचारपूर्वं विबुधैर्विचिं

रवि	रौ	ध्व	मे	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
०	१	१	१	४	४	~		१	१	०	०	४	१	१	१	४

ध्व	मे	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	से	रवि
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
४	~		०	१	१	१	~		४	४	१	१	०	१	१	

त्यम्॥३९॥ सूर्ये नरसिंहो द्विपदं च चापो हरिर्नभः खं पदमच्युतो ऽघ्रिः॥ रात्रौ पदं चापखमच्युतं च युग्मं यमो विष्णुखसिद्धिसञ्ज्ञौ
४०॥ सोमे ऽघ्रि चापं खनभो मुकुन्दो नभश्च युग्मं हरि खं हरिश्च॥ पदं निशायां खयुगं मुरारिर्विनायकौ विष्णुनभश्चविष्णुः

भौमेमद्देभास्यनभोऽथविष्णुर्नभोयुगंगोपतिरेवंगणेशः॥ नक्तंगजेंद्रास्यखमच्युतंचयुग्मंचशून्यंनरहरिश्चयुग्मम्॥

सोम	मे	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सै	रो	श्वे		चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रो	श्वे	मे	सोम
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र		त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	रात्रौ
०	३	२	०	०	१	१	१	०	२	१	१	०	१	१				३	२	०	१	१	१	२	२	१	१	०	१	१				

बुधेधनुः श्रीपति पादयुग्मं नारायणस्याङ्गणनाथसिद्धिः॥ रात्रौतुकालौ हरिशून्यकालौ

भौम	ज	वै	तु	श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रो	श्वे	मे	चा		वै	तु	श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रो	श्वे	मे	चा	ज	भौम
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त		स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	रात्रौ
	२	२	०	१	१	०	२	१	१	१	०	२						२	२	०	१	१	१	२	०	१	१	१	२					

गोविंदगौरीसुतशून्यसिद्धिः॥ गुरौ हरि शून्ययुगंसुरेशः श्री विघ्नराजो गगनंन[illegible]श्रीः॥ निशांघ्रिदैत्यारिखकार्मुकंचपदंसुरारिः

बुध	तु	श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रो	श्वे	मे	चा	ज्ञे	वै		श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रो	श्वे	मे	चा	ज	वै	तु	बुध
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स		र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
०	२	१	१	१	३	३	१	१	१	[illegible]						१		३	३	१	१	०	३	३	१	१	१	२	२	०	१			

खयुग्मंपुनःश्रीशः। शुक्रेऽमृतंचापमखिन्दमश्वलम्बोदरःकेशवःशून्यपादम्॥ नक्तंचयुग्मंनरहरिःखयुग्मंन

गुरु	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रो	श्वे	मे	चा	ज	वै	तु	श्र		वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रो	श्वे	मे	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	गुरु
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र		त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	रात्रौ
०	१	१	०	२	१	१	१	१	२	२	०	०	१					३	१	१	१	०	२	३	३	१	१	१	०	२	१			

शुक्रे	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	ध्वे	मै	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा
[illegible]	[illegible]	र	त	त	स	स	र	र	त	न	स	स	र	र	त	त
[illegible]	[illegible]		०	८	८	८	८	१०		१०		८	८	८	०	५

सु	या	सौ	भा	सा	रौ	ध्वे	मै	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा	वि	शुक्रे
स	स	र	र	त	न	स	स	र	र	त	न	स	स	र	र	रात्रौ
१०		८	८	८	०	१०		८	८	८	१०		०	१०		

सिंहे युग्मे गगनं च युग्मम् ॥ ३८ ॥ शनौ पदं श्रौनिनभोन हस्त [illegible] श्री पदं विष्णु नभो हरिः पत् ॥
रात्रौ पद खं पदनंदसूनू गेजा ननो गोपति शून्य पादः ॥ ३९ ॥

शनि	या	सौ	भा	सा	रौ	ध्वे	मै	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा	वि	सु
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	त	त	त	स	स
०	५	८	०	०	०	८	८	०	८	५	८	८	[illegible]	८	८	५

सौ	भा	सा	रौ	ध्वे	मै	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा	वि	सु	या	शनि
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
५	०	५	८	८	८	८	१०		१०		८	८	८	०	५	

११ ११ ज्येष्ठमासे तथाषाढे तथैव च मलिम्लुचे सूर्योदिवारे संशोध्याः मुहूर्त्ता निक्रमात्त्विमाः ॥ ४० ॥

रवि	रौ	ध्वे	मै	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
०	०	०	८	८	१०		५	१०		०	८	८	८	८	१०	

ध्वे	मै	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	रवि
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	स	रात्रौ
८	८	८	१०		१०		८	८	१०		१०		८	८	०	

अर्के शून्ये च हस्तो युगपदयुगलं [illegible] हरिर्विष्णु चापम् ॥ रात्रौ लक्ष्मीशायुग्मं युगल हरियुगं युग्म

सोम	मै	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	ध्वे
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
	१०		१०		०	८	८	८	०	१०		८	८	८	८	०

चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	ध्वे	मै	सोम
त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	न	स	स	रात्रौ
१०		१०		८	[illegible]	५	[illegible]	८	८	१०		८	८	८	५	

हस्तं च शून्यम् ॥ सोमे चापद्वयं नोऽन्त हरि खयुगलं पीत वासश्च शून्यम् ॥ चाप द्वंद्वं निशायां
मजपदखमजं चाप पद्मेश पादम् ॥ भौमे शून्ये च हस्तो युग गगन

भौम	ज	वै	तु	स्व	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	ध्वे	मै	चा	वै	तु	स्व	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	ध्वे	मै	चा	ज	भौम
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	रात्रौ
०	०	०	१	१	२		०	१	१	२		२		२		१	२		२	०	२		२		४	१	०	२		१	१		

हरिस्त्रीणि चापानि सिद्धिः ॥ नक्तंयुग्मं [illegible]मून्यंयुगयुगलपदं श्रीखु चापंहरिष्व ॥ सौम्ये

बुधं	तु	स्व	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	ध्वे	मै	चा	ज	वै	स्व	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	ध्वे	मै	चा	ज	वै	तु	बुधे
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
०	१	२		४१	[illegible]		२		२		१	१	१	१	४		१	२		१	१	०	२		२		१	१	०	०	१	१	

श्रीविघ्ननाथोऽथ हरिगणपतिः पद्मनाभश्च पादैः ॥ दोषायां सिद्धियुग्मं हरिखगजसुखा क्ष्मापूर्न्येच कृष्ण ॥

गुरु	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	ध्वे	मै	चा	ज	वै	तु	स्व	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	ध्वे	मै	चा	ज	वै	त	स्व	रा	गुरु
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	र	र	रात्रौ
	१	१	२		२१	[illegible]	१	०	[illegible]	[illegible]	४	४	१	१	१		०	०	१	१	१	०	२		[illegible]		१	१	२		४	४	

जीवेविस्नुश्च चापो गगनमजितखमंघ्रिपादोन्यसिद्धः ॥ रात्रौ नेत्रं सुरारिं गगनयुगमजो विस्नु चापांघ्रियुग्मम् ॥ शुक्रे युग्मं सुरारिं गगनयुगमजो विस्नु चापांघ्रियुग्मं ॥ तद्रात्रौ युग्म गोपीपतियुगगगनं श्रीवरः खंपदश्रीः ॥

शुक्र	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	ध्वे	मै	चा	ज	वै	तु	स्व	रा	वा	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	ध्वे	मै	चा	ज	वै	त	स्व	रा	वा	वि	शुक्र
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	त	त	त	त	स	स	र	र	रात्रौ
	२		१	१	१	०	२		[illegible]		१	१	२		४	४	२		१	१	१	१	२		०	१	१	१	[illegible]	४	४	१	

मंदेश्रीयुग्मसिद्धिः खदहरिहरिन[illegible] शौरिखंसिद्धिरखंवा ॥ नक्तंश्रीयुग्म[illegible]ः खर्वयुगल हरिर्व्योमगो विंदपूर्न्यम् ॥ [illegible]

शनि	या	सौ	भा	सा	रौ	ध्वे	मै	चा	ज	वै	तु	स्व	रा	वा	वि	सु	सौ	भा	सा	रौ	ध्वे	मै	चा	ज	वै	तु	स्व	रा	वा	वि	सु	या	शनि
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
०	१	२		१	[illegible]	१	१	१	१	[illegible]	[illegible]	१	१	०	१	०	१	२		१	१	०	०	२		१	१	०	१	१	१	[illegible]	

अथगोरक्षकमतेन तिथिचक्रम्

फलञ्च॥ मासे शुक्लादिके पौषे तिथिः प्रतिपदादितः॥ द्वितीयाद्या स्तु माघे स्तु स्तृतीयाद्यास्तु फाल्गुने॥ एवंचान्येषु मासेषु तिथ्यो द्वादशसञ्ज्ञकाः॥ लेख्याश्चक्रे त्रयोदश्या सविहाय तिथित्रयम्॥ तृतीयादित्रयेतत्र त्रयोदश्यादिके फलम्॥ याने प्राच्यादिकाष्टासु वक्ष्ये द्वादशधाक्रमात्॥ सौख्यं शून्यं धनार्त्तिश्च लाभोलाभोभयंधनम्॥ कष्टंसौख्यं कलिर्मृत्युः शून्यंप्राच्यांफलंक्रमात्॥ क्लेशोसैष्वं व्यथासौख्यं दुर्व्याप्तिर्लाभपीडने॥ सौख्यंलाभः कष्टसिद्धिर्लाभस्सौख्यन्तु दक्षिणे॥ भयंनैष्वंत्रियाप्तिश्च भयंदुर्व्यंमृतिर्द्धनम्॥ क्लेशाह्वाभोर्थसिद्धिस्स्वं लाभोमृत्युश्च पश्चिमे॥ धनंमिश्रंधनं लाभः सौख्यंलाभस्सुखंसुखम्॥ कष्टंदुर्व्यत्वशून्यत्वंकष्टमुत्तरदिक् फलम्॥

पौ	मा	फा	चै	वै	ज्ये	आ	श्रा	भा	आ	का	मा	पूर्वे	दक्षिणे	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्यं	क्लेश	भीति	अर्थागम
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्यं	नैष्वं	नैष्वं	मिश्रता
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	दुर्व्यक्लेः	दुःखं	इष्टाप्तिः	अर्थ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभः	सौख्यं	मंगल	वित्तलाभः
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	दुर्व्याप्ति	धनम्	सौख्यम्
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भीति	लाभः	मृत्यु	अर्थागमम्
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्टं	दुष्कला	सुखम्
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्टम्	सौख्यं	क्लेशला	सुखम्
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्यं	लाभः	कार्य्यसि	कष्टम्
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	कष्टान्सि	अर्थ	धनम्
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	दुष्टलाभ	शून्यम्
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शून्यं	सौख्यं	मृत्यु	अन्तकष्टम्

अथछायाबलायात्रा॥ शनौसप्तपादः कवौषोडशास्मृ रवौभौमकेरुद्रसंख्याविधेया॥ निशेशेबुधेष्टाशसंख्या विधेयागुरावग्निभूसंख्यछायाविधेया॥ नक्षत्रानपाते व्यतीपातघातेनभद्रानसंक्रान्तिशूलन्तथाच॥ नरोयाति संशोध्यछायायदाहितदाकार्य्यसिद्धिस्त्ववश्यंभवेच्च॥

स्वछाया त्रिगुणा विश्व १३ युता भाज्याष्टभिः फलम्॥ लाभो
१ऽर्थ २ हानी ३ रुग् ४ वृद्धि ५ र्भयं ६ सिद्धि ७ र्मृतिः ८ क्रमात्॥

टी॰ शनिवारकु ७ पाँव कि छाया शुक्रवारकु १६ पाँव कि छाया रवि मंगल मे ११ पाँव कि छाया विधान करि है चंद्रमा कू ८ ग्रह बुध कू ९९ संख्या विधान करि है गुरु कू १३ संख्या विधान करि है इस छाया बल मे जो यात्रा करते है उनको लक्ष्यापात व्यतीपात या नभ द्रा संक्रांति मूलन हि फल देता अपनी छाया के साधन करने से मनुष्य को कार्य्य सिद्धि अवश्य होती है पुनः अपनी छाया कू तीगुणकर फिर १३ युक्त करे ८ का भाग दे १ बचे तो लाभ २ बचै लक्ष्मीप्राप्ती ३ बचे हानी ४ बचै रोग ५ बचैं वृद्धि ६ मे भय ७ सिद्धि ८ बचै मृत्यु इस क्रम कर फल देती है सो यात्रा मे विचार लेना—

वायुपरीक्षा॥ आषाढमासस्य च पौर्णिमास्यां सूर्य्यास्तकाले यदि
वाति वातः। पूर्वस्तदा सस्ययुता च मेदिनी नंदंति लोका जलदायिनो घनाः

टी॰ आषाढ मास मे १५ के दिन सूर्य्यास्त काल मे वायुपरीक्षा उसका प्रकार पूर्व दिशा की वायू होय तो पृथ्वी धान्य युक्त लोक सुखी मेघ वृष्टि करेंगे ऐसा फल जानना—

कृशानुवाते मरणं प्रजानां अन्नस्य नाशः खलु वृष्टिनाशः॥
याम्ये मही सस्यविवर्जिता स्यात् परस्परं यांति नृपा विनाशं॥

टी॰ अग्निकोण की वायू होय तो प्रजा का मरण अन्ननाश और वृष्टिनाश। यह फल अ और दक्षिण दिशा की वायू होय तो पृथ्वी धान करके वर्जित होय और परस्पर राजा लोग नाश को प्राप्त होवें यह फल दक्षिण दिशा का जानना—

नैऋचरो वाति यदात्र वातो न वारिदो यच्छति वारि भूरि॥ तदा महीसस्यविवर्जिता स्यात् क्रंदंति लोकाः क्षुधयाप्रपीडिताः॥

टी॰ निऋति कोण का वायु होय तो वृष्टि स्वल्प और पृथ्वी धान्य करके वर्जित क्षुधा कर के पीडित लोक रोदन करें ऐसा फल जानना—

आषाढमासे यदि पौर्णिमास्यां सूर्य्यास्तकाले यदि वारुणेनिलः
प्रवाति नित्यः सुखिनः प्रजाः स्युर्जलान्नयुक्ता वसुधा तदा स्यात्॥

टी॰ आषाढ मास मे पौर्णिमा १५ के दिन सूर्यास्त काल मे पश्चिम दिशा की वायु होय तो प्रजा सुखी रहे और पृथ्वी जल अन्न इस करके युक्त हो ऐसा जानना पश्चिम दिशा का।

वायव्यवाते जलदागमः स्याद् अन्नस्य नाशोपवनोद्धताद्यैः॥ सौम्ये निले धान्यजलाकुला धरा नंदंति लोका भयदुःखवर्जिताः

टी॰ वायकोण का वायु होय तो जल का आगमन अन्ननाश पृथ्वी प्रचंड वायू करके उ

ऐसा फल वायुकोणका· और उत्तर दिशाकी वायु होय तो धन· जल इस करके पृथ्वी युक्त लोक सुखी भय दुःख करके वर्जित ऐसा फल उत्तर दिशाका जानना-

ऐशेन वृद्धिर्बहु वारिपूरिता धरा च गावो बहुदुग्धसंयुताः॥
भवंति वृक्षा फलपुष्पदायिनो वाते भिनंदंति नृपाः परस्परं॥

टी· ईशानकोणकी वायु होय तो पृथ्वी जलपूरित गौ दुग्ध करके पूरित वृक्ष फल पुष्प दायक राजाका परस्पर युद्ध ऐसा फल ईशानकोणका जानना-

वर्षल्यावनेका प्रकार॥ गताब्दवृंदैः मुनिखाभ्रचंद्रैर्निघ्ना नभोव्योमगजैः सुभक्ता त्रिधा फलं वारघटीपलानि स्वजन्मवारादियुतानि इष्टं॥ १॥ टीका॥ वर्तमान संवत मैं जन्म संवत हीन करै तौ गताब्द संज्ञा होगी॥ गताब्दोंकू मुनि ७ ख० ख० अभ्र० चंद्र १ अर्थात् १००७ से गुना करकै नभ० व्योम० गज ८ अर्थात् ८०० भाग दे ३ जगमैं स्थापन करै जो फल प्राप्त होय सो वारइष्ट होगा इसमें जन्मका वार इष्ट जोड़ दे और उर्द्धांकमें ७ का भाग देतौ वर्षका वार इष्ट सिद्ध होगा उदाहरण वर्त्तमान संवत् १९३६ जन्म संवत् १९३४ तयोरंतर २ इसकू १००७ से गुना तो २०१४ हुये और इसमें ८०० का भाग लिया तो २ प्राप्ति हुये और शेष ४१४ रहे इनकू ६० गुना तौ २४८४० ये हुये फिर इनमें ८०० का भाग लिया तौ ३१ प्राप्ति हुये और शेष ४० रहे इने ६० से गुना तो २४०० हुये तो इनमें ८०० का भाग दिया तौ ३ मिले इसलिये ०२ वार ३१ घटी ०३ पल सिद्ध हुये इनमें जन्म वारादि ६।४५।०५ जोड़े ०८।१६।०८ उर्द्धांक ८ मे ७ के भाग शेषांक ०२।१६।०८ वर्षका इष्ट हुवा [सारणी]सें दिलेना तिथि व

तिथिवनावनेका क्रम

याताब्दवृंदो गुणवेदरामै ३४३ र्निघ्नः कुरामैः ३१ र्विहृतो दिनाद्यं घस्रैः सहोत्थैः सहितं खरामै ३० र्भक्तं च शेषा तिथिरत्र वर्षे॥ टीका॰ गतवर्षोंकू ३४३ गुणा करै पुन ३१ का भाग दे जो प्राप्ति होय सो तिथि इसमें जन्मकी तिथि युक्त करै फिर ३० सें जो शेष रहे सो वर्षकी तिथी होगी परंतु नियममें १ उनाधिक कही होजाती है॥ नक्षत्रलावनेका क्रम

व्योमेंदु १० भिः संगुणिता गताब्दा खशून्यवेदाब्धि २४० लवैर्विहीना जन्मर्क्षयोगैः सहिता प्रथस्था नक्षत्रयोगौ भवतो

टी· गत वर्षोंको १० गुणा करैं फिर दो जगे रखें एक जगमें २४ का भाग ले जो लव प्राप्ति हो सो दुसरे में घटादे और जन्मर्क्षयायोग जोड़ और नक्षत्रमें २७ का भाग सें शेष नक्षत्र होगा

ग्रहचालनम्॥ स्वेष्टकालोयदाऽग्नेस्यात्यंक्तिंच शोधयेत् रुनं॥ पंक्तिश्चैवयदाऽग्रेस्यादिष्टंचशोधयेदृणम्॥ ४॥

टी॰ चालनवनावनेका प्रकार॥ इष्टकाल पंचांगस्य पंक्तिसे आगे होयतो पंक्तीमे काल शोधन करना तो चालधन करन। होताहै॰ पंक्तीइष्टकालसे आगे होयतो इष्टमें पंक्तीशोधनकरना तो चालन ऋण होताहै॥

ग्रहस्पष्टीकरण॥ गतैष्यदिवसाघेनगतिर्निघ्नीखषट्हृता॥ लब्धमंशादिकंशोध्यं योज्यंस्यष्टोभवेद्ग्रहः॥

टी॰ गतदिनसें अथवा आगतदिनसे सूर्यादिग्रहोंकी गती गुण देना और ६० सेभागदेना लब्धि अंशादिजो आवेसोगत दिनका होयतो ग्रहमें कम करना और आगत दिनका होयतो युक्त करना॰ तो ग्रहस्पष्ट होताहै-

भयातभभोगवनावनेकीरीति॥ गतर्क्षनाड्यःखरसेषुशुद्धाःसूर्य्योदयादिष्टघटीषुयुक्ताः भमुक्तमेतच्चनिजर्क्षनाडिकाःशुद्धाःसुयुक्ताश्च भभोगसंज्ञका॥ टी॰ गतनक्षत्रकीघडी ६० मेशुद्धकरना॰ वर्षमेसूर्योदयसेजोइष्टघटी होयसोयुक्त करना॰ तोभयात होताहै ६० मेशुद्ध कियाजो नक्षत्र उसेवर्तमाननक्षत्रकी घटीयुक्तकरना तोभभोग होताहै॥ ॥ चंद्रस्पष्टक्रममाह॥

खषट्घ्नंभयातंभभोघृतं तत्खनर्कघ्नधिष्ण्येषुयुक्तं द्विनिघ्नंनवाप्तंशशीभागपूर्वःस्त्रभुक्तिःखखाभ्राष्टवेदाभभोगनभुक्ताः

टी॰ वीतेहुयेनक्षत्रकापिंडबांधके ६० सेगुणा और भभोगकापिंड बांधके भाग तिनदफेदेके गतनक्षत्रकू ६० सेगुणे और जोभभोगकेभागसेंजाता हुवाभयातहै उसइमें जोडदेफिरइसे द्विगुनाकरे और ९ काभागदेनीन दफेतो चंद्रमा अंशापूर्वक होताहै अंशोंमें ३० केभागसेंराशी करे और ४८००० सेगुणभभोगकाभाग देदोदफेतो चंद्रमाकी भुक्तीस्पष्टहोगी॥ लग्नसाधन॥ सभागणश्चंद्रकृशानुनिघ्नःखचंद्रभक्तोजनिलग्नयुक्तः। तच्छेदिनेशैःकिलवर्षलग्नं सामान्यतोमान्यतरैर्निरुक्तम्॥ टी॰ गताब्दको ३१ सेगुणदेना १० सेभागलेना उसेंजन्मलग्नयुक्त करना १२ सेतष्टिनकरकेजो शेषरहेसो सामान्यरीतीसे वर्षलग्नजानना-

अथमुंथा॥ सैकागताब्दाविहृताःपतंगैःस्त्रक्षेभवेन्मुंथहाजनुर्भात्॥ टी॰ गताब्दमेंएक युक्त करना १२ सेभागदेनाजो शेषरहेसोजन्मलग्नसेमुंथाकास्थानजानना-

अथलग्नसारणीलिख्यते   तत्रसभा: ०६।३०   तत्रचरखण्डानि ६५।५२।२२   लग्न

	००	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४
मे० ७।१६	०२ २२ ००	०२ २९ ०६	०२ ३६ १२	०२ ४३ १८	०२ ५० २४	०२ ५७ ३०	०३ ०४ ३६	०३ ११ ४२	०३ १८ ४८	०३ २५ ५४	०३ ३३ ००	०३ ४१ १४	०३ ४९ २८	०३ ५७ ४२	०४ ०५ ५६
वृ० ८।१४	०६ १७ ४०	०६ २५ ५४	०६ ३४ ०८	०६ ४२ २२	०६ ५० ३६	०६ ५८ ५०	०७ ०७ ०४	०७ १५ १८	०७ २३ ३२	०७ ३१ ४६	०७ ४० ००	०७ ५० ०२	०८ ०० ०४	०८ १० ०६	०८ २० ०८
मि० १०।०२	११ ०० ४०	११ १० ४२	११ २० ४४	११ ३० ४६	११ ४० ४८	११ ५० ५०	१२ ०० ५२	१२ १० ५४	१२ २० ५६	१२ ३० ५८	१२ ४१ ००	१२ ५२ ३०	१३ ०४ ००	१३ १५ ३०	१३ २७ ००
क० ११।३०	१६ ३१ ००	१६ ४२ ३०	१६ ५४ ००	१७ ०५ ३०	१७ १७ ००	१७ २८ ३०	१७ ४० ००	१७ ५१ ३०	१८ ०३ ००	१८ १४ ३०	१८ २६ ००	१८ ३७ ४२	१८ ४९ २४	१९ ०१ ०६	१९ १२ ४८
सिं० ११।४२	२२ २० ००	२२ ३१ ४२	२२ ४३ २४	२२ ५५ ०६	२३ ०६ ४८	२३ १८ ३०	२३ ३० १२	२३ ४१ ५४	२३ ५३ ३६	२४ ०५ १८	२४ १७ ००	२४ २८ २६	२४ ३९ ५२	२४ ५१ १८	२५ ०२ ४४
कं० ११।२६	२८ ०५ ४०	२८ १७ ०६	२८ २८ ३२	२८ ३९ ५८	२८ ५१ २४	२९ ०२ ५०	२९ १४ १६	२९ २५ ४२	२९ ३७ ०८	२९ ४८ ३४	३० ०० ००	३० ११ २६	३० २२ ५२	३० ३४ १८	३० ४५ ४४
तु० ११।२६	३३ ४८ ४०	३४ ०० ०६	३४ ११ ३२	३४ २२ ५८	३४ ३४ २४	३४ ४५ ५०	३४ ५७ १६	३५ ०८ ४२	३५ २० ०८	३५ ३१ ३४	३५ ४३ ००	३५ ५४ ४२	३६ ०६ २४	३६ १८ ०६	३६ २९ ४८
वृ० ११।४२	३९ ३७ ००	३९ ४८ ४२	४० ०० २४	४० १२ ०६	४० २३ ४८	४० ३५ ३०	४० ४७ १२	४० ५८ ५४	४१ १० ३६	४१ २२ १८	४१ ३४ ००	४१ ४५ ३०	४१ ५७ ००	४२ ०८ ३०	४२ २० ००
ध ११।३०	४५ २४ ००	४५ ३५ ३०	४५ ४७ ००	४५ ५८ ३०	४६ १० ००	४६ २१ ३०	४६ ३३ ००	४६ ४४ ३०	४६ ५६ ००	४७ ०७ ३०	४७ १९ ००	४७ २९ ०२	४७ ३९ ०४	४७ ४९ ०६	४७ ५९ ०८
म० १०।०२	५० ३९ ४०	५० ४९ ४२	५० ५९ ४४	५१ ०९ ४६	५१ १९ ४८	५१ २९ ५०	५१ ३९ ५२	५१ ४९ ५४	५१ ५९ ५६	५२ ०९ ५८	५२ २० ००	५२ २८ १४	५२ ३६ २८	५२ ४४ ४२	५२ ५२ ५६
कु० ८।१४	५५ ०४ ४०	५५ १२ ५४	५५ २१ ०८	५५ २९ २२	५५ ३७ ३६	५५ ४५ ५०	५५ ५४ ०४	५६ ०२ १८	५६ १० ३२	५६ १८ ४६	५६ २७ ००	५६ ३४ ०६	५६ ४१ १२	५६ ४८ १८	५६ ५५ २४
मी ७।०६	५८ ४९ ००	५८ ५६ ०६	५९ ०३ १२	५९ १० १८	५९ १७ २४	५९ २४ ३०	५९ ३१ ३६	५९ ३८ ४२	५९ ४५ ४८	५९ ५२ ५४	६० ०० ००	०० ०७ ०६	०० १४ १२	०० २१ १८	०० २८ २४

	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	प्रमाण	
मे० ७।१६	०४ १४ १०	०४ २२ २४	०४ ३० ३८	०४ ३८ ५२	०४ ४७ ०६	०४ ५५ २०	०५ ०३ ३४	०५ ११ ४८	०५ २० ०२	०५ २८ १६	०५ ३६ ३०	०५ ४४ ४४	०५ ५२ ५८	०६ ०१ १२	०६ ०९ २६	०३ ३२	घटी पल
वृ० ८।१४	०८ ३० १०	०८ ४० १२	०८ ५० १४	०९ ०० १६	०९ १० १८	०९ २० २०	०९ ३० २२	०९ ४० २४	०९ ५० २६	१० ०० २८	१० १० ३०	१० २० ३२	१० ३० ३४	१० ४० ३६	१० ५० ३८	०४ ४७	घटी पल
मि० १०।०२	१३ ३८ ३०	१३ ५० ००	१४ ०१ ३०	१४ १३ ००	१४ २४ ३०	१४ ३६ ००	१४ ४७ ३०	१४ ५९ ००	१५ १० ३०	१५ २२ ००	१५ ३३ ३०	१५ ४५ ००	१५ ५६ ३०	१६ ०८ ००	१६ १९ ३०	०५ ०१	घ० प०
क० ११।३०	१९ २४ ३०	१९ ३६ १२	१९ ४७ ५४	१९ ५९ ३६	२० ११ १८	२० २३ ००	२० ३४ ४२	२० ४६ २४	२० ५८ ०६	२१ ०९ ४८	२१ २१ ३०	२१ ३३ १२	२१ ४४ ५४	२१ ५६ ३६	२२ ०८ १८	०५ ४५	घ० प०
सिं० ११।४२	२५ १४ १०	२५ २५ ३६	२५ ३७ ०२	२५ ४८ २८	२५ ५९ ५४	२६ ११ २०	२६ २२ ४६	२६ ३४ १२	२६ ४५ ३८	२६ ५७ ०४	२७ ०८ ३०	२७ १९ ५६	२७ ३१ २२	२७ ४२ ४८	२७ ५४ १४	०५ ५१	घटी पल
कं० ११।२६	३० ५७ १०	३१ ०८ ३६	३१ २० ०२	३१ ३१ २८	३१ ४२ ५४	३१ ५४ २०	३२ ०५ ४६	३२ १७ १२	३२ २८ ३८	३२ ४० ०४	३२ ५१ ३०	३३ ०२ ५६	३३ १४ २२	३३ २५ ४८	३३ ३७ १४	०५ ४३	घ० प०
तु० ११।२६	३६ ४१ ३०	३६ ५३ १२	३७ ०४ ५४	३७ १६ ३६	३७ २८ १८	३७ ४० ००	३७ ५१ ४२	३८ ०३ २४	३८ १५ ०६	३८ २६ ४८	३८ ३८ ३०	३८ ५० १२	३९ ०१ ५४	३९ १३ ३६	३९ २५ १८	०५ ४३	घ० प०
वृ० ११।४२	४२ ३१ ३०	४२ ४३ ००	४२ ५४ ३०	४३ ०६ ००	४३ १७ ३०	४३ २९ ००	४३ ४० ३०	४३ ५२ ००	४४ ०३ ३०	४४ १५ ००	४४ २६ ३०	४४ ३८ ००	४४ ४९ ३०	४५ ०१ ००	४५ १२ ३०	०५ ३०	घ० प०
ध ११।३०	४८ ०९ १०	४८ १९ १२	४८ २९ १४	४८ ३९ १६	४८ ४९ १८	४८ ५९ २०	४९ ०९ २२	४९ १९ २४	४९ २९ २६	४९ ३९ २८	४९ ४९ ३०	४९ ५९ ३२	५० ०९ ३४	५० १९ ३६	५० २९ ३८	०५ ४५	घ० प०
म० १०।०२	५३ ०१ १०	५३ ०९ २४	५३ १७ ३८	५३ २५ ५२	५३ ३४ ०६	५३ ४२ २०	५३ ५० ३४	५३ ५८ ४८	५४ ०७ ०२	५४ १५ १६	५४ २३ ३०	५४ ३१ ४४	५४ ३९ ५८	५४ ४८ १२	५४ ५६ २६	०५ ०१	घ० प०
कु० ८।१४	५७ ०२ ३०	५७ ०९ ३६	५७ १६ ४२	५७ २३ ४८	५७ ३० ५४	५७ ३८ ००	५७ ४५ ०६	५७ ५२ १२	५७ ५९ १८	५८ ०६ २४	५८ १३ ३०	५८ २० ३६	५८ २७ ४२	५८ ३४ ४८	५८ ४१ ५४	०४ ०७	घ० प०
मी ७।०६	०० ३५ ३०	०० ४२ ३६	०० ४९ ४२	०० ५६ ४८	०१ ०३ ५४	०१ ११ ००	०१ १८ ०६	०१ २५ १२	०१ ३२ १८	०१ ३९ २४	०१ ४६ ३०	०१ ५३ ३६	०२ ०० ४२	०२ ०७ ४८	०२ १४ ५४	०३ ३३	घ० प०

अथदशमसारणीलिख्यते ॥ विलग्नलग्नांशसमाकोष्टे ह्यथफलंतद्दशमं निरुक्तं विलग्नखेषड्भयुतेविधेयं कलत्रतुर्याभिगतंस्फुटंहि

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
मे	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृ १	०९ १६ ४७	०९ १७ ३४	०९ १८ २६	०९ १९ २०	०९ २० १०	०९ २१ ०१	०९ २१ ५२	०९ २२ ४३	०९ २३ ३४	०९ २४ २५
मि २	१० १५ ४०	१० १६ ५३	१० १७ ५८	१० १८ ४	१० २० ०९	१० २१ १५	१० २२ २०	१० २३ २६	१० २४ ३१	१० २५ ०७
क ३	११ २१ १४	११ २२ २८	११ २३ ४२	११ २४ ५६	११ २६ १०	११ २७ २३	११ २८ ३७	११ २९ ५०	०० ०१ ०७	०० ०२ १८
सिं ४	०० २७ ०६	०० २८ ०८	०० २९ २८	०१ ०० ३७	०१ ०१ ४६	०१ ०३ ५५	०१ ०४ ०५	०१ ०५ १४	०१ ०६ २३	०१ ०७ ३२
कं ५	०१ २९ ३७	०२ ०० ४५	०२ ०१ ४२	०२ ०२ ४४	०२ ०३ ४८	०२ ०४ ५०	[illegible]	०२ ०६ ५४	०२ ०७ ५७	०२ ०८ ५९
तु ६	०३ ०० ४५	०३ ०१ ४८	०३ ०२ ५०	०३ ०३ ५२	०३ ०४ ५५	०३ ०५ ५७	[illegible]	०३ ०८ ०१	०३ ०९ ०३	०३ १० ०६
वृ ७	०४ ०४ ००	०४ ०५ २०	०४ ०६ २९	०४ ०७ ३८	०४ ०८ ४७	०४ ०९ ५७	०४ ११ ०२	०४ १२ २०	०४ १३ ३५	०४ १४ ५०
धं ८	०५ १० ३८	०५ ११ ५३	०५ १३ ०७	०५ १४ २०	०५ १५ ३४	०५ १६ ४८	[illegible]	[illegible]	०५ २० ३०	०५ २१ ४५
म ९	०६ १४ ३८	०६ १५ ३८	०६ १६ ४०	०६ १७ ४१	०६ १८ ४२	०६ १९ ४३	[illegible]	[illegible]	०६ २२ ४६	०६ २३ ४७
कुं १०	०७ ११ ४७	०७ १२ ०५	०७ १३ २२	०७ १४ ०८	०७ १४ ५६	०७ १५ ४३	०७ १६ ३१	०७ १७ २७	०७ १८ ०५	०७ १८ ५०
मी ११	०८ ०३ २५	०८ ०४ ०६	०८ ०४ ४७	०८ ०५ २९	०८ ०६ ०९	०८ ०६ ५०	०८ ०७ १५	०८ ०८ १२	०८ ०८ ४३	०८ ०९ ३४

	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
मे	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृ १	०९ २५ १७	०९ २६ ०८	०९ २७ ०९	०९ २८ १०	०९ २९ ११	१० ०० १२	१० ०१ १३	१० ०२ १४	१० ०३ १५	१० ०४ १६
मि २	१० २६ ०१	१० २७ ५१	१० २८ ०५	११ ०० १६	११ ०१ ३३	११ ०२ ४६	११ ०४ ००	११ ०५ १४	११ ०६ २८	११ ०७ ४२
क ३	०० ०३ ३२	०० ०४ ४८	०० ०६ ०२	०० ०७ १७	०० ०८ ३१	०० ०९ ४५	०० ११ ००	०० १२ ०६	०० १३ १८	०० १४ २८
सिं ४	०१ ०८ ४३	०१ ०९ ५४	०१ ११ ०५	०१ १२ १५	०१ १३ २५	०१ १४ ३५	०१ १५ ४६	०१ १६ ५७	०१ १७ १८	[illegible]
कं ५	०२ १० ०१	०२ ११ ०३	०२ १२ ०६	०२ १३ ०८	०२ १४ १०	०२ १५ १२	०२ १६ १४	०२ १७ १७	०२ १८ १९	०२ १९ २१
तु ६	०३ ११ ०८	०३ १२ १५	०३ १३ २४	०३ १४ ३३	०३ १५ ४२	०३ १६ ५२	०३ १८ ०१	०३ १९ १०	०३ २० २०	०३ २१ २९
वृ ७	०४ १६ ०५	०४ १७ १७	०४ १८ ३०	०४ १९ ४४	०४ २० ५८	०४ २२ १२	०४ २३ २६	०४ २४ ३९	०४ २५ ५३	०४ २७ ०७
धं ८	०५ २२ ५७	०५ २४ ११	०५ २५ २४	०५ २६ १९	०५ २७ २५	०५ २८ ३०	०५ २९ ३६	०६ ०० ४२	०६ ०१ ४०	०६ ०२ ५३
म ९	०६ २४ ४८	०६ २५ ४७	०६ २६ ३८	०६ २७ २९	०६ २८ २०	०६ २९ ११	०७ ०० ११	०७ ०० ४२	०७ ०१ ४३	०७ ०२ ३४
कुं १०	०७ १९ ३८	०७ २० २५	०७ २१ ०५	०७ २१ ४७	०७ २२ २८	०७ २३ २९	०७ २३ ४६	०७ २४ ३१	०७ २५ १२	०७ २५ ४६
मी ११	०८ १० २५	०८ ११ ००	०८ ११ ३७	०८ १२ १६	०८ १३ ५६	०८ १३ ४०	०८ १४ २१	०८ १५ ४३	०८ १६ ४०	०८ १६ २५

	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	मे०
मे	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वृ०१
वृ १	१० ०५ १७	१० ०६ १८	१० ०७ १९	१० ०८ २०	१० ०९ २१	१० १० २२	१० ११ २४	१० १२ ३०	१० १३ ३६	१० १४ ४२	मि०२
मि २	११ ०८ ५६	११ १० ०९	११ ११ २३	११ १२ ३७	११ १३ ५१	११ १५ ०५	११ १६ १९	११ १७ ३२	११ १८ ४६	११ २० ००	कं०३
क ३	०० १५ ३७	०० १६ ४६	०० १७ ५५	०० १९ ०५	०० २० १८	०० २१ २३	०० २२ ३२	०० २३ ४२	०० २४ ५१	०० २६ ००	सिं०४
सिं ४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कं०५
कं ५	०२ २० २३	०२ २१ २६	०२ २२ २८	०२ २३ ३०	०२ २४ ३२	०२ २५ ३५	०२ २६ ३७	०२ २७ ३९	०२ २८ ४१	०२ २९ ४३	तु०६
तु ६	०३ २२ ३७	०३ २३ ४७	०३ २४ ५६	०३ २६ ०५	०३ २७ १४	०३ २८ २३	०३ २९ ३२	०४ ०० ४२	०४ ०१ ५२	०४ ०३ ०२	वृ०७
वृ ७	०४ २८ २०	०४ २९ ३५	०५ ०० ४८	०५ ०२ ०२	०५ ०३ १८	०५ ०४ ३०	०५ ०५ ४४	०५ ०६ ५८	०५ ०८ ११	०५ ०९ २५	धं०८
धं ८	०६ ०३ ५६	०६ ०५ ०४	०६ ०६ १०	०६ ०७ १५	०६ ०८ २१	०६ ०९ २७	०६ १० ३२	०६ ११ ३८	०६ १२ ३८	०६ १३ ३७	म०९
म ९	०७ ०३ २४	०७ ०४ १५	०७ ०५ ०६	०७ ०५ ५७	०७ ०६ ४८	०७ ०७ ३८	०७ ०८ २९	०७ ०९ २०	०७ १० ११	०७ ११ ०१	
कुं १०	०७ २६ ३४	०७ २६ १९	०७ २७ ५६	०७ २८ ३७	०७ २८ ०९	०७ २९ ०४	०८ ०१ ०५	०८ ०१ २३	०८ ०२ ०३	०८ ०२ ४३	
मी ११	०८ १७ ०९	०८ १७ ४७	०८ १८ २८	०८ १९ ०९	०८ १९ ५०	०८ २० ३१	०८ २१ १२	०८ २१ ५३	०८ २२ ३४	०८ २३ १६	मी०११

अथवर्षसारणीलिख्यते

वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
वार	१	२	३	५	६	७	१	३	४	५	६	१	२	३	३
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२
ऽक्ष	३०	०	३०	००	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०
तिथि	११	२	३	१४	२५	६	१७	२८	९	२७	१	१२	२३	३	१५
नक्षत्र	८	१८	१	११	२१	४	१४	२४	७	२०	३	१०	२०	४	१३

वर्ष	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	६	१	२
घटी	८	२३	२९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५
पल	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५
ऽक्ष	०	३०	०	३	०	३०	०	३०	०	३०	०	३	०	३०	०
तिथि	२७	८	१९	०	११	२२	३	१४	२५	६	१७	२८	९	२०	१
नक्षत्र	२३	६	१६	२३	९	१९	२	१२	२२	५	१५	२५	८	१८	११

वर्ष	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
वार	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०
घटी	१६	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८
पल	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७
वि०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	९	३०	०	३०	०	३०
नक्ष०	१३	२४	५	१६	२७	८	१९	०	११	२२	३	१४	२५	१०	१७
लग्न	११	२१	४	१४	२४	७	१७	०	१०	२०	३	१३	२३		१६
ऽस	०	३	६	९	३	१३	६	९	००	४	७	१०	१	४	७

वर्ष	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	६९	६०	६१
वार	१	३	४	५	६	१	२	४	४	६	०	१	३	४	५	६
घटी	५४	९	२५	२४	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७
पल	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१
विपल	००	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०
नक्ष.	२९	१०	२१	२	१३	२४	५	१६	२७	८	२९	१	११	२२	४	१५
लग्न	२६	९	९	२	१२	२२	५	१५	२५	२	१८	००	११	२१	४	१४
ऽश	१०	१	४	७	११	२	५	०	११	१२	५	८	११	२	६	९

६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	वर्ष
१	२	३	४	६	[illegible]	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	वार
२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	[illegible]	४२	घडी
३३	४	३६	७	३९	१०	४२	५३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	२	पल
०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	विपल
३६	७	१८	२९	१०	२१	२	१३	२४	५	१६	२७	९	२०	१	१२	२३	४	१५	नक्षत्र
२४	७	१७	०	१०	२०	३	१३	[illegible]	६	१६	२६	९	१९	२	१२	२२	५	१५	लग्न
०	३	६	९	२	३	६	३०	१	४	५	१०	१	४	७	१०	१	५	८	क

अथपंचाधिकारी॥मुंथेशो १ वर्षलग्नेश २ स्त्रैराशिकनायकः। दिवार्कराशिनाथश्च रात्रौ चंद्रर्क्षनायकः॥जन्मलग्नेश्वर ५ श्चैववर्षे पंचाधिकारिणः॥

टी॰ वर्षमेंपंचाधिकारीवनावनेकाक्रममुंथेश १ वर्षलग्नेश २ त्रिराशीश ३ दिनमे वर्षप्रवेश होयतोसूर्यके राशीकास्वामी रात्रीमेवर्षप्रवेश होयतोचंद्रकेराशीका स्वामी ४ जन्मलग्नेश्वर ५ वर्षमेयहपंचाधिकारीसुभासुभफलकेवास्तेयहअधिकारदेखना॰ जिसकेदोतीन अधिकारआवेसोवलवानजानना -

त्रिराशिपाःसूर्यसितार्कसुक्रा दिनेनिशीज्येंदुवुधक्ष्मा जा।मेषाच्चतुर्णांहरिभाद्विलीमनित्यंपरेश्वार्किकुजेज्यचंद्रा

टी॰ त्रिराशिपतहोनेसूर्जसुक्रऔरशनिशुक्रदिनमेमेषसेआदलेककर्कतकसे चक्रमेपरसेमालुमहोणा -

अथत्रिराशिकस्वामीयंत्रलिख्यते

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
दिवास्वामी	सू	शु	श	शु	शु	शु	श	शु	सू	सू	श	शु
रात्रिस्वा॰	वृ	चं॰	वु	चं	वृ	चं॰	वु	मं	वु	चं	वु॰	मं॰
सदास्वा॰	श	म	वृ	मं	श	चं॰	वृ	मं	श	मं	वृ	मं

दृष्टिक्रममाह॥ पादंत्रिरुद्रे १५ सुदलं स्वतुर्ये ३० पादत्रयस्यान्नवपंचमेपि ४५ पश्यंतिपूर्णंसमसप्तकेच ग्रहा नचान्यत्रविलोकयंति॥ स्पष्टार्थचक्रंविलोकयं

३ ११	४ १०	५ ९	७	भाव
१५	३०	४५	६०	कलादृष्टि

अथमुंथाफल

लग्नस्थमुंथाप्रकरोतिसौख्यंनृपप्रसादंविजयंरिपूणां हर्षोदयंवाहुवलप्रतापं वृद्धिंविलासंधनलाभमुग्रं १ मुंथाधनस्थाधनलाभमुग्रंकरोतिमिष्टान्नसमागमंच सर्वार्थसिद्धिंनिजवाहुवीर्यात् सुखोदयंमित्रसुतोदयंच २ लोकाजयंनिजजनाचसहोत्थसौख्यंदेहार्तिकीर्तिशकलकार्यशम्प्रदात्री॥ शत्संगतिश्चसवलानत्नुतेश्रमैत्रीमुंथाचपाक्रमगता नृपतिप्रसादं ३ वित्तक्षयंरिपुजनादशयस्यवृद्धिः वैरोदयंस्वजनराजकुलेषुकुर्यात् गुप्तार्तिकृतहृदरुजस्य

विवर्त्तिदाद्वो नृपैथिहावि वधरोगभयानिषष्ठ्यां ४ प्रताप महात्म्यसुरर्च्चनच सुखद्धिबुद्धियशप्रवृद्धिः वित्तप्र लाभोजनताप्रसादा पुत्रातिशोरव्यगेथिहायां ५ नृपा द्भयंचौरभयंकशत्वं सिरुधमत्वं रिपुजंभयंच कायार्थ हानिकुमतिष्टवैरं खष्टेथिहादुष्टरुजंतिदध्यात् ६॥ शोरव्यार्थनाशो वनितादिकष्टं चिंतामनोमोहमनल्प रोगं क्लेशोदयंस्वेष्टजनेषुवैरं यसोविनाशोसुयगेथिहा यां ७ दुष्टंभयात्तिधनधान्यनाशो विपक्षभीतिव्यशनानि मोहाःकांतेबिनासस्वजनेषुपीडा नृपाद्भयंचाष्टमगेथि हायां ८ धर्मार्थलाभंस्वजनेषुमैत्री नृपोत्तमेप्रीतियशः प्रवृद्धिः प्रमोदभाग्योदयकार्यशिद्धी पुण्योपगेयाप्रक रोतिसौरव्यं ९ मनोर्थाप्तिस्वजनेषुसौरव्यं निजेष्टमंत्री स्वजनोपकारःभूपात्प्रसादो दसमेथिहायांपुण्योदयस्या द्विपुलंयशश्चः १० सुवार्थलाभंसुभवृद्धिवृद्धिमनोरथाप्तिंन पतिप्रसादं निजेष्टसौख्यंभनसी प्रदर्षकरोतिसुयाभवगेवसित्वं ११ निरुद्यमत्वंनिजमित्रकष्टंदुष्टातिरुक्तन्नृपतेभयंच धर्मार्थनाशोरिपुचौरभीतिस्वामिष्टपीडाव्ययगेथिहायां १२

अथत्रिपताकीचक्रकाप्रकार॥ ॥रेखात्रयंतिर्यगधो र्ध्वसंस्थमन्योन्यविद्धाग्रकमीशकोणत्॥स्मृतंबुधै स्तत्रिपताकचक्रं प्राङ्मध्यरेखाग्रवर्षलग्नात्॥९॥

टी० रेखा३ टेढी ३ सीधी करना श्रौर परस्पर ईशानकोणसे रेखा का वेध करना इस्को पंडीतलोगत्रिपताकीचक्रकहतेहैं· इसमें पूर्व के मध्यरेखापरवर्षलग्नकान्यासक

तन्त्रग्रहन्यासमाह॥ न्यसेड्डचक्रे विलग्नतस्तैकायांनाथाब्दसंख्या विभजेन्नभोगैः शेषान्मितेजन्मगचद्रराशे स्तुल्येचराशौ विलिखेच्छशांकं॥१०॥ परेचतुर्भाजितशेषतुल्येस्थानेस्वराशेःस्वचरास्तुलेख्याः



टी· त्रिपताकीचक्रपर १२ राशीकान्यासकरना ग्रहन्यासकाप्रकारगतवर्षमे१

युक्त करना। सभागसेना जोशेषरहसो जन्मकालमें चंद्रराशीसे शेषस्थानमें चंद्रमालिखना। और ग्रहके। चारसे भागदेके जो शेषरहे उहां अपने स्थानसे लिखना। और राहुकेतू अपने स्थानसे पीछे लिखना तो त्रिपताकी चक्र स्पष्ट होताहै–

वेधविचार॥ स्वर्भानुविद्धे हिमगौत्वरिष्टं तापोर्क विद्धे रुगिनोऽ ज विद्धे। महीजविद्धे तु शरीरपीडा शुभैश्च विद्धे जय सौख्य लाभाः। शुभाशुभव्योमगवीर्यतोत्र फलं तु वेधस्य वदेत्सुधीमान्

टी॰ त्रिपताकी चक्रमें वेध देखनेका प्रकार॰ सब ग्रहका वेध चंद्रमासे देखना राहूसे चंद्रसे वेधहोयतो अरिष्टजानना॰ सूर्यसे वेध होयतो तापजानना। शनीसे वेधहोयतो रोगजानना॰ मंगलसे वेधहोयतो शरीरपीडाजानना। और शुभग्रहसे वेधहोयतो जयशाती सौख्यलाभ और शुभ ग्रहका वीर्य देखके वेधमें फलकहना–

मुद्दादशा॥ जन्मर्क्षसंख्यासहितागताब्दा द्व्यूनिता नंद ह्तावशेषात्। आचंकुराजीशबुकेशुपूर्वं भवंति मुद्दादशिकाक्रमोयं

टी॰ मुद्दादशाल्यावनेकी रीति॰ जन्मनक्षत्रकी जो संख्या उसमें गताब्दकी संख्या मिलावना दोनोंकी जो संख्या होय उसेसे दो २ कमती करना और ९ से भाग देना जो अंक शेष रहेसो दशाजानना १ शेषरहेतो सूर्यकी दशा २ शेषरहेतो चंद्रकी दशा ३ शेषतो मंगलकी दशा ४ शेषरहेतो राहूकी दशा ५ शेषरहेतो गुरूकी दशा ६ शेषरहेतो शनीकी दशा ७ शेषरहेतो बुधकी दशा ८ शेषरहेतो केतूकी दशा ० शेषरहे तो शुक्रकी दशाजानना यह दशाका क्रम ज्योतिःशास्त्रके आचार्योंने कहाहै-॥

मुद्दादशाचक्रं

सू॰	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	ग्रह
०	१	०	१	१	१	१	०	२	मास
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	दिन

मासबनावनेकाक्रम॥ मासार्कस्यतदासन्नपंक्त्यर्केणसहांतरं कलीकृत्यार्कगत्याप्तं दिनाद्येन युतान्वितं तत्पंक्तिस्थंयातपूर्वं मासार्केधिकहीनके तद्घराद्येमासवेशोद्युप्रवेशो कलासमः॥

टी॰ वर्षसूर्यमासको सूर्य जो वर्षके सूर्यसे अंशोंमें निकट होय हीन वा अधिक उसका अंतर करें राशी छोड फिर उसका पिंड बांधके सूर्य पंक्तिके गतिकापिंड बांधके भाग देतीन दफ वारादिप्राप्त होयगे फिर जीस पंक्तिके सूर्यका अंतर कीयाहै उसी मिश्रमानमें घटाव या जोडजो सूर्य वर्षका पंक्तीके सूर्यसे अधिक होतो जोडदे और हीन होतो घटादे मास वारादि स्पष्ट होगा–

अथप्रश्नप्रकरणं ॥ तिथ्यादियुक्तप्रश्न
तिथिप्रहरसंयुक्तातारकावारमिश्रिता ॥ अग्निभिस्तुहरे
द्भागंशेषंसत्वंरजस्तमः १ फल ॥ सिद्धिस्तात्कालकेसत्वे र
जसातुविलंबता । तमसानिष्फलकार्यंज्ञातव्यंप्रश्नकोविदः

टी० प्रश्नसमजोतिथीवारनक्षत्रऔरप्रहरजोहोयउस्कोएकत्रकरना ३ सेभाग
लेनाशेषमेसत्वरजतमयहफलसहितजानना उदाहरण तिथी ५ वार ३ नक्षत्र
७ प्रहर २ इस्कोएकत्रकियातो १७ भया ३ सेभागलियाशेष २ रहेतोरजोगुणजा
नना फलकार्यमेदेरीहोगीयहप्रकारसे ३ शेषरहेतोतमोगुण फलकार्यनिष्फल
१ शेषरहेतोसत्वगुणफलतात्कालसिद्धिइसप्रकारसेप्रश्नफलजानना ॥

अपनेछायाकाप्रश्न ॥ आत्मछायात्रिगुणितात्रयोदशसम
न्विता । वसुभिश्चहरेद्भागंशेषंचैवशुभाशुभं ॥ फल ॥ लाभ
श्चैकेत्रिकेसिद्धिर्वृद्धिःपंचमसप्तके । द्वयोर्हानिश्चतुःशोकं
षष्ठाष्टेमरणंध्रुवं ॥ टी० प्रश्नकरनेहारीअपनीछायाजितनागोडआवेउ
स्मे और १३ मिलावना ८ सेभागलेनाजोशेषआवेसोफलदेखना - शेष १ लाभ
शेष २ हानी ३ शेष सिद्धि ४ शेषशोक ५ शेषवृद्धी ६ शेषमरण ७ शेष वृद्धी मरण०

पंथाप्रश्न ॥ तिथिःप्रहरसंयुक्तातारकावारमिश्रिता । सप्त
भिस्तुहरेद्भागंशेषंतुफलमादिशेत् ॥ ५ ॥ वर्त्तमानंचनक्षत्रं
गणयेत्कृत्तिकादितः । सप्तभिश्चहरेद्भागंशेषंप्रश्नस्यलक्षणं
॥ प्रश्नाक्षरेरुद्रयुक्तंसप्तभिर्भाजितंतथा । फलमेवंक्रमाज्ज्ञेयं
सर्वेषांहिशुभाशुभं ॥ ७ ॥ टी० प्रश्नकरनेहारीजोतिथीप्रहरवारनक्षत्रहोयसो
एकत्रकरना ७ सेभागलेनाशेषजोरहसोफलजानना दूसराप्रकारकृत्तिकानक्षत्रसे
दिननक्षत्रतकगिनना ७ सेभागलेनाशेषफलजानना० तीसराप्रकारप्रश्नकेजोअ
क्षरहोयउस्मे ११ मिलावना ७ सेभागलेनाशेषआवसोफलजाननातीनोप्रश्नकाफल (देखना

शेषकाफल ॥ एकेशेषेतथास्थानेद्वितीयेपथिवर्त्तते ॥
तृतीयेप्यर्धमार्गेतुचतुर्थेग्राममादिशेत् ॥ पंचमेपुनरावृ
त्तिःषष्ठेव्याधियुतंवदेत् । शून्यंचेयंसप्तमेवैचैतत्प्रश्नस्यलक्षणं

टी० पूर्वकेप्रश्नकाफलशेष १ रहेतोस्थानपरजाननाशेष २ रहेतोरस्तेमेशेष ३ रहेतो
अर्धमार्गमेशेष ४ रहेतोग्रामकेपासशेष ५ रहेतोरस्तेसफिरगयाशेष ६ रहेतोरोग

युक्त शेष ० रहतो मृत्यु ऐसा प्रश्न पन्न तीन प्रकार का क्रमसे जानना - दूसरा प्रकार ॥

धनसहजगतौ सितामरेज्यौ कथयतरान्वगमनं प्रवासिपुंसां ॥ तनुहिबुकगतौ विमोचतद्वत्कृदितिनिरणं कुरुतेगृहप्रवेशं ॥

टी॰ प्रश्नकालमें द्वितीयस्थानमें शुक्र होय और तृतीयस्थानमें गुरु होय तो प्रवासी पुरुषका आगमन कहना अथवा प्रश्नलग्नमें शुक्र और चतुर्थ स्थानमें गुरु होय तो प्रवासी पुरुष जलदी आगमन का हना - ॥ कार्याकार्यप्रश्न ॥

दिशाप्रहरसंयुक्तानारकावारमिश्रिता ॥ अष्टभिस्तुहरेद्भागं शेषं प्रश्नस्यलक्षणं ॥ फल ॥ पंचैकेत्वरिता सिद्धिः षट्तूर्ये चदिनत्रयं ॥ त्रिसप्तके विलंबश्च द्वौचाष्टौनचसिद्धिदौ १२

टी॰ प्रश्नकरनेवालेका मुख जिस दिशामें होय वह दिशा और प्रहर नक्षत्र वार इनको इकट्ठा करना ८ से भाग लेना शेषसे शुभाशुभ फल जानना शेष १ अथवा ५ रहे तो जलदी कार्य सिद्धी शेष ६ अथवा ४ रहे तो तीन दिनमें कार्य सिद्धी शेष ३। या ७ रहतो विलंब शेष २। या ८ रहतो कार्य होगा नहीं ऐसा जानना -

अंकप्रश्न ॥ अंकं द्विगुणितं कृत्वा फलनामाक्षरैर्युतं ॥ त्रयोदशयुतं कृत्वा नवभिर्भागमाहरेत् ॥ तृतीये क्षेममारोग्यं चतुर्थे व्याधिरेवहि । पंचके च स्त्रीलाभः स्यात्षष्ठे बंधुविनाशनं ॥ सप्तमे इप्सिता सिद्धिरष्टमे मरणं ध्रुवं । नवमे राज्य संप्राप्तिर्गर्गस्य वचनं तथा ॥ त्रुटि ॥ २ । फल ॥ एकेहि धन वृद्धिश्च द्वितीये च धनक्षयः

टी॰ प्रश्नसमें एकसे कहना ९ अंकमेसे कोई अंक कहो न वउसमें का जो अंक होय उस्को दूना करना फिर कोई फलका नाम उससे कहावना नव फलके नामके जो अक्षर होय उस्को पूर्वमें दूना किया जो अंक है उसमें मिलावना फिर उसमें १३ मिलावना ऐसे सब एकत्र करना ९ से भाग लेना जो शेष आवे सो फल शुभाशुभ जानना शेष १ रहतो धनलाभ शेष २ रहेंतो धनक्षय ३ रहेंतो आरोग्यता शेष ४ रहतो रोग शेष ५ रहतो स्त्रीलाभ शेष ६ रहेतो बंधुनाश शेष ७ रहतो कार्य सिद्धी शेष ८ रहतो मरण शेष ९ रहतो राज्य प्राप्ती ऐसे अंक प्रश्न गर्गमुनीने कथन किया है -

नवग्रहयंत्र ॥ नवग्रहात्मकं यंत्रं कृत्वा प्रश्नं निरीक्षयेत् ॥ फलं पूर्वोक्तमेवात्र द्रष्टव्यं प्रश्नकोविदैः ॥

टी॰ प्रश्न देखनेके वास्ते नवग्रहात्मयंत्र लिखना पूर्वमें विधी जो कहा है सो देखना

४	३	८
९	५	१
२	७	६

अन्यमतं॥ सप्तत्रयांके कथयंति वार्त्तां नवैकपंचत्वरितं वदंति ॥ अष्टौ द्वितीये न हि कार्यसिद्धिः रसाश्च वेदाय टिकात्रयं च॥

टी॰ अन्यमतसे पूर्वमें अंकप्रश्न कहा है वैसेही परंतु फलभिन्न शेष ७ अथवा ३ रहै तो वार्त्ता श्रवण होगी शेष ९।१।५ रहै तो जलदी कार्य सिद्धी शेष ८।२ रहै तो कार्य होगा नही शेष ६।४ रहै तो तीन दिनमें कार्यसिद्धी ऐसा जानना –

वारनक्षत्रयुक्तपंथाप्रश्न॥ बुधे चंद्रे तथा मार्गे समीपे गुरुशुक्रयोः। रवौ भौमे तथा दूरे शनौ च परिपीड्यते। निर्जीवः सप्तऋक्षा सजीवो द्वादशे भवेत्। व्याधिनो नवऋक्षाणि सूर्यधिष्ण्यात्तु चोद्भवं

टी॰ प्रश्न बुध अथवा चंद्रवारको करे तो मार्गमें है शुक्र गुरुवारको करे तो समीप आया है और रवि मंगलवारको प्रवासी दूर है शनिवारको पीडित और विशेष सूर्यनक्षत्रसे दिननक्षत्रतक देखना सो प्रथम ७ नक्षत्रमें चंद्र होय तो निर्जीव द्वितीय १२ नक्षत्रमें चंद्रमा होय तो जीवयुक्त तृतीय ९ नक्षत्रमें चंद्रमा होय तो रोगयुक्त ऐसा पंथा प्रश्न जानो

नष्टवस्तुप्रश्न॥ तिथिवारं च नक्षत्रं लग्नं वह्निविमिश्रितं। पंचभिस्तु हरेद्भागं शेषं तत्त्वं विनिर्दिशेत्। फल। पृथिव्यां तु स्थिरं ज्ञेयं अप्सु व्योम्नि न लभ्यते। तेजस्तु राजगं ज्ञेयं वायौ शोकं विनिर्दिशेत् नि

टी॰ प्रश्न करते ही जो तिथी वार नक्षत्र लग्न होय उसमें ३ युक्त करना और ५ से भाग लेना और पंचतत्त्व पृथ्वी जल आकाश तेज वायु यह क्रमसे नष्ट वस्तुका स्थान जानना शेष १ रहै तो पृथ्वी पर स्थिर है शेष २ रहै तो जलमें प्राप्त नहीं शेष ३ रहै तो आकाशपर प्राप्ति नहीं शेष ४ रहै तो राजाके। यहां गई ५ रहै तो वायु शोक प्राप्ती ऐसे नष्टवस्तु जानना

गर्भिणीप्रश्न॥ तत्पृच्छालग्ने रविजीवभौमे तृतीयसप्ते नवपंचमे च। गर्भः पुमान्वै ऋषिभिः प्रणीतं चान्यत्र ग्रहे स्त्री विबुधैः प्रणीतं

टी॰ स्त्री गर्भका प्रश्न करे तो ही जो प्रश्नलग्न होय उसमें ग्रह देखना लग्नसे तृतीय अथवा सप्तम नवम पंचम स्थानमें रवि गुरु मंगल होय तो गर्भमें पुत्र होय और यह स्थानमें अन्य ग्रह होय तो गर्भमें कन्या होय ऐसा जानना।

मुष्टिप्रश्न॥ मेषे रक्तं वृषे पीतं मिथुने नीलवर्णकं॥ कर्के च पांडुरं ज्ञेयं सिंहे धूम्रं प्रकीर्तितं। वृश्चिके ताम्रमिश्रं च चापे पीतं विनिश्चितं॥ नक्रे कुंभे कृष्णवर्णं मीने पीतं वदेत्सुधीः॥

टी॰ पृच्छकके मूठीमें कौन वर्णका पदार्थ है सो कहना उसका क्रम मेषलग्न होय तो

मूठमेंलालपदार्थकहना और वृषलग्नहोयतोपीलापदार्थकहना मिथुनहोय तो निलवर्ण कर्कहोयतोसफेदवर्ण सिंहहोयतोधूम्रवर्णकन्याहोयतोनील मिश्रित तुला होयतोपीतमिश्रितवर्णवृश्चिकहोयतोलालमिश्रितवर्णधनहोयतोपीत वर्णमकर और कुंभ होयतो कृष्ण वर्णमीन हो पीतवर्ण ऐसाप्रश्नसमेंलग्नसेवर्णजानना

लग्नसेमनचिंतितप्रश्न। मेषेचद्विपदाचिंता वृषेचिंता चतुष्प(नरका)द: । मिथुनेगर्भचिंताचव्यवसायस्यकर्कटे। सिंहेच्चजीवचिंतास्यात्कन्यायांचस्त्रियंतथा। तुलेचधनचिंताचव्याधिचिंताचवृश्चिके। चापेचधनचिंतास्यान्मकरेशत्रुचिंतनं॥ कुंभेस्थानस्यचिंतास्यान्मीनेचिंताचदैविकि॥ टी॰ लग्नसेप्रश्नकाउत्तर प्रश्नकालमेंमेषलग्नहोयतोमनुष्यकीचिंता कहना वृषलग्न होयतोचतुष्पदकी चिंता मिथुनलग्नहोयतो गर्भकी चिंता कर्कलग्नहोयतोउद्योगकी चिंता सिंहलग्नहोयतोजीवकी चिंता कन्यालग्नहोयतोस्त्री की चिंता तुलालग्नहोयतोधनकी चिंता वृश्चिकलग्न होयतोव्याधिचिंता धनलग्न होयतो धनकी चिंता मकरलग्न होयतो शत्रूकी चिंता कुंभलग्न होयतोस्थानकी चिंता मीनलग्नमें संबंधि चिंता ऐसेप्रश्नसमेंलग्नसेजानना

द्वादशलग्नकीसंज्ञा॥ धातुर्मूलंजीवश्चरस्थिर द्विस्वभावश्च॥ मेषादय: क्रमेणज्ञातव्या: प्रश्नकोविदै:॥२८॥ टी॰ मेषादिक्रमसे द्वादशलग्न की संज्ञा एक राशीमेदो २ नाम जानना॰ मेषलग्नमे धातु चिंता और चर संज्ञा वृषलग्नमें मूल चिंता स्थिर संज्ञा मिथुनलग्नमेंजीव चिंता द्विस्वभाव संज्ञा कर्कलग्नमें धातु चिंता चर संज्ञा सिंहलग्नमे मूल चिंता स्थिरसंज्ञा कन्या लग्नमे जीव चिंता द्विस्वभाव संज्ञा तुलालग्नमे धातुचिंता॰ चरसंज्ञा वृश्चिकलग्नमें मूल चिंता स्थिर संज्ञा धनलग्नमें जीव चिंता द्वि:स्वभाव। संज्ञा मकरलग्नमें धातु चिंता चरसंज्ञा कुंभलग्नमें मूलचिंता स्थिर संज्ञा मीनलग्नमेंजीव चिंता द्वि:स्व।भावसंज्ञा इसप्रकारसे द्वादशराशीकी संज्ञाजानना-

अंकप्रश्न॥ अष्टोत्तरशतेचैव प्रश्निको न्यून माचरेत्॥ शेषंद्वादशभिर्भक्तंशेषंचैवशुभाशुभं॥२९॥ फल॥ एकंदुर्गासमंकेवैविलंबश्चांत्येतुर्ये दिशुभूतेषुनाद्य:॥ रुद्रेसिद्धिर्युग्लेवृद्धिरुक्ता शीघ्रं कार्यस्यात्त्रिघरद्वादशेषु॥ ३० टी॰ प्रश्नपृच्छकसे आठोत्तरशत अंक मेंसे अंक कहवावना फिर जो अंक आवे

उस्को १२ सेभागलेना शेषरहेसो फलजानना शेष १।६।७ रहेतो कार्यविलंबशेष ८।४।१०
५ रहेतो नाश शेष ११ रहेतो सिद्धि शेष २ रहेतो वृद्धि और शेष ३।६।१२ रहेतो जलदी कार्य

रोगीप्रश्न॥ तिथिवारंचनक्षत्रंलग्नंप्रहरएवच। अष्टभिस्तु (जानना
हरेद्भागं शेषंतुफलमादिशेत्। फल॥ हयाग्नौदेवताबाधापि
त्रीवैनेत्रदंतिषु॥ षट्चतुर्षुभूतबाधानबाधाएकपंचके

टी॰ प्रश्नसमकि तिथीवारनक्षत्रलग्नप्रहर येसबएकत्र करना ८ सेभागलेना शे
षफलजानना शेष ७।३ रहेतो देवबाधाजानना शेष २।८ रहेतो पितरसंबंधीबा
धाशेष ६।४ रहेतो भूतबाधाशेष १।५ रहेतो कोईबाधानहीं ऐसाजानना यहरोगप्रश्न

रोगप्रश्नलग्नपरत्वे॥ मेषेचदेवी दोषःस्यात्वृषे दोषश्च (विधी
पैत्रिकः। मिथुनेशाकिनी दोषः कर्कटे भूत दोषकः ३३
सिंहसहोदराणां वै कन्यायां कुलमातृजः॥ तुलेदोषश्च
डिकायानाडीदोषोहिवृश्चिके। चापेचयक्षिणीपीडामक
रेग्रामदैवतात्॥ अपुत्रादृष्टिजः कुंभेमीनेआकाशगामिनः

टी॰ प्रथमरोगप्रश्नसमेमेषलग्नहोयतो देवीसंबंधीरोग वृषलग्नहोयतो पित्र
दोषसेरोग मिथुनलग्नहोयतो शाकिनीदोषसेरोग कर्कलग्नहोयतो भूतदोषसे
रोग सिंहलग्नहोयतो भ्रातृदोषसेरोग कन्यालग्नहोयतो कुलमातृका दोष तुल
लग्नहोयतो चंडिकादोषसेरोग वृश्चिकलग्नहोयतो नाडीदोषसे रोग धनलग्न
होयतो यक्षिणीदोषसेरोग मकरलग्नहोयतो ग्रामदेवतादोषसे रोग कुंभलग्न
होयतो पुत्रहीनस्त्रीकेदृष्टीदोषसे मीनलग्नहोयतो आकाशदेवतादोष ऐसेरोगप्रश्नज

पर्जन्यप्रश्न॥ आषाढस्यासितेपक्षे दशम्यादिदिनत्रये। रो (नना
हिणीकालमाख्यातिसमदुर्भिक्षलक्षणं॥ रात्रौवैवनिरभ्रं
स्यात्प्रभातेमेघडंबरं। मध्याह्नेजलबिंदुःस्यात्तदादुर्भिक्षलक्षणं

टी॰ पर्जन्यविचार आषाढशुक्लपक्षीकी १०।११।१२। तिथीकोरोहिणी होयतो क्रम
सेसुभिक्षमध्यमदुर्भिक्ष यहतीनो फलजानना और रात्रीमे मेघखुलजाना प्रातः
कालमें मेघ आवना और मध्याह्नमे जल बिंदु गिरना यहदुर्भिक्षकालक्षणजानना

वृष्टिलक्षण॥ प्रावृट्कालेशीनराशिर्यदास्यात्शुक्राद्दस्तेसौम्य (दृ
दृष्टश्चमंदात्। वृद्धिस्थानेसप्तमेवात्रिकोणेवृष्टिर्वाच्यादैवविद्भिः

टी॰ वर्षा सप्तमैजो चंद्रमा शुक्रसे सप्तमस्थानमै औरशुभग्रहसे दृष्ट शनिसे पंचम

स्थानमेंहोयअथवा ७ स्थानमेंहोयवा त्रिकोणमेंहोयतोवृष्टिलक्षणजानना-

कुंभःकर्कवृषौमीनमकरौवृश्चिकस्तुला। जललग्नानिचो क्तानिलग्नेष्वेतेषुसूर्यभं। लभत्येवसदावृष्टिर्ज्ञानव्यागणकोत्तमैः

टी० जलकेनक्षत्र सूर्य महानक्षत्र कुंभ कर्क अथवा वृषमीन मकर वृश्चिक तुला यहजल लग्नहैं इनलग्नमें होयतो वृष्टिउत्तमजानना-

नयदावातिपवनः स्थलंयांतिझषादयः॥ शब्दंकुर्वतिमंडूकास्तदास्याद्वृष्टिरुत्तमा। ४०

टी० वर्षासममें वृष्टिलक्षण वायून चले औरजलसे बाहर मच्छनिकसे मेंढुका शब्दकरे ऐसे। लक्षण होंयतो उत्तम वृष्टिजानना-

पर्जन्यनक्षत्र॥ अश्विनीमृगपुष्येषु पूषविष्णुमघा सुच॥ स्वात्यांप्रविशतेभानुर्वर्षते नात्रसंशयः॥ ४३॥

टी० अश्विनीमृगपुष्य पू०षा श्रवणमघास्वा० इनक्षत्रमेंसूर्य महानक्षत्रको आवेतो उत्तमवृष्टिजानना-

अल्पवृष्टिलक्षण॥ अग्रेयातियदाभौमः पश्चाच्चलतिभास्करः। तत्रवृष्टिर्नविपुलाजायते नात्रसंशयः ४४

टी० थोडिवृष्टिकालक्षणसूर्यसे आगेकेराशीपरमंगलहोयतो अल्पवृष्टिजानना

सूर्यनक्षत्रचंद्रनक्षत्रसंज्ञा॥ अश्विन्यादित्रयंचैवआर्द्रादिःपंचकंतथा॥ पूर्वाषाढादिचत्वारि[?]रेवतीद्वयं ४५ उक्तानिशशिभान्यत्र प्रोच्यंते सूर्यभान्यथ॥ रोहिणीचमृगश्चैवपूर्वाफल्गुनितथा॥ ४६॥ सूर्येसूर्येभवेद्वायुश्चंद्रेचंद्रेनवर्षति। चंद्रसूर्येभवेद्योगस्तदावर्षतिमेघराट्

टी० अश्विनीभरणीकृत्तिका आर्द्रापुनर्वसुपुष्य आश्लेषामघा पू०षा० उ०षा० श्रवणधनिष्ठा उत्तरा रेवती यह नक्षत्र चंद्रजानना और शेष सूर्यनक्षत्रजानना यहदूनो सूर्यनक्षत्र होयतो वायूबहुत और दोनो चंद्रनक्षत्रहोयतोपर्जन्य नहींजब चंद्रनक्षत्र और सूर्यनक्षत्र आवेतो वर्षा होयऐसाजानना-

घरसेपशुनिकसजायतिस्कामन्त्र

द्युमणिभान्वमेवनेस्थितंनदनुषट्सुचकर्णपथेस्थिते। अचलमेषुगतंगृहमागतं हयगतेगतमेवमृतेत्रिसु

टी० सूर्यनक्षत्रसे दिननक्षत्र तक देखने का क्रम प्रथम ६ नक्षत्र में पशु वनमें जाननी नंतर ६ नक्षत्र में नगीच मार्गमें जाननी और ७ नक्षत्र में जलदी मिले २ नक्षत्र में मिलेगा नहीं ३ नक्षत्र में मृत्यु ऐसे पशु घर से निकस जाने का प्रश्न देखना-

संक्रांतौ वारफल॥ संक्रांतिर्जायते यत्र भास्करे भूसुते शनौ॥ तस्मिन्मासे भयं घोरं दुर्भिक्षं वृष्टिचोरजं॥४८॥

टी० रवि मंगल शनि इनके वार में संक्रांत लगे तो उस मास में भय दुर्भिक्ष अवृष्टि चोर भय जानना-

राजभंगादियोग॥

यदि भवति कदाचिच्चाश्विनी नष्टचंद्रा शनिरविकुजवारे स्वातिरायुष्मयोगे॥ गगनचरपशूनां जंगमस्थावराणां नृपतिजनविनाशो राज्यभंगस्तथोक्तः॥

टी० कदाचित् अमावास्या के दिन शनिवार रविवार मंगलवार और अश्विनी अथवा स्वाती और आयुष्मान् योग ऐसे योग होय तो पक्षि पशु जंगम स्थावर राजा जन इतने का नाश जानना-

सूर्यचंद्रका मंडल विचार॥ रविशशिपरिवेषे पूर्वयामे च पीडा रविशशिपरिवेषे मध्ययामे च वृष्टिः॥ रविशशिपरिवेषे धान्यनाशस्तृतीये रविशशिपरिवेषे राज्यभंगश्चतुर्थे

टी० सूर्य और चंद्र इनको मंडल पड़े तिसका विचार सूर्य को अथवा चंद्रमा को मंडल प्रथम प्रहर में होय तो पीड़ा दूसरे में वृष्टि तीसरे प्रहर मे धान्यनाश चतुर्थ प्रहर में राज्यभंग ऐसे सूर्य चंद्र के मंडल का विचार करना-

इंद्रधनुष्यादियोग॥

रात्रौ धनुर्दिने उल्का तारा चैव दिने तथा
रात्रौ च धूमकेतुश्च भूकंपश्च तथैव हि
एतानि दुष्टचिन्हानि देशक्षयकराणि च

टी० रात्री में इंद्रधनुष निकसे और दिन में उल्कापात नक्षत्रपात और रात्री में धूमकेतू और भूकंप यह सब दुष्टचिन्ह होय तो देशनाश होते हैं ऐसा जानना।

अथ ग्रहचक्रप्रकरणम्

सूर्ये॥ ऋक्षे संक्रमणं यत्र द्वे वक्त्रे विनियोजयेत्। चत्वारि दक्षिणे बाहौ त्रीणि त्रीणि च पादयोः॥ चत्वारि वाम

वाहौच हृदयेपंचनिर्दिशेत्। अक्ष्णोर्द्वयं द्वयंयोन्यं मूर्ध्नि चैकैककंगुदे। फल॥ रोगोलाभस्तथाध्वाचबंधनंलाभएवच। ऐश्वर्यंराजपूजाच अपमृत्युरितिक्रमात्॥५५ चंद्र। चंद्रचक्रंप्रवक्ष्यामिनराकारंसुशोभनं॥ शीर्षेषट्कंमुखेत्वेकंत्रीणिदक्षिणहस्तके।५६। हृदिषट्कंप्रदातव्यंवामहस्तेत्रयंतथा॥ कुक्ष्योःषट्कंचदातव्यंपादैकैकंविनिर्दिशेत् ५७ फल॥ मुखेचंद्रव्यहरणंशीर्षेलाभकरंस्मृतं॥ हानिदंदक्षिणेहस्ते हृदयेचसुखावहं॥ वामहस्तेतुरोगाश्चकुक्ष्योःशोकस्तथैवच॥ पादयोर्हानिरोगौचजन्मधिष्ण्यादिचंद्रभं५९।भौम॥ भौमचक्रंप्रवक्ष्यामिजन्मधिष्ण्यादिभौमभं॥ शीर्षेषट्केमुखेत्रीणि त्रीणिवैदक्षिणेकरे॥ पादयोःषट्प्रदातव्यंवामहस्तेत्रयंतथा॥ गुह्येचैकंनेत्रयोर्द्वे हृदयेत्रयमेवच॥६१। फल॥ विजयश्चैवरोगश्चलक्ष्मीःपथाभयंतथा। मृत्युर्लाभःसुखंचापिफलंज्ञेयं

सूर्य			चंद्र			मंगल		
सूर्यसंक्रांति नक्षत्र सेजन्मनक्षत्र तक देखना। स्थान से फल शुभाशुभजानना –			जन्मनक्षत्रसे चंद्र नक्षत्र तक देखना। स्थान से शुभाशुभ फल जानना ॥			जन्मनक्षत्रसे मंगल के नक्षत्रतक देखना। स्थानसेशुभाशुभफलजा॰		
स्थान	न॰	फल	स्थान	न॰	फल	स्थान	न	फल
मुख	२	रोगप्राप्ति	मस्तक	६	लाभ	सिर	६	विजय
दहिना हात	४	लाभ	मुख	१	द्रव्यहर	मुख	३	रोगप्राप्ति
गोड	६	मार्गचलना	दहिना हा॰	३	हामकरेगा	द॰ हात	३	लक्ष्मीप्रा॰
बायां हात	४	बंधन	हृदय	६	सुखप्राप्ति	गोड	६	मार्गचल
हृदय	५	लाभ	बायांहात	३	रोगप्राप्ति	बा॰ हात	३	भय
नेत्र	४	लक्ष्मीप्रा॰	बगल	६	शोक	गुद	१	मृत्यु
मस्तक	१	राजगृहपूजा	द॰ गोड	१	हानि	नेत्र	२	मृत्यु
गुदा	१	अपमृत्यु	बा॰ गोड	१	रोगप्राप्ति॰	हृदय	३	सुख

बुध॥ बुधचक्रंप्रवक्ष्यामिजन्मऋक्षादिसौम्यभं॥

शिरसित्रीणिराज्यंस्यात्वक्त्रैकंधनधान्यदं ६३ नेत्रेद्वे
प्रीतिर्नाभौचनाभौश्रीःपचकंतथा॥ पादयोःषट्प्रवास
श्चवामेवेदाधनंतथा॥ ६४ चत्वारिदक्षिणेहस्तेधनला
भस्तथैवच॥ गुह्यस्थानेभद्वयंचबंधनंमरणंफलं ६५॥
गुरु॥ गुरुचक्रंप्रवक्ष्यामिगुरुभाज्जन्मऋक्षकं॥ दद्या
च्छिरसिचत्वारिचत्वारिदक्षिणेकरे ६६ एकंकंठेमुखेपं
चपादयोःषट्प्रदापयेत्॥ करेवामेचचत्वारित्रीणिदद्या
च्चनेत्रयोः॥ ६७॥ फल॥ राज्यंलक्ष्मीर्धनप्राप्तिःपीडामृत्यु
स्तथैवच॥ सुखंनैवक्रमेणैवंफलंज्ञेयंविचक्षणैः॥ ६८॥
शुक्र॥ शुक्रचक्रंप्रवक्ष्यामिशुक्रधिष्ण्यात्तुजन्मभं॥
मुखेत्रीणिमहालाभःशीर्षेपंचशुभावहः॥ ६९॥ त्रिकंतु
दक्षिणेपादेक्लेशहानिकरंसदा॥ तथैववामपादेचत्रीणि
भानितुयोजयेत्॥ हृदयेद्वेधनंसौख्यंभाष्टकंहस्तयोर्द्व
योः॥ मित्रसौख्यंधनप्राप्तिर्गुह्येत्रीणितथैवच॥ स्त्रीला
भश्चफलंप्रोक्तंभृगुपुत्रस्यसूरिभिः॥ ७१॥ ७॥

बुध			गुरु			शुक्र		
जन्मनक्षत्रसेबुधकेनक्षत्रनकदेखनास्थानसेशुभाशुभफलजनना॥ ॥			गुरुकेनक्षत्रसेजन्मनक्षत्रनकदेखनास्थानसेशुभाशुभ।फलजानना।			शुक्रकेनक्षत्रसेजन्मनक्षत्रनकदेखनास्थानसेशुभाशुभफलजानना।		
स्थान	न०	फल	स्थान	न०	फल	स्थान	न	फल
मस्तक	३	राज्यप्राप्ति	मस्तक	४	राज्यप्राप्ति	मुख	३	महालाभ
मुख	१	धनप्राप्ति	द० हात	४	लक्ष्मीप्रा०	मस्तक	५	शुभ
नेत्र	२	प्रीतिला०	कंठ	१	धनलाभ	द० गोड	३	क्लेशहानि
नाभि	५	लक्ष्मीप्रा०	मुख	५	पीडा।	बा० गोड	३	क्लेशहानि
गोड	६	प्रवासक	गोड	६	मृत्यु	हृदय	२	धनसौख्य
बा० हात	४	धनलाभ	बा० हात	४	सुखप्रा०	हात	८	मित्रसुख
द० हात	४	धनलाभ	नेत्र	३	सुखप्रा०	गुह्य	३	स्त्रीलाभ
गुद	२	बंधनमर०	०	०	०	०	०	०

॥शनि॥ सौरिचक्रं प्रवक्ष्यामि सौरिभाज्जन्मऋक्षभं॥ मूर्ध्न्ये
कं च तथा वक्त्रे करे चत्वारि दक्षिणे॥७२॥ विन्यसेत्पाद
युग्मे षट् वामबाहौ चतुष्टयं॥ हृदये पंच ऋक्षाणि क्रमाच्च
त्वारि नेत्रयोः ७३ मूर्ध्नि द्वयं गुदे चैकं मंदस्य पुरुषाकृतेः॥
फल॥ मूर्धवक्त्रस्थभे रोगो लाभो वै दक्षिणे करे॥ स्याद्ध्वा
चरणं देहे बंधो वामके नृणां ७४ हृदये पंच लाभो वै नेत्रे प्रीति
रुदाहृता॥ पूजा मस्ते परा नूनं गुदे मृत्युं विनिर्दिशेत्॥७५॥ रा
हु॥ राहुचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मभाद्राहुऋक्षभं॥ मूर्ध्नि त्रीणि
तथा प्रोक्तं करे चत्वारि दक्षिणे॥७६। पादयोः षट् प्रदातव्यं
वामहस्ते चतुष्टयं॥ हृदये त्रीणि कंठे कं मुखे द्वौ नेत्रयोर्द्वयं
७७ गुह्ये द्वयं क्रमेणैव राहुचक्रे स्वभावतः॥ फल॥ राज्यं रि
पुक्षयः पंथा मृत्युर्लाभोथ रोगकः। जयः सौख्यं तथा कष्टं
क्रमाज्ज्ञेयं फलं बुधैः। केतु। केतुचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मभा
त्केतुऋक्षभं॥ मूर्ध्नि पंच जयश्चैव मुखे पंच महद्भयं। हस्तयो
र्भानि चत्वारि विजयश्च जयस्तथा॥ पादयोः षट् च सौख्यं स्यात्
हृदि द्वे शोककारके।८०। कंठे चत्वारि च व्याधि गुह्ये कं च महद्भयं

शनि			राहु			केतु		
शनि नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक देखना स्थान से शुभाशुभ फल जानना ॥			जन्म नक्षत्र से राहु के नक्षत्र तक देखना स्थान से शुभाशुभ फल जानना ॥			जन्म नक्षत्र से केतु नक्षत्र तक देखना स्थान से शुभाशुभ फल जानना।		
स्थान	नं.	फल	स्थान	नं.	फल	स्थान	नं.	फल
मस्तक	१	रोग	मस्तक	३	राज्यप्राप्ति	मस्तक	५	जय
मुख	१	रोग	द. हात	४	रिपुनाश	मुख	५	बहुतभय
द. हात	४	लाभ	गोड	६	मार्गचल.	हात	४	विजय
गोड	६	मार्गचल	वा. हात	४	मृत्यु	गोड	६	सौख्य
वा. हात	४	बंधन	हृदय	३	बहुतदया	हृदय	२	शोक
हृदय	५	लाभ.	कंठ	१	रोग	कंठ	४	व्याधि
नेत्र	४	प्रीति	मुख	२	जय	गुह्य	१	बहुतभय
मस्तक	१	पूजा	नेत्र	२	सौख्य	०	०	०
गुद	१	मृत्यु	गुह्य	२	कष्ट	०	०	०

पुरुषचक्रमेनक्षत्रदेखना॥शीर्षेत्रीणिमुखेत्रयंचरविभादे कैकमंस्कंधयोरेकैकंभुजयोस्तथाकरतलेधिष्ण्यानिपंचोदरे नाभौगुह्येनलेचजानुयुगुलेएकैकऋक्षंक्षिपेज्जंतोःकेचिदि तित्रिवतिगणकाशेषाणिपादद्वये।९२।अल्पायुश्चरणंस्थिते चगमनंदेशांतरंजानुमेगुह्येस्यात्परदाररंमनमहोनाभौच सौख्यप्रदं।ऐश्वर्यंहृदिचौर्यमस्यकरयोर्वाह्वोर्बलंवैमुखे मिष्टान्नंचलभेस्वमानवगणेराज्यंस्थिरंमूर्धनि।।९३।।

टी०केवलमनुष्यचक्रसूर्यनक्षत्रसेजन्मनक्षत्रतकदेखनेकाक्रम प्रथम ३ नक्षत्रमस्तकपरफलराजप्राप्तीसुखपर ३ नक्षत्र फलमिष्टान्नभोजन स्कंधपर २ नक्षत्र फल बलवान् भुजापर २ नक्षत्र फल बल हातकेतलवेपर २ नक्षत्र फलचोर हृदयेपर ५ नक्षत्र फल ऐश्वर्य नभीपर १ नक्षत्र फलसुखगुह्यपर १ नक्षत्र फल स्त्रीसे लंपट जानूपर २ नक्षत्र फलदेशवास पादपर ६ नक्षत्र फलथोड़ा आयुष्य ऐसे जन्मनक्षत्रसे स्थानविचारकरना-॥

वारपरत्वेसेपंचक॥रवौरोगंकुजेवह्निःसोमेतुन्नृपयं चकं॥बुधेचोरंशनौमृत्युःपंचकानितुवर्जयेत्॥९५॥

टी०रविवारकोरोगपंचकत्यागकरना॰मंगल को अग्निपंचक चंद्रवारकोराजपंचक बुधवारको चोरपंचक शनिवारकोमृत्यु पंचक ऐसेयह्वारपंचकत्याकरना॥

दिनमानरात्रिमान ॥

अयनादिकवासरराममहताःगगनानलबाणशशांकयुताः परिभाजितशून्यरसैर्घटिकाकर्कादिनिशामकरादिदिनं

टी०अयनकहियेकर्कसंक्रांतीसे ६ मकरसंक्रांतितक वैसा मकरसंक्रांतीसे ६ कर्कसंक्रां॰तीनक इसेजिसतिथीकादिनमानकरना होय उहांतक गिनना तब उस्को ३ से गुणदेना जो अंक होय उस्में १५३० मिलावना ६० सेभाग देना शेषजोरहे सोरात्रिमान जानना कर्कसंक्रांतिसे देखना और मकरसंक्रांतीसेदिनमानजानना-॥

दिनकितनागयासोदेखना॥पादप्रभानगयुतारहिताचमेषा त्षट्स्विंदुनात्रियुगबाणशरांब्धिरामैः।स्याद्भाजकोदिन दलस्यनगाहतस्यपूर्वंगतास्त्वपरेदिनशेषनाड्यः॥९७॥

टी० प्रथम अपनी छाया गोड से गिनना जो अंक आवे उस्मे ७ मिलावना और मेषसंक्रां तीसे कन्यातक १ अंक उस्मे कमकरना इस्के आगे तुलासे मीनतक संक्रांतीके क्षेप कं कमकरना सो तुला ३ वृश्चिक ४ धन ५ मकर ५ कुंभ ४ मीन ३ यह ९ न सक मकर ना ऐसा अंक कम करके जूदा २ रखना नंतर दिनका दल १५ इस्को ७ से गुणदि याता ९०५ भया इस्के पीछे ररवे अंक से भागले ना जो अंक आवेसो घटीका परंतु दिनके पूर्वाईकी घडी भई और उत्तराईमे इतना दिन रहा ऐसा कहना—

रात्रि कितनी भई सो देखना॥ सूर्यभान्मध्यनक्षत्रं सप्तसंख्या विशोधितं॥ विंशतिघ्नं नवहृतं गता रात्रिः स्फुटा भवेत्॥

टी० रातको मध्यमे जो नक्षत्र आया होय उतना नक्षत्र सूर्यनक्षत्रसे गिनना और उस्मे ७ कम करना शेषजो रहे उस्को २० से गुणदेना ९ से भागलेना शेष जो रहे उतनी रात गत भई ऐसा जानना— अंतरंग बहिरंग नक्षत्र

सूर्यभादुडुगणं पुनः पुनर्गणयता मितिचतुष्टयं त्रयं॥ अंतरंग बहिरंग संज्ञकं तत्र कर्म विदधीत नतात् हयां॥

टी० सूर्यनक्षत्रसे दिननक्षत्रतक देखना प्रथम ४ नक्षत्र भीतर ३ नक्षत्र बाहर ऐसे क्रमसे अंतरंग बहिरंग नक्षत्र जानना यह पम्मूल्या वनेको और देनेको क थित है ऐसा जानना— ॥ श्लोक ॥ ॥

मुनिरामनवश्चंद्रे विक्रमाब्दे जगेरवौ मधुमाससिते पक्षे तिथिकौ रविवासरे भरणी प्रीतिसंयोगे करणे कौलवस्तदा ज्योतिस्सार समाप्तोयं नानाग्रंथान्निरीक्षताम्॥ द्विजगौडकुले नाना ब्राह्मणस्यैक किंकरान्हिरामिश्रशुरेर्दियं अयंराम दयालुहि॥ अथ सोरठा ॥

लिखायेज्योतिस्सार नन्दे मिश्र न चित्तसों॥ नयमल जो सौ कार मनव: ज्वालाप्रकाशसे॥

इतिभाषाटीकासहितज्योतिस्सार समाप्त॥ ॥

इश्तहार

प्रकट होकि यह ग्रंथ ज्योतिस्सार बनाई यथाक्रमस
पारिडराम दयालनें जिस्में अनेक मुहूर्त्तों दिज
न्म वर्षफल दशांत्तर दशा फल सहित चक्रा
वली गणित मय उदाहरण सारणी सहित
है जिन् सज्जनों को चाहिये वेमत्यवस्त्र
ज्वालाप्रकाश शहर मेरठ मोहल्ले
शाघाषीसे दाम देकर मगालें उन
के कार्य ईश्वर सब पूर्ण करें
गे॥ यह पुस्तक ऐक्ट २५
सन् १८६७ ई० के अनु
सार रजिष्टरी
हुई और
फी
स
सरकारी दिगई बिना आज्ञा ग्रंथ कर्त्ता के मालिक मतवस्त्र
ज्वालाप्रकाश के कोई न छापे लि० मिश्र नन्हेजी ॥ शुभम्

संवत (८३) मे तो...